नया उपन्यास

केशव पण्डित

बेटी हूँ चंगेज खान की

135 वाँ नया उपन्यास

करोड़ों पाठकों की पसंद

धोखे से बचें! नक्कालों से सावधान!

एक ही पुस्तक में सम्पूर्ण उपन्यास

धीरज पॉकेट बुक्स

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 135 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. कानून की लोमड़ी
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी उड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. तू लोमड़ी मैं चाणक्य
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. बब्बर शेर
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लोहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालन का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. कंकड़
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊंचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. केशव की शादी
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. दो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से
118. चिड़िया लड़ाऊंगा बाज से
119. पुतला नहीं रावण जलेगा
120. तलवार उठा लो गांधीजी
121. सुदर्शन चक्र है दिमाग मेरा
122. मेरे पति हैं 10 हजार
123. मैं हूं कानून का अवतार
124. अंग्रेजों वापस आ जाओ
125. 125 साल का महापण्डित
126. घुंघरू बांध नाचेगा मर्दा
127. श्मशान में लूंगी 7 फेरे
128. हड्डियों से बनेगा ताजमहल
129. संसद में गरजेगी तोप
130. कानून का पाण्डव करेगा ताण्डव
131. डुगडुगी बजाऊंगा फौज नचाऊंगा
132. अब देख नारद की लीला
133. ये अयोध्या है रावण की
134. जहांगीर मांग रहा इन्साफ
135. बेटी हूं चंगेज खाँ की

136वां आगामी नया उपन्यास **तख्त बदल दो ताज बदल दो**

136 उपन्यासों के रचयिता

केशव पण्डित

असली की पहचान



136 उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर
केशव पण्डित के असली एवं नये
उपन्यास अब केवल दो फर्म
धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स
द्वारा ही प्रकाशित होते हैं

अन्य कहीं से नहीं।

उपन्यास : बेटी हूं चंगेज खाँ की
लेखक : केशव पण्डित

प्रकाशक : धीरज पॉकेट बुक्स
अग्रवाल कॉलोनी,
रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (उ० प्र०)
फोन : (0121) 2400092, 3257035
मुद्रक : श्री बालाजी ऑफसैट
मेरठ।

बेटी हूं चंगेज खां की : उपन्यास : केशव पण्डित

"जिस दिन तूने मेरे वालिद को मौत के घाट उतारा था, उसी दिन तूने अपने वतन हिन्दुस्तान की तकदीर में बदकिस्मती की नुकीली कील ठोक दी थी–तबाही को न्योता दे आया था तू। मेरे वालिद ने तेरे मुल्क में थोड़ी तबाही क्या मचाई थी कि तू बिलबिला उठा था, अंगारों पर लोटने लगा था। लेकिन तब क्या होगा, जब मैं तबाही की आंधी बनकर सब कुछ तहस-नहस कर डालूंगी? आ चुकी हूं मैं तेरे लाड़ले हिन्दुस्तान की सरजमीं पर–लेकिन अकेली नहीं आई हूं। अपने सीने में इन्तकाम के अंगारे पाले थे मैंने–उन्हें अपने दामन में भरकर ले आई हूं। पहले हिन्दुस्तान की जमीन पर साजिशों का बारूद बिछाऊंगी और फिर वो दहकते हुये अंगारे बिखेर दूंगी। तब होंगे धमाकों पर धमाके...धड़ाम...धड़ाम ! हिन्दुस्तानियों के जिस्म हवा में उड़ेंगे और उनके परखच्चे इधर-उधर बिखर जायेंगे। हड्डियों के पहाड़ बन जायेंगे। गोश्त के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगेंगे। खून के दरिया बहेंगे। आंसुओं का सैलाब तमाम खुशियों को अपने साथ बहा ले जायेगा। चारों तरफ मातम के ढोल बजेंगे–मौत पैरों में गम के घुंघरू बांधकर खुशहाली के सीने पर नाचेगी और गायेगी। डायन बनकर तेरे हिन्दुस्तान के चैन-ओ-अमन को चबा-चबाकर खा जाऊंगी और फिर तेरी लाश के सीने पर अपने इन्तकाम की वो खूनी दास्तान लिखूंगी कि तेरी रूह कयामत के दिन तक दहशत के समन्दर में हताशा की लहरों के थपेड़े खाती रहेगी। मैं इरादों के पंख लगाकर जिस मकसद की उड़ान भरकर आई हूं उसे हकीकत में तब्दील करके रहूंगी–क्योंकि मैं बेटी हूं चंगेज खां की...।"

केशव पण्डित की जादुई लेखनी ने इस बार रहस्यों के पन्नों पर रोमांच की कलम में कौतूहलता की स्याही भरकर जो अनूठा, रोचक व अविस्मरणीय शाहकार रचा है, उसका नाम है–

बेटी हूं चंगेज खाँ की

बेटी हूं चंगेज खाँ की
के कुछ प्रमुख पात्र

चंगेज खाँ—पाकिस्तानी मिलिट्री का लेफ्टीनेंट जनरल और आई.एस.आई. का चीफ—जो कि हिन्दुस्तान को तबाही की भट्टी में झोंक देने के ख्वाब देख रहा है।

शहजादी—वो जितनी खूबसूरत और हसीन है, उतनी ही खतरनाक है। वो दो पैरों, दो हाथों वाली ऐसी नागिन है, जिसके भीतर जहर-ही-जहर भरा पड़ा है।

परवेज खान—पाकिस्तानी मिलिट्री का जनरल, जो कि जियारत के लिये हिन्दुस्तान आया था—लेकिन पाकिस्तान लौटने पर धमाके करने लगा।

मुश्ताक हिन्दुस्तानी—जिसने मिलिट्री की वर्दी पहनकर मां भारती की रक्षा के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी। वो जब मुसीबत में पड़ गया तो उसकी मदद को सामने आया केशव पण्डित।

बाबर—वो रहस्यमयी किरदार, जिसे हिन्दुस्तान में तबाही के खेल खेलने के लिये आई०एस०आई० का इण्डियन चीफ नियुक्त किया गया।

मिर्जा बेग—उसने अपने हिन्दू दोस्त की बेटी की ना सिर्फ परवरिश की, बल्कि उसे अपनी धर्म-पुत्री बनाकर अपनी प्रोपर्टी तथा फैक्ट्री की मालकिन बना दिया है।

और इन सबके साथ है *केशव पण्डित*—मां भारती का वो लाड़ला बेटा, जो देश में कोई समस्या उत्पन्न होने पर सिर पर कफन बांधकर और जान हथेली पर रखकर रणभूमि में उतर चुका है—दुश्मनों के छक्के छुड़ाने के लिये।

बेटी हूं चंगेज खाँ की

कलम के बादशाह का एक और शाही अन्दाज !

बेटी हूँ चंगेज खाँ की

केशव पण्डित

"पाकिस्तान के हुक्मरानों की नस-नस में झूठ और छल-कपट कूट-कूटकर भरा हुआ है—इसका साक्षात् प्रमाण मैं आप लोगों के सामने मुश्ताक हिन्दुस्तानी के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं। आप लोगों को स्मरण होगा कि एक माह पूर्व हमारे प्रधानमन्त्री जी ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति महोदय से दूरभाष पर वार्तालाप किया था और बतलाया था कि लाहौर की जेल में मुश्ताक हिन्दुस्तानी कैद हैं—रिक्वेस्ट की थी कि मुश्ताक को छोड़ दिया जाये। लेकिन अगले दिन पाकिस्तान के राष्ट्रपति महोदय ने हमारे प्रधानमन्त्री जी को दूरभाष पर सूचित किया कि लाहौर तो क्या...पाकिस्तान की किसी भी जेल में मुश्ताक हिन्दुस्तानी नाम का कोई कैदी बन्दी नहीं है। तब मुझे अपने तरीके से पाकिस्तान जाकर मुश्ताक को यहां लेकर आना पड़ा। मीडिया के माध्यम से मैं पाकिस्तान के राष्ट्रपति से और पाकिस्तान के आकाओं से प्रश्न करना चाहूंगा कि इतना बड़ा झूठ क्यों बोला गया था? क्या भविष्य में पाकिस्तान के हुक्मरानों की किसी बात पर विश्वास किया जा सकेगा?"

"लेकिन पण्डितजी...!" 'स्टार-प्लस' के मोनोग्राम वाले माइक को हाथ में लिये हुये रिपोर्टर ने पूछा, "पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने झूठ क्यों बोला था—?"

"क्योंकि मुश्ताक हिन्दुस्तानी को अवैध रूप से जेल में बन्दी बनाया हुआ था—सरकारी कागजातों में कोई रिकॉर्ड नहीं रखा गया था। इस बात की घोषणा नहीं की थी कि मुश्ताक को बन्दी बनाकर

जेल में रखा गया है। हमारे देश में जब किसी आतंकवादी या घुसपैठिये को पकड़ लिया जाता है तो उसकी बाकायदा गिरफ्तारी दिखलाई जाती है और अदालत में पेश किया जाता है। एम्बेसी के माध्यम से उसके देश को सूचना दी जाती है। जबकि पाकिस्तान ने मुश्ताक हिन्दुस्तानी को बन्दी बनाये जाने की कोई घोषणा नहीं की—बल्कि इस बात को छिपाया गया था। इसीलिये मैंने पाकिस्तान के हुक्मरानों को झूठा, छलिया और कपटी कहा! भारत सरकार इस बात के लिये अपना विरोध प्रकट करेगी और पाकिस्तान के छल-कपट को जगजाहिर किया जायेगा!"

"भाई...मेरा मतलब पण्डितजी...!" इण्डिया न्यूज की रिपोर्टर और केशव के गुरु रमाकान्त की बिटिया माधवी चोपड़ा बोली, "पाकिस्तान के जनरल ने टी०वी० पर घोषणा की थी कि उसके देश के पास ऐसी मिसाइल हैं, जिससे एक साथ भारत के पांच महानगरों दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई और बंगलुरू पर बम गिराये जा सकते हैं और वो मिसाइल अपना काम करके मिनटों में ही वापिस लौट जायेंगी। उस घोषणा से अपने देश में भय का वातावरण उत्पन्न हो गया है...।"

मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला तथा बगल में बैठे दाढ़ीवाले युवक के कन्धे पर हथेली रखकर बोला—"वो पाकिस्तान के जनरल का बड़बोलापन ही था। कल ही बी०बी०सी० लन्दन के एक रिपोर्टर ने जनरल से उस मिसाइल के सन्दर्भ में प्रश्न किया था। तो...बेचारा अपनी बगलें झांकने लगा था क्योंकि सच्चाई बोलने पर उसकी और उसके देश की किरकिरी हो जाती। वो किस मुंह से बतलाता कि वो मिसाइल अब नष्ट हो चुकी है और पाकिस्तान की मिलिट्री तथा सरकार उस मिसाइल की रक्षा नहीं कर सकी थी। अपने ही मुल्क में बुरी तरह मात खाई थी उन बेचारों ने...।"

"उस मिसाइल को किसने नष्ट किया था पण्डितजी...?" 'आज तक' के रिपोर्टर ने प्रश्न किया, "और मुश्ताक हिन्दुस्तानी पाकिस्तान की जेल से छूटकर हिन्दुस्तान कैसे आये?"

"कृपया आप लोग कॉफी लीजिये...।" केशव ने अपने दुबले-पतले व नाटे कद के नौकर मुंशी को देखकर कहा, जो कि काली जींस व लाल टी-शर्ट में था और पैरों में हवाई चप्पलें पहने हुये था।

लम्बे बालों वाले नौकर मुंशी ने पहियों वाली ट्रॉली से कॉफी के मग उठाकर सभी मीडियावालों को दिये।

केशव की असिस्टेन्ट श्वेता गुप्ता दूसरी ट्रॉली को धकेलते

हुये बंगले के भीतर से निकलकर बाहर वाले हिस्से में लाई—उसने ट्रॉली में नमकीन, बिस्किट व बर्फी की प्लेटें रखी हुई थीं।

राजन शुक्ला तथा करतार सिंह ने भी कुर्सियों से उठकर श्वेता की मदद की और प्लेटें उठाकर मीडियाकर्मियों को बिस्किट, नमकीन व बर्फी सर्व करने लगें।

"प्लीज पण्डितजी...!" माधवी चोपड़ा आग्रहपूर्ण भाव से बोली, "हम लोगों को बतलाइये कि उस मिसाइल को किसने नष्ट किया था और मुश्ताक हिन्दुतानी पाकिस्तान की जेल से मुक्त होकर अपने मुल्क कैसे लौटे—?"

"बतलाइये ना पण्डितजी—।"

"हम जानने के लिये उत्सुक हैं पण्डितजी—।"

"मैंने सारी बातें बतलाने के लिये ही आप लोगों को अपने घर पर आमन्त्रित किया है, परन्तु आप लोग तो अधीर हो चले हैं। सारी बातें जानने के लिये अतीत के पन्नों को उलटना होगा। मुझे अपनी बात मुश्ताक के वालिद नजीर हिन्दुस्तानी से शुरू करनी होगी, जिनके नाम पर हसनपुरा की मुख्य सड़क का नाम 'नजीर हिन्दुस्तानी मार्ग' रखा गया है। नजीर हिन्दुस्तानी आजादी से पहले लाहौर रहा करते थे। जब देश का बंटवारा हुआ और पाकिस्तान अस्तित्व में आया तो नजीर साहब अपना सामान समेटकर हिन्दुस्तान में चले आये थे और मुम्बई के हसनपुरा इलाके में रहने लगे थे। लोग उनसे पूछ लिया करते थे कि हिन्दुस्तान में रहने वाले मुस्लिम भी पाकिस्तान चले गये थे तो वो पाकिस्तान छोड़कर हिन्दुस्तान क्यों चले आये थे...?"

□□□
□□□

"अस्सलामु अलैकुम, हिन्दुस्तानी चाचा—!"

"व अलैकुमुस्सलामु, शौकत मियां—!" साठ वर्षीय तथा मेहन्दी से रची सुर्ख दाढ़ी वाले नजीर ने हथेली को पेशानी तक पहुंचाकर कहा, "खुश रहिये...आबाद रहिये। पाक परवर दीगार तुम्हें नेकियां और बरकत बख्शे...सलामत रहिये। पान का बीड़ा तो लगाइये मियां। रवि-जैमिनी के साथ थोड़ा मोर छाप भी डाल देना—।"

"जरूर हिन्दुस्तानी चाचा...।" कहने पर पनवाड़ी ने पीतल के भगोने से बनारसी पान निकाला और उस पर चूनें की चम्मच चलाते हुये बोला, "कल रहीम चाचा बतला रहे थे कि आजादी से पहले आप पाकिस्तान में रहते थे—?"

"हां –मैं लाहौर में रहता था, वहां भरा-पूरा खानदान था। बहुत बड़े किसान थे हम। मेरे हिस्से में ही सौ बीघा से ज्यादा जमीन आती थी–लेकिन मुझ पर तो अपने वालिद साहब की तरह इंकलाब का जुनून सवार था। रात को हथियार लेकर निकल पड़ता और कोई फिरंगी टकराता तो हलाक कर देता था। मुझे देखकर कोई अन्दाजा भी नहीं लगा सकता था कि कम उम्र का यह नौजवान फिरंगियों को हलाक कर देता होगा।"

"लेकिन यहां तो आपके पास कोई जमीन नहीं है हिन्दुस्तानी चाचा। यहां तो आप ठेले पर लोगों का सामान ढोकर मजदूरी ही कर रहे हैं। पाकिस्तान से हिन्दुओं को ही भगाया जा रहा था–बल्कि यहां के बहुत से मुसलमान वहां चले गये थे। इतनी जमीन होने पर भी आप वहां से यहां चले आये। जमीन को बेच आते तो यहां बढ़िया मकान खरीदकर कोई बड़ा बिजनेस भी कर सकते थे–।"

"सिर्फ मैं ही यहां आया था–मेरे सगे भाई भी वहां रह गये थे। अपने भाइयों को ही अपने हिस्से की जमीन दे आया था। भला उनसे जमीन की कीमत थोड़े ही लेता मैं–।"

"आप पाकिस्तान में ही रहते तो सौ बीघा जमीन के दम पर तो बहुत तरक्की कर लेते। शायद आपका करोड़पतियों में शुमार होता! मेरी समझ में नहीं आता कि आप पाकिस्तान छोड़कर यहां क्यों चले आये थे–?"

"क्योंकि बंटवारे के बाद उस मुल्क का नाम हिन्दुस्तान नहीं रह जाना था...।" भावुक हो चला नजीर, "जबकि मैंने इंकलाबी जमात में भर्ती होते वक्त जलती शमां के ऊपर हाथ रखकर कसम खाई थी कि जीऊंगा तो हिन्दुस्तान के वास्ते और मरूंगा तो हिन्दुस्तान के वास्ते। मेरे जिस्म को हिन्दुस्तान की सरजमीं में पनाह मिले–यही तो दुआ किया करता था। नहीं रहना था मुझे जमीन के उस हिस्से पर, जिसका नाम हिन्दुस्तान नहीं रह गया था! यूं क्या देखने लगे शौकत मियां–?"

पनवाड़ी ने पहले खुले रह गये मुंह को बन्द किया और फिर आश्चर्य के साथ बोला–"कमाल है हिन्दुस्तानी चाचा, यकीन ही नहीं होता कि आपने अपना घर और जमीन इस लिये छोड़ दी थी क्योंकि उसका नाम हिन्दुस्तान नहीं रह गया था। लेकिन पाकिस्तान नाम तो मिल गया था–उस जमीन को पाक नाम मिल गया था–?"

"भले ही कुछ भी नाम मिल गया था–लेकिन मैंने तो अपनी जिन्दगी हिन्दुस्तान के नाम लिख दी थी–तभी तो अपने नाम के पीछे हिन्दुस्तानी जोड़ दिया था। ये जिस्म खाक में मिलकर फना

हो जायेगा एक दिन, लेकिन मेरा नाम हमेशा जिन्दा रहेगा। एक बात बोलूं शौकत मियां–पाकिस्तान से यहां आने की एक वजह और भी थी–।"

"वो क्या हिन्दुस्तानी चाचा–?"

"बंटवारे का ऐलान होते ही अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया था। लोगों ने इन्सानियत को ताक पर रखकर हैवानियत का लबादा ओढ़ लिया था। हिन्दू-मुस्लिमों के दरम्यान बहुत मुहब्बत और मेल-जोल था–लेकिन यकायक ही वो परायों से भी ज्यादा गैर हो गये थे–तीर बनकर दिलों में चुभने लगे थे। उन पर कहर बनकर टूट पड़े थे जालिम। जो भी हत्थे चढ़ा, उनको बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया गया था। मासूम बच्चों तक को नहीं बख्शा गया था। उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये थे। मासूम औरतों को जलील किया जा रहा था। ना सिर्फ उनकी आबरू लूटी गई बल्कि उनके वो हिस्से काट दिये गये थे, जिनसे दूध पीकर बच्चे बड़े होते हैं। ये तो गुनाह था, माफी ना मिलने वाला गुनाह–जिसकी बख्शीश खुदा के दरबार में भी नहीं होनी थी! कौन से मजहब ने उन्हें ऐसा करने की इजाजत दी थी? कुराने-पाक में तो कहीं भी नहीं लिखा है कि मासूम और मजलूमों को इतनी बेरहमी के साथ कत्ल कर दो और उनकी बहू-बेटियों को बे-आबरू कर डालो। नहीं रहना था मुझे ऐसे लोगों के बीच। वो जमीन बेगुनाहों के खून से नापाक हो गई थी–।"

"लेकिन ऐसा तो अपने यहां भी हुआ था चाचा हिन्दुस्तानी...।" पनवाड़ी नजीर को पान का बीड़ा देकर बोला, "यहां के लोगों ने भी हमारे भाइयों पर हमले किये थे–बेरहमी के साथ मारा गया था मुसलमानों को और औरतों को बेइज्जत भी किया गया था–।"

"यहां क्या हो रहा था वो मुझे तो मालूम नहीं था। यहां आने पर ही मालूम पड़ा था। मजलूमों पर कहर ढाने वाला हिन्दू या मुसलमान नहीं हो सकता। मैं तो कहता हूं कि इन्सानियत मजहब से भी बड़ी होती है–साथ ही वतनपरस्ती भी मजहब से बड़ी होती है। मेरे दिल में...मेरी रगों में बहते खून के कतरे-कतरे में हिन्दुस्तान की पाक मिट्टी की खुशबू भरी हुई है। मुझे इस बात पर फख्र है कि मैं हिन्दुस्तानी हूं। पान के चार बीड़े और लगा दो मियां। मजदूरी पर निकल रहा हूं। अब शाम को ही वापसी होगी।"

"अभी लगाता हूं हिन्दुस्तानी चाचा। बच्चे कैसे हैं–?"

"मजे में हैं। मुश्ताक मियां ने फर्स्ट डिविजन से हाईस्कूल पास कर ली है। इण्टर में आ गये हैं। शमां बेटी हाई स्कूल में आ गई

है। वो इन्टर कर ले तो शादी कर दूंगा। उसकी मंगनी तो कर ही चुका हूं।"

"मुश्ताक को क्या बनाने का इरादा है चाचा–?"

"सच्चा हिन्दुस्तानी–।"

"मेरा मतलब था कि डॉक्टर, इंजीनियर...या कुछ और–?"

"मेरी ख्वाहिश तो ये है कि वो मिलिट्री में भर्ती होकर अपने मादरे-वतन की खिदमत करे।"

"इकलौता बेटा है आपका, उसे तो अपने पास रखिये चाचा! मिलिट्री में तो बहुत दूर जाना पड़ता है और साल-दो साल में ही छुट्टी मिल जाती है–।"

"अगर हरेक बाप अपने बेटों को सीने से लगाकर रखेंगे तो फिर वतन की हिफाजत कौन करेगा शौकत मियां? मिलिट्री के जांबाज जवान ही तो वतन की सरहदों की दुश्मन से हिफाजत करते हैं। जरूरत पड़ने पर वो मुल्क के भीतर भी हम लोगों की हिफाजत करते हैं। अगर मुश्ताक मिलिट्री की वर्दी पहनकर मेरे सामने आया तो...समझूंगा कि अल्लाह ने मुझे सबसे बड़ी नियामत बख्श दी। देखते हैं कि मुश्ताक मियां अपनी ये दिली ख्वाहिश पूरी करते हैं कि नहीं–!"

❑❑❑

❑❑❑

"पाकिस्तान को जीतने के वास्ते दो ओवरों में सिर्फ बारह रनों की ही जरूरत है अच्छन मियां।"

"अब कोई दिक्कत नहीं होगी जीतने में। शाहिद अफरीदी और कामरान अकमल खेल रहे हैं। दोनों जहीर खान और हरभजन की ऐसी की तैसी करके रख देंगे। शाहिद अफरीदी पहले ही ओवर में दो छक्के या...तीन चौके मारकर जीत हासिल कर लेगा–।"

"या अल्लाह! पाकिस्तान को जितवा दो, पांच सौ रुपयों का सवाल है। अगर भारत हार जाये तो जेब में पांच सौ रुपये आ जायेंगे।"

"पाकिस्तान ही जीतेगा ओये शकील। भारत में इतना दम नहीं है कि पाकिस्तान को हरा सके।"

"खामोशऽऽऽ! चुप करो जलील जानवरों...।"

"बाप रे! चाचा हिन्दुस्तानी आ गया...।" अच्छन नामक अधेड़ धीमी आवाज में बोला, "बेमतलब का भाषण झाड़ेगा।"

"जो भी बोले...चुप ही रहना अच्छन मियां–वर्ना बेमतलब में ही खरी-खोटी सुनायेगा...।"

सड़क पर पड़ी ईंट का टुकड़ा उठा लिया नजीर ने और किरयाना की दुकान पर बाहर लगे टी०वी० के करीब बैठे दुकानदार से बोला, "फौरन ही बन्द कर टी०वी०! नहीं तो ईंट मारकर फोड़ डालूंगा।"

दुकानदार ने घबराकर टी०वी० बन्द कर दिया और फौरन ही दुकान के भीतरी हिस्से में चला गया।

ईंट को फेंककर नजीर अच्छन तथा शकील को अंगारा-सी दहकती आंखों से घूरते हुये बोला, "अपने देश की हार और पाकिस्तान की जीत के बारे में बकवास कर रहे थे तुम दोनों? शर्म नहीं आती कमीनों! अगर पाकिस्तान से इतनी ही मुहब्बत है तो हिन्दुस्तान की धरती पर बोझ क्यों बने हुये हो–पाकिस्तान जाकर ऐसी की तैसी क्यों नहीं कराते? मालूम हो जायेगी तुम्हें अपनी औकात! तुम लोगों की कद्र नहीं करेंगे वो। एक वक्त ही मुहब्बत जतायेंगे, फिर बोझ समझने लगेंगे। एक हम ही पागल हैं कि उनके यहां आने पर अपने सारे काम-धन्धे छोड़कर उनकी खिदमत और मेहमान नवाजी में रात-दिन लगे रहते हैं। यहां से जो मुसलमान वहां गये थे, वो उन्हें भी नहीं अपना सके। मुहाजिर...रिफ्यूजी... शरणार्थी बोलते हैं उन्हें और उनके साथ गैरों का-सा सलूक करते हैं। उनके वास्ते हम मुसलमान नहीं, उनकी कौम और मजहब वाले नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानी ही हैं। बात करते हैं पाकिस्तान की जीत की। चलो, ठीक है कि पाकिस्तान की जीत की बात कर लो। पाकिस्तान का मैच किसी दूसरे मुल्क के साथ चल रहा हो तो दुआ कर लो कि पाकिस्तान जीत जाये। लेकिन हिन्दुस्तान के साथ मैच चल रहा है और पाकिस्तान की जीत और अपने वतन की हार की दुआ कर रहे हो कमजर्फो! लानत है तुम पर। शर्म से डूब मरो। मरने पर क्या पाकिस्तान वाले तुम्हें दफनाने के वास्ते दो गज जमीन मुहैया करा देंगे? इस मुल्क की मिट्टी में पैदा होकर खेले-कूदे और इसी में एक रोज दफन होकर फना हो जाओगे। इस मुल्क में रहते हो, यहां का खाते-पीते हो, पहनते हो, ओढ़ते हो–इसी की हार की दुआ करते हो–जानवर हो तुम दोनों...।"

"तुम तो नाहक ही गुस्सा हो रहे हो नजीर भाईजान। मैंने पाकिस्तान की जीत पर पांच सौ रुपये की शर्त लगा ली थी–इसी वास्ते ऐसी बात बोल गया था।"

क्रोध से आग-बबूला हो, थर-थर कांपते हुये बोला नजीर, "सिर्फ पांच सौ रुपयों के वास्ते अपने मादरे-वतन की हार और दुश्मन मुल्क की जीत की दुआ करने लगे तुम शकील मियां। कोई तुम्हें

नॉलेज बढ़ती है और अपने हक की लड़ाई लड़ने में भी दुश्वारियां नहीं आतीं। अरे...ये शोर कैसा है...?"

"मैं बाहर जाकर देखता हूं अब्बू...।" कहने पर मुश्ताक कुर्सी से उठकर बाहर चला गया।

शोर-शराबा था कि बढ़ता ही जा रहा था।

कुछ देर पश्चात् मुश्ताक घबराया हुआ वापिस लौटा और पेशानी का पसीना हथेली की पुश्त से पोंछकर बोला, "गजब हो गया। हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया है...।"

"या खुदा...!" हफीजन घबराकर बोली, "बाहर किवाड़ तो बन्द कर आया ना तू मुश्ताक? सारी खिड़कियां भी बन्द कर दे...। मैं ही बन्द करके आती हूं...।"

"मैं अभी तो बाहर से आया हूं...।" चिन्तित भाव से बोला नजीर, "अचानक ही दंगा कैसे हो गया मुश्ताक मियां–?"

"दंगा भड़कते देर थोड़े यही लगती है अब्बू। वो तस्वीर जड़ने वाला कल्लू है ना...वो किसी काम से बाजार गया था। वहां दो दुकानदारों के बीच झगड़ा हुआ था। उस झगड़े ने हिन्दू-मुस्लिम दंगे की शक्ल ले ली। पथराव होने लगा–हथियार निकल आये थे और आगजनी होने लगी थी। कल्लू वहां से भागा तो हिन्दुओं ने उसे घेरकर हमला बोल दिया। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर आया वो। सिर फूटा हुआ था और दायें हाथ की एक उंगली भी कट गई। उसे हॉस्पिटल ले गये हैं। मौहल्ले के कुछ लोगों ने रामलाल की दुकान में पैट्रोल डालकर आग लगा दी...।"

"या अल्लाह...रामलाल तो ठीक है ना–?"

"वो जान बचाकर भाग गया अब्बू! साले को पकड़कर मार देना चाहिये...।"

चटाक...गाल पर पड़ा जोरदार थप्पड़!

"खामोश...नालायक...!" नजीर मुश्ताक का गिरेहवान पकड़कर चिल्लाया, "क्या मैंने तुझे यही सब सिखलाया है? लगता है कि तू गलत लड़कों की सोहबत में पड़ गया है। रामलाल तेरा चाचाजान है। हमारे दुःख-दर्द में काम आता है वो। अगर उसने तेरी अम्मी के इलाज के वास्ते बिना ब्याज के रकम उधार नहीं दी होती तो...हफीजन आज जिन्दा ना होती। रामलाल का हम पर अहसान है...अहसान फरामोश! हममें और हिन्दुओं में फर्क ही क्या है बदतमीज? सिर्फ नाम का ही फर्क है–हमारे वास्ते रहीम तो वो उनके वास्ते राम। हम करीम कहते हैं तो वो कृष्ण कहते हैं। वो भगवान कहते हैं, हम अल्लाह कहते है। बनाने वाले ने तो इन्सान को ही

ईजाद किया था–बाद में ही मजहब बने। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बने। सबका जिस्म एक-सा है, खून एक-सा है। सबके जज्बात भी एक जैसे हैं। तेरी सोच इतनी घटिया कैसे हो सकती है–?"

"मु...मुझे माफ कर दीजिये अब्बू...।" आंखों में आंसू भरकर शर्मिन्दगी के साथ बोला मुश्ताक, "ना जाने मेरी जुबान पर गलत अलफाज कैसे आ गये। आईन्दा ऐसी गुस्ताखी ना होगी अब्बू...।"

"मैं सारे दरवाजे-खिड़कियां बन्द कर आई हूं...अरे! ये मुश्ताक क्यों रोने लगा–?"

"ये तो पछतावे के आंसू हैं अम्मीजान...।" मुश्ताक शर्ट की आस्तीन से आंखें पोंछते हुये बोला, "मुझसे गलती हो गई थी, जिसका अहसास अब्बू जान ने करा दिया...।"

"नारा-ए-तदबीर...अल्लाह हो अकबर...।"

"जयकारा वीर बजरंगी...हर-हर महादेव...।"

"नारा-ए-तदबीर...अल्लाह हो अकबर...।"

"जयकारा वीर बजरंगी...हर-हर महादेव...।"

"हिन्दू और मुस्लिम अपने घरों की छतों पर चढ़कर शोर-शराबा करने लगे हैं...।" भुनभुनाकर ही बोला नजीर, "खुदा या भगवान को याद करना अच्छी बात है–लेकिन ये लोग अल्लाह और भगवान को याद नहीं कर रहे हैं–बल्कि उसके नाम की धमकी दे रहे हैं। अपनी नफरत में अल्लाह और भगवान को भी शामिल कर रहे हैं। मेरे ख्याल से मजहब या धर्म इस वास्ते बनाये गये थे कि इन्सान, इन्सान ही बना रहे और वो बुरे कामों से डरे। लेकिन चन्द सिरफिरों ने मजहब को लकीर बनाकर इन्सानियत के बीच खींच दिया है–जिसका खामियाजा आने वाली नस्लों को भी भुगतना पड़ेगा। दो दुकानदार लड़े थे–दोनों में सुलह करवा देनी थी या उन्हें कानून के हवाले कर देना था। लेकिन नहीं...हिन्दू-मुस्लिम दंगा भड़का दिया। क्या होगा अब...दंगे भड़केंगे। गरीब की रोजी-रोटी पर ताले लग जायेंगे। लोग घरों में कैद होकर भूख से तड़पेंगे। बेगुनाहों का खून बहेगा। औरतें बेवा होंगी–बच्चे यतीम होंगे। वालिदैन बे-औलाद हो जायेंगे। कर्फ्यू लग जायेगा और सबको घरों में कैद कर दिया जायेगा। चन्द लोगों की करनी का फल ना जाने कितने बेगुनाहों को भुगतना पड़ेगा...।"

"ब...बचाओ...बचाओ...। हिन्दुस्तानी भाई हमें बचाओ...।"

"अरे...!" चौंका नजीर, "ये तो अपने पड़ोसी रामकुमार की

आवाज लगती है। लगता है कि वो मुसीबत में है। मुझे फौरन ही बाहर देखना होगा कि मामला क्या है–!"

□□□

□□□

गुलाबी पेन्ट्स वाले उस मकान के बाहर सौ के लगभग हथियारबन्द लोगों की भीड़ जमा थी, जिनमें से कुछ लोग दरवाजा तोड़ने का प्रयास कर रहे थे।

भीतर से कुछ लोगों की घबराहट भरी चींखों-पुकार की तेज आवाजें आ रही थीं!

"गुप्ता कॉलोनी में हिन्दुओं ने आठ मुसलमानों को पैट्रोल छिड़ककर जिन्दा जलाकर मार डाला है...।" एक दढ़ियल युवक हवा में तलवार भांजते हुये नीचे से ऊपर तक का जोर लगाते हुये चींख-चींखकर बोला, "हमारे मौहल्ले में हिन्दू का ये एक ही घर है। कुल मिलाकर ये भी आठ लोग हैं। इन्हें मारकर गुप्ता कॉलोनी में मारे गये अपने आठ मुस्लिमों के कत्ल का इन्तकाम लेंगे।"

"जल्दी से दरवाजा तोड़ डालो। इससे पहले कि पुलिस आये...हमें रामकुमार के खानदान को खत्म करके इस मकान को आग के हवाले कर देना है।"

"दरवाजा ऐसे नहीं टूटेगा...पैट्रोल छिड़ककर आग लगा दो...।"

"पैट्रोल की जरूरत नहीं है। दरवाजा बस टूटने ही वाला है...।"

"क्या हो रहा है ये...?"

शेर की दहाड़ जैसी आवाज पर सभी ने हड़बड़ाकर उसी तरफ देखा तो हाथ में लाठी लिये हुये नजीर दिखलाई पड़ा।

कुछ लोग फौरन ही दुम दबाकर खिसक लिये।

"हटो...पीछे हटो...क्या कर रहे हो...?" नजीर ने दरवाजा तोड़ रहे चारों युवकों को पकड़कर जोर से धक्के दिये और फिर दरवाजे के बाहर वाले चबूतरे पर लाठी फटकारकर बोला, "ये मजमा क्यों लगाया हुआ है तुम लोगों ने? आखिर तुम लोगों के इरादे क्या हैं–?"

"गुप्ता कॉलोनी में हिन्दुओं ने आठ मुसलमानों को कत्ल कर दिया चाचा हिन्दुस्तानी। हम भी रामकुमार के परिवार को खत्म कर देंगे और हिन्दुओं को बतलायेंगे कि हम उनसे बिल्कुल भी कमजोर नहीं हैं...।"

"रामकुमार की बहू को बेइज्जत भी करेंगे हम...।"

'तड़ाक...तड़ाक...।'

दोनों युवकों को झन्नाटेदार थप्पड़ जड़ दिये नजीर ने और दोनों के गिरेहबान पकड़कर बोला, "नीच...कमीनों...कुत्तों! अगर गुप्ता कॉलोनी वालों ने मुस्लिमों को मार दिया है तो वहीं जाकर बहादुरी दिखलाओ ना–वैसे किसी को भी कानून को हाथों में लेने की इजाजत नहीं है। जिन लोगों ने भी आठ मुस्लिमों की जान ली है, उन्हें कानून बख्शेगा नहीं–उन्हें अदालत के जरिये सख्त-से-सख्त सजा मिलेगी। ये कौन-से इन्साफ की बात हुई कि गुप्ता कॉलोनी वालों के किये की सजा बेचारे रामकुमार को दे दी जाये? रामकुमार...माना कि हिन्दू है–लेकिन वो हम मुस्लिमों के कतई भी मुखालिफ नहीं है। वो हमेशा हमारे सुख-दुःख में शरीक रहा है। उसने दीपावली पर हम लोगों का मुंह मीठा कराने पर ही खुद मिठाई चखी है। ईद पर वो स्टॉल लगाकर हलवा बांटता है–हमारे बच्चों को ईदी देता है। हम पर कोई मुसीबत आई तो वो हमारे काम आया। तू उसे मारने की बात कर रहा है ओये फरदीन...तू? भूल गया अहसान फरामोश कि जब तेरे भतीजे अजान का एक्सीडेन्ट हो गया था तो रामकुमार ही उसे हॉस्पिटल ले गया था और उसके बेटे ने अपना खून देकर अजान की जान बचाई थी। तब तो तूने या तेरे घरवालों ने नहीं कहा था कि हमें एक हिन्दू का खून नहीं चाहिये–हमें अजान की मौत कबूल है–।"

फरदीन नामक युवक का सिर इतना झुका कि उसकी ठोड़ी सीने पर जा टिकी।

"और तू बिलाल...।" फरदीन का गिरेहबान छोड़कर नजीर दूसरे युवक को झिंझोड़ते हुये मुंह से मानो शब्दों की बजाय अंगारे ही उगलने लगा, "रामकुमार की बहू की बेइज्जती करने की बकवास कर रहा है...तू? शायद तेरी याद्दाश्त के शीशे पर अहसान फरामोशी की धूल चढ़ गई है। मैं हकीकत के पोंछे से उस धूल को पोंछकर तुझे याद दिलाता हूं। ज्यादा नहीं, सालभर पुरानी ही बात है ये। तेरी छोटी बहन शबनम स्कूल जा रही थी कि कुछ आवारा किस्म के युवकों ने उसे दबोच लिया था और कार में डालकर ले गये थे। वो मन्जर रामकुमार ने देखा तो स्कूटर से उस कार का पीछा किया और कार के आगे स्कूटर डालकर शोर मचा दिया था। गुन्डों ने हथियार निकालकर रामकुमार पर हमला बोल दिया था। लोग मारे खौफ के बस तमाशबीन ही बने रहे थे। रामकुमार...अपनी जान पर खेलकर गुन्डों से लड़ा था और शबनम को वहां से भगा दिया था। पुलिस के पहुंचने तक रामकुमार अधमरा हो चुका था।

उसे पन्द्रह दिन तक हॉस्पिटल में रहकर इलाज करवाना पड़ा था! शबनम ने बतलाया था कि उन गुन्डों के इरादे उसकी अस्मत से खेलकर उसे कोठे पर बेच देने के थे। रामकुमार ने तो तेरी बहन की अस्मत बचाने के साथ उसे कोठे की बदबूदार जिन्दगी जीने से बचा लिया था—शायद उसने गुनाह कर दिया था, जिसकी सजा देने के वास्ते तू उसकी बहू को बे-आबरू करने का इरादा रखता...।"

"बस...बस करो हिन्दुस्तानी चाचा...बस करो...।" फफक-फफककर रो पड़ा बिलाल नामक युवक और आंखों से आंसुओं की गंगा-जमुना बहाते हुये बोला, "मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। अर्चना भाभीजान के बारे में बकवास करते हुये मुझे अपनी बहन शबनम का ख्याल नहीं आया था। उफ्...दंगे की खबरों ने मुझे शैतान बना दिया था। खुदा मुझे माफ करे...।"

वह आंसू पोंछते हुये वहां से चला गया।

"तुम भी इन दंगाइयों में शामिल हो गये रहमान...।" एक अधेड़ को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरते हुये बोला नजीर, "क्या भूल गये कि तुम्हारी बेटी रूबैया के निकाह पर तुम्हारे घर में चोरी हो गई थी और दहेज का सारा सामान चला गया था। तुम्हें लगा था कि लड़के वाले बिना दहेज के शादी नहीं करेंगे। तब कौन काम आया था तुम्हारे? इसी रामकुमार ने तुम्हें पचास हजार रुपये दिये—जिनसे तुम दहेज का सामान खरीद कर लाये थे और रूबैया बेटी की शादी हो सकी थी। क्या तुम इस तलवार को रामकुमार के गले पर चलाकर ये साबित करना चाहोगे कि तुम्हारा कोई दीन-ईमान नहीं है? तुम मुस्लिम के नाम पर बदनुमा धब्बा ही हो?"

रहमान की आंखें झुक गई और हाथ से तलवार छूट गई।

"इस्लाम ने कब कहा कि मजलूमों पर सितम ढाओ? या किसी दूसरे के किये की सजा उसे दो, जो तुम्हारे काम आता रहा हो? रामकुमार और उसका परिवार मुस्लिम नहीं है तो क्या उसे खत्म कर देने का हक मिल गया है हमें? अगर हम गैर मुस्लिम को मारने पर आयेंगे तो क्या हमारा वजूद बचा रह पायेगा? दूसरों की तादाद तो हमसे कहीं ज्यादा है। वो हमें मारने पर आ गये तो...क्या हम बच पायेंगे? कुछ मुसलमानों को ये गलतफहमी है कि काफिरों को मारने पर शबाब मिलेगा, हमें जन्नत नसीब हो जायेगी—जबकि कुरान-ए-पाक में ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है, ना ही हमारे किसी नबी, पैगम्बर, सूफी-सन्त ने ऐसा फरमाया है। दूसरी बात ये कि काफिर का मतलब ये नहीं कि जो मुस्लिम नहीं है, वो काफिर है। काफिर वो मुसलमान होता है, जो अपने दीन, ईमान पर अमल नहीं

करता, अपने मजहब की शर्तों को पूरा नहीं करता। हिन्दू, सिख, बौद्ध या ईसाई काफिर नहीं हैं। तुम लोगों में थोड़ी-बहुत शर्म बाकी बची हो तो चुपचाप अपने घरों को लौट जाओ और अपने दिमाग में ऐसी-वैसी खुराफात मत लाना—।"

सभी चुपचाप वापिस लौट गये।

नजीर ने दरवाजा खटखटाया और बोला, "दरवाजा खोलो रामकुमार भाई! मैं नजीर हिन्दुस्तानी। सभी दंगाई चले गये। बेखौफ होकर दरवाजा खोलो। जब तक नजीर के जिस्म में एक भी सांस भी बाकी है—कोई माई का लाल तुम लोगों का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा—मुझ पर यकीन और भरोसा...।"

साठ वर्षीय रामकुमार ने दरवाजा खोला, जिसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और समूचा जिस्म पसीने से लथपथ था।

भीतर दाखिल होने पर नजीर ने दरवाजा बन्द कर दिया।

आंगन में रामकुमार की बीवी, तीन बेटे, दो बेटियां और बहू डरे-सहमे से खड़े थे।

"किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है...।" नजीर ने उन्हें ढांढस बन्धाया, "मैंने सभी को समझा-बुझाकर वापिस भेज दिया है। अब कोई भी वापिस ना लौटेगा! तुम लोग सभी मेरे साथ मेरे घर चलो। रात को वहीं रहना। सुबह वापिस आ जाना। चलो, मेरे साथ चलो...।"

रामकुमार और उसका परिवार नजीर के साथ उसके घर पर चला आया—नजीर, उसकी बीवी हफीजन, बेटे मुश्ताक और बेटी शमा ने उन लोगों की खातिरदारी में कोई कमी ना छोड़ी!

लेकिन नजीर भी उन लोगों के दुर्भाग्य से ना लड़ पाया था और अगले दिन बहुत बड़ा अनर्थ हो गया था!

☐☐☐
☐☐☐

मुम्बई के बहुत से इलाकों में कर्फ्यू लगा हुआ था, लेकिन हसनपुरा में कर्फ्यू नहीं था—सिर्फ दफा चवालीस लागू करके ऐलान करवा दिया गया था कि चार से अधिक लोग एक जगह पर इकट्ठा नहीं होंगे और सावधानी के तौर पर लोग अपने घरों में ही रहें।

रामकुमार का परिवार रातभर नजीर के घर में रहने पर सुबह अपने घर चला गया, ताकि स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा-पाठ कर सके।

उन लोगों को अभी गये हुये घण्टाभर ही हुआ था कि अचानक ही शोर होने लगा।

"बचाओ...बचाओ...।"

"नजीर भाई...नजीर भाई...।"

नजीर के हाथ से चाय का कप छूट गया और वो हड़बड़ाकर बोला, "ये...ये तो रामकुमार की आवाज है। लगता है कि वो लोग किसी मुसीबत में हैं...मैं देखता हूं।"

नजीर के घर में सब्जी या गोश्त काटने के चाकू व छुरे के सिवाय दूसरा कोई हथियार नहीं था—सो वह लाठी उठाकर दौड़ा—

लेकिन ये क्या—दरवाजा बाहर से बन्द था।

सिर्फ वो ही नहीं, दूसरा दरवाजा और सभी खिड़कियां भी बाहर से बन्द कर दी गई थीं।

बेटे मुश्ताक को साथ लेकर नजीर ने दरवाजा खोलने व तोड़ने की भरसक चेष्टा की लेकिन कामयाबी ना मिली तो वह सीढ़ियां चढ़कर ऊपर छत पर पहुंचा। मकान के दायें-बायें या पीछे की तरफ दूसरा कोई मकान नहीं था कि वो उससे नीचे उतरकर रामकुमार के मकान पर पहुंच जाता। सामने ही रामकुमार का मकान था, लेकिन बीच में पन्द्रह फुट चौड़ी गली थी।

रामकुमार के घर के दरवाजे बन्द दिखलाई पड़ रहे थे और घर के भीतर चींखो-पुकार मच रही थी।

"कौन है रामकुमार के घर में...?" छज्जे की रेलिंग को हथेलियों से पकड़े हुये चींख उठा नजीर, "मेरे घर के खिड़की-दरवाजे बन्द करके रामकुमार के घर में कौन गया है? मैं कहता हूं कि इन लोगों को छोड़कर चुपचाप बाहर आ जाओ—वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मैं पुलिस को तुम लोगों के बारे में बतला दूंगा। अगर सजा से बचना चाहते हो तो...फौरन ही बाहर चले आओ...।"

वह चींखता-चिल्लाता रहा, लेकिन हमलावरों के कानों पर जूं ना रेंगी।

रामकुमार तथा उसके परिजनों की मर्मान्तक चींखों से नजीर तड़पा जा रहा था—बेबसी का आलम ये कि वो रोने लगा।

अचानक ही सब कुछ खामोश हो गया।

चींखो-पुकार दम तोड़ गई।

दरवाजा खुला और हाथों में तलवार, छुरे व कुल्हाड़ी लिये हुये मौहल्ले के ही छह युवक बाहर निकलकर भाग निकले—जिन्हें नजीर ने पहचान लिया!

फिर किसी पड़ोसी ने नजीर के घर का दरवाजा खोला तो दौड़कर रामकुमार के घर पहुंचा।

भीतर का दृश्य बड़ा ही हृदय-विदारक था।

रामकुमार और उसके पूरे परिवार को बुरी तरह कत्ल कर दिया गया था।

हॉल रूम में खून-ही-खून फैला हुआ था।

रामकुमार की बहू और दोनों बेटियों की लाशों पर कोई वस्त्र नहीं था—लाशों को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था कि उन तीनों के साथ बलात्कार किया गया था।

घुटनों के बल बैठकर रोने लगा नजीर और रामकुमार के सिर पर हथेली रखकर बोला, "म...मुझे माफ कर देना रामकुमार भाई—मैं तुम्हारी और तुम्हारे बीवी-बच्चों की हिफाजत नहीं कर सका। लेकिन मैं उन शैतानों की बख्शीश नहीं करूंगा। मैंने उन लोगों को पहचान लिया है। मैं पुलिस को उनके बारे में बतलाकर उन्हें गिरफ्तार करवाऊंगा और अदालत में उनके खिलाफ गवाही देकर उन्हें सजा भी दिलवाऊंगा। उन हरामियों को अपने किये की सजा भुगतनी ही होगी। देखना कि मैं उन कमीनों का क्या हस्र करता हूं...!"



और फिर पुलिस के आने पर नजीर ने सारी बातें बतलाने पर उन छहों युवकों के नाम-पते बतला दिये।

पुलिस ने छहों युवकों को तुरन्त ही गिरफ्तार कर लिया और नजीर ने पुलिस स्टेशन जाकर उन छहों के खिलाफ एफ०आई०आर० दर्ज करा दी।

मौहल्ले के लोगों ने नजीर पर दबाव बनाया कि वो उन युवकों के खिलाफ गवाही ना दे—लेकिन नजीर ने ऐसे लोगों को बुरी तरह लताड़कर उनकी बोलती बन्द कर दी।

फिर अगले दिन एक धार्मिक नेता नजीर से मिलने उसके घर पर आ पहुंचा।

नजीर ने सत्तर वर्षीय हाजी इकबाल सिद्दकी का पूरा मान-सम्मान किया और नाश्ते में चाय के साथ नमकीन, बिस्कुट व बर्फी पेश की।

हाथ में पकड़ी तस्बीह के दानों को उंगलियों से चलाते हुये हाजी इकबाल गम्भीर भाव भंगिमाओं के साथ बोला, "उन छह नौजवानों ने रामकुमार और उसके खानदान के लोगों के साथ बहुत ज्यादती की नजीर! उन्हें कोई हक नहीं था...उन लोगों की जान लेने का...।"

"रामकुमार की बहू और बेटियों की आबरू भी लूटी उन कमीनों ने हाजी साहब—।"

"मैं जेल जाकर उन नौजवानों से मिला था। खूब जलील किया उन्हें—लानतें भेजी। वो रोने लगे। उनकी आंखों में पछतावे और शर्मिन्दगी के आंसू थे। बोले कि गुप्ता कॉलोनी में हिन्दुओं ने कई बेगुनाह मुस्लिमों को बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया था तो उनका खून खौल उठा था। ये उम्र ही कुछ ऐसी होती है कि खून खौल जाता है और जोश मारने लगता है। पुलिस ने बहुत मारा उन्हें—बहुत सताया है। ठीक से चल नहीं पा रहे हैं वो—चेहरे सूजे हुये हैं। उनके घरवाले भी बहुत दुःखी और परेशान हैं। कुछ भी हो, हैं तो अपने ही मजहब और कौम के बच्चे। उन्हें काफी सजा मिल गई। पछता रहे हैं कम्बख्त। आईन्दा ऐसी कोई गलती नहीं करेंगे। जो होना था...हो गया। उनकी उम्र ही क्या है! अगर उन्हें फांसी हो गई...उम्र कैद की भी सजा हो गई तो उनकी शादी ना होगी और उनके घरवालों को तो बेमतलब में ही खून के आंसू बहाने पड़ेंगे। तुमने एक अच्छे पड़ोसी होने का फर्ज तो निभा दिया नजीर—लेकिन तुम्हें अपनी कौम और मजहब का फर्ज भी निभाना चाहिये! कुछ भी हो...वो नौजवान हैं तो मुसलमान ही...।"

"आप चाहते क्या हैं हाजी साहब? जरा खुलकर फरमाइये...।"

हाजी इकबाल ने मूढ़े पर करवट बदली और चाय का कप मेज पर रखकर बोला, "मैं ये भी नहीं चाहूंगा कि तुम झूठे साबित हो जाओ। इस वास्ते तुम अदालत में बोल देना कि तुमने उन नौजवानों को रामकुमार के घर से निकलते देखा था, लेकिन उनके पास कोई हथियार नहीं था। डिफेंस लायर बोल देगा कि शोर-शराबा सुनकर ही वो छहो नौजवान रामकुमार के घर मदद की नीयत से गये थे, लेकिन लाशें देखकर वो घबरा गये और भाग निकले—उन्हें भागते देखकर तुम्हें गलतफहमी हो गई थी कि वो नौजवान ही गुनहगार हैं। मेडिकल रिपोर्ट तब्दील हो जायेगी। ये साबित कर दिया जायेगा कि उन्होंने रामकुमार की बहू और बेटियों के साथ रेप नहीं किया था। बस, तुम्हारी गवाही का बदलना जरूरी है! उन नौजवानों की जिन्दगी तुम्हारे हाथों में है नजीर! यूं क्यों घूरने लगे हो तुम भाई—?"

"मुझे एक सवाल का पूरी ईमानदारी के साथ जवाब देंगे आप हाजी साहब—?"

"पूछो, क्या पूछना चाहते हो तुम नजीर—?"

"रामकुमार के खानदान पर हुई ज्यादती और जुल्मो-सितम पर हिन्दुओं को जुनून आ जाये और वो आपके घर पर हमला बोल दें—आपके खानदान के साथ वो सब करें...जो रामकुमार के खानदान के साथ हुआ है...तो...?"

"नजीर...खामोश हो जा...।" हाजी इकबाल झटके के साथ उठ खड़ा हुआ और क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये चिल्लाया, "होश की दवा कर ओये नजीर। ऐसी बकवास करने से पहले एक बार सोच तो लिया होता तूने...।"

होंठों पर व्यंगपूर्ण मुस्कान को सजाकर बोला नजीर—"मैंने सिर्फ जिक्र किया और उसका तसव्वुर करके ही आप आपे से बाहर हो गये हाजी साहब! अगर सचमुच में ही आपके साथ ऐसा हो जाये तो...आपका ना जाने क्या हाल होगा! अपनी राजनीति के वास्ते मजहब और कौम को इस्तेमाल मत कीजिये। इन्सानियत की जमीन पर खड़े होकर इन्साफ की बात कीजिये। उन छह पाजियों ने आठ बेगुनाहों को बड़ी ही बेरहमी के साथ कत्ल कर डाला। तीन मासूमों के साथ मुंह काला किया। आपकी नजर में वो मुसलमान होंगे—मेरी नजर में तो वो सिर्फ शैतान ही हैं और शैतानों का साथ देने वाला भी शैतान होता है...।"

"नजीरऽऽऽ!"

"चिल्लाओ मत...बहरा नहीं हूं मैं...।" नजीर भी चिंघाड़ उठा, "मेरे घर में हो—इस वास्ते ही लिहाज कर रहा हूं—मैं उन शैतानों के खिलाफ अदालत में गवाही दूंगा। तुम उन्हें बचाने की कोशिश करो—मैं भी देखता हूं कि तुम उन्हें कैसे बचा पाते हो? अब मेहरबानी करके यहां से तशरीफ ले जाओ।"

इकबाल सिद्दकी पैरों से फर्श को कूटते हुये चला गया।

❑❑❑
❑❑❑

और फिर वो ही हुआ, जो नजीर ने कहा था।

वो किसी के भी दबाव में ना आया, ना ही किसी से डरा। उसने अदालत में उन छहों युवकों के खिलाफ गवाही दी और अदालत ने उनकी कम उम्र को देखते हुये फांसी की बजाय उम्र कैद की सजा सुना दी।

वो अदालत से बाहर निकला तो न्यूज चैनल [illegible] न्यूज-पेपर्स के संवाददातओं ने घेर लिया और तरह-तरह के [illegible] करने लगे मुख्य प्रश्न यही था कि उसने मुस्लिम होने पर भी मुस्लिम युवकों

के खिलाफ गवाही क्यों दी?

"मैं मुसलमान बाद में हूं...पहले इन्सान हूं और हिन्दुस्तानी हूं। मेरे वास्ते मजहब से बढ़कर इन्सानियत है। दुनिया की समझ में होंगे वो मुस्लिम युवक—मेरी नजरों में तो वो सब शैतान थे। उन्होंने बेगुनाहों को कत्ल किया—तीन मासूमों की अस्मत लूटी थी। ऐसे लोग माफी के काबिल नहीं होते। ऐसे मुजरिमों को बचाने की कोशिश करने वाले भी बुरे हैं। उस हादसे के बाद मैं भी अपनी जुबान पर ताला लगा लेता तो मैं अपनी ही नजरों में गिर जाता—मेरे जमीर का कत्ल हो जाता। मैंने कानून और इन्साफ का साथ दिया है। हर किसी को ऐसा ही करना चाहिये। मुझे पूरा ऐतबार है कि मेरे इस कदम पर मेरा खुदा मुझसे बहुत खुश होगा।"

सभी मीडिया वालों ने उसकी प्रशंसा की और अपने चैनल्स तथा न्यूज पेपर्स के माध्यम से नजीर की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

❑❑❑
❑❑❑

ठेले पर सरसों के तेल के टीन लादकर नजीर उन्हें दुकानदार तक पहुंचाने जा रहा था कि अचानक ही शोर-शराबा होने लगा—भगदड़ मच गई।

"भागो...भागो...दंगा हो गया...।"

"ईश्वर नगर में आमने-सामने की लड़ाई हो रही है। पहले पथराव हुआ था—लेकिन अब तो गोलियां चल रही हैं। कई लाशें बिछ चुकी हैं। ना जाने कब यहां भी मार-काट शुरू हो जाये...।"

धड़ाधड़...दुकानों के शटर गिरने लगे।

लोग गिरते-पड़ते इधर-उधर दौड़ रहे थे। किसी के पैरों से जूते-चप्पल निकल गये तो उन्हें उठाया नहीं—नंगे पैर ही दौड़ता चला गया।

नजीर के भी हाथ-पैर फूल गये। उसे अपनी जान से ज्यादा ठेले पर लदे बीस तेल के कनस्तरों की चिन्ता थी, जो किसी की अमानत थे।

"जो होगा, देखा जायेगा...।" बड़बड़ाकर वो ठेले को पकड़े हुये दौड़ने लगा।

वो उस दुकान पर पहुंच ही गया।

दुकानदार और उसके नौकर जल्दी-जल्दी बाहर का सामान भीतर पहुंचा रहे थे। नजीर ने भी फटाफट तेल के सभी टीन दुकान के भीतर पहुंचाये और अपनी मजदूरी के पैसे लेकर वहां से चल

दिया।

शिव मूर्ति वाले चौक पर शोर मचाते हुये दंगाइयों ने उसे घेर लिया, जोकि हथियारों के साथ पैट्रोल की जरी केन भी लिये हुये थे।

❑❑❑
❑❑❑

ठेले को छोड़कर नजीर ने हथेलियों को आपस में जोड़ा और दुआ पढ़ने लगा—

"अल्लाहुम—म इन्ना नजअलु—क फी नुहूरिहिम व न अूजू कि, क मिन शुरूरिहिम।"

जिसका भावार्थ था कि ऐ अल्लाह! हम तुझे इन दुश्मनों के सीने में रहम करने वाला बनाते हैं और इनकी शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं।

"मुल्ला है ये साला...।" माथे पर केसरिया रंग की पट्टी बांधे और हाथों में तलवार लिए एक युवक अपने साथियों से बोला, "मोटा बकरा हाथ लगा है। ये साले किसी हिन्दू के फंसने पर उस पर कोई रहम नहीं खाते। उसे बड़ी ही बेरहमी के साथ कत्ल कर डालते हैं, इसे भी काट डालो—फिर इस पर पैट्रोल डालकर आग लगा देते हैं। अरे...वो भाग रहा है...पकड़ो साले को...।"

नजीर वास्तव में ही ठेला छोड़कर भाग निकला था, लेकिन...?

"अ...आह...!" अचानक ही वो ठोकर खाकर गिरा।

इससे पहले कि वो उठकर पुनः दौड़ता, उसके कन्धे पर तलवार का वार हुआ—मारे पीड़ा के वो चींख उठा।

उसे लगा कि मौत नजदीक ही है—लेकिन तभी चमत्कार हो गया।

'धांय...धांय।'

हवा में हुये दो फायरों ने हमलावरों के हथियारों समेत हमले के लिये उठे हाथों को ठिठका दिया।

सफेद रंग की कार के समीप खड़ा था एक खूबसूरत तथा नीली आंखों वाला युवक, जिसके दायें हाथ में रिवॉल्वर थी।

उसके माथे पर रोली व चावलों का तिलक तथा कलाई पर मौली बन्धी देखकर एक हमलावर चहका—"अरे, ये तो अपना हिन्दू भाई ही है। इससे डरने की क्या जरूरत है? चलो, इस मुल्ला की बलि दे दो—मां काली प्रसन्न हो जायेगी।"

□□□
□□□

'धांय...धांय...।'

"आह...!"

"आह...!"

हाथों पर गोलियां खाकर दो दंगाई हथियार छोड़कर मारे पीड़ा के चींखने-चिल्लाने लगे।

"चलो, भागो यहां से...।" काले सूट तथा नीली आंखों वाला वो खूबसूरत युवक सर्द लहजे में बोला, "नजीर साहब को परेशान मत करो...।"

चौंककर नजीर ने उसे देखा, जो कि हल्के सुनहरे व अर्ध-घुंघराले बालों वाला था।

"भला इसे मेरा नाम कैसे मालूम?"

"तुम तो हिन्दू मालूम पड़ते हो—?" एक दंगाई ने पूछा।

"हां, हिन्दू भी हूं—लेकिन उससे पहले हिन्दुस्तानी हूं—और उससे पहले इन्सान हूं—।"

"कोई हिन्दू मुसलमानों के इलाके में फंस जाये तो ये लोग उस पर कतई भी रहम नहीं करते...।" एक कुल्हाड़ीधारी रोष भरे लहजे में बोला, "बेरहमी के साथ उसे कत्ल कर डालते हैं। लेकिन कुछ हिन्दू बुजदिल निकल जाते हैं। तुम जैसे हिन्दुओं के कारण ही हिन्दुओं का नाश हो रहा है।"

मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला तथा बोला, "इसे बुजदिली नहीं, मानवता कहते हैं...इन्सानियत! तुम लोगों ने शायद इन्हें पहचाना नहीं है। टी०वी० पर इन्हें दिखलाया गया—अखबारों में भी इनके बारे में लेख छपे थे। ये नजीर हिन्दुस्तानी जी हैं। इन्होंने एक हिन्दू परिवार के कातिल मुस्लिमों के खिलाफ गवाही दी और उन्हें सजा दिलवाई। ये जाति, धर्म से बढ़कर इन्सानियत को अहमियत देते हैं। देश का बंटवारा होने पर ये पाकिस्तान से हिन्दुस्तान चले आए थे, क्योंकि इन्हें हिन्दुस्तान से प्यार था—अपनी सैकड़ों बीघा जमीन का भी मोह नहीं किया था इन्होंने। हमें इनका मान-सम्मान करना चाहिये। कुछ बुरे लोगों के किये की सजा सभी को नहीं दी जा सकती। तुम लोग कौन-सा अच्छा काम करने निकले हो भई? किसी निर्दोष की ही जान लोगे तुम। तुम भले ही किसी की जान लो—लेकिन खून तो इन्सानियत का ही बहेगा। इससे पहले कि पुलिस आकर तुम लोगों को पकड़ ले—अपने घरों को लौट जाओ...।"

"नहीं। हम नहीं जायेंगे। हम इस मुल्ला को कत्ल करेंगे।"

"मेरे होते हुये तुम लोग इनको छू भी नहीं सकोगे...।"

"इस रिवॉल्वर के दम पर ही तू इतना ऐंठ रहा है...।"

"और तुम लोग अपने हाथों में पकड़े हथियारों के दम पर ही उछल रहे हो...।" वह रिवॉल्वर कार की खुली खिड़की से भीतर फेंककर बोला, "चलो, तुम भी क्या याद करोगे। लो, मैं निहत्था हो गया। देखूं कि तुम कितने शूरवीर हो...।"

"तेरी तो...।" एक युवक ने हवा में तलवार वाला हाथ उठाकर वार करना चाहा—लेकिन उसने हवा में ही उसकी कलाई पकड़कर जोर से उमेठ दी और उसके चेहरे पर घूंसा जड़ दिया।

घूंसा नहीं, मानो हथौड़ा ही था—

दंगाई चींख मारकर हवा में उछला और फिर सड़क पर गिरते ही बेहोश हो गया।

ढेर सारे दंगाई शोर मचाते हुये नीली आंखों वाले पर झपटे।

नजीर डर गया—लेकिन काले सूट वाले ने तो मानो चमत्कार ही कर दिया। वो दायें पैर को ऊपर उठाकर बायें पैर की धुरी पर कृष्ण भगवान के सुदर्शन-चक्र की मानिन्द ही बला की गति से घूमने लगा और उसके उठे हुये पैर की चोटों से कई दंगाई चींखते-चिल्लाते हुये सड़क पर जा गिरे।

उनके हथियार इधर-उधर जा गिरे।

बाकी दंगाइयों को आभास हो गया कि उनका पाला किसी खतरनाक हस्ती से पड़ गया है—वो पलटकर भाग निकले।

"आइये, हिन्दुस्तानी जी...।" वह नजीर का हाथ पकड़कर बोला, "मैं अपनी गाड़ी से आपको छोड़ देता हूं।"

"ले...लेकिन तुम कौन हो भाई? तुमने तो फरिश्ते की तरह आकर मेरी मदद की है।"

"मैं तो एक साधारण मनुष्य ही हूं हिन्दुस्तानी जी। वैसे मेरा नाम केशव पण्डित है...।"

"केशव पण्डित...!" नजीर बुरी तरह चौंककर बोला, "ओह...तो आप केशव पण्डित हैं। आपका तो बहुत नाम है। बहुत मशहूर वकील और जासूस हैं आप। और आपके बेटे आशीर्वाद पण्डित ने तो दस साल की उम्र में ही वकील बनकर अदालत में धूम मचा दी है। वरना दस साल के बच्चे को तो कपड़े पहनने की भी तमीज नहीं होती! लोग आपको दिमाग का जादूगर...तो आशीर्वाद को दिमाग का चैम्पियन कहते हैं। आप दोनों हमारे वतन

की शान हैं। खुदा आप दोनों के उम्रदराज़ करे। आप दोनों का इकबाल बुलन्द हो...।"

"धन्यवाद, हिन्दुस्तानी जी। आप भी बहुत अच्छे हैं। आप हिन्दू-मुस्लिम एकता के उदाहरण हैं। आपको मैं आपके घर छोड़ आता हूं। चलिये।"

"नहीं—मैं चला जाऊंगा पण्डितजी—।"

"नहीं। रास्ते में दिक्कत हो सकती है आपको हिन्दुस्तानी जी। दंगाइयों के लिये आप हिन्दुस्तानी नहीं, सिर्फ मुसलमान ही होंगे।"

"आप भी तो मुस्लिमों के वास्ते सिर्फ हिन्दू ही होंगे। मेरा घर मुस्लिमों की बस्ती में है। ठीक है—आप मुझे बाहर सड़क पर ही उतार देना—मैं बिना किसी दिक्कत के अपने घर पहुंच जाऊंगा।"

केशव ने नजीर को अपनी गाड़ी में बिठाया और हसनपुरा की मुख्य गली के बाहर छोड़ दिया।

□□□

□□□

चेहरों पर मफलर बांधे हुये चार लोग ओम प्रकाश विष्णोई के मकान में घुसे। उन्होंने हथियारों से डरा-धमकाकर ओम प्रकाश विष्णोई, उसकी बीवी और पन्द्रह वर्ष के दो जुड़वा बेटों को कुर्सियों पर बिठाकर घर से ही हासिल किये वस्त्रों से कसकर बान्ध दिया।

एक ने झोले से एक टाइम-बम निकालकर उसमें दस मिनट बाद का समय सैट करके उसे एक्टिव करके फर्श पर रख दिया और बोला, "दस मिनट तक खौफ और दहशत का भरपूर मजा लो सालो। फिर धमाके के साथ बम फटेगा और तुम चारों के चीथड़े-से उड़ जायेंगे...।"

दंगाई चले गये और बाहर से दरवाजा बन्द कर गये।

विष्णोई परिवार आतंकित हो मदद की आशा से चीखने-चिल्लाने लगा!

चीखो-पुकार सुनकर एक पड़ोसी दरवाजा खोलकर भीतर पहुंचा तो टाइम-बम देखकर उसकी घिग्घी बन्ध गई।

आंधी की चपेट में आई जर्जर झोपड़ी की मानिन्द ही वो बुरी तरह कांपने लगा।

"हमें बचाओ राजवीर भाई...।" ओम प्रकाश रोते हुये बोला, "बम को हाथ मत लगाना। बस, हम लोगों को खोल दो। हम घर से बाहर निकल जायेंगे।"

"ब...बम...फटने वाला है—।" कहने पर राजवीर नामक वो 'वीर' सिर पर पैर रखकर भाग निकला।

विष्णोई परिवार उसे पुकारता ही रह गया।

विष्णोई परिवार की दशा 'काटो तो खून नहीं' वाली हो चली।

क्या वो लोग बम के धमाके में उड़ जायेंगे? या कोई फरिश्ता उनका मददगार बनकर आयेगा और उनकी जान बचायेगा?

□□□

□□□

ओम प्रकाश विष्णोई के घर में टाइम-बम है—ये समाचार पैट्रोल की आग की मानिन्द ही इलाके में फैलता चला गया।

काफी लोग एकत्रित हो गये थे लेकिन कोई भी ओम प्रकाश विष्णोई के घर के करीब जाने का साहस नहीं कर पा रहा था।

घर के भीतर से रोने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं।

"क्या हो रहा है भाई लोगों—?" तभी वहां नजीर आ पहुंचा।

"थोड़ी देर पहले कुछ नकाबपोश बिना नम्बर प्लेट वाली कार में आये थे...।" एक अधेड़ ने बतलाया, "हां, चार लोग थे। उनके पास हथियार थे। वो ओम प्रकाश, उसकी घरवाली और दोनों लड़कों को कुर्सियों पर बान्धकर एक टाइम-बम लगा गये। टाइम-बम फटने ही वाला है।"

"कमाल है...कोई उन लोगों की मदद के वास्ते भीतर नहीं गया! हद हो गई बेशर्मी की...।" कहने पर नजीर घर की तरफ बढ़ा।

"क्या बेवकूफी कर रहे हो तुम हिन्दुस्तानी चाचा...?" एक दढ़ियल युवक चिल्लाकर बोला, "वो हिन्दू फैमिली है। तुम क्यों अपनी जान जोखिम में डाल रहे हो...?"

नजीर ने पलटकर उस युवक को भस्म कर देने वाली दृष्टि से घूरा, फिर दौड़कर घर में दाखिल हो गया।

"हमारी मदद करो...।"

"हमें खोल दो...।"

"हमें बचा लो...।"

"भगवान तुम्हारा भला करेगा...।"

चारों प्राणी रोते हुये बोले।

"तुम लोगों को खोलने का वक्त नहीं है...।" टिक-टिक की आवाज करते बम की घड़ी देखकर बोला नजीर, "सिर्फ तीन मिनट ही बची हैं। मैं इस बम को किसी नाले में फेंक देता हूं।"

और नजीर ने वो बम उठा लिया।

घर से बाहर निकला तो बाहर खड़े लोग मारे आतंक के चीखते-चिल्लाते हुये इधर-उधर भागने लगे।

किसी नाले की तलाश में नजीर दौड़ पड़ा और बोला, "अगर ये बम ऐसे ही फट गया तो ना जाने कितने लोगों की जान चली जायेगी। करीब ही नाला है—उसमें इस बम को फेंक देता हूं।"

वह दौड़ते हुये नाले के करीब पहुंच गया, लेकिन...।

"ओह...!" वह ठोकर खाकर गिर पड़ा।

इससे पहले कि वो उठ पाता—

धड़ामऽऽऽऽ!

कर्णभेदी धमाका!

एक इन्सानी जिस्म आग के शोलों में लिपटा हुआ ऊपर की तरफ उड़ा और हवा में ही खील-खील हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

"मैं मरते दम तक हिन्दुस्तानी जी का अहसानमन्द रहूंगा। मैं ही क्या...मेरा पूरा परिवार उनका अहसानमन्द रहेगा।"

हफीजन, मुश्ताक तथा शमां के सामने बैठकर रो रहा ओम प्रकाश विष्णोई बोल रहा था, "मैंने अपने पड़ोसी राजीवर पर बहुत-से अहसान किये हुये थे। उसकी मां के ऑपरेशन के लिये, बहन की शादी के लिये पैसे दिये थे। उसका बिजनेस टूट रहा था तो उसे पांच लाख रुपये दिये थे। लेकिन जब मैं और मेरा परिवार मुसीबत में पड़ा तो वो पीठ दिखलाकर भाग गया था। हमें तो पूरा विश्वास हो चला था कि...हम गये—बम फटेगा और हम उड़ जायेंगे। लेकिन भगवान ने हमें बचाने के लिए उस फरिश्ते को भेज दिया। अपनी जान की परवाह ना करते हुये वो बम लेकर भागे और बम फटने पर...भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। काश...काश कि वो बच जाते...उनके चरणों की धूल माथे पर लगाने का सौभाग्य तो मिल जाता। मरते दम तक इस बात का अहसास रहेगा कि वो हमारी वजह से मारे गये...।"

"ऐसा सोचकर आप दिल दुःखी मत करिये...।" हफीजन दामन के पल्लू से आंसू पोंछकर भर्राये कण्ठ से बोली, "खुदा ने उनकी मौत ऐसे ही होनी लिखी थी। उस पाक परवर दिगार की मर्जी के बिना तो कुछ भी नहीं हो सकता।"

"अम्मीजान बजा फरमा रही हैं जनाब...।" बोला मुश्ताक, "जो भी हुआ...खुदा की मर्जी से ही हुआ। आप दुःखी मत होइये...।"

ओम प्रकाश ने झिझकते हुये लैदर के काले बैग की जिप खोली और बोला, "हिन्दुस्तानीजी ने जो मेरे वास्ते किया...उसका अहसान

तो मैं किसी भी तरीके से नहीं चुका सकता। इसे स्वीकार कर लेंगे तो मुझ पर बहुत बड़ा अहसान होगा।"

उसने बैग से हजार-हजार के नोटों की पांच गड्डियां निकालीं और हफीजन के पैरों के पास रख दीं।

बुरा नहीं माना हफीजन ने, ना ही उसे क्रोध आया। बड़ी ही विनम्रता के साथ बोली वह, "शायद आप नहीं जानते कि मुश्ताक और शमा के अब्बूजान खुद्दार किस्म के थे। वो दौलत को इन्सानियत का दुश्मन मानते थे। मानती हूं कि हमारे घर की हालत बढ़िया नहीं। लेकिन मैं मेहनत-मजदूरी कर लूंगी। मुश्ताक अपने अब्बू का ठेला लेकर मजदूरी करने निकल पड़ेगा। रोटी खायेंगे तो मेहनत के पसीने की—वरना भूखे ही सो जायेंगे। खुदा के वास्ते आप कागज के इन रंगीन टुकड़ों को वापिस बैग में रख लीजिए।"

ओम प्रकाश ने चुपचाप गड्डियों को बैग के हवाले कर दिया।

केशव तब वहीं पर था—जोकि शोक व्यक्त करने के लिये आया था।

❑❑❑

❑❑❑

केशव के बहुत मना करने पर भी शमा नहीं मानी और चाय बनाने के लिये किचन में चली गई।

"एक शर्त पर ही चाय पीऊंगा मांजी। मेरे साथ आप लोगों को भी चाय पीनी होगी।"

"लेकिन...।"

"तो फिर मैं चलता हूं...।" केशव उठने को हुआ तो हफीजन ने हाथ पकड़कर बिठा लिया और तेज आवाज में बोली, "चार कप चाय बनाकर लाना शमा—।"

शमा चार कप चाय बना लाई—साथ ही नमकीन और बिस्कुट भी ले आई थी।

"आप तो बहुत बड़ी हस्ती हैं पण्डितजी...।" उत्साह से भरा हुआ बोला मुश्ताक, "मेरे दोस्त आकिल ने मुझे आपका नॉवल पढ़ने को दिया था...कानून की लोमड़ी। फिर तो मैंने आपके कई नॉवल्स पढ़े। आपके बेटे आशीर्वाद के भी 'दस साल का वकील, कानून का बाप और बेटा हिन्दुस्तान का...' भी पढ़े हैं। फिलहाल आपने कौन-सा केस सोल्व किया है?"

"गौरव उस्मान पुरकर नामक एक मुजरिम को पकड़कर कानून के हवाले किया है। छोटा-सा ही केस था, तीन घण्टे में ही सोल्व हो गया था। ओम प्रकाश विष्णोई से मिला था मैं और उसने कुछ

लोगों पर संदेह जाहिर किया था। मैं सभी संदिग्ध लोगों से लोगों से मिला तो गौरव उस्मान पुरकर ही मुजरिम निकला। उसकी ओम प्रकाश के साथ पुरानी दुश्मनी थी। उसी ने चार पेशेवर गुन्डों को ओम प्रकाश के घर वो टाइम-बम देकर भेजा था। वो चारों गुन्डे भी पकड़े गये। पांचों को सख्त-से-सख्त सजा दिलवाऊंगा मैं।"

"शुक्रिया, पण्डितजी! मेरे खाविन्द तो जिन्दा नहीं हो सकते—लेकिन उन पांचों शैतानों को सजा मिलने पर उनकी रूह को बहुत सकून मिलेगा। आपने तो उनकी तब भी मदद की थी, जब वो दंगाइयों से घिर गये थे।"

"वो तो मेरा इन्सानी कर्त्तव्य था मांजी। खैर, मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूं—क्या मिलेगा—?"

"भला मैं गरीब औरत आपको क्या दे सकती हूं पण्डितजी—?"

"स्वयं को गरीब मत कहिये मांजी। मैं जो मांगना चाहता हूं, वो आपके अधिकार में है।"

"तो फिर ठीक है—बोलिये, क्या चाहिये आपको—?"

□□□

□□□

"मुझे भी अपना बेटा बना लीजिये—।"

हफ्जीन, मुश्ताक तथा शमा भौचक्का-से केशव को देखते रह गये!

"क्या हुआ मांजी—क्या मैं आपका बेटा बनने के काबिल नहीं हूं—?"

"न...नहीं...ये क्या बोल रहे हैं आप पण्डितजी...?" हफीजन हड़बड़ाकर बोली, "भला कौन ऐसी मां होगी, जो आपके जैसे काबिल, मशहूर और फरिश्ते जैसे आदमी को अपना बेटा बनाने में फख्र महसूस ना करेगी?"

"तो फिर मेरें सिर पर हाथ रखकर मुझे अपना बेटा बना लीजिये मांजी।"

हफीजन ने गदगद भाव से दोनों हाथों को केशव के सिर पर रख दिया तथा भर्राये कण्ठ से बोली, "आप मेरे बेटे हैं पण्डितजी...।"

"कोई मां अपने बेटे को आप और पण्डितजी तो नहीं कहती मांजी। अगर वास्तव में ही आप मुझे बेटा बना रही हैं तो मुझे तू या हद से हद तुम बोलिये और मेरा नाम केशव लीजिये। आप और जी नहीं चलेगा...बिल्कुल नहीं चलेगा। क्या कबूल है आपको?"

"पगला कहीं का...कबूल है मुझे। तू आज से मेरा बेटा है केशव।"

"गुड...ये हुई ना कोई बात। आपने मुझे अपना बेटा बनाया है और मैंने आपको मां बनाया है। इस नाते मैं मुश्ताक और शमा का बड़ा भाई हुआ कि नहीं? क्या बोलते हो तुम दोनों—?"

"मेरी खुशकिस्मती कि मुझे आप जैसे बड़े भाई मिले हैं...।" शमा मारे खुशी के रोते हुये बोली, "मैं इतनी खुश हूं कि...बतला नहीं सकती।"

"अब्बूजान के यूं अचानक चले जाने पर मैं फिक्रमन्द हो चला था कि घर की जिम्मेदारी कैसे निभा पाऊंगा। अम्मीजान और शमा की जिम्मेदारी कैसे निभा सकूंगा? लेकिन आपके रूप में बड़ा भाई मिल गया तो मैं बेफिक्र हो गया। वैसे मैंने अब्बूजान के ठेले को चलाने का फैसला कर लिया है।"

"तो फिर तुम्हारी पढ़ाई का क्या होगा मुश्ताक—?"

"लेकिन घर का खर्चा भी तो है भाईजान। मैं अम्मीजान को किसी भी कीमत पर काम नहीं करने दूंगा।"

"मैं तुम्हें पढ़ा-लिखाकर मिलिट्री में भेजूंगा मुश्ताक—ताकि तुम्हारे अब्बू की इच्छा पूरी हो सके! शमा भी पढ़ेगी।"

"लेकिन...।"

"मैं जानता हूं कि तुम लोग स्वाभिमानी हो। इसलिये मैं तुम लोगों को नकदी नहीं दूंगा। लेकिन मैं जो करना चाहता हूं...वो बड़ा बेटा होने के नाते मेरा अधिकार बनता है। मेरे एक परममित्र हैं...सेठ उस्मान भाई। उनकी गारमेन्ट फैक्ट्री है, वो पैन्ट और शर्ट बनाकर एक्सपोर्ट करते हैं। उनके आदमी सिलाई के लिये शर्ट, पैन्ट और रॉ-मैटीरियल यहां पर भेजेंगे और तैयार होने पर पैसे देकर माल ले जायेंगे। मांजी घर में ही सिलाई करेंगी। शमा को पढ़ाई के बाद जो टाइम मिलेगा—उसमें ये मांजी की मदद कर सकती है। मैंने हिसाब लगाया था। बहुत थोड़ा काम करके भी इतनी कमाई हो जाया करेगी कि घर का खर्चा भी निकलेगा और मुश्ताक, शमा की पढ़ाई भी हो जायेगी। इसी के साथ तुम एक घण्टे का समय निकालोगे मुश्ताक और मेरे घर आया करोगे। वहां मेरे परिचितों के कुछ बच्चे आया करेंगे। तुम उन्हें ट्यूशन दोगे और बदले में तुम्हें फीस मिलेगी। मैं समझता हूं कि ऐसा होने से तुम लोगों के स्वाभिमान को कोई चोट नहीं पहुंचेगी। अब मैं चलूंगा। मुझे सी०एम० साहब से मिलना है। उनसे इस मौहल्ले की बाहर वाली सड़क का नाम नजीर हिन्दुस्तानी जी के नाम पर रखवाना है। मुझे पूरी आशा है कि वो

मान जायेंगे। मैं शाम को फिर आता हूं—। सोफिया और आशीर्वाद को भी अपने साथ लाऊंगा।"

केशव के जाने पर हफीजन दोनों हाथ उठाकर बोली, "ऐ मेरे पाक परवर दीगार! तूने हमें केशव के रूप में एक अच्छा और मजबूत रखवाला दे दिया है। उसको उम्रदराज करना और अपनी रहमतों के साये में रखना...।"

❑❑❑

❑❑❑

और फिर केशव ने गारमेन्ट फैक्ट्री वाले से हफीजन को काम दिलवा दिया। घर पर ही सामान आ जाता और माल के तैयार होने पर फैक्ट्री के लोग ही माल लेने आ जाते और पारिश्रमिक के पैसे दे जाते—कुल मिलाकर अच्छी-खासी आमदनी हो रही थी। हसनपुरा की मेन रोड का नाम नजीर हिन्दुस्तानी रोड हो गया।

मुश्ताक केशव के बंगले पर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने जाने लगा—उसे भी फीस के रूप में बढ़िया पैसे मिल रहे थे।

मुश्ताक तथा शमा की पढ़ाई भी हो रही थी और घर का खर्च भी चल रहा था।

इन्टर मीडियेट पास करने पर मुश्ताक मिलिट्री में भर्ती हो गया—वो ट्रेनिंग पर चला गया तो केशव ने उसके हिस्से की जिम्मेदारी उठा ली—वो हफीजन तथा शमा का हर प्रकार से ख्याल रख रहा था।

शमा ने भी इन्टरमीडियेट पास कर ली तो उसकी शादी उसके मंगेतर के साथ कर दी गई। मुश्ताक भी छुट्टियां लेकर आया—लेकिन शादी के तमाम बन्दोबस्त केशव ने किये हुये थे।

शादी इतनी धूमधाम के साथ हुई कि सभी 'वाह-वाह' कर उठे थे।

फिर एक वर्ष पश्चात् ही मुश्ताक की शादी सायरा नाम की खूबसूरत युवती के साथ हो गई। सायरा हफीजन के पास रहकर उसकी सेवा करती रही। मुश्ताक छुट्टियां लेकर कुछ दिनों के लिये आता था!

सायरा ने एक खूबसूरत बेटे को जन्म दिया—जिसका नाम आमिर रखा गया।

अपनी देशभक्ति, बहादुरी और जांबाजी के बलबूते पर मुश्ताक मेजर की पोस्ट तक पहुंच गया।

और फिर पाकिस्तान के साथ भारत का वो युद्ध हुआ जोकि कारगिल युद्ध के नाम से जाना जाता है।

बर्फ से ढकी ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर भीषण ठण्ड के बावजूद भारत मां के वीर सपूत सर्द हवाओं के थपेड़ों के साथ दुश्मनों से भी मुकाबला कर रहे थे।

जिन्दगी और मौत के बीच आंख-मिचौली चल रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

"भारत माता की जय!"

"हिन्दुस्तान जिन्दाबाद!"

मिलिट्री ट्रकों का काफिला गंतव्य की तरफ बढ़ रहा था और उनमें सवार जवान पूरे उत्साह से भरे हुये जय-जयकार कर रहे थे।

एक जीप में सवार मेजर की वर्दी वाले मुश्ताक ने मोबाइल फोन पर अपने घर का नम्बर मिलाया और घण्टी बजने पर व्याकुलता के साथ अपने किसी की आवाज सुनने की इच्छा करने लगा।

"हैलो...कौन?"

"अ...अम्मीजान...मैं...मैं...।" हफीजन की आवाज सुनकर वो भाव-विभोर हो चला, "मुश्ताक हिन्दुस्तानी...अस्सलामु अलैकुम व रहम तुल्लाह...।"

"व अलै कुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि। खुदा तुम्हें उम्रदराज करे। अपने मरहूम अब्बू का नाम रोशन करो। सुना है कि सरहद पर जंग छिड़ गई है—?"

"हां, अम्मीजान! आप तो जानती हैं कि पड़ोसी मुल्क की सरकार और वहां के हुक्मरान कितने बुरे हैं। पाकिस्तान के कुछ फिदाईनरूपी दहशतगर्दों ने हमारे मुल्क की सुचको टौली और बटालिक सैक्टर पर कब्जा कर लिया है—जो कि एल०ओ०सी० यानि लाइन ऑफ कन्ट्रोल की दखलअन्दाजी है—बहुत ही गिरा हुआ काम है! हमारी मिलिट्री के जवान कारगिल में जंग लड़ रहे हैं। हमारी बटालियन भी उस तरफ कूच कर रही है। हम लोग रात में मोर्चे पर पहुंच जायेंगे। वहां पर नेटवर्क ना होने की वजह से फोन पर बात ना हो सकेगी—इसलिये अभी बात कर रहा हूं। फिर तो जंग के बाद ही बातें हो सकेंगी। आपकी तबियत कैसी है अम्मीजान! ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल हुआ कि नहीं—?"

"अब तो ठीक है मुश्ताक! डॉक्टर ने रोजाना चार गोलियां खाने को कहा है। रोजाना डॉक्टर शकील मशीन लेकर चैक करने आता है—रोजाना ही ब्लड प्रेशर ठीक निकल रहा है।"

"शमा कहां है अम्मीजान—?"

"वो तो अपनी ससुराल में है। उसकी सास को बुखार हो गया

था तो वो फोन आने पर चली गई। तुम्हें याद कर रही थी। बहू बेगम...मुश्ताक का फोन है—जल्दी से आ जाओ। पूरी बहादुरी के साथ लड़ना बेटा—दुश्मनों के छक्के छुड़ा देना।"

"ये भी कोई कहने की बात है अम्मीजान। अगर दुश्मन की कोई गोली लगी तो सीने पर लगेगी—पीठ पर नहीं। बुरा मत मानना अम्मीजान और टेंशन भी मत लेना—अगर मैं वतन की खातिर लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं तो मेरे जनाजे पर रोना मत और मेरे बेटे को भी मिलिट्री में ही भर्ती करना।"

"खुदा तुम्हारी हिफाजत करेगा मुश्ताक। लेकिन वतन की आबरू पर बन आये तो जान देने से हिचकना मत। ले...बहू से बात कर बेटा...।"

"हैलो जी...।" सायरा की मधुर आवाज ने मुश्ताक के कान के भीतर शहद-सा घोलना शुरू कर दिया, "जंग शुरू हो गई है। क्या आप बॉर्डर पर हैं जी—?"

"मैं बॉर्डर पर ही जंग करने के वास्ते जा रहा हूं सायरा—इस वक्त रास्ते में हूं। रात तक पहुंच जाऊंगा। आगे चलने पर नेटवर्क की प्रॉब्लम हो जायेगी। फोन पर बात नहीं हो पायेगी—इसलिये फोन मिला लिया। तुम ठीक तो हो ना?"

"जी...ठीक हूं। आमिर भी बढ़िया है—वो सो रहा है। बोलने लगा है। मुझे मां और अम्मा को मा-मा बोलता है। आपको बू-बू बोलता है। अपना ख्याल रखना जी। आप ही तो हमारे सबकुछ हैं।"

"मैं मौत के साथ आंख-मिचौली खेलने जा रहा हूं सायरा। दोनों तरफ से गोलियां, बम और मिसाइलें चलेंगी। टैंक भी गरजेंगे। कुछ भी हो सकता है। अपने दिल को अभी से मजबूत बनाकर रखो। अगर मुझे शहादत मिलती है तो तुम्हें ही अम्मीजान और आमिर को सम्भालना है—दोनों की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर उठानी होगी। वैसे केशव भाईजान हैं। वो तुम लोगों का हर तरह से साथ देंगे। उन्हें याद करके ही मैं दुश्मनों पर यलगार बोलने वाला हूं। अगर कुछ हो जाये तो कतई भी गमजदा मत होना—हिम्मत मत हारना। फख्र महसूस करना कि तुम शहीद की बेवा नहीं, शहीद की बीवी हो। आमिर को मेरी तरफ से प्यार करना। अब मैं फोन बन्द करता हूं...अल्लाह हाफिज...।"

"अल्लाह, हाफिज...मेरे मोहसिन...।"

मुश्ताक ने फोन काट दिया और हाथों को दुआ मांगने वाली मुद्रा में जोड़कर बुदबुदाया—"ऐ खुदा! ऐ दो जहां के मालिक। मेरे

पाक परवर दीगार! मुझे इतनी हिम्मत बख्शना कि मैं दुश्मनों के छक्के छुड़ा सकूं। मेरे हाथों कुछ ऐसा हो कि हरेक हिन्दुस्तानी मुझ पर फख्र महसूस करे—।"



"हमारा देश भारत...हिन्दुस्तान...दुनिया का सबसे महान देश है। कोई देश इसलिये महान नहीं हो जाता कि उसको कुदरत ने सोने, चांदी, हीरे-जवाहरातों की खानें दीं—उसकी जमीन में तेल, लोहा, तांबा या और कोई धातुओं की खानें हैं, जिनके दम पर वो अमीर हो गया—या कुदरत ने उसे खूबसूरत पहाड़, नदियां, पेड़, झरने, झील वगैरा कुदरती नजारे बख्शे हैं। कोई भी मुल्क वहां के लोगों के त्याग, प्यार, परोपकार, बलिदान, ऊंचे विचारों और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के दम पर महान बनता है। हमें गर्व है कि हम राम, कृष्ण, हरिश्चन्द्र भागीरथ, मोरध्वज, अर्जुन, विक्रमादित्य, चाणक्य, अकबर, शाहजहां, जहांगीर, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, सुभाष चन्द बोस, महात्मा गांधी, आजाद, भगत सिंह, अशफाक उल्ला, गुरु गोविन्द सिंह, लाला लाजपत राय, रविन्द्रनाथ टैगोर, वीर हकीकत राय, पन्ना धाय, महाराणा प्रताप, झांसी की रानी, टीपू सुल्तान, अमरसिंह राठौर, वीर अब्दुल हमीद जैसे महान लोगों की जन्मभूमि में पैदा हुये...।"

चारों तरफ बर्फीली पहाड़ियों से घिरे छोटे-से मैदान में ब्रिगेडियर फतह बहादुर सिंह जोशीले भाव से अपनी बटालियन के जवानों में शब्दों के माध्यम से चुस्ती, स्फूर्ति, उत्साह, वीरता तथा निर्भयता को कूट-कूट कर भरे जा रहा था—

"मैंने जिन महापुरुषों के नाम लिये—उनमें से कुछ ने अपने सत्कर्मों, ज्ञान, त्याग व कठिन परिश्रम से महानता का शिखर प्राप्त किया तो कुछ ने अपनी वीरता और बलिदान के दम पर स्वयं को इतिहास में अमर कर लिया। मेहमान नवाजी में भी हम अग्रणी हैं। हमारे यहां 'अतिथि देवो भवः' की कहावत प्रचलित है। बाहर से आकर यहां बस गये लोगों को भी हमने अपना लिया! कोई अतिथि आया तो उसका हार्दिक सत्कार किया। बिन बुलाये मेहमान को भी आदर से बिठाकर खाना खिलाया। कुत्ता भी आ जाये तो उसे रोटी डालते हैं। कौआ आकर कांव-कांव करे तो उसे भी रोटी का टुकड़ा डाल देते हैं। लेकिन कोई जंगली और खतरनाक जानवर आये तो उसे मारने से भी पीछे नहीं हटते! दुश्मनों ने धोखे से एल०ओ०सी० को क्रॉस करके हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया! वो खतरनाक

जानवर सरीखा ही है। हमें उसके साथ क्या करना चाहिये—?"

"मार देना चाहिये...।"

"कुत्ते की मौत मार देना चाहिये—।"

"ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिये।"

"उसका ऐसा हाल करना चाहिये कि वो दोबारा ऐसी गुस्ताखी करने की जुर्रत ना कर सके...।" बाकी जवानों के साथ मुश्ताक ने भी अपनी भावना को रोष के साथ व्यक्त किया!

"बिल्कुल...ऐसा करना है हमें...।" ब्रिगेडियर फतह बहादुर सिंह मूछों पर ताव देकर बोला, "दुश्मनों को नाको चने चबवा देने हैं। अपनी बहादुरी का ऐसा प्रदर्शन करना है कि दुश्मन के छक्के छूट जायें—उसके होश फाख्ता हो जायें। परन्तु ये जंग हमारे लिये रसगुल्ले को मुंह में रखकर गड़प कर जाने जैसी आसान भी नहीं है। कारण ये है कि दुश्मन ऊपर पहाड़ों पर है और हम लोग नीचे हैं। हमें वो तभी दिखलाई पड़ेगा, जब हम चढ़ाई चढ़कर ऊपर पहुंचेंगे। जबकि हम दुश्मन को दूर से ही दिखलाई पड़ेंगे। हमारी गोलियों को भी उस तक पहुंचने में दिक्कत आयेगी—जबकि उसकी कंकर भी हमें नुकसान पहुंचायेगी। सो हमें जोश के साथ होश से भी काम लेना पड़ेगा। बहादुरी के साथ-साथ बुद्धिमानी से भी काम लेना होगा। स्वयं को छिपाते हुये, स्वयं को बचाते हुये दुश्मन तक पहुंचना होगा। खामखाह ही दुश्मनों की गोलियों से मर जाना वीरता और बलिदान नहीं होता—दुश्मनों को मारते हुये अपने प्राणों की आहुति देना ही शहादत है, वीरगति है। मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी—!"

"यस, सर...।" मुश्ताक दो कदम आगे बढ़ा और मुट्ठियों को बांधे हुये तानकर खड़ा हो गया।

"इस बटालियन के कमाण्डर तुम होंगे। तुम्हें अपनी बहादुरी के साथ-साथ अपनी सूझ-बूझ का भी परिचय देना है।"

"मुझ पर विश्वास और भरोसा करने के लिये शुक्रिया, सर। मैं आपको भरोसा देता हूं कि मैं सिर्फ फतह के वास्ते ही कदम आगे बढ़ाऊंगा और शिकस्त को अपने करीब भी नहीं फटकने दूंगा। हम लोग सिर पर कफन बांधकर और जान हथेली पर रखकर दुश्मनों तक पहुंचेंगे और उसको नेस्तनाबूद कर देंगे। हिन्दुस्तान जिन्दाबाद...।"

❑❑❑
❑❑❑

"मु...मुझे यहीं पर छोड़ दिया जाये...आह...!" गोलियों से बुरी तरह घायल वो जवान तड़पते, छटपटाते हुये बोला, "चढ़ाई वाला

कठिन रास्ता है। मुझे कैम्पस तक पहुंचाने के लिये कम-से-कम चार जवानों की जरूरत होगी...जबकि चार जवान दुश्मनों से लड़ने के लिये काम आने चाहिये...वैसे भी मैं बचने वाला तो हूं नहीं...फिर क्यों मेरे वास्ते हमले को कमजोर किया जाये...मेजर साहब...मुझे मेरी गन दे दीजिये...मरने से पहले मैं कुछ और दुश्मनों को मार डालूंगा तो मेरी मौत सार्थक हो जायेगी...प्लीज, आपको भगवान का...खुदा का वास्ता...आप जिसे भी सबसे ज्यादा प्यार करते हैं...आपको उसकी कसम है...मेरे लिये जवानों की संख्या कम मत करिये...आह...आपको हिन्दुस्तान की...भारत मां की कसम...।"

मुश्ताक की आंखें भर आई।

उस जवान को कई गोलियां लगी थीं और इतना खून बह रहा था कि उसका बच पाना मुमकिन नहीं था—वैसे उस भी स्थान से शिविर बहुत दूर था।

जवान को उठाकर एक पत्थर की ओट में पहुंचाया मुश्ताक ने और उसे गन देकर बोला, "रेस्क्यू टीम के पहुंचने तक तुम यहीं ठहरोगे। तुममें ऊपर चढ़ने की हिम्मत नहीं है। तुम जैसे जांबाजों की वजह से ही अपना हिन्दुस्तान दुश्मनों से महफूज है। सलाम करता हूं मैं उस मां को...जिसने तुम्हें पैदा किया...।"

"मे...मेरी चिन्ता छोड़िये मेजर साहब...आप दुश्मनों से लड़िये। अगर हो सके तो एक दुश्मन को मेरी तरफ से जरूर मारना।"

"जयहिन्द...सोल्जर!"

"ज...जय...हिन्द...मेजर साहब...भारत मां की जय...हे राम...।"

उस जवान का सिर एक तरफ को ढुलक गया।

❑❑❑
❑❑❑

बड़ी ही विकट परिस्थितियां थीं।

ऊंची पहाड़ी से दुश्मनों की तरफ से अन्धाधुंध फायरिंग हो रही थी—हैन्ड ग्रेनेड्स का भी इस्तेमाल किया जा रहा था। भारतीय जवान नीचे थे और उन्हें दुश्मन दिखलाई नहीं पड़ रहे थे। उन्हें अनुमान से ही फायरिंग करनी पड़ रही थी। वो छोटे-छोटे पत्थरों की ओट लेते हुये ऊपर की तरफ चढ़ रहे थे। एक ऐसा स्थान भी आया, जिसके आगे छिपने के लिये कोई ओट नहीं थी। लगभग पचास मीटर की दूरी पर ही एक बड़ा पत्थर था।

कुछ देर रुके रहने पर एक दर्जन सैनिक पत्थरों की ओट से निकलकर फुर्ती के साथ उस बड़े पत्थर की तरफ बढ़े।

धुम्म...धड़ाम!
धुम्म...धड़ाम।
तड़...तड़...तड़...तड़।
तड़...तड़...तड़...तड़।

दुश्मनों की तरफ से फेंके गये ग्रेनेड की चपेट में आकर दो जवानों के जिस्म आग के गोलों में लिपटे हुये हवा में उछले और फिर बर्फ पर गिरे।

पांच जवान गोलियों से छलनी हो गये।

कुछ जवानों ने पहले ऊपर की तरफ फायरिंग की और फिर प्राणों को संकट में डालकर घायल जवानों को खींचकर, घसीटकर पत्थरों की ओट में लेकर आये।

परन्तु अफसोस...सातों जवान अपने प्राणों की आहुति देकर मां भारती के आंचल में समा चुके थे!



एक चट्टान की ओट में दो दर्जन जवान मेजर मुश्ताक के इर्द-गिर्द बैठे हुये थे। थोड़ा चिन्तित व निराश तो सभी थे, लेकिन आंखों में आक्रोश भरा हुआ था।

"इस तरह तो हम कुछ भी नहीं कर पायेंगे मेजर साहब...।" लांस नायक की वर्दी वाला जवान हथेली पर मुक्का मारकर बोला, "दुश्मन दिखलाई नहीं पड़ रहे हैं—जबकि हम उन्हें दिखलाई पड़ जाते हैं। हमें अन्दाजे से ही गोलियां चलानी पड़ती हैं—वो निशाना साधकर फायरिंग करते हैं। हमारी तरफ के कई जवान शहीद हो गये। दुश्मनों को गोली लग रही है कि नहीं...मालूम नहीं पड़ता। इस तरह तो हम लोग मारे जाते रहेंगे और दुश्मनों तक पहुंच ही नहीं पायेंगे।"

"पहुंचेंगे...।" पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला मुश्ताक, "हम दुश्मनों तक हर हाल में पहुंचेंगे और उनका खात्मा भी करेंगे।"

"लेकिन कैसे, मेजर साहब—?"

"सुनो, जवानों। हम जिस रास्ते से दुश्मनों तक पहुंचने की चेष्टा कर रहे हैं—वहां से हम पहुंच तो जायेंगे—लेकिन हमें बेमतलब में ही कई जानें गंवानी पड़ेंगी! सो हमें दूसरी ही तरकीब इस्तेमाल करनी होगी। हमारे कुछ जवान यहीं पर मोर्चा जमाकर रखेंगे और दुश्मनों को ये अहसास कराते रहेंगे कि हम ऊपर चढ़ने की कोशिश तो कर रहे हैं लेकिन कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। इसी के साथ हमारे आधे जवान इस पहाड़ी के दाहिनी तरफ आधा किलोमीटर

की दूरी पर जाकर ऊपर चढ़ेंगे और पीछे की तरफ से दुश्मनों पर धावा बोलेंगे। दुश्मनों को गुमान भी ना होगा कि उनके पीछे से भी हमला हो सकता है। वो सभी मारे जायेंगे और चोटी पर हमारा कब्जा हो जायेगा। हम शान के साथ तिरंगा लहरा देंगे। साथियों...ये मिशन थोड़ा मुश्किल होगा—क्योंकि हमें पहाड़ी पर चढ़कर पीछे की तरफ उतरना है और फिर वहां से बांयी तरफ आधा किलोमीटर चलने पर फिर ऊपर की तरफ चढ़ाई चढ़कर दुश्मनों तक पहुंचना होगा। उस वक्त खतरा ये होगा कि हम पाकिस्तान की तरफ होंगे। नीचे मैदान में पाकिस्तान का कैम्प हो सकता है। वो टैंक या मिसाइल से हम पर हमला बोल सकते हैं। वहीं से पाकिस्तानियों के ऊपर पहाड़ी तक पहुंचने का भी रास्ता होगा। सो रास्ते में भी दुश्मनों से टकराव हो सकता है। लेकिन हिन्दुस्तानी जवानों ने कभी भी अपने अन्जाम की परवाह नहीं की। हम सिर पर कफन बांधकर निकले हैं और हमारा इकलौता मकसद दुश्मनों को शिकस्त देकर अपने हिस्से की जमीन को अपने कब्जे में लेना है। सो हम अभी यहां से कूच करेंगे—ताकि रात होने से पहले ही अपने मकसद को पूरा कर सकें! मेरे ख्याल से यहां पर सिर्फ साठ जवान ही मोर्चा सम्भालने को काफी होंगे। बाकी लोग मेरे साथ चलेंगे। मैं बतला देता हूं कि यहां पर कौन-कौन जवान रहेंगे...।"



आधा किलोमीटर चलने पर मुश्ताक के नेतृत्व में सोलह जवानों ने दो घण्टों की चढ़ाई की और फिर डेढ़ घण्टे में उतरकर दूसरी तरफ पहुंच गये। वहां से वो लोग आधा किलोमीटर समतल जमीन पर चले और फिर ऊपर की तरफ चढ़ाई करने लगे—जहां ऊपर उनसे अनभिज्ञ दुश्मन अवैध रूप से कब्जा जमाये बैठे थे।

आधी चढ़ाई ही हुई थी कि जवानों को महसूस हुआ कि उनके साथ मेजर मुश्ताक नहीं है—वहां रुककर मुश्ताक का इन्तजार करने लगे, लेकिन मुश्ताक नहीं आया।

प्रश्न था कि वो ऐसे में क्या करें?

"हम लोगों का ज्यादा देर तक यहां रुके रहना ठीक नहीं होगा...।" लांस नायक विनायक बोला, "हम लोग पाकिस्तान की तरफ हैं। नीचे घाटी में पाकिस्तानी शिविर दिखलाई पड़ रहा है। वहां से ऊपर मौजूद पाकिस्तानियों तक भोजन-पानी, हथियार वगैरा पहुंचाये जाते होंगे—ड्यूटी भी चेंज होती होगी। अगर दुश्मनों को हमारी मौजूदगी का पता चल गया तो हम पर हमला बोल देंगे और

हम अपना बचाव भी नहीं कर पायेंगे। मरने का कोई गम नहीं होगा लेकिन इस बात का गम रहेगा कि हम लोग दुश्मनों के कब्जे से अपनी चौकी को मुक्त नहीं करा सके।"

"लेकिन...हमारे कमाण्डर साहब तो हमारे साथ नहीं हैं–।"

"हां–ये चिन्ता वाली बात है–लेकिन मेजर साहब ने ही कहा था कि अगर उन्हें कुछ हो जाये तो मैं कमाण्डर बनकर मिशन को कम्पलीट करूंगा। सो मैं ये जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले रहा हूं। मां भारती को याद करते हुये आगे बढ़ते चलो और दुश्मनों पर टूट पड़ो। जो होगा...देखा जायेगा...।"

तब वो लोग लांस नायक विनायक के नेतृत्व में आगे बढ़ने लगे और घण्टेभर में ऊपर पहुंच गये।

ऊपर पाकिस्तानी सैनिकों ने रेत के बोरों व पत्थरों से मजबूत रेलिंग बनाई हुई थी और उसकी आड़ लेकर नीचे की तरफ फायरिंग कर रहे थे।

करीब ही एक टैन्ट भी लगा था, जिसमें खाने-पीने के सामान के साथ हथियार, गोलियां व गोला-बारूद भरा हुआ था। आराम करने के लिये जमीन पर कुछ बिस्तर लगे हुये थे। रेडियो तथा वायरलैस सैट और कुछ अखबारों के साथ उर्दू की कुछ पत्रिकायें भी थीं।

भारतीय जवानों ने पीछे से हमला बोलकर पांच मिनट में ही सभी पाकिस्तानी सैनिकों को खत्म कर दिया।

चौकी पर कब्जा करके पाकिस्तानी झन्डा उतारकर तिरंगा लहरा दिया गया और रेडियो के माध्यम से लांस नायक विनायक ने ब्रिगेडियर फतह बहादुर सिंह को चौकी फतह करने की खुशखबरी दी और फोर्स की मांग की–ताकि पाकिस्तान की तरफ से दोबारा कब्जा करने की चेष्टा ना हो सके। इसी के साथ विनायक ने मेजर मुश्ताक के अचानक ही गायब हो जाने की सूचना भी दे दी।

❑❑❑
❑❑❑

"कारगिल युद्ध में मिली विजय ने पूरे देश में उत्साह का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। सारा भारत इण्डियन मिलिट्री पर गर्व महसूस कर रहा है। मुझे भी अपनी बटालियन पर पूरा गर्व है...।" मिलिट्री के कई छोटे-बड़े अधिकारियों के साथ विराजमान ब्रिगेडियर फतह बहादुर सिंह बोल रहा था, "इसी के साथ मैं मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी के लिये चिन्तित हूं। बहुत ही बहादुर और जांबाज अफसर है वो। कम्बोज हिल पर पाकिस्तानी सैनिकों ने

अपना कब्जा करके वहां पर चौकी स्थापित कर ली थी। उस चौकी को दुश्मनों के कब्जे से निकाल पाना काफी कठिन था–क्योंकि वो बहुत ही बड़ी पहाड़ी है। उस पर चढ़ना काफी कठिन है और वहां छिपने के लिये बड़े पत्थर या चट्टानों की आड़ नहीं थी। वहां छोटे-छोटे पत्थर ही हैं। नीचे से दुश्मन दिखलाई नहीं पड़ रहे थे–जबकि हमारे जवान दुश्मनों को दिखलाई पड़ रहे थे। वो दुश्मनों की गोलीबारी और बमबारी के शिकार होकर शहीद हुये जा रहे थे। ऊपर पहुंच पाना मुश्किल हो रहा था। मेजर मुश्ताक ने एक तरकीब निकाली। कुछ जवानों को वहीं छोड़कर बाकी जवानों के साथ आधा किलोमीटर दूरी पर चढ़ाई की–पहाड़ी के पार उतरे और वहां से आधा किलोमीटर चलने पर चढ़ाई की–जहां से ठीक ऊपर दुश्मन सैनिक मौजूद थे। हमारे जवानों ने सभी दुश्मनों को मारकर चौकी पर कब्जा किया और तिरंगा फहरा दिया गया।"

"लेकिन तब मेजर मुश्ताक वहां नहीं थे ब्रिगेडियर साहब! वो गायब हो चुके थे और लांस नायक विनायक ने सैनिक टुकड़ी का नेतृत्व किया था।"

"लेकिन ये प्लान भी मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी का ही था। उन्होंने लांस नायक विनायक को बोला हुआ था कि अगर उन्हें कुछ हो जाये तो वो टुकड़ी का नेतृत्व करेगा। हांलाकि अभी तक मेजर मुश्ताक की कोई खैर-खबर नहीं है–लेकिन मुझे लगता है कि वो किसी संकट में हैं। वो जीवित नहीं हैं–या फिर दुश्मन सेना ने उन्हें बन्दी बना लिया है।"

"हो सकता है कि ऐसा ही हो ब्रिगेडियर लेकिन हम ये नहीं मान सकते–क्योंकि किसी को भी पाकिस्तान की सीमा लांघने को नहीं कहा गया था–मेजर मुश्ताक ने अपने किसी अफसर को बतलाये बिना ही पहाड़ी पार करके पाकिस्तान की तरफ जाने का निर्णय लिया था। यदि हम इस बात को जाहिर करेंगे तो हम पर सीमा उलंघन का आरोप लगेगा। सो हम ये दावा कर ही नहीं सकते कि पाकिस्तानी सेना ने मेजर मुश्ताक को बन्दी बना लिया। चूंकि हमें मेजर मुश्ताक की लाश नहीं मिली, उसने कोई रिपोर्ट नहीं की–इसलिये हमारी विवशता है कि हमें मेजर मुश्ताक को भगौड़ा घोषित करना ही होगा–।"

❑❑❑
❑❑❑

"बहुत तारीफें करती थी तू तो अपने बेटे की हफीजन। वो जांबाज है और बहादुर है–सरहद पर अपनी जान की परवाह ना

करके दुश्मनों को मारता चला जाता है—उसकी बन्दूक गोलियां नहीं, मौत उगलती है। वो अपने मुल्क को फतह दिलाकर जब वापिस लौटेगा तो उसके सीने पर कई तमगे लगे होंगे! लेकिन हकीकत क्या थी...वो सबके सामने आ गई...।" आंखों में नफरत व हिकारत के भाव भरे हुये धार्मिक नेता इकबाल सिद्दकी मौहल्ले भर की भीड़ की उपस्थिति में चींख-चींखकर बोले जा रहा था, "हकीकत ये है कि मुश्ताक निहायत ही बुजदिल किस्म का आदमी था। वो मिलिट्री के नाम पर बदनुमा धब्बा था। जब दुश्मनों की गोलियों से आमना-सामना हुआ तो वो घबरा गया और दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ...।"

"क्या बकवास कर रहे हैं आप हाजी साहब...?" तभी वहां पर केशव आ पहुंचा, जोकि सीधे अदालत से आ रहा था और काले कोट व सफेद पैन्ट में था। उसने स्तब्ध-सी खड़ी हफीजन के कन्धे पर हथेली रखी तथा इकबाल सिद्दकी से रोष भरे भाव में बोला, "माना कि मिलिट्री ने मुश्ताक को भगौड़ा घोषित कर दिया है—लेकिन मिलिट्री की ये विवशता थी कि मुश्ताक बिना किसी को सूचना दिये अचानक ही गायब हो गया था और उसकी लाश भी नहीं मिली। ना ही इस बात की पुष्टि हुई कि मुश्ताक दुश्मनों के हाथों पड़ गया था और उसे दुश्मनों ने बन्दी बना लिया है। लेकिन मैं सीना ठोककर दावा कर सकता हूं कि मुश्ताक भगौड़ा नहीं है—क्योंकि वो बाल बराबर भी बुजदिल नहीं था। वो मैदान छोड़कर भाग खड़े होने वालों में से कतई नहीं था। ऐसा नहीं है कि वो हाल-फिलहाल ही मिलिट्री में भर्ती हुआ था। उसे मिलिट्री में भर्ती हुये पांच वर्ष से अधिक हो गये थे। उसने सरहद पर कई जंग लड़ीं। कई घुसपैठियों को पकड़ा और मारा था। कई आतंकियों को भी मारा था! अपनी जांबाजी के कारण ही वो बहुत जल्दी मेजर की पोस्ट तक पहुंचा था और अपनी बहादुरी के दम पर उसने कई मैडल भी हासिल किये थे। जो उसे बुजदिल कहेगा—उसके बारे में मैं ये बोलूंगा कि उसका दिमाग खिसक गया है!"

"तु...तुम मुझे पागल बोल रहे हो पण्डित...।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोला इकबाल सिद्दकी, "जानते हो कि मैं कौन हूं—?"

"हां, जानता हूं...।" केशव उसकी आंखों में झांकते हुये बोला, "तुम धर्म के ठेकेदार हो! धर्म के नाम पर धन्धा करते हो। राजनीति में धर्म का होना तो अनिवार्य है—लेकिन तुमने तो धर्म में राजनीति को शामिल कर दिया है। धर्म या मजहब को लेकर

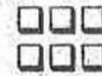
बड़ी-बड़ी तकरीरें करते हो—भाषण झाड़ते फिरते हो—लेकिन स्वयं धर्म पर अमल नहीं करते। मुझे पता है कि तुम्हारा ब्याज पर पैसे देने का बहुत बड़ा धन्धा है। जरूरतमन्दों को मोटे ब्याज पर पैसे देते हो। लाखों रुपये महीना तो ब्याज के ही आ जाते हैं। जबकि इस्लाम में ब्याज को हराम करार दिया गया है। जो राजनैतिक पार्टी तुम्हें मोटी रकम देती है—उसी को अपना समर्थन दे देते हो। मुस्लिमों की वोटों को बेचने का धन्धा करते हो। लोगों को भाषण देते फिरते हो कि वो अपने बच्चों को मदरसों में मजहबी तालीम के वास्ते भेजें—लेकिन तुम्हारे बच्चे इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ रहे हैं।"

इकबाल सिद्दकी ने दुम दबाकर भागने में ही भलाई समझी।

"केशव बेटा—!" हफजीन रोते हुये बोली, "मुश्ताक को भगौड़ा कहा जा रहा है—।"

"तुम्हारा बेटा शहीद तो हो सकता है मांजी—लेकिन वो दुश्मनों को पीठ दिखलाकर भागने वालों में से कतई नहीं है। ईश्वर करे कि वो जीवित हो और जल्दी ही वापिस लौट आये। तुम लोगों की बकवास पर ध्यान मत दो। चलो, घर के भीतर चलते हैं—।"

केशव हफीजन को पकड़े हुये घर के भीतर ले गया। मन-ही-मन ये प्रार्थना करते हुये कि यदि मुश्ताक जीवित हो तो वो सही-सलामत वापिस लौट आये।



लाहौर की जेल में कैद था मुश्ताक।

जब उसके नेतृत्व में जवानों ने पाकिस्तान की तरफ से पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया था तो वो लघु शंका के लिये एक पत्थर की ओट में चला गया था। वहां से उसने चार पाकिस्तानी सैनिकों को शिविर की तरफ से पहाड़ी की तरफ आते देखा था—जोकि नजदीक आने पर भारतीय जवानों को देख लेते और पीछे से उन पर हमला बोल देते।

वो छिपते-छिपते हुये उन चारों सैनिक के करीब पहुंचा और उन पर टूट पड़ा। उसने अपनी कारबाइन को किसी लाठी की मानिन्द ही इस्तेमाल किया और उन्हें कोई अवसर दिये बिना ही उनके सिरों पर घातक प्रहार करके पहले उन्हें बेहोश कर दिया—फिर उनके गले घोटकर उनके प्राणों का हरण कर लिया।

ना जाने क्यों उसके दिमाग में ये विचार आया कि वो ये देखे कि शिविर में कितने दुश्मन हैं। अगर उसका दांव लगे तो सभी दुश्मनों का खात्मा कर दे।

पूरी सतर्कता बरतते हुये वो शिविर तक पहुंच गया—लेकिन पकड़ लिया गया था।

पाकिस्तानी सैनिक हैरान-परेशान थे कि एक हिन्दुस्तानी सैनिक उनके कैम्प तक कैसे आ पहुंचा?

मामला तब समझ में आया, जब खबर मिली कि उनके कब्जे वाली चौकी पर भारत की सेना ने अपना कब्जा करके तिरंगा फहरा दिया है।

तब मुश्ताक ने ही बतलाया कि उसके साथियों ने वो विजय कैसे प्राप्त की थी।

तब उस पर पाकिस्तानियों के कहर के पहाड़ टूट पड़े—उसे बेहोश होने के बाद भी 'तोड़ा' गया।

बौखलाये पाकिस्तानी सैनिकों ने चौकी पर पुनः कब्जा करने का प्रयास किया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उस चौकी पर भारतीय सेना के पर्याप्त मात्रा में सैनिक आ चुके थे, जिन्होंने कुचेष्टा करने वालों को यमलोक की टिकिट थमाने में जरा-सी भी कंजूसी नहीं की।

मुश्ताक को चुपचाप लाहौर की जेल में डाल दिया गया और उसकी गिरफ्तारी को घोषित नहीं किया गया था!

❑❑❑
❑❑❑

"भारत मां की जय...आह...वन्दे मातरम्...हिन्दुस्तान... जिन्दाबाद...।"

वो टॉर्चर रूम था।

वहां पर मुश्ताक के साथ बहुत ज्यादतियां की गई थीं।

नोज प्लयर से उसके हाथों-पैरों के सभी नाखून खींच लिये गये थे। इलैक्ट्रिक शॉक दिये गये थे। ब्लेड से चीरे लगाकर जख्मों में नमक भरा गया था।

तेजाब की बूंदें टपकाई गई थीं।

हथेलियों तथा पैरों के पन्जों में कीलें ठोकी गई थीं।

इन सब यातनाओं के पीछे दो कारण थे—

पहला तो ये कि पाकिस्तानियों ने जिस चौकी पर कब्जा किया हुआ था, वो मुश्ताक की दूरदर्शिता, सूझबूझ व योजना के फलस्वरूप हाथों से निकल गई थी।

दूसरा कारण ये था कि पाकिस्तानी चाहते थे कि मुश्ताक बॉर्डर पर भारतीय सेना के सभी ठिकानों के बारे में जानकारी दे—लेकिन

मुश्ताक ने बोल दिया था कि वो जान दे देगा, लेकिन कोई जानकारी नहीं देगा!

फिर वहां चंगेज खां आ पहुंचा!

❑❑❑
❑❑❑

सात फुट लम्बा तथा उसी अनुपात में बेहद तन्दुरुस्त।

फिरंगियों के जैसा गुलाबी रंगत वाला—जिसका तरबूज के साइज का सिर इतना गंजा था कि माइका की मानिन्द ही चमकता था—मानो सिर के हिस्से के बाल भी लम्बे व घनी दाढ़ी में समा गये थे। मेहन्दी से रंगी वो लम्बी दाढ़ी सीने का चुम्बन कर रही थी।

वह हरे रंग की सलवार के साथ हरे रंग का ही कुर्ता पहने हुये था और कन्धों पर काले-सफेद चैक का कपड़ा बांधे हुये था।

पैरों में काले चमड़े की सैन्डल्स पहने हुये था।

गुलाबी रंग की बेहद पतले होंठों के ऊपर जो नाक थी, वो नीचे आकर काफी चौड़ी हो गई थी और होंठों के सिरों से कम्पटीशन करती मालूम पड़ रही थी।

लाल रंग की आंखें हालांकि चीनियों के जैसी ही छोटी-छोटी थीं, लेकिन उनमें उस्तरे की धार जैसी ही पैनापन था।

वो ही था चंगेज खां—पाकिस्तानी मिलिट्री का लेफ्टीनेन्ट गवर्नर और आई०एस०आई० का चीफ।

जेलर समेत सभी मिलिट्री वालों ने भी सीने पर हथेली रखकर तथा सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और फिर समवेत् स्वर में बोला—"अस्सलामु अलैकुम खां साहब...!"

"व अलै कुमुस्लामु...।" वह भारी-भरकम तथा कड़क आवाज में बोला, "इस हिन्दुस्तानी कुत्ते ने जुबान खोली कि नहीं—?"

"नहीं, जनाब...!" जेलर अफसोस के साथ बोला—"आप देख सकते हैं कि हमने इसको किस कदर टॉर्चर किया है। ये बार-बार बेहोश हो जाता है। ना जाने किस मिट्टी का बना हुआ है कम्बख्त! टॉर्चर होते वक्त 'भारत मां की जय...वन्दे मातरम् और हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' बोलता रहता है। थोड़ी देर पहले ही बेहोश हुआ है ये!"

"होश में लाया जाये इसे...।"

जेलर ने बर्फ के पानी से भरे जग को उठाया और सारा पानी मुश्ताक के सिर पर उंडेल दिया, जोकि कुर्सी पर बंधा बैठा था!

कराहते हुये मुश्ताक ने आंखें खोलीं और चंगेज खां के दीदार हुये।

"चंगेज खां...।" चंगेज खां उसकी आंखों में झांकते हुये

बोला, "बचपन से ही लोगों पर हमले बोलकर उन्हें लूट लिया करता था। मेरी आदतें देखकर ही मेरे वालिद ने मेरा नाम चंगेज खां रख दिया था। अब मैं दुश्मनों पर हमला बोलकर उनका चैनो-सकून लूट लिया करता हूं। कारगिल पर कब्जा करने वाला मैं ही था। भले ही वक्ती तौर पर हिन्दुस्तान ने फतह हासिल कर ली हो—लेकिन फिर हमला होगा। कारगिल ही नहीं...पूरा कश्मीर लूटकर पाकिस्तान में ले आऊंगा...।"

होंठों के जख्मी होने के कारण मुस्कुराने में पीड़ा हुई मुश्ताक को, लेकिन मुस्कान को बरकरार रखते हुये तथा चंगेज खां की आंखों में झांकते हुये बोला, "तूने जिस चंगेज खां के नाम का लबादा ओढ़ा हुआ है—वो भी कुछ खास नहीं कर पाया था। तू तो कुछ भी नहीं है। तू ही क्या...तेरा मुल्क भी कुछ भी नहीं है। बंगलादेश के बनने के बाद से पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर हमले करता रहा है—लेकिन हर बार मुंह की ही खानी पड़ी है। तुम लोग कुछ भी नहीं कर पाओगे। हां, अगर हिन्दुस्तानियों के सब्र का प्याला छलक उठा तो...उस प्याले में पूरा पाकिस्तान डूब जायेगा। चंगेज खां...आह...।"

"जनाब के साथ तमीज के साथ पेश आओ कम्बख्त...।"

जेलर मुश्ताक के जख्मी कन्धे पर डन्डा मारकर बोला—"ये लेफ्टिनेंट जनरल और आई०एस०आई० चीफ हैं...।"

"तो कौन-सा खुदा हो गया ये...।" कड़वाहट भरे लहजे में बोला मुश्ताक, "तुम लोगों के वास्ते होगी आई०एस०आई० कोई तोप। हमारे वास्ते कंकर की तरह ही है। अपने एजेन्टों और आतंकियों के जरिये आई०एस०आई० ने हिन्दुस्तान में गड़बड़ियां कीं—दहशत फैलाने की कोशिशें कीं। लेकिन हिन्दुस्तान में चैनो-अमन और खुशहाली कायम है। हां—पाकिस्तान में आये दिन गोलीबारी और बम धमाके होते रहते हैं। मस्जिदों तक में बम फट रहे हैं। चंगेज खां से बोलो जेलर कि अपनी मिलिट्री और आई०एस०आई० को पाकिस्तान में हो रही दहशतगर्दी और बदअमनी को खत्म करने में लगाये। तुम लोगों ने जो खड्डे हमारे वास्ते खोदे थे—आज तुम लोग ही उन खड्डों में गिर रहे हो।"

"बहुत भौंक रहा है तू हिन्दुस्तानी कुत्ते...।" भेड़िये की ही मानिन्द गुर्रा उठा चंगेज खां, "जुबान को लगाम दे—नहीं तो हमेशा के वास्ते खामोश कर दिया जायेगा। तू चोरी-छुपे हमारी सरहद में दाखिल हुआ था—तेरी गिरफ्तारी को जाहिर नहीं किया गया है। तुझे बन्धक बनाने का ऐलान नहीं किया गया है। तुझे जान से भी मार दिया जाये तो हमारी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"बेईमानी और छल-कपट तो तुम लोगों की रगों में कूट-कूटकर भरी हुई है। मेरा कुछ भी अन्जाम हो...कोई परवाह नहीं—मैं अपना काम कर चुका हूं। हिन्दुस्तान ने कारगिल की जंग में फतह हासिल कर ली है...हिन्दुस्तान जिन्दाबाद...!"

"लेकिन तू मुर्दाबाद हो जायेगा ओये मुश्ताक! तेरी जान अभी तक इस वास्ते बची हुई है कि...तू मुसलमान है...।"

"मुसलमान बाद में हूं—पहले हिन्दुस्तानी हूं मैं चंगेज खां!"

चंगेज खां के जबड़े चक्की के पाटों की मानिन्द ही भिंच चले—साथ ही मुट्ठियां भी भिंच चलीं, लेकिन वो सब्र से काम लेते हुये बोला, "घर में कौन-कौन है तेरे—?"

"अम्मीजान है। बीवी है...एक बेटा है। छोटी बहन भी है—उसकी शादी हो चुकी है।"

"क्या उनकी याद नहीं सता रही तुझे? उनके पास नहीं जाना चाहता तू? हो सकता है कि तू अपना दिल पत्थर का कर ले—लेकिन तेरी अम्मी, तेरी बीवी और बहन...तेरा बेटा...तुझे याद कर रहे होंगे। क्या वो तेरी जुदाई बर्दाश्त कर पायेंगे—?"

"नहीं कर पायेंगे...।"

"तुझे रिहा किया जा सकता है मुश्ताक। तू अपनी मां, बीवी, बहन और बेटे के पास लौट सकता है—।"

"बदले में मुझे अपने मिलिट्री के ठिकानों की जानकारियां देनी होंगी...क्यों?" मुश्ताक का लहजा व्यंग भरा था।

"नहीं, कतई नहीं...।" गुलाबी व पतले होंठों पर घाघ किस्म की मुस्कान थिरकाकर बोला चंगेज खां, "अब कोई फायदा नहीं। जंग के दौरान मिलिट्री ठिकाने बनाये जाते हैं। ना ही हाल-फिलहाल में अपना कुछ करने का इरादा है। सियासत की यही मांग है। अपने हुक्मरानों ने अमेरिका को अपने सिर पर बिठाया हुआ है—वो साला थोड़ी आंखें तरेर रहा है। सो मुझ जैसे जहरीले नाग को भी कुछ वक्त के वास्ते सीधा चलना होगा। हमें तुझसे तेरी मिलिट्री के बारे में कोई जानकारी नहीं चाहिये। जिस तरफ जाना ही नहीं—उसके कोस या किलोमीटर क्या गिनने? मैं ये चाहता हूं कि तू आई०एस०आई० के वास्ते काम करे। हिन्दुस्तान में तुझे कोई बड़ा ओहदा दिया जायेगा। तेरी इतनी कमाई होगी कि अपनी सात पीढ़ियों के वास्ते भी जमा करके चला जायेगा। हर महीने लाखों कमायेगा!"

"तू क्या समझता है...मैं तैयार हो जाऊंगा—?"

"तुझे तैयार तो होना पड़ेगा—।"

"तो फिर कोशिश करके देख लें–।"

"जेलर...।"

"जी, जनाब...!" जेलर एटेंशन की मुद्रा में आ गया।

"इस बेवकूफ को टॉर्चर करने से कोई फायदा नहीं...।" चंगेज खां मुश्ताक के सिर पर हथेली रखकर जेलर से बोला, "ये जिस्म की चोटें और जख्म बर्दाश्त कर पायेगा–लेकिन दुनिया का कोई भी आदमी दिमागी चोट बर्दाश्त नहीं कर सकता! कुछ ऐसे टॉर्चर होते हैं कि इन्सान अपना मेंटल बैलेंस कायम नहीं रख पाता और वो टूट जाता है। इस हिन्दुस्तानी को इलैक्ट्रिक शॉक दो। उससे भी ये सीधी राह पर ना आये तो दूसरे तरीके अपनाना। अगर तुम्हें नहीं सूझे तो फोन करके मुझसे मालूम कर लेना...।"

"जी, जनाब!"

"हम भी देखते हैं कि ये हिन्दुस्तानी कैसे नहीं टूटता...?"

❑❑❑

❑❑❑

कई दिनों तक मुश्ताक को बिजली के झटके अर्थात् इलैक्ट्रिक शॉक दिये गये–लेकिन वो झुका नहीं, टूटा नहीं।

जेलर ने फिर दूसरे तरीके भी अपनाये–जिनसे आमतौर पर कोई भी इन्सान कमजोर पड़ जाये–लेकिन मुश्ताक कतई भी कमजोर नहीं पड़ा। उनमें से एक तरीका ये था कि मुश्ताक को एक मेज पर लिटाकर स्टील की पट्टियों से उसके हाथ, पैर, पेट, सीना, गला, चेहरा व सिर को इस कदर कस दिया गया कि वो हिल भी ना सके–

फिर एक पाइप के माध्यम से उसके माथे के बीचो-बीच पानी की बूंदें एक-एक करके टपकाई गई।

लगभग दस सैकेन्ड के अन्तराल पर बूंद टपक रही थी।

बारह घन्टे तक तो कुछ नहीं हुआ–लेकिन फिर मुश्ताक को परेशानी होने लगी। वो बेचैन, व्याकुल होने लगा!

वक्त के साथ उसकी छटपटाहट बढ़ती चली गई–वो पागलों की तरह चींख-चींखकर पानी की बूंदों को बन्द करने के लिये बोलने लगा।

जेलर ने उससे पूछा कि वो आई०एस०आई० के लिये काम करने को तैयार है?

उसने दृढ़ता के साथ इन्कार कर दिया।

जेलर ने दूसरे तरीके अपनाये–लेकिन वो मुश्ताक को तोड़ने में नाकाम ही रहा।

तब चंगेज खां ने अचानक ही जेलर को हटाकर वहां दूसरे जेलर सरफराज अली को भेज दिया–खास किस्म की हिदायतें देकर–जिन पर सरफराज अमल करने लगा! नये जेलर सरफराज अली ने जो किया, उससे मुश्ताक भी हैरानी में पड़ गया!

❑❑❑

❑❑❑

सरफराज ने सबसे पहले मुश्ताक को जेल के हॉस्पिटल में एड्मिट करवाकर उसका बढ़िया तरीके से इलाज करवाया।

जब वो स्वस्थ हो गया तो उसे जेल की एक बढ़िया बैरक में रखा, जहां अच्छी साफ-सफाई की गई थी।

बढ़िया बिस्तर और ठण्डे पानी का कैम्पर। छत पर पंखा था। उर्दू व इंग्लिश के कई उपन्यास व पत्रिकायें रखी थीं।

नाश्ता व खाना बढ़िया और स्वादिष्ट।

दिन में कई चाय और रात को दूध भी।

जेल के सभी कर्मचारी अच्छा व्यवहार कर रहे थे।

उससे पूछा जा रहा था कि वो खाने में क्या लेगा? उसकी फरमाईश का खाना ही पेश किया जा रहा था।

जेलर सरफराज रोजाना उसके पास आकर बैठता। उसने अपने बारे में, अपने परिवार के बारे में काफी बतलाया–बदले में उसके घर-परिवार की भी जानकारी हासिल की।

फिर एक दिन उसकी बैरक में डी०वी०डी० प्लेयर और कलर टी०वी० लाया गया और उसे कुछ डी०वी०डी० भी दी गई।

मुश्ताक ने कुछ डी०वी०डी० चलाकर देखी–

उनमें कश्मीर की वीडियो फिल्म थी, जिनमें भारतीय सेना को कश्मीर के मुस्लिमों पर अत्याचार करते दिखलाया गया था।

एक डी०वी०डी० में हिन्दू नेताओं को मुस्लिमों के खिलाफ आग उगलते हुये दिखलाया गया था।

कुल मिलाकर उन डी०वी०डी० के माध्यम से ये दर्शाने की चेष्टा की गई थी कि हिन्दुस्तान में मुस्लिमों के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा था और उन पर तरह-तरह के अत्याचार किये जा रहे थे–उनके अधिकार छीने जा रहे थे।

एक डी०वी०डी० में अकबर, जहांगीर, शाहजहां, बहादुरशाह जफर, अब्दुल हमीद, डॉक्टर जाकिर हुसैन, मौहम्मद रफी, दिलीप कुमार, मौहम्मद अजहरूद्दीन, नवाब परौडी, फारुख इंजीनियर, मोहम्मद कैफ, इरफान पठान, यूसुफ पठान, शाहरुख खान, आमिर खान, सलमान खान, नरगिस दत्त, मेहबूब खान, मीना कुमारी,

मधुवाला, अमजद खान, नौशाद, खय्याम, शकील बदायूंनी, मजरूह सुल्तानपुरी इत्यादि के योगदान का ब्यौरा देकर ये दर्शाया गया कि उक्त लोगों ने हिन्दुस्तान के लिये बहुत कुछ किया—लेकिन हिन्दुस्तान में मुस्लिमों की कोई कद्र नहीं है और पाकिस्तान की सरकार, हुक्मरान, मिलिट्री तथा आई०एस०आई० वाले हिन्दुस्तान के मुस्लिमों की भलाई, अधिकारों व खुशहाली के लिये प्रयासरत हैं।

कुल मिलाकर उन डी०वी०डी० के माध्यम से मुश्ताक को बहलाने-फुसलाने व बरगलाने की चेष्टा की गई थी।

इसी के साथ जो पाकिस्तानी अखबार रोजाना आ रहे थे, उनमें ऐसी खबरें होती कि मानो हिन्दुस्तान में मुस्लिमों के साथ ज्यादतियां हो रही हों—हिन्दुस्तान के मुस्लिम सबसे ज्यादा गरीब और अनपढ़ हों।

जाहिर था कि मुश्ताक के साथ खेल खेला जा रहा था—लेकिन क्या मुश्ताक उस खेल में फंस जाने वाला था?

❑❑❑

❑❑❑

"क्या हाल है मुश्ताक मियां...?"

जेलर सरफराज अली मुश्ताक के करीब रखी कुर्सी पर आ बैठा—वो काली पैन्ट व सफेद शर्ट में था।

मुश्ताक बैरकों के बाहर वाले मैदान में बैठा धूप सेक रहा था और अखबार भी पढ़ रहा था—

"ये वाली खबर पढ़ी मुश्ताक मियां...?" उससे अखबार लेकर एक खबर की हैडलाइन पर तर्जनी उंगली रखकर बोला सरफराज, "भारतीय फौजियों ने श्रीनगर में एक मुस्लिम औरत की आबरू लूटी और उसके शौहर को गोलियों से भून दिया—बाद में ये बोल दिया कि दोनों दहशतगर्द थे। ये खबर...पूंछ में हिन्दुस्तानी फौजियों ने पांच मुस्लिम लड़कियों के साथ जबरदस्ती मुंह काला किया और पैट्रोल छिड़ककर जिन्दा ही जलाकर मार दिया। हद हो गई जुल्मो-सितम की। कल के अखबार में मेरठ की खबर थी कि हिन्दुओं ने मुस्लिमों के एक मौहल्ले पर हमला बोलकर सभी को चुन-चुनकर मारा और औरतों के साथ जोर-जबरदस्ती की। फिर पैट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। ऊपर से सितम ये कि पुलिस ने भी बचे-खुचे मुस्लिमों पर ज्यादतियां कीं। बेरहमी से उन्हें मारा-पीटा और दंगाई करार देकर गिरफ्तार कर लिया! मेरी...मेरी समझ में नहीं आता कि हिन्दुस्तान में हमारे मुसलमान भाई कैसे रह पा रहे हैं? वो तो जैसे नरक में

रह रहे हों। अगर पाकिस्तान उनकी तरफ से आवाज ना उठाये तो...उनका वजूद ही मिटाकर रख दिया जाये।"

"यहां की मिलिट्री में कितने हिन्दू हैं जेलर—?"

सरफराज ने चौंककर मुश्ताक को देखा, फिर सकपकाकर बोला, "क्या मतलब—?"

"यहां की मिलिट्री में कितने हिन्दू हैं जेलर—?" बहुत ही सर्द लहजा था मुश्ताक का।

"होंगे ही...।"

"एक भी नहीं है। मुझे पक्का पता है...कोई नहीं है। जब से पाकिस्तान वजूद में आया...एक भी हिन्दू या ईसाई को मिलिट्री की वर्दी नहीं पहनाई गई। क्यों...ऐसा सौतेला सलूक क्यों जेलर—?"

"किसी को जबरदस्ती तो मिलिट्री में भर्ती नहीं किया जा सकता।"

"हिन्दू तो मिलिट्री ज्वाइन कर लें—लेकिन यहां के लोग उन पर भरोसा नहीं करते...।" मुश्ताक की आवाज में कड़वाहट भरने लगी, "लेकिन मेरे हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण मैं हूं...मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी। मेरे जैसे ना जाने कितने मुस्लिम हिन्दुस्तान की मिलिट्री में हैं और अपने वतन की खिदमत कर रहे हैं। वहां पुलिस में भी मुस्लिम हैं। तुम लोगों ने आज तक किसी हिन्दू को नगरपालिका का चेयरमैन तो क्या...मेम्बर तक नहीं बनाया—मन्त्री तो क्या बनाओगे। जबकि हमारे देश में डॉक्टर जाकिर हुसैन और फखरूदीन अली अहमद और अब्दुल कलाम को देश के सबसे ऊंचे पद पर बिठाकर राष्ट्रपति बनाया गया। वहां हिन्दू या मुसलमान नहीं देखा जाता—वहां काबिलियत को सैलाम किया जाता है।"

"तुम गलतफहमी के शिकार हो मुश्ताक मियां—।"

"नहीं, गलतफहमी का शिकार तो तू है...तेरा वो आका चंगेज खां है...।" रोष-भरे लहजे में बोला मुश्ताक, "तुम लोग मेरे साथ जो खेल खेल रहे हो—उसे मैं समझ चुका हूं। मेरे दिमाग में ये भरना चाहते हो कि हिन्दुस्तान में मुस्लिमों पर बहुत ज्यादतियां हो रही हैं, उनके हक मारे जा रहे हैं। लेकिन मैं जानता हूं कि ये सच नहीं है। हिन्दुस्तान के मुसलमान यहां के मुसलामानों से कहीं ज्यादा खुशहाल हैं। उनके साथ कोई भेद-भाव नहीं होता। वो राजनीति में आ सकते हैं, क्रिकेटर बन सकते हैं, मिलिट्री या पुलिस ज्वाइन कर सकते हैं—कोई भी बिजनेस या सर्विस कर सकते हैं—बैंक से

लोन ले सकते हैं। उन्हें वोट देने, वोट लेने का हक हासिल है। वो राशन ले सकते हैं। लेकिन यहां...पाकिस्तान में...यहां के हिन्दू, ईसाई, सिखों को कोई हक नहीं है ढंग की जिन्दगी जीने का। वो खुलकर अपने त्योहार तक नहीं मना सकते। मन्दिर, चर्च और गुरुद्वारे नहीं बना सकते। उन्हें जबरदस्ती मदरसों में पढ़ाया जाता है—वो अपनी पसन्द के स्कूल में नहीं जा सकते। लड़कियों पर स्कूल में जाने पर पाबन्दी लगी है। और तो और...हिन्दुस्तान से आए मुसलमानों को मुहाजिर बोलकर उन्हें बेइज्जत करते हो—उनके साथ गलत सलूक करते हो। तुम अपनों के नहीं हो सालो...हिन्दुस्तानी मुसलमानों के क्या होंगे। लानत है तुम पर और तुम्हारी गन्दी जहनियत पर। बाल भी बांका नहीं कर सकोगे हमारे हिन्दुस्तान का। लेकिन जिस दिन हम हिन्दुस्तानियों का दिमाग घूम गया तो दुनिया के नक्शे पर से पाकिस्तान का नामो-निशान ही मिटा देंगे...आह...।"

पेट पर ठोकर मारकर सरफराज ने मुश्ताक को कुर्सी समेत नीचे गिरा दिया और क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये किसी पागल की मानिन्द ही चिल्लाया—"तुझे अपना बनाकर तेरी जिन्दगी को खुशहाल करना चाहते थे—लेकिन तू कुत्ते की पूंछ की तरह टेढ़ा का टेढ़ा ही रहेगा। अब देख कि तेरे साथ क्या-क्या होता है...!"

□□□
□□□

और फिर मुश्ताक को एक ऐसी सीलन भरी कोठरी में पहुंचा दिया गया, जिसका फर्श टूटा हुआ था, दीवारों तथा छत का प्लास्टर उखड़ा हुआ था।

कोनों में मकड़ी के जाले टंगे हुये थे—बिलों से चूहें झांक रहे थे।

पंखा नहीं था, हवा या रोशनी के लिये कोई रोशनदान तक नहीं था। सींखचों वाले गेट पर भी प्लाईवुड जड़ दी गई थी, ताकि हवा व रोशनी ना मिल सके।

रात का दूध तो क्या...दिन की चाय भी बन्द हो गई।

नाश्ते व खाने में सिर्फ रूखी-सूखी व जली-कटी रोटियां दी गई। चींखने-चिल्लाने पर थोड़ा-सा गर्म पानी मिलता था। कुल मिलाकर उसे इतना भी खाना-पीना नहीं दिया जा रहा था कि वो ठीक से जीवित भी रह सके। ऊपर से उससे जी-तोड़ मेहनत करवाई जाती और बेल्ट व डन्डों से पिटाई की जाती। ज्यादती वाली बात ये कि उसे बाथरूम, लैट्रीन व नाली की सफाई करने को मजबूर किया जाता।

मुश्ताक को लगने लगा कि एक दिन वो उसी जेल में मर-खप जायेगा और अपने वतन वापिस ना लौट सकेगा, लेकिन फिर एक दिन जैसे निराशा के अन्धकार में आशा की नन्हीं-सी रोशनी दिखलाई पड़ी—आस मौहम्मद के रूप में—

हथौड़े से पत्थरों की तुड़ाई कर रहे मुश्ताक के पास वो अधेड़ कैदी आया और सावधानीवश इधर-उधर देखते हुये बेहद धीमी आवाज में बोला, "तीन दिन बाद मुझे रिहा किया जा रहा है मुश्ताक भाई। हिन्दुस्तान की जेल में बन्द पाकिस्तानी कैदियों की रिहाई के बदले यहां से जिन कैदियों को रिहा किया जा रहा है, खुशकिस्मती से उनमें मेरा नाम भी है...।"

"बधाई हो आस मौहम्मद! हर कोई इतना खुशकिस्मत थोड़े ही होता है। मुझे तो ये लोग छोड़ेंगे ही नहीं। मेरी गिरफ्तारी को छिपाकर रखा गया है। शायद मेरे देश के लोग तो यही समझ रहे होंगे कि मैं कहीं मर-खप गया।"

"तुम चाहो तो मुझे कोई खत लिखकर दे सकते हो...।"

मुश्ताक का चेहरा खिल उठा तथा आंखें चमक उठीं, लेकिन फिर वो उदास होकर बोला, "लेकिन मुझे खत लिखने की इजाजत नहीं मिलेगी आस मौहम्मद...क्या तुम मेरा मैसेज पहुंचा सकते हो—?"

"पहुंचा तो दूंगा—लेकिन क्या कोई मेरी बात पर यकीन करेगा? तुम्हारे हाथ का लिखा खत होगा तो तुम्हारे यहां होने का सबूत होगा वो। तुम्हारे घरवाले मेरी बात पर यकीन कर लेंगे—लेकिन वो तुम्हें यहां से छुड़वायेंगे कैसे? यहां के झूठे और बेईमान लोग बोल देंगे कि तुम यहां किसी जेल में बन्द नहीं हो। जबकि खत के दम पर अपने मुल्क की सरकार दावा कर सकती है कि तुम यहां पर हो।"

"हां—ये बात तो है आस मौहम्मद। लेकिन...क्या मुझे कागज और पेन मिल सकता है—?"

"शायद नहीं। लेकिन तुम्हें कोई तरीका तो अपनाना ही होगा—।"

"ठीक है। मैं देखता हूं कि कुछ हो सकता है कि नहीं—?"

□□□
□□□

रात के अन्धेरे में मुश्ताक ने अपने अन्डरवियर को उतारकर उसे फाड़ डाला और झाड़ू की सींक निकाली जो वह बाहर से उठा कर लाया था।

सींक को बांह में चुभोकर खून निकाला और उस खून में सींक भिगो-भिगोकर अण्डरवियर के कपड़े पर अपना सन्देश लिखने लगा।

अन्धेरे में अन्दाजे से ही लिखता चला गया वो।

अगले दिन जब वो पत्थर तोड़ने के वास्ते मैदान में गया तो पोशाक के भीतर सन्देश लिखा अण्डरवियर का कपड़ा छिपकर ले गया।

आस मौहम्मद को इशारे से अपने पास बुलाया। पत्थर की ओट लेकर वो कपड़ा निकालकर उसे दिया तथा बोला, "मुम्बई की मशहूर हस्ती है...केशव पण्डित। उन तक मेरा ये सन्देश पहुंचा देना। जिन्दगीभर तुम्हारा अहसानमन्द रहूंगा आस मौहम्मद।"

आस मौहम्मद ने कपड़े को पोशाक के भीतर छिपा लिया।

रात के आठ बजे के करीब किसी कैदी की पीड़ाभरी चीखें कानों में पड़ने पर मुश्ताक चौंक उठा—उसे लगा कि वो चीखें आस मौहम्मद की हैं।

लेकिन आस मौहम्मद को बेरहमी के साथ क्यों पीटा जा रहा था?

जवाब मिला जेलर सरफराज अली से—

प्लाईवुड जड़े गेट को खोलकर वो कोठरी के भीतर आया और स्याह होंठों पर विषैली किस्म की मुस्कान सजाकर बोला—"तू मिलिट्री वाला है—दिमाग का इस्तेमाल करना जानता है। लेकिन हम लोग भी कम नहीं हैं। तू नहीं जानता कि जेल के चप्पे-चप्पे पर खुफिया कैमरे लगे हैं। शाम को सभी हिस्सों की फिल्म देखी जाती है। मैदान वाली फिल्म में तुझे आस मौहम्मद को वो कपड़ा देते हुये देखा। आस मौहम्मद की तलाशी लेने पर वो कपड़ा मिल गया। अपने खून से तूने किसी केशव पण्डित को मैसेज लिखा था। तेरी तरकीब फेल हो गई। यहीं सड़-सड़कर मर-खप जायेगा तू साले। तेरी लाश को चुपचाप दफन कर दिया जायेगा। किसी को भी हवा तक नहीं आयेगी बेटे! आजादी के ख्वाब देखने बन्द कर दे और कर अपनी मौत का इन्तजार—।"

मुश्ताक हथेलियों में सिर पकड़कर बैठ गया।

□□□

□□□

लम्बे व पैने दांतों से सिगार का अगला सिरा कुतरकर चंगेज खां ने थूका और फिर लाइटर की नीली लौ से सुलगा लिया। कश मारकर मुंह तथा चौड़े नथुनों से खुशबूदार धुआं निकालते हुये ध्यानपूर्वक जेलर सरफराज अली की बातें सुनने लगा।

शानदार ऑफिस की शानदार मेज पर घूंसा जड़कर वह फुंफकार-सा उठा—"पूरा पागल निकला ये मुश्ताक हिन्दुस्तानी। मैं ये चाहता था कि वो अपने वास्ते काम करने को राजी हो जाये तो उसे आई०एस०आई० का कोई बड़ा ओहदा देकर बड़ी जिम्मेदारी दे दी जायेगी। लेकिन ऐसे सनकी किस्म के लोग अपने किसी काम के नहीं हैं। ये तुमने बहुत बढ़िया किया कि मैसेज वाला कपड़ा अपने कब्जे में कर लिया—वरना हमें दिक्कत हो जाती। वो मैसेज मुश्ताक की हैन्ड राइटिंग में था। हमें मुश्ताक को छोड़ना पड़ जाता और हमारे मुल्क की बेइज्जती भी होती कि हमने मुश्ताक की गिरफ्तारी को छिपाया क्यों था?"

"लेकिन जनाब...।"

"हां, बोलो...जेलर—?"

"आस मौहम्मद को तो छोड़ा ही जा रहा है। वो हिन्दुस्तान पहुंच कर बतला देगा कि मुश्ताक हमारी जेल में बन्दी है। हालांकि उसके पास कोई सबूत नहीं होगा। ना ही हिन्दुस्तानी सरकार के पास कोई सबूत है कि मुश्ताक हमारे कब्जे में है। बोल दिया जायेगा कि मुश्ताक हमारे यहां नहीं है—।"

"मुश्ताक ने वो मैसेज अपने घरवालों की बजाय केशव पण्डित के नाम लिखा था—यानि ये मुश्ताक केशव पण्डित का खासम खास हो सकता है। आस मौहम्मद के जरिये ये खबर हिन्दुस्तान जायेगी तो केशव पण्डित तक भी पहुंच जायेगी। नहीं...ये ठीक ना होगा—।"

"ये केशव पण्डित कौन है जनाब—?"

"अरे! तुम केशव पण्डित को नहीं जानते सरफराज? हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है वो। कई बार तो आ चुका है पाकिस्तान में—धमाचौकड़ी मचाकर गया। यहां कोई नहीं सुन रहा—इस वास्ते बोल रहा हूं कि वो हमारे हुक्मरानों, आई०एस०आई० और मिलिट्री वालों के मुंह पर कालिख पोत कर गया। हमारे ट्रेनिंग कैम्प और गोला-बारूद के गोदाम उड़ा गया और हम कुछ भी नहीं कर पाये। उसे मार नहीं सके, पकड़ सके ना रोक सके। वो आंधी बनकर आया और तबाही मचाकर तूफान की तरह ही चला गया। वन मैन आर्मी है वो। मगर खुफिया तरीके से आई०एस०आई० ने उसके कत्ल पर दस करोड़ रुपये का इनाम घोषित किया हुआ है। जब वो यहां आया तो मैं छोटे ओहदे पर था। हाल ही में लेफ्टीनेंट जनरल बनकर आई०एस०आई० का मुखिया बना हूं। मैं होता तो...केशव पण्डित को यूं वापिस ना लौटने देता। उसकी लाश तो क्या...लाश का एक

वाल भी यहां से नहीं जाने देता। खैर, हमें ऐसी कोशिश करनी चाहिये कि मुश्ताक के यहां होने की खबर हिन्दुस्तान नहीं जाने पाये...।"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है जनाब? माना कि मैंने आस मोहम्मद से खून से लिखा वो कपड़ा ले लिया लेकिन आस मौहम्मद को तो रिहा किया ही जायेगा। वो बतला देगा कि मुश्ताक लाहौर की जेल में...।"

"नहीं बतलायेगा वो–।"

"यानि आस मोहम्मद को छोड़ा नहीं जायेगा जनाब–?"

"काश...ऐसा हो पाता सरफराज–लेकिन नहीं हो सकता। क्योंकि हिन्दुस्तान से बीस पाकिस्तानी छोड़ जा रहे हैं–जिनके बदले हमारी सरकार भी बीस हिन्दुस्तानियों को रिहा कर रही है। रिहा होने वाले कैदियों के नामों की लिस्ट भेज दी गई है।"

"तो फिर जनाब–?"

"मुझे एक ऐसे जहर की जानकारी है सरफराज, जो कि चौबीस घण्टे बाद अपने शिकार को अचानक ही मार देता है। यही लगता है कि उसे दिल का दौरा पड़ा और वो मर गया। ना जिस्म नीला पड़ता है–ना ही मुंह से झाग निकलते हैं! तुम्हें खाने में वो जहर मिलाकर आस मौहम्मद को देना है। उसे बाघा बॉर्डर से तभी उस पार भेजा जायेगा–जब वो जहर अपना असर दिखलाने वाला होगा। चूंकि आस मौहम्मद को पता ही नहीं होगा कि वो अचानक ही मरने वाला है–सो वह किसी से मुश्ताक का जिक्र ही नहीं करेगा। उसकी मौत के साथ ही मुश्ताक का राज भी उसके सीने में दफन हो जायेगा। क्यों...क्या ख्याल है–?"

"मान गया आपको जनाब। वाकई में आप बहुत पहुंची हुई हस्ती हैं–।"

चंगेज खां के गुलाबी व पतले होंठों पर मक्कारी भरी मुस्कान किसी नागिन की मानिन्द ही रेंगने लगी!

□□□
□□□

बहुत ही खुश था आस मौहम्मद!

खुश होना बनता भी था–पांच वर्षों से वो अपने वतन, अपने परिवार से दूर रहा था और पाकिस्तान की जेल में सड़ रहा था।

आज वो जेल से निकलकर अपने वतन को लौट रहा था।

बाघा बॉर्डर पर वो उन अन्य कैदियों के साथ बैठा हुआ था, जिन्हें उसके साथ छोड़ा जा रहा था। इधर से ये लोग छोड़े जाने थे और उधर से पाकिस्तानियों को छोड़ा जाना था।

लोहे का बड़ा फाटक ही तो बीच में था–फाटक के उस पार उसका वतन हिन्दुस्तान था।

वो व्याकुलता के साथ अपनी मातृभूमि की माटी को चूमने को लालायित था। प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वो फाटक खुले और वो उस पार पहुंचे।

एक-एक क्षण घण्टों के बराबर लग रहा था।

मानस-पटल पर बीवी आमना, बेटे फरहान और बेटी आस्मा के चेहरे थिरक रहे थे।

खैर, वो क्षण भी आये, जब उधर से पाकिस्तानियों को छोड़ा गया और इधर से उन लोगों को छोड़ा गया।

फाटक पार करते ही आस मौहम्मद ने घुटनों के बल बैठकर होंठों से हिन्दुस्तान की पावन भूमि को चूम लिया और फिर माथा टेककर चार आंसू टपका दिये।

फिर उसने उठना चाहा तो...उठ नहीं सका।

सीने में बहुत ज्यादा खिंचाव और पीड़ा हुई तो हथेलियों से दिल वाले स्थान को दबोचकर गिर गया।

फौरन ही मिलिट्री के जवानों ने उसे उठाकर डॉक्टर के पास पहुंचाया–तब वो जलबिन मछली की मानिन्द ही छटपटा रहा था।

बहुत प्रयस के पश्चात् वो कठिनता से बोल सका, "डॉ...डॉक्टर...मुम्बई के...केशव पण्डित तक...मैसेज पहुंचा...देना...आह...मुश्ताक...हिन्दुस्तानी...लाहौर...की जेल में...।"

बस...!

मुंह खुला-का-खुला रह गया।

आंखें फटी की फटी रह गईं।

जिस्म के पिंजरे को तोड़कर आत्मारूपी पंछी उस यात्रा के लिये उड़ान भरने लगा, जहां से वापसी नहीं होनी थी!

□□□
□□□

हफजीन भी रो रही थी–उसकी बहू सायरा भी रो रही थी।

लेकिन वो खुशी के आंसू थे।

"तु...तुम सच बोल रहे हो केशव...?"

"अ...आप सच बोल रहे हैं भाईजान? वो...वो सही-सलामत है?"

"हां–ऐसा ही है मांजी...सायरा...।" केशव बोला, "बाघा बॉर्डर से डॉक्टर हेमन्त देसाई का फोन आया था। उन्होंने बतलाया

कि पाकिस्तान से कुछ भारतीय कैदियों को छोड़ा गया है, जिनमें एक आस मोहम्मद भी था। बॉर्डर पार करते ही आस मोहम्मद को दिल का दौरा पड़ गया। लेकिन मरने से पहले उसने बतलाया कि मुश्ताक लाहौर जेल में है। उसने ये मैसेज मुझे देने को कहा था। शायद मुश्ताक ने मुझे ही उसके बारे में जानकारी देने को बोला होगा।"

"शुक्रिया...मेरे पाक परवर दीगार...।" हफीजन हथेलियों को जोड़कर ऊपर की तरफ देखते हुये बोली, "मुझे मुश्ताक के जिन्दा होने से ज्यादा इस बात की खुशी है कि उसके माथे पर लगा भगोड़े का धब्बा मिट जायेगा। ये साबित हो जायेगा कि मेरा बेटा जंग में पीठ दिखलाकर भागा नहीं था, बल्कि पाकिस्तानियों ने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया था।"

"वो कब तक आ जायेंगे भाईजान—?" पूछा सायरा ने।

"पाकिस्तान ने मुश्ताक की गिरफ्तारी को छिपा कर रखा है सायरा—वरना अब तक तो मुश्ताक को रिहा कर लिया जाता। मैं आज ही दिल्ली जा रहा हूं। प्रधानमंत्री जी से मिलूंगा। वो पाकिस्तान की सरकार से बात करेंगे और मुश्ताक की रिहाई की मांग रखेंगे। फिर देखते हैं कि क्या होता है—!"

□□□
□□□

उसी शाम की फ्लाइट से केशव दिल्ली पहुंच गया।

उसने फोन पर पहले ही प्रधानमन्त्री से बात करके मुलाकात का समय ले लिया था।

शाम पांच बजे वो प्रधानमंत्री आवास पर पहुंचा और प्रधानमन्त्री से भेंट करके मुश्ताक के बारे में बतलाया।

प्रधानमन्त्री ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति से फोन पर वार्तालाप की और मुश्ताक के बारे में बतलाकर उसे फौरन ही रिहा करने की मांग की।

राष्ट्रपति ने कहा कि वो मुश्ताक के बारे में जानकारी लेंगे और कल सवेरे जवाब देंगे।

प्रधानमन्त्री के आग्रह पर केशव उनके ही आवास पर ही ठहर गया।

अगले दिन पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने फोन द्वारा भारत के प्रधानमन्त्री को सूचित किया कि लाहौर तो क्या...पाकिस्तान की किसी भी जेल में मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी नाम का कोई कैदी नहीं है—।

मीडिया वाले प्रधानमन्त्री के जन्मदिन पर प्रधानमन्त्री आवास पर आये हुये थे तो उन्होंने केशव से भी वार्ता की—केशव ने उन्हें बतलाया कि मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी भगौड़ा नहीं था, बल्कि वो लाहौर की जेल में बन्द है—प्रधानमन्त्री ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति से वार्ता करके मुश्ताक को रिहा करने की मांग की थी लेकिन राष्ट्रपति का जवाब आया है कि पाकिस्तान की किसी भी जेल में नहीं है।

केशव ने इस बात पर बल डाला कि मुश्ताक लाहौर की ही जेल में है और पाकिस्तान ने अपना छल-कपट छिपाने के लिये ही झूठ का सहारा लिया है।

मीडिया वालों ने इस समाचार को अपने चैनल पर प्रसारित कराने में जरा-सी भी देरी ना की।

उक्त समाचार को टी०वी० पर हफीजन तथा सायरा ने सुना तो हफीजन को इतना मानसिक आघात लगा कि वो सोफे पर बैठी रह गई—उसका हार्ट फेल हो गया।

□□□
□□□

"तुम्हारे दिल की हालत मैं समझ सकता हूं सायरा। मुश्ताक तो पाकिस्तान में है और मां जी स्वर्ग सिधार गईं। घर की और आमिर की जिम्मेदारी तुम पर आ गई। यूं कमजोर पड़ोगी तो आमिर को कैसे सम्भाल पाओगी तुम? टी०वी० पर मुश्ताक के बारे में समाचार सुनते ही उन्हें इतना सदमा लगा कि वो प्राण त्याग गईं। टी०वी० पर न्यूज देखते ही मुझे मांजी की चिन्ता हो चली थी। तुरन्त ही मैंने फोन मिलाया—लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मांजी को तो आश्वस्त करने का अवसर नहीं मिल पाया। लेकिन मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मुश्ताक आयेगा—जल्दी ही वो इस घर में होगा। देखो, तुम्हें रोते देखकर आमिर रो रहा है। पहले अपने आंसू पोंछो और फिर आमिर को सम्भालो।"

सायरा ने आंसू पोंछे तथा फिर केशव से डेढ़ वर्षीय आमिर को लेकर उसे चुप कराने लगी।

फिर हफीजन का जनाजा उठा।

केशव ने भी कन्धा दिया।

जनाजा कब्रिस्तान पहुंचा—जहां पहले से ही एक कब्र खोद रखी थी।

केशव कब्र पर मिट्टी डालते हुये बुदबुदाया—"काश कि तुमने मेरे फोन से पहले प्राण ना त्यागे होते मां। लेकिन ऊपरवाले को ऐसा ही स्वीकार था। मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मुश्ताक जल्दी ही पाकिस्तान

तो हिन्दुस्तान आयेगा। वो यहां तुमसे मिलने आयेगा। मुश्ताक को पाकिस्तान से निकालकर हिन्दुस्तान लाने की जिम्मेदारी मैं लेता हूं। मुझे आशीर्वाद दो कि मैं अपने इस वचन को पूरा कर सकूं।"

❑❑❑
❑❑❑

बी०बी०सी० अर्थात् ब्रिटिश ब्रॉड कास्टिंग के चैनल पर उसकी पाकिस्तानी रिपोर्टर जारा खान पाकिस्तानी मिलिट्री के जनरल परवेज खान का इन्टरव्यू ले रही थी। उसने मुद्दा उठाया कि पाकिस्तान में आए दिन आतंकी घटनायें हो रही हैं। गोलीबारी तथा बम-विस्फोटों में निर्दोष लोगों की जानें जा रही हैं तो मिलिट्री क्या कर रही है? क्या ये मान लिया जाये कि पाकिस्तानी मिलिट्री आतंकियों के मुकाबले कमजोर है? तिलमिला उठा परवेज खान और दावे करने लगा कि पाकिस्तान की मिलिट्री विश्व की एक मजबूत मिलिट्री है। जारा खान ने छेड़ दिया—"कारगिल युद्ध में तो पाकिस्तान की मिलिट्री ने भारतीय मिलिट्री के हाथों बुरी मात खाई थी। क्या उसके बाद ही पाकिस्तानी सेना विश्व की मजबूत सेना में शामिल हुई है?"

"मैं कल की नहीं, आज की बात कर रहा हूं मैडम! आज की तारीख में पाकिस्तान की मिलिट्री बहुत ही पावरफुल है। हमारे पास सभी आधुनिक हथियार हैं। परमाणु बम से लैस हैं हम। हमारे पास विश्व की सबसे खतरनाक मिसाइल है। अब हिन्दुस्तान हमसे जंग करके देखे तो बतला देंगे कि हम क्या हैं। मैंने जिस मिसाइल का जिक्र किया है—वो चन्द पलों में ही हिन्दुस्तान के पांच बड़े शहरों दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बेंगलुरू और कोलकाता पर बम गिराकर पलों में वापिस लौट आयेगी। हिन्दुस्तान के पास ऐसी कोई मिसाइल या प्लेन नहीं है, जो हमारी उस मिसाइल को पकड़ सके—या खत्म कर सके। बहुत ही खतरनाक मिसाइल है वो—जिसके दम पर हम किसी भी जंग में फतह हासिल कर सकते हैं।"

❑❑❑
❑❑❑

केन्द्रीय गृहमन्त्री द्वारा आहूत की गई बैठक में मिलिट्री के अफसरों के साथ राजस्थान पुलिस के कुछ अधिकारी भी सम्मलित थे और ध्यानपूर्वक गृहमन्त्री को सुन रहे थे—

"पाकिस्तानी सेना का जनरल परवेज खान अजमेर शरीफ में ख्वाजा जी की जियारत के लिये आ रहा है। बी०बी०सी० लंदन पर दिये उसके विवादास्पद बयान के कारण अपने देश में तनाव का

वातावरण है। बहुत से लोग परवेज खान के बड़बोलेपन पर नाराज हैं। आप लोगों को परवेज खान की सुरक्षा के पूरे इन्तजाम करने हैं। यदि परवेज खान पर एक कंकर भी फेंकी गई तो हमारे लिये ठीक नहीं होगा। ये कहा जायेगा कि हम परवेज खान की सुरक्षा नहीं कर सके—या हमने जानबूझकर उसकी सुरक्षा व्यवस्था में ढील कर दी थी—जोकि ठीक ना होगा। सो आप लोगों को कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। बेहतर होगा कि आप लोग ख्वाजा जी के दरबार तक जाने वाली तमाम सड़कों को सील कर दें और परवेज खान तक सुरक्षा अधिकारियों, जवानों के अलावा किसी को ना जाने दें। आप लोगों की राजस्थान के गृहमन्त्री से भी मीटिंग होनी है। उनके साथ बैठकर तय कर लेना कि आपको सुरक्षा व्यवस्था के लिये क्या-क्या योजनायें बनानी हैं। मैं तो बस इतना ही चाहता हूं कि परवेज खान की यात्रा में कोई व्यवधान ना आये और वो यहां से सकुशल वापिस अपने देश को लौट जायें। आपमें से किसी को अपनी कोई बात रखनी हो तो रख सकता है....।"

❑❑❑
❑❑❑

यूं तो पूरे राजस्थान में ही रेड अलर्ट था—लेकिन अजमेर में सुरक्षा के विशेष इन्तजाम किये गये थे।

चप्पे-चप्पे पर मिलिट्री व पुलिस के जवान तैनात थे।

अजमेर में प्रविष्ट होने पर परवेज खान को जिन सड़कों से गुजरकर दरगाह तक पहुंचना था, उनका ट्रेफिक रोक दिया गया था तथा सभी दुकानें बन्द कर दी गई थीं। किसी को भी सड़क क्रॉस करने की इजाजत नहीं थी।

सड़क के दोनों तरफ बेरीकेटिंग की गई थी। कदम-कदम पर हथियारबन्द जवान तैनात थे। यहां तक कि इमारतों की छतों पर तथा सड़कों से जुड़ी गलियों में भी जवान तैनात थे। पुलिस तथा मिलिट्री के वाहन पैट्रोलिंग कर रहे थे। हैलीकॉप्टर से भी निगरानी की जा रही थी।

कई वाहनों के काफिलों के बीच जनरल परवेज खान की गाड़ी को रखा गया—और उसे दरगाह तक पहुंचाया गया। परवेज खान दरगाह पर चादर चढ़ाकर बाहर निकला तो एक अधेड़ व फटेहाल फकीर ने अचानक ही उसका रास्ता रोक लिया और उसे आग्नेय नेत्रों से घूरते हुये चिल्लाया—"टी०वी० पर दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरू और मुम्बई को मिसाइल से उड़ाने की धमकी देता है और फिर हमारे देश

में आने की जुर्रत भी करता है? पता नहीं तेरी उस मिसाइल में कुछ दम है कि नहीं? लेकिन मेरे पत्थर में बहुत दम है...।"

इससे पहले कि कोई कुछ कर पाता, फकीर ने हाथ में पकड़े पत्थर से परवेज खान के सिर पर वार कर दिया...तड़ाक!

परवेज खान चींखकर गिरने को हुआ तो सुरक्षाकर्मियों ने उसे सम्भाल लिया और रूमालों से बहते खून को रोकने की चेष्टा की!

तुरन्त ही बेहोश हो चुके परवेज खान को हॉस्पिटल पहुंचाया गया, जहां उसे आई०सी०यू० अर्थात् इन्टेंसिव केयर यूनिट में भर्ती करके उपचार शुरू कर दिया गया।

अगले ही दिन परवेज खान जब स्पेशल प्लेन से पाकिस्तान पहुंचा तो उसकी याददाश्त उसके साथ नहीं थी।

❑❑❑
❑❑❑

सिर का जख्म ठीक होने पर परवेज खान को हॉस्पिटल से छुट्टी दे दी गई।

परवेज खान की बीवी, दोनों बेटे तथा बेटी उसकी याद्दाश्त को लेकर बेहद चिन्तित थे—डॉक्टरों की टीम ने बतलाया कि याददाश्त के लिये कोई इलाज या दवाइयां नहीं हैं, वो जब भी आयेगी, अपने आप आयेगी। हां—ये हो सकता है कि अगर परवेज को उसके सभी घरवालों, रिश्तेदारों से मिलवाया जाये, उसके अतीत के बारे में बतलाया जाये—उसको फोटो एलबम और उससे सम्बन्धित वीडियो फिल्म दिखलाई जाये तो शायद याददाश्त लौट आये।

परवेज खान की फैमिली उसको घर ले गई। उसे उसकी शादी, मैरिज एनीवर्सरी, बच्चों के जन्मदिन इत्यादि की वीडियो फिल्म तथा फोटो एलबम दिखलाई गई। उसके अतीत से जुड़ी खास घटनाओं के बारे में सविस्तार से बतलाया गया।

उसे उसके रिश्तेदारों, दोस्तों तथा रिश्तेदारों के यहां ले जाया गया। उसकी जहां-जहां भी नियुक्तियां हुई थीं, वहां भी ले जाया गया।

फिर चंगेज खां को भी रिक्वेस्ट करके बुलवाया गया।

चंगेज खां ने भी परवेज खां को उसके अतीत के बारे में बतलाया और फिर उसे मिलिट्री के हैडक्वार्टर में स्थित उसके आलीशान ऑफिस में भी ले गया।

ऑफिस में ही वैज्ञानिक जहांगीर खान का फोन आया और उसने चंगेज खां को बतलाया कि उन्होंने मिसाइल को अनेकों परीक्षणों के पश्चात् ओ०के० कर दिया है और उस मिसाइल को कभी भी प्रयोग किया जा सकता है।

"बधाई हो जनाब...!" छोटी-छोटी आंखों में चमक भरकर बोला चंगेज खान, "आपका ही ख्वाब था मिसाइल तैयार हो। आपके ही प्लान पर हमारे साइंटिस्ट मिसाइल पर काम कर रहे थे, जिसके वास्ते चीन के वैज्ञानिकों की भी मदद ली गई थी। वो मिसाइल तैयार है। हम उसे कभी भी इस्तेमाल कर सकते हैं।"

"मिसाइल...।" परवेज खान लाल आंखों को सिकोड़कर बोला, "क्या मैं उस मिसाइल को देख सकता हूं? ना जाने क्यों मुझे लग रहा है कि मेरा उस मिसाइल से कोई गहरा रिश्ता है।"

"ये तो बढ़िया बात है जनाब! शायद उस मिसाइल को देखकर आपको और भी कुछ याद आ जाये। आप उसे देखना चाहते हैं तो...हम चलते हैं ना।"

"लेकिन...वो मिसाइल कहां है चंगेज खां—?"

"एक बहुत ही खुफिया जगह पर जनाब। बुरहानपुर में जमीन के भीतर मिलिट्री की बहुत बड़ी लैब है। वहां पर हथियारों की नई फैक्ट्री लगाई गई है। बम तो पहले से ही तैयार होते थे। वहीं पर उस मिसाइल को तैयार किया गया है। बाद में आपके प्लान के मुताबिक ही मिसाइल को इस्लामाबाद में मिलिट्री कैन्ट में ले जाया जायेगा। वहां से हम उस मिसाइल के जरिये हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से पर बम गिरा सकते हैं। बम गिराकर वो मिसाइल वापिस अपनी जगह पर आ जायेगी—। अपने मुल्क के प्रेसीडेन्ट साहब भी उस मिसाइल का दीदार करने के वास्ते बेचैन हैं...।"

"उनका हक भी बैठता है। क्यों ना हम एक काम करें। हम प्रेसीडेन्ट साहब को भी बुरहानपुर बुलवा लेते हैं। वो भी हमारे साथ उस मिसाइल का दीदार कर लेंगे। क्या कहते हो तुम चंगेज खां—?"

"बजा फरमाया आपने जनाब। मैं अभी उनसे कॉन्टेक्ट करता हूं और पूछता हूं कि बुरहानपुर कब आ सकते हैं—?"

❑❑❑
❑❑❑

राष्ट्रपति के पहुंचने तक परवेज खान ने चंगेज खां के साथ उस खुफिया जगह के चप्पे-चप्पे को देखा, जहां वो तीन मीटर लम्बी मिसाइल थी—हथियारों व बमों की फैक्ट्री थी।

फिर अन्य लोगों के साथ वो दोनों राष्ट्रपति का स्वागत करने पहुंचे।

जब सबने फूलों के हार पहना दिये तो परवेज खान अन्त में फूलों का बड़ा-सा हार हथेलियों पर इकट्ठा किये हुये राष्ट्रपति के

समक्ष पहुंचा और ऐसी हरकत कर डाली कि हर कोई चौंक गया, भौचक्का रह गया।

मानो सबको सांप सूंघ गया।

कदमों तले से जमीन खिसक गई।

जिस्म का कोई भी हिस्सा काटो तो खून नहीं वाली हालत।

दरअसल हुआ ये कि परवेज खान ने हार वो जमीन पर गिरा दिया और डोरी में बन्धा माचिस के साइज का रिमोट बम राष्ट्रपति के गले में डाल दिया और जेब से पेन के जैसा रिमोट निकाल लिया।

"ये...ये क्या हरकत है जनरल...?" चंगेज खां हड़बड़ाकर बोला, "अपने हार की बजाय जनाब के गले में ये रिमोट-बम क्यों डाल दिया? और ये बम आपके पास आया कहां से?"

"तेरी आंखों में अगर मोतियाबिन्द उतर आया है तो मैं क्या कर सकता हूं भला? तेरे साथ ही तो मैं उस गोदाम में गया था, जहां पर हजारों बम सजाकर रखे गये हैं। मैंने वहीं से ये बम उठा लिया था और पैन्ट की जेब में रिमोट के साथ डाल लिया था। नहीं, राष्ट्रपति महोदय...इस बम वाले हार को गले से निकालने की भूल नहीं करना—मेरा अंगूठा रिमोट के उस बटन पर ही है, जिसके दबते ही ये बम ब्लास्ट हो जायेगा और आपके जिस्म के परखच्चे उड़ जायेंगे। बेहतर होगा कि कोई भी ऐसी-वैसी हरकत ना करें। कोई गोलियां चलाकर मेरा काम तमाम कर सकता है—लेकिन तब भी मेरा अंगूठा बटन दबाकर इस बम को ब्लास्ट कर देगा! बेचारे राष्ट्रपति महोदय बिन मौत मारे जायेंगे...।"

"ले...लेकिन...।" पसीने-पसीने हो रहे राष्ट्रपति ने फंसी-फंसी सी आवाज में पूछा, "तुमने हमारे गले में ये बम क्यों डाला है? तुम मिलिट्री के जनरल हो—इस मुल्क की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है तुम्हारे कन्धे पर! तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? हमारी जान लेकर क्या मिलेगा तुम्हें? आखिर...तुम्हारा मकसद क्या है—?"

"ये...ये जनरल साहब नहीं हो सकते...।" चंगेज खां आंखें सिकोड़े हुये बोला, "भले ही जनरल साहब की याददाश्त चली जाती...लेकिन वो ऐसी हिमाकत कतई नहीं करते। ऐ...कौन है तू और तेरा मकसद क्या है—?"

❑❑❑

❑❑❑

"ये जानकर तू क्या करेगा चंगेज खां कि मैं कौन हूं? हां, तू ये जान सकता है कि मेरा मकसद क्या है? तू ना भी पूछता तो

भी मुझे अपना मकसद तो बतलाना था ही। अगर बतलाऊंगा नहीं तो फिर मेरा मकसद पूरा होगा कैसे? सबसे पहले राष्ट्रपति महोदय फौरन ही मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी को लाहौर की जेल से निकालकर यहां लाने का हुक्म जारी करेंगे।"

"मुश्ताक...?" राष्ट्रपति की आंखें सिकुड़ चलीं।

"हां, मुश्ताक हिन्दुस्तानी राष्ट्रपति महोदय। फोन पर तो आपने भारत के प्रधानमन्त्री जी से झूठ बोल दिया था कि लाहौर की जेल में तो क्या...किसी भी जेल में मुश्ताक हिन्दुस्तानी नाम का कोई कैदी नहीं है। लेकिन मैं जानता हूं कि मुश्ताक लाहौर की जेल में ही है। फौरन ही हुक्म दीजिये कि किसी प्लेन या हैलीकॉप्टर से मुश्ताक को यहां लाया जाये। वो जितनी जल्दी यहां आ पहुंचेगा—उतना ही आपके वास्ते बढ़िया होगा! क्योंकि मुश्ताक के यहां पहुंचने तक आपको ठीक से हिलने की भी इजाजत ना मिलेगी। आपको खाना तो क्या...पानी की एक बूंद भी मयस्सर ना होगी। ना ही आप बाथरूम, टूवायलेट वगैरा जा सकेंगे...।"

चंगेज खां ने काले कुर्ते के ऊपर पहनी हरी जैकेट की जेब से पिस्टल निकालकर उसकी तरफ तान दी और हिंसक लहजे में बोला, "कौन है तू? जनाब के साथ ऐसी हिमाकत करके तू बच नहीं सकता। बहुत ही बुरा अन्जाम होने वाला है तेरा।"

"सच? वास्तव में ही...?" वह व्यंगपूर्ण लहजे में बोला, "तो फिर देर किस बात की है चंगेज खां? अगर अपनी मां का दूध पीया है तो ट्रिगर दबाकर मेरा खात्मा कर दे। मैं भी रिमोट का बटन दबाकर इस बम को ब्लास्ट कर देता हूं। सभी हथियारों, बमों के साथ वो मिसाइल भी नष्ट हो जायेगी—जिस पर तुम पाकिस्तानी बहुत इतरा रहे हो। चल, गोली चला...।"

"न...नहीं...पिस्टल फेंक दो चंगेज खां...।"

राष्ट्रपति का हुक्म था—सो चंगेज खां ने कसमसाते हुये पिस्टल फेंक दी तथा परवेज खान के रूप वाले उस व्यक्ति को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरने लगा!

वहां मौजूद बाकी मिलिट्री अफसरों तथा जवानों ने भी अपने हथियार गिरा दिये।

"मैंने ऐसा सुना तो नहीं है कि आपकी श्रवण शक्ति अर्थात् सुनने की शक्ति कमजोर है...। फिर भी दोहराये देता हूं। फौरन से पेशतर हुक्म फरमाइये कि मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी को यहां लाया जाये। हैलीकॉप्टर से लाया जाये। क्योंकि मुझे मुश्ताक और आपके साथ बॉर्डर तक जाना है। वहां पर आपके जनरल साहब यानि परवेज

खान को लाया जा चुका है! वहां हेलीकॉप्टर तैयार है। उसमें परवेज खां को बिठाकर आपकी तरफ लाया जायेगा और उसे आपके हवाले करके हम लोग अपने वतन के लिये प्रस्थान कर जायेंगे!"

"यानि तुम जनरल परवेज खान नहीं हो—?"

"नहीं—कतई नहीं राष्ट्रपति महोदय! हां, फेसमास्क, विग, कॉन्टेक्ट लैंसेज और नकली दांतों के माध्यम से मैंने जनरल परवेज खान का रूप अवश्य बनाया हुआ है—।"

"तो फिर कौन हो तुम—?"

"एक हिन्दुस्तानी—।"

"हिन्दुस्तानी का कोई नाम तो होगा—?"

"हां—अवश्य है!"

"ये...ये केशव पण्डित है जनाब...।" चौंककर बोला चंगेज खां, "ओह...अब समझा मैं—ये केशव पण्डित है। ये पहले भी पाकिस्तान आ चुका है और गड़बड़ी करके जा चुका है। लेकिन मैं इस बार इसे कोई गड़बड़ी नहीं करने दूंगा। चंगेज खां के होते हुये ये कुछ भी नहीं कर पायेगा! ये यहां मुश्ताक को छुड़वाने के इरादे से आया है। लेकिन ये मुश्ताक को नहीं ले जा पायेगा। खुद भी नहीं जा पायेगा यहां से! मैं भी देखता हूं कि इस बार ये कैसे कामयाब हो पाता है—!"

❑❑❑

❑❑❑

चंगेज खां की बात पर परवेज खान रूपी केशव ने यूं ही देखा कि मानो किसी नन्हे-मुन्ने बच्चे ने दावा कर दिया हो कि वो सूई में धागा डालकर सूरज को अपनी शर्ट में बटन के स्थान पर टांक सकता है।

बायां हाथ हवा में लहराया और चंगेज खान के गाल पर पंजाब का नक्शा छप गया।

उसके मुंह से घुटी-घुटी-सी चीख और हाथ से पिस्टल निकल गई। वह ताव में, तैश में आकर केशव पर हमला करने को आगे बढ़ा तो केशव के जूते ने पैर के साथ उसकी टांगों के बीच में प्रविष्ट होकर ऊपरी सिरे पर ऐसा दर्दनाक वार किया कि चंगेज खां का मुंह तो खुला, लेकिन कोई आवाज ना निकल सकी।

झुककर उसने दोनों हथेलियों से पेट से निचले हिस्से को दबोच लिया।

समूचे जिस्म का समूचा खून मानो चेहरे की पोटली में इकट्ठा हो गया और छोटी-छोटी आंखों में खारा पानी भर गया।

"इस बदतमीज गंजे को समझाइये राष्ट्रपति महोदय...।" सर्द लहजे में बोला केशव, "ये तो मरेगा ही...साथ में आपको भी मरवा देगा...।"

राष्ट्रपति ने घूरा चंगेज खां को और कहा—"कोई ऐसी-वैसी हरकत करने की जरूरत नहीं चंगेज खां। फौरन ही लाहौर जेल के जेलर से कॉन्टेक्ट करो और मुश्ताक हिन्दुस्तानी को छोड़ने के लिये बोलो। साथ ही ब्रिगेडियर जमील कुरैशी से भी बात करो और बोलो कि मिलिट्री के हैलीकॉप्टर से मुश्ताक को फौरन से पेश्तर यहां भिजवायें।"

पीड़ा को हजम करके केशव को भस्म करने वाली नजरों से घूरते हुये चंगेज खां फोन निकालकर लाहौर जेल के जेलर तथा फिर ब्रिगेडियर से बात करने लगा।

राष्ट्रपति ने केशव से पूछा—"जनरल परवेज खान बॉर्डर पर हैं—?"

"हां—वो बाघा बॉर्डर पर है। वो ठीक है। उसके सिर की चोट ठीक हो गई है। मेरे शिष्य राजन शुक्ला ने फकीर के रूप में उसके सिर पर पत्थर से चोट मारते वक्त इस बात का ख्याल रखा था कि वो मरने ना पाये।"

"ओह...तो परवेज खान पर तुमने ही अपने शागिर्द से हमला करवाया था—।"

"क्या करता—मजबूरी थी। यहां आना था। सही-सलामत आकर सही-सलामत वापिस लौटना था। परवेज खान का भारत दौरा था ही—सो इस बात का फायदा उठा लिया मैंने। उसे चोटिल करके हॉस्पिटल भिजवा दिया। वहां से उसे चुपचाप निकालकर अपने घर ले गया था और उसका रूप धारण कर लिया। चूंकि मैं यहां के बारे में अधिक नहीं जानता—इसलिये याददाश्त खोने का ड्रामा करना पड़ा—।"

"क्या ये धोखेबाजी नहीं है केशव पण्डित—?"

"आप ये बात बोलते हुये बढ़िया नहीं लग रहे राष्ट्रपति महोदय। आप तो बहात्तर छिद्रों वाली छननी हैं। मुश्ताक लाहौर की जेल में बन्द है—लेकिन आपने हमारे प्रधानमन्त्री से झूठ बोल दिया कि मुश्ताक नहीं है। देश की सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठने वाले को ऐसा झूठ बोलना शोभा देता है क्या?"

राष्ट्रपति का चेहरा हैंगर पर लटकाये गये गीले बनियान की मानिन्द ही लटक-सा गया!

"मैंने जेलर और ब्रिगेडियर को हुक्म दे दिया जनाब...।"

चंगेज खां फोन जेब के हवाले करके बोला, "मुश्ताक को हैलीकॉप्टर से यहां लाया जा रहा है। सुनो...।" फिर केशव से बोला, "जनाब को खड़े-खड़े तकलीफ हो रही होगी। इन्हें बैठ जाने दो—।"

"वो रही...।" केशव करीब ही रखी कुर्सी की तरफ इशारा करके राष्ट्रपति से बोला, "आप वहां बैठ सकते हैं। पानी, चाय या कॉफी पी सकते हैं। लेकिन इस बम को छूने की भूल मत करना। मुश्ताक आ जायेगा तो हम हैलीकॉप्टर में सवार होकर बाहर बॉर्डर तक चलेंगे। वहां परवेज खान को आपके हवाले करके हम लोग अपने हैलीकॉप्टर में बैठकर चले जायेंगे।"

"क्या जनाब को ले जाना जरूरी है?" कसमसाकर बोला चंगेज खां, "मेहरबानी करके इनकी बजाये तुम मुझे अपने साथ लेकर चल सकते हो।"

"तू भी साथ चलेगा ना...।" मुस्कुराकर बोला केशव, "परवेज खान के बाद तू ही तो यहां की मिलिट्री का सबसे बड़ा अधिकारी है। चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। अगर तुम लोगों की तरफ से कोई गड़बड़ी ना हुई तो राष्ट्रपति जी को जरा-सा भी कष्ट नहीं होगा! मुश्ताक के साथ तुम लोगों ने ज्यादतियां करके अपनी जात और औकात अवश्य ही दिखलाई होगी। उसको थोड़ी राहत मिलेगी, जब पाकिस्तान का राष्ट्रपति बॉर्डर तक पहुंचाकर आयेगा। जिस हैलीकॉप्टर में राष्ट्रपति जी होंगे, उस पर कोई हमला नहीं होगा—उसका पीछा नहीं किया जायेगा।"

चंगेज खां जहर की सी घूंट भरकर रह गया।

उसका बश चलता तो ना जाने केशव के साथ क्या कर बैठता—लेकिन बन्दर के हाथों में उस्तरा नहीं था।

❑❑❑

❑❑❑

ब्रिगेडियर जमील कुरैशी हैलीकॉप्टर से मुश्ताक को लेकर आ गया।

चूंकि ये बात चंगेज खां ने उसे बतला दी थी कि केशव पण्डित ने राष्ट्रपति के गले में रिमोट-बम डालकर हालात को अपने काबू में कर लिया है सो मिलिट्री के जवानों ने उस स्थान की घेराबन्दी कर ली थी—उनकी संख्या हजारों में थी। पांच सौ के लगभग सैनिक तो भीतर भी चले आये थे—लेकिन राष्ट्रपति के इशारे पर सभी चुपचाप वापिस बाहर चले गये।

हैलीकॉप्टर से मुश्ताक के साथ बाहर निकले जमील कुरैशी ने अपने राष्ट्रपति के गले में बम देखा और बेबस भाव से कुर्सी पर

बैठे देखा तो वो फुंक गया—वो केशव से कुछ कहने जा रहा था कि चंगेज को हाथ बांधे तथा सिर झुकाये देख वो हालात की गम्भीरता को भांपकर चुप ही रह गया।

मुश्ताक लंगड़ाते हुए केशव के पास पहुंचा और उसके सीने से लगकर रो पड़ा।

"मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी...।" कड़क आवाज में बोला केशव, "जंग में दुश्मनों के दांत खट्टे करने वाले को यूं बच्चों की तरह रोना कतई शोभा नहीं देता।"

"बहुत दिनों बाद...एक साल बाद अपने को देखा तो दिल भर आया भाईजान। आप नहीं जानते कि इस एक साल में मुझ पर कैसी बीती।"

"जानता हूं...।" केशव की आवाज भभकने लगी, "तुम्हें लंगड़ाते देखकर अनुमान लगा लिया कि तुम पर इन लोगों ने काफी ज्यादती की। तुम्हें आई०एस०आई० के लिये काम करने को बाध्य किया होगा—तुमने मना कर दिया होगा तो तुम्हें टॉर्चर किया गया होगा।"

आश्चर्य से मुश्ताक ही नहीं, राष्ट्रपति चंगेज खां, ब्रिगेडियर जमील कुरैशी तथा आसपास खड़े लोगों की भी आंखें विस्फारित हो चलीं कि केशव ने कैसे अनुमान लगा लिया?

"चलें, राष्ट्रपति जी...।" बोला केशव, "हमें बाघा बॉर्डर तक छोड़ने चलिये। ये गंजा भी चलेगा...।"

चंगेज खां का चेहरा तमतमाकर टमाटर सरीखा हो गया और मुट्ठियां इस कदर भिंच चलीं कि मानो उनमें राइफल के कारतूस भी होते तो भिण्डियों की मानिन्द ही टूट जाते!

राष्ट्रपति भी विवश!

चंगेज खां भी बेबस!

बाकी के मिलिट्री वाले भी मजबूर!

"मुश्ताक हिन्दुस्तानी—।"

"जी...भाईजान—!"

"उस तरफ से जाओ। गैलरी की समाप्ति पर दायें हाथ पर बमों का भण्डार है। किसी शक्तिशाली टाइम-बम में पांच मिनट बाद का टाइम सैट करके एक्टीवेट कर देना और वहीं पर छोड़ आना! इस इमारत के साथ-साथ वो मिसाइल भी उड़ जायेगी—जिसमें दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलुरू में बम गिराकर वापिस पाकिस्तान लौट आने की क्षमता है। ऐसा जोरदार धमाका होना चाहिये कि प्रत्येक पाकिस्तानी तक ये सन्देश पहुंच जाये कि जब-जब

भी हमारे हिन्दुस्तान के खिलाफ कुछ करने की जुर्रत करोगे—हम यहां आकर जोरदार धमाका कर देंगे...जय हिन्द...वन्दे मातरम...।"

❑❑❑

❑❑❑

पाकिस्तान के राष्ट्रपति, लेफ्टीनेंट जनरल और आई०एस०आई० चीफ चंगेज खां, मुश्ताक हिन्दुस्तानी को बिठाकर केशव ने स्वयं हेलीकॉप्टर उड़ाया।

जैसे ही हैलीकॉप्टर भूमि से पांच सौ मीटर की ऊंचाई पर पहुंचा, एक कर्णभेदी धमका हुआ।

फिर तो धमाकों पर धमाके होने लगे।

उस विशालकाय इमारत के टुकड़े आग के गोलों में लिपटे हुये हवा में उड़ रहे थे, जिसके भीतर हथियारों के बमों के साथ वो स्पेशल मिसाइल भी थी।

रोष तो राष्ट्रपति के मन में भी था, लेकिन चंगेज खां का तो खून गन्धक के पानी की मानिन्द ही खौल रहा था।

उसकी मुट्ठियां भिचीं हुई थीं।

जबड़े चक्की के पाटों की मानिन्द कसे हुये थे।

सुर्ख चेहरे की त्वचा गैंडे की खाल-सी मोटी व खुरदुरी हो चली थी।

बम के रिमोट के बटन पर अंगूठा सटाये हुये बैठा मुश्ताक उसकी मनोदशा पर बेहद प्रसन्न था और उत्साहित भी था।

उसका जी चाह रहा था कि वो पंख लगाकर वायु की गति से उड़कर अपनी अम्मी, बीवी व बेटे के पास पहुंच जाये।

केशव ने उसे उसकी अम्मी के बारे में नहीं बतलाया था।

दो घण्टे की उड़ान भरने पर केशव ने बाघा बॉर्डर पर पाकिस्तानी मिलिट्री की इमारत के बड़े प्रांगण में हैलीकॉप्टर को लैण्ड किया और मुश्ताक से रिमोट लेकर राष्ट्रपति और चंगेज खां से बोला—"कुछ ही देर में मेरा शिष्य राजन शुक्ला और करतार सिंह हैलीकॉप्टर से यहां आयेंगे। उनके साथ परवेज खान भी होगा। फिर हम लोग अपने हैलीकॉप्टर में बैठकर चले जायेंगे। चूंकि ये रिमोट काफी दूरी तक काम करता है—इसीलिये कोई भी गलत हरकत ना की जाये। चलो, बाहर निकलो—।"

वो सभी हैलीकॉप्टर से बाहर निकले।

सैकड़ों की तादाद में हथियारों से लैस मिलिट्री वालों ने इधर-उधर पोजीशन ली हुई थी। जबकि एक कतार में खड़े कुछ बड़े अफसरों ने राष्ट्रपति को सैल्यूट दिया।

"डोन्ट फायरिंग...।" चंगेज खां मानो अंगारों पर ही लोटता हुआ चीख-चीखकर बोला, "जनाब की जान को कोई खतरा नहीं होना चाहिये। हिन्दुस्तान की जानिब से एक हैलीकॉप्टर आयेगा—जिससे जनरल साहब को लाया जा रहा है। जनरल साहब के रूप में खड़ा ये शख्स हिन्दुस्तानी है। केशव पण्डित नाम है इसका। फिलहाल बाजी इसके हाथों में है। इसे और इसके साथियों को हम जाने देंगे—ऐसा करना हमारी मजबूरी है! सब इस बात को जेहन में रखोगे कि जनाब की खातिर हममें से किसी को भी कोई गलत हरकत कतई नहीं करनी है—।"

"हिन्दुस्तान की जानिब से एक हैलीकॉप्टर आ रहा है जनाब।" कर्नल की वर्दी वाला अधेड़ आसमान की तरफ देखते हुये बोला!

"सभी लोग पीछे हट जायें...।" हुक्म दिया चंगेज खां ने, "उस हैलीकॉप्टर को लैण्ड करने की जगह दी जाये।"

फिर वो हैलीकॉप्टर जमीन पर उतरा, जिसे राजन शुक्ला उड़ा रहा था और उसके साथ भीतर करतार सिंह व जनरल परवेज खान भी उपस्थित थे।

❑❑❑

❑❑❑

केशव को अपने प्रतिबिम्ब में देख परवेज खान की आंखों में खून के कतरे-से उतर आये तथा मुट्ठियां भिच चलीं।

नथुने यूं फूलने-पिचकने लगे कि मानो उनके भीतर गुब्बारों को बार-बार फुलाया जा रहा हो।

वो केशव की तरफ बढ़ा ही था कि बीच में चीन की दीवार की मानिन्द चंगेज खां आ गया तथा धीमी आवाज में बोला, "नहीं, जनाब! हम कुछ भी करने की हालत में नहीं हैं। कम्बख्त ने प्रेसीडेन्ट के गले में रिमोट बम डाला हुआ है और हाथ में रिमोट पकड़ा हुआ है। इसी बलबूते मुश्ताक हिन्दुस्तानी को छुड़ा लाया और बुरहानपुर वाली हमारी उस इमारत को टाइम-बम से उड़ा आया, जिसमें आपकी पसन्दीदा मिसाइल 'तैमूर' भी थी...।"

परवेज खान के नथुनों से फुंफकारें-सी निकलने लगी। फिर वो सधे हुए कदमों से केशव की तरफ बढ़ा और दो कदम की दूरी पर ठिठककर बोला—"खूब खेल खेला तूने मेरे साथ। अपने शागिर्द राजन शुक्ला को फकीर बनाकर मुझ पर हमला करवाया। मुझे हॉस्पिटल से अपने घर के तहखाने में पहुंचाकर मेरा हुलिया बनाया और यहां चला आया। मुश्ताक को आजाद करा लाया और मेरी पसन्दीदा मिसाइल को भी नेस्तनाबूद कर आया।"

एक कदम आगे बढ़कर केशव परवेज खान की आंखों से आंखों के पेंच लड़ाते हुए सर्द लहजे में ही बोला—"सबसे पहले तो तू अपनी ये गलतफहमी दूर कर ले कि तेरी वो मिसाइल दुनिया की सबसे शक्तिशाली और खतरनाक मिसाइल थी। मेरे देश में ऐसी-ऐसी मिसाइलें हैं कि तुम तो उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन हम तुम्हारी तरह ओछे नहीं हैं। थोथा चना बाजे घना वाली कहावत चरितार्थ नहीं करते। गलतफहमी के झाड़ पर चढ़कर तूने एलान कर दिया था कि वो मिसाइल दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरू और मुम्बई पर बम गिराकर वापिस लौट सकती है और उसे पकड़ा जा सकता—खत्म नहीं किया जा सकता। हमारे पास ऐसी-ऐसी मिसाइलें हैं कि तेरी वो मिसाइल उड़ान भरकर बोर्डर पर पहुंचती और हमारी मिसाइल उसे वहीं पर नष्ट करके वापिस लौट जाती। हमारा राडार सिस्टम इतना पॉवरफुल है कि दुनिया का कोई भी मुल्क हमारे मुल्क में मिसाइलों से हमला नहीं कर सकता। हमारी मिसाइलें सीमा पर मिसाइल के प्रवेश करते ही उसे नष्ट कर देंगी...।"

केशव ने परवेज खान की एक परिक्रमा ली तथा फिर उसके कन्धे पर दायीं हथेली रखकर बोला, "तूने उस मिसाइल के दम पर बकवास कर डाली थी। लेकिन मैं एक जीती-जागती मिसाइल हूं। इस मिसाइल का कद पांच फुट ग्यारह इंच है—लेकिन जब ये दिमाग के प्रक्षेपास्त्र से छूटती है तो पांच सौ ग्यारह किलोमीटर की क्षमता वाली बन जाती है। तुम लोगों को सबक सिखलाने के लिये सरकार या मिलिट्री की भी आवश्यकता नहीं। मेरे रूप में सिर्फ एक हिन्दुस्तानी ही काफी है। मेरा ये छोटा-सा मिशन अहिंसा से भरा था। टाइम-बम का वो धमाका तो सिर्फ इसलिये था कि दीपावली करीब है। थोड़ी आतिशबाजी करने का मन कर रहा था। लेकिन तुम लोग अपनी गिरी हुई हरकतों से बाज नहीं आओगे तो अगली बार ऐसी आतिशबाजी होगी कि तुम लोगों के कान बहरे हो जायेंगे और आंखें घबराकर देखना बन्द कर देंगी! बाज आ जाओ अपनी बेहूदा हरकतों से। हिन्दुस्तान का बाल टेढ़ा करने के ख्वाब देखने बन्द करो और अपने देश के बिगड़े हुये हालात सुधारो! तबाही की पगडन्डियां छोड़कर तरक्की की राह पर चलो। वरना तुम लोगों की करनी का फल इस मुल्क के लोगों को भुगतना पड़ेगा। कब तक अमेरिका और चीन की दी हुई भीख पर पलोगे? करके खाना सीखो—वरना हाथ इतने कमजोर हो जायेंगे कि भीख का कटोरा भी ना पकड़ा जायेगा—।"

केशव की जुबान ने मानो तलवार बनकर सारे कपड़े फाड़ डाले हों—राष्ट्रपति, परवेज खान, चंगेज खां समेत करीब खड़े बाकी मिलिट्री वालों की ऐसी दशा थी कि मानो भरे चौराहे पर उन्हें नंगा कर दिया गया हो।

"तेरी ये जुबान कैंची की तरह इसीलिये चल रही है केशव पण्डित कि तूने जनाब के गले में रिमोट वाला बम डाला हुआ है...।" चंगेज खां मानो मुंह से लावा उगल रहा था, "वरना मैं देखता कि तू क्या कर सकता है—!"

उसकी तरफ घूमकर मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला तथा फिर हिमाच्छादित बर्फ से शीत स्वर में बोला, "शुक्र मना गंजे कि मेरी सिर्फ जुबान ही चल रही है—वरना मेरे अंगूठे की हल्की-सी जुम्बिश ही तबाही का ऐसा तराना लिख सकती है कि अपने ही आंसुओं की बाढ़ में बह जाओगे! तू खुद को तोप समझता होगा—लेकिन मेरी समझ में तेरी औकात छोटे पटाखे जितनी भी नहीं है। छोटा पटाखा थोड़ा धमाका करके बच्चों को तो डरा देता है—तुझमें तो उतना भी बारूद नहीं है। तू ही मुझे बुरहानपुर की उस इमारत में लेकर आया था—अपने राष्ट्रपति को वहां बुलवाया तूने। मैंने मुश्ताक को छुड़वा लिया—मिसाइल समेत उस इमारत को नेस्तनाबूद कर दिया, वो भी तेरी आंखों के सामने। क्या कर लिया तूने? चुपचाप खड़ा तमाशा ही तो देखता रहा—।"

"तमाशा मैं दिखलाऊंगा तुझे केशव पण्डित...।" बम-सा फट पड़ा चंगेज खां, "तबाही का तमाशा—जो तेरी रूह के पन्ने पर कभी ना मिटने वाला नक्श छोड़ जायेगा—।"

आंखों-ही-आंखों में राजन ने केशव से कुछ बोलने की इजाजत मांगी और फिर चंगेज खां के सामने पहुंचा और उसकी छोटी-छोटी आंखों में झांकते हुये बोला—"किसे तमाशा दिखलाने की बात बोल रहा है तू ओये टकले? गुरुवर को...दिमाग के जादूगर को?

सड़कों पर तमाशा दिखलाने वाला सिर्फ जमूरा ही है तू। जबकि गुरुवर दुनिया के वो सबसे बड़े जादूगर हैं, जो अच्छे-अच्छे मदारियों को भी अपनी उंगलियों पर नचा चुके हैं। अगर तू इनके चंगुल में फंस गया तो तेरी जिन्दगी को ही ऐसा तमाशा बना देंगे कि तेरे हाल पर बच्चे भी हंसेंगे। जिन्दगी के रंगमंच का तू वो कलाकार है, जो राजा के दरबार में सिर्फ भाला उठाकर खड़ा रहता है। जबकि पण्डितजी वो स्क्रिप्ट राइटर और डायरेक्टर हैं, जिनके इशारों पर सभी कलाकार नाचने को विवश होते हैं। इसका साक्षात् उदाहरण तो तेरे सामने ही है। पण्डितजी यहां पर अकेले और निहत्थे

आये थे। इन्होंने मुश्ताक को छुड़ा लिया। मिसाइल समेत हथियारों और बमों की फैक्ट्री उड़वा दी। सबसे बड़ी बात ये कि तेरे देश के राष्ट्रपति समेत तुम लोगों को बेबस और मजबूर कर दिया। ये तुम लोगों को कूदने के लिये बोलेंगे...तो कूदोगे—नाचने को कहेंगे तो नाचोगे—गाने का आदेश देंगे तो गाना ही पड़ेगा। तुम लोगों का तमाशा बना दिया है। ऐसे खिलाड़ियों के खिलाड़ी को तमाशा बनाने का ख्याल भी लाने वाला बेवकूफ व बच्चा ही होगा...।"

चंगेज खां ने कुछ कहने के लिये होंठ हिलाये ही थे कि पटियाला वाला सरदार करतार सिंह गरज उठा—"अपनी चोंच नूं बन्द ही रखना ओये टकले। कहीं ऐसा ना हो कि तेरे मुंह तो तेरे इस राष्ट्रपति दी मौत ही निकल पड़े। अपने गुस्से नूं बचाकर रख—निक्के बच्चे नूं डराने दे काम आयेगा! तैनू गलतफहमी है कि तू बड्डा योद्धा है तो...आजा मैदान विच। तैनू एक मिनट दे भीतर जमीन विच गाड़ देवांगा—।"

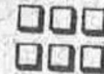
चंगेज खां का चेहरा ठोड़ी से लेकर बाल विहिन सिर तक सुर्ख हो चला, लेकिन राष्ट्रपति की तरफ देखते हुये उसने पतले व सुर्ख होंठों को प्रेशर कुकर के ढक्कन की मानिन्द ही कसकर भींचे रखा।

केशव राष्ट्रपति, चंगेज खां तथा परवेज खान के समक्ष पहुंचकर तीनों से ही सम्बोधित हुआ—"तुम लोग बार-बार, हर बार हिन्दुस्तान के हांथों मुंह की खाते हो—लेकिन अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हो। पता नहीं कि तुम लोग बाज आओगे कि नहीं? लेकिन मैं फिलहाल मुहब्बत के साथ समझा रहा हूं, नेक सलाह दे रहा हूं कि दूसरों के बारे में बुरा सोचना बन्द कर दो और अपने मुल्क के बारे में सोचो। तुम्हारे मुल्क में बहुत गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी है। अपने मुल्क की हालत सुधारो—उसे तरक्की की राह पर डालो। आग में हाथ डालने वाले के हाथ जलते ही जलते हैं—हिन्दुस्तान तो दहकता हुआ वो सूरज है, जो अपने को धूप के रूप में जिन्दगी देता है और दुश्मनों को अपनी लपटों में झुलसाकर राख का ढेर कर डालता है। समझदार के लिये इशारा ही बहुत होता है। तुम्हें समझदार बनना है, या अक्ल का दुश्मन ही बने रहना है—ये तुम लोगों पर ही छोड़कर जा रहा हूं...सलाम...नमस्ते...जय हिन्द।"

और फिर केशव राजन, करतार सिंह व मुश्ताक के साथ हैलीकॉप्टर में चला गया और उसने पायलट वाली सीट सम्भाल ली।

हैलीकॉप्टर ऊपर उठा और हवा में अर्ध वृत्ताकार घूमकर हिन्दुस्तान की तरफ उड़ने लगा।

चंगेज खां और परवेज खान समेत बाकी सभी लोगों की आंखों से चिंगारियां-सी छूट रही थीं।



"और फिर मुश्ताक को मैंने मिलिट्री के हवाले कर दिया था। अगर कोई मिलिट्री वाला दुश्मन देश में बन्दी रहता है तो उसको इन्टेरोगेट किया जाता है। उससे पूछताछ होती है और इस बात की जांच की जाती है कि उसने दुश्मन देश को अपने देश या मिलिट्री की खुफिया जानकारी तो नहीं दी। वो दुश्मनों के हाथों बिक तो नहीं गया—उनका जासूस बनकर तो वापिस नहीं लौटा है? उस व्यक्ति की ब्रेन मैपिंग, लाई डिटेक्टर टेस्ट किया जाता है। उसके निर्दोष साबित होने पर ही छोड़ा जाता है। मुश्ताक को भी निर्दोष साबित होने पर ही छोड़ा गया। अब मुश्ताक आप लोगों के सामने है। मेरा इन्टरव्यू तो आप लोग लेते ही रहते हैं। आज आप मुश्ताक हिन्दुस्तानी का इन्टरव्यू लेंगे तो बेहतर होगा—। हमारे देश को मुश्ताक जैसे लोगों की आवश्यकता है। पाकिस्तानियों ने मुश्ताक को कौम और मजहब का वास्ता देकर तरह-तरह के प्रलोभन देकर अपनी साजिश का शिकार बनाने की चेष्टा की थी—लेकिन मुश्ताक ने अपने दृढ़ निश्चय से पाकिस्तानियों को शिकस्त दी। हांलाकि इसे उसका परिणाम भी भुगतना पड़ा। इसे बहुत परेशान किया गया। टॉर्चर किया गया। इसके दायें पैर की नसें काट दी गईं—परिणामस्वरूप इसे लंगड़ाकर चलना पड़ रहा है—'।"

केशव के साथ अतीत के दरिया से निकलकर वर्तमान के धरातल पर चलते हुये जी-न्यूज के रिपोर्टर ने पूछा—"जैसा कि आपने बतलाया कि आपने पाकिस्तान के राष्ट्रपति और आई०एस०आई० के चीफ चंगेज खां को अपने कब्जे में कर लिया था—जनरल परवेज खान भी आपके कब्जे में था। लेकिन ये खबरें खुली नहीं—किसी को भी ये जानकारियां नहीं हैं।"

"ये सब खबरें छिपा दी गई होंगी—दबा दी गई होंगी ना...।" केशव से पहले ही इण्डिया टी०वी० की रिपोर्टर और केशव के गुरु रमाकान्त की बेटी माधवी चोपड़ा बोल पड़ी, "इन खबरों के लीक होने पर पाकिस्तान की थू-थू ही होनी थी। हर कोई सुनने पर खिल्ली उड़ाता कि पाकिस्तान की मिलिट्री और सिक्योरिटी वाले राष्ट्रपति की मदद नहीं कर पाये और जनरल परवेज खान के साथ चंगेज खां भी बेबस हो गये थे—वो भी सिर्फ एक ही व्यक्ति...मेरे केशव भाई...मेरा मतलब पण्डितजी के सामने! पण्डितजी ने अकेले अपने

दम पर ही इतना बड़ा कारनामा करके दिखला दिया और पाकिस्तान कुछ भी नहीं कर पाया। इसीलिये इन खबरों को छिपाया गया। क्यों भाई...पण्डितजी-?"

प्रत्युत्तर में सिर्फ मुस्कुराया भर केशव!

"मुश्ताक हिन्दुस्तानी जी...।" सहारा न्यूज के रिपोर्टर ने प्रश्न किया, "वैसे तो पण्डितजी ने सब कुछ बतला ही दिया है-लेकिन आप बतलायेंगे कि पाकिस्तान में आपको कैसा महसूस होता था और अब कैसा महसूस हो रहा है-?"

केशव की बगल में बैठे मुश्ताक ने गला खंखारा तथा फिर बोला-"जब मैं पाकिस्तान की सीमा में पकड़ा गया था तो मैंने सोच लिया था कि मुझ पर बुरी ही बीतने वाली है और शायद मैं जिन्दा नहीं बचूंगा-अपने वतन वापिस ना लौट सकूंगा। फिर मुझे टॉर्चर किया गया-लेकिन मैं इसके वास्ते तैयार था। फिर मुझे उन लोगों ने लालच देकर अपना जासूस बनाने की कोशिश की-लेकिन मैंने अपने अन्जाम की परवाह किये बिना साफ मना कर दिया था।"

"आपके मन में लालच नहीं आया था हिन्दुस्तानी जी? वो लोग आपकी जिन्दगी संवार सकते थे। आपको दौलतमन्द बना सकते थे और आपको आजादी भी मिल जाती-?"

"अपने ईमान और अपने जमीर को बेचकर तो मैं कंगाल ही हो जाता माधवी जी। मेरी रगों में नजीर हिन्दुस्तानी का खून और हफीजन का दूध गर्दिश कर रहा है। ये सिर कट सकता है लेकिन दुश्मन के सामने झुक नहीं सकता! मेरे वास्ते दुनिया की दौलत कुछ भी नहीं-मेरे वास्ते मातृभूमि की मिट्टी ज्यादा अहमियत रखती है। मैं वतन परस्त हूं। मेरे वास्ते मेरा वतन मेरे मजहब और कौम से भी बढ़कर है। आपको ये भी बतला दूं कि मेरे आइडियल...मेरे उस्ताद केशव भाईजान हैं। मैंने इनसे बहुत सीखा है! मैं इनके कारनामों से बहुत ज्यादा इम्प्रेस हूं। मैं जब मिलिट्री में भर्ती हुआ था तो मेरे जेहन में ये ही थे। मैं मन-ही-मन ये सोचा करता था कि मुझे भी केशव भाईजान के नक्शे-कदम पर चलना है और अपने वतन के वास्ते कुछ करके दिखलाना है। मैंने पाकिस्तान में जो कुछ भी किया, उसके पीछे केशव भाईजान का ही इम्प्रेशन था! ये हर वक्त मेरे जेहन में समाये हुये थे।"

"जब पण्डितजी ने आपको आजाद करवाया तो कैसा महसूस हुआ था-?"

"जैसे नाबीना यानि अन्धे को आंखें मिल गई हों। जैसे दोजख की आग में झुलसने वाले के वास्ते जन्नत के दरवाजे खुल गये हों।

मैं तो जिन्दगी से बेजार ही हो चला था। फिर आस मोहम्मद नाम के कैदी ने मुझे बतलाया कि उसे छोड़ा जा रहा है तो अन्धेरे की हताशा में उम्मीद की रोशनी नजर आने लगी थी। अन्डरवियर के कपड़े को फाड़कर अपने खून से झाड़ू की सींक भिगो-भिगोकर भाईजान के नाम मैसेज लिखा था-क्योंकि सिर्फ ये ही कोई करिश्मा कर सकते थे। लेकिन जेलर ने उस मैसेज को पकड़कर अपने कब्जे में कर लिया था। तब भी ये उम्मीद थी कि आस मोहम्मद भाईजान तक मेरे बारे में जानकारी पहुंचा देगा-भाई जान को मेरे बारे में जानकारी मिलेगी तो ये मुझे बचाने की कोई तरकीब निकाल ही लेंगे! लेकिन फिर चंगेज खाँ मुझसे मिलने आया था। उसने बतलाया कि आस मोहम्मद को छोड़ना मजबूरी थी-लेकिन आस मोहम्मद को ऐसा जहर दिया गया था कि बाघा बॉर्डर पार करते ही आस मोहम्मद हार्टफेल होने से मर गया। तब मैं बुरी तरह हताश हो चला था। लेकिन आस मोहम्मद ने मरने से पहले डॉक्टर को मेरे बारे में बतलाकर केशव भाईजान को खबर करने को बोल दिया था। डॉक्टर ने भाईजान तक खबर भेजी-और भाईजान मुझे बचाकर ले आये। मरते दम तक मैं इनका अहसानमन्द रहूंगा। अगर अपनी खाल के जूते बनाकर इन्हें पहना दूं...तो भी इनके अहसान नहीं उतार सकूंगा। मेरी गैर मौजूदगी में इन्होंने मेरी अम्मी, बीवी और बेटे का पूरा ख्याल रखा-घर के मेम्बर की तरह ही उनकी देखभाल की! ये मेरी बदकिस्मती रही कि अम्मीजान खुदा को प्यारी हो गईं और मैं उनके आखिरी दीदार नहीं कर सका-उनके जनाजे को कन्धा देकर उन्हें सपुर्दे खाक नहीं कर सका। ये मेरी और मेरे परिवार की खुशकिस्मती है कि हमें भाईजान की सरपरस्ती मिली है।"

"अब आपकी भविष्य के लिये क्या योजना है हिन्दुस्तानी जी? क्या करने का इरादा है आपका-?"

"मेरे दायें पैर में नुक्स आ गया है-इस वास्ते मैं मिलिट्री की वर्दी पहनकर तो अपने वतन की खिदमत नहीं कर पाऊंगा। लेकिन मैं चाहता हूं कि हमारे नौजवान मिलिट्री या पुलिस में भर्ती होकर वतन की खिदमत करें-साथ ही लड़कियां मार्शल आर्ट में माहिर हों, ताकि वो अपनी हिफाजत खुद ही कर सकें। सो मैंने एक ट्रेनिंग सैंटर खोलने का मन बनाया है-जिसमें बच्चों को जूडो-कराटे, कुंग-फू, कुश्ती, मुक्केबाजी के साथ लाठी और बन्दूक, रिवॉल्वर, पिस्टल चलाने की ट्रेनिंग दी जायेगी। लड़कियों को मुफ्त में ट्रेनिंग दी जायेगी। लड़कों से भी बहुत कम फीस ली जायेगी। जो नौजवान मिलिट्री या पुलिस में भर्ती होने के ख्वाहिशमन्द हैं, उनको हर तरह

से गाइडेन्स किया जायेगा। इसी के साथ मैं चाहता हूं कि हरेक हिन्दुस्तानी के भीतर वतन परस्ती का जज्बा पैदा हो। इसके वास्ते मैं एक ऑर्गेनाइजेशन भी बनाऊंगा। हम लोग नुक्कड़ नाटकों और देशभक्ति के साहित्य बांटकर लोगों को जागरूक करेंगे। उन्हें ये सन्देश देंगे कि स्वतन्त्रता सेनानियों और क्रान्तिकारियों ने ढेरों बलिदान देकर आजादी हासिल की थीं, जिसकी हमें कद्र करनी है—वतन परस्ती से जज्बे को बुलन्द बनाये रखना है। कुल मिलाकर मुझे किसी-ना-किसी रूप में अपने वतन की खिदमत करनी है। मेरा मदद के वास्ते केशव भाईजान तो हैं ही। मैं इनके सलाह-मशविरा के बिना कोई कदम नहीं उठाऊंगा। आप लोगों से मेरी यही इल्तजा...रिक्वेस्ट है कि अपने चैनल और अखबार के जरिये पाकिस्तान की असली तस्वीर लोगों के सामने रखें...शुक्रिया...।"

"रेगिस्तान में तैरने वाले इस सात घोड़ों वाले इस रथ की तारीफ करने में भी कोई कंजूसी मत बरतना भाई लोगों...।"

उक्त आवाज पर सभी ने सिर घुमाकर देखा तो लगभग छह फुट लम्बा व तन्दुरुस्त, चालीस वर्षीय युवक एक सुन्दर युवती के साथ खड़ा दिखलाई पड़ा—जो कि सांवला अवश्य था, लेकिन आकर्षक व सुदर्शन व्यक्तित्व का स्वामी था।

ट्रिपल फाइव की सिगरेट में कश लगाकर बोला वह—"मेरा मतलब झील-सी नीली आंखों वाले इन बीन वाले कृष्ण-कन्हैया जी से है, जिसे कोई दिमाग का जादूगर, तो कोई केशव पण्डित कहता है।"

मुस्कुराया केशव और मीडिया वालों से बोला—"इनसे मिलिये। ये मेरा परममित्र अर्जुन है और इसके साथ इसकी मंगेतर सलमा है। ये हमेशा इसी शैली में वार्तालाप करता है।"

सभी मीडिया वाले उठ खड़े हुये और वहां से चले गये—लेकिन माधवी नहीं गई। उसने अपना माइक अपने सहायक को दे दिया और बोली कि वो कुछ देर पश्चात् स्टूडियो पहुंचेगी।

वो केशव, राजन, करतार सिंह, श्वेता गुप्ता, मुश्ताक, अलफांसे तथा सलमा के साथ भीतर बंगले में पहुंची और सोफिया व चांदनी से गले मिली।

छोटे कद तथा लम्बे बालों वाला नौकर मुंशी सभी के लिये चाय व नाश्ता बना लाया।

हंसी-मजाक का दौर चलने लगा।

फिर मुश्ताक ने केशव तथा बाकी लोगों से ये कहकर विदा

ली कि उसे अपनी बीवी सायरा व बेटे आमिर को लेकर हाजी अली की दरगाह पर जाना है।



कथानक को आगे बढ़ाने से पहले आइये, केशव पण्डित तथा बाकी लोगों के सन्दर्भ में संक्षिप्त जानकारी ले लेते हैं—

लन्दन से कानून की डिग्री प्राप्त करने वाला केशव पण्डित गोरा-चिट्टा, पांच फुट ग्यारह इंच ऊंचे तथा तन्दुरुस्त जिस्म का स्वामी है। सुनहरे रंग के अर्ध घुंघराले बालों वाले केशव की झील-सी नीली आंखों में ना जाने कौन-सी जादुई शक्ति समाई हुई है कि सामने वाला सम्मोहित व आकर्षित हुये बिना नहीं रह पाता और मुजरिमों व देशद्रोहियों के जिस्म तो फक्क पड़कर बर्फ-सा ठण्डा पसीना उगलने लगते हैं।

वकील होने के साथ-साथ केशव हाई क्वालिटी का इन्वेस्टीगेटर भी है। इसी के साथ वो मार्शल आर्ट में भी माहिर है और इतना बढ़िया फाइटर है कि अकेला व निहत्था ही हथियारबन्द फौज पर भारी पड़ता है।

पन्ना-सी हरी आंखों वाली सोफिया ने भी केशव के साथ ही लंदन से कानून की डिग्री प्राप्त की थी। वहीं पर दोनों में प्यार हुआ और फिर भारत लौटने पर दोनों ने शादी कर ली थी। स्वर्ग की अप्सरा-सी प्रतीत होती सोफिया को देखकर अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि वो आशीर्वाद नामक पन्द्रह वर्षीय बेटे की मां होगी।

केशव और सोफिया का बेटा आशीर्वाद पण्डित केशव का ही हमशक्ल है और पूरा छः फुटा है। केशव जहां चारमीनार की सिगरेट पीने का शौकीन है, वहीं आशीर्वाद भुने हुये चने खाने का शौकीन है। दसवीं कक्षा में पढ़ने वाला आशीर्वाद ट्रिपल-सी अर्थात् सैन्ट्रल कैम्पेनर कम्पनी नामक देशभक्तों से संगठन का महाराष्ट्र प्रान्त का कमाण्डर है, जिसका चीफ भारत-पुत्र नामक एक रहस्यमयी व्यक्ति है। आशीर्वाद भी अपने पिता केशव पण्डित की तरह बहादुर व जांबाज योद्धा है और उपन्यास भी लिखता है—दोनों के उपन्यास क्रमशः 'धीरज पॉकेट बुक्स' तथा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित हो रहे हैं। उनके उपन्यास पढ़कर आप उनके बारे में विस्तृत रूप से जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। फिलहाल आशीर्वाद ट्रिपल सी के गुप्त मिशन पर निकला हुआ है लेकिन केशव को छोड़ बाकी लोगों को यही जानकारी है कि वो स्कूल की तरफ से एन०सी०सी०

के टूर पर गया हुआ है—आशीर्वाद के ट्रिपल सी में शामिल होने की जानकारी सिर्फ केशव को ही है।

लगभग पेंतीस वर्षीय राजन शुक्ला लम्बे कद व तन्दुरुस्त जिस्म वाला खूबसूरत युवक है। केशव का असिस्टेन्ट होने के कारण वो कानून का तो जानकार है ही—साथ ही इन्वेस्टीगेटर और फाइटर भी है। जो अपनी खूबसूरत पत्नी चांदनी के साथ केशव के बंगले पर ही फैमिली मेम्बर की तरह ही रहता है।

चालीस वर्षीय, लम्बा व हट्टा-कट्टा सरदार करतार सिंह मूलरूप से पंजाब के पटियाला शहर का है। केशव ने उसे ड्राइवर के रूप में नौकरी पर रखा था, लेकिन वक्त बीतते-बीतते केशव के सान्निध्य में वकालत, जासूसी व फाइटिंग के गुर सीखकर केशव का असिस्टेन्ट बन गया। वो किराये के मकान में रहता है। केशव तथा सोफिया के कहने पर भी वो उनके बंगले पर नहीं रहता। दरअसल एक बम-विस्फोट में उनके बीवी-बच्चे भगवान को प्यारे हो गये थे और उसका विश्वास है कि किराये के मकान में उसके बीवी-बच्चों की आत्मायें काम करती हैं।

कानून की डिग्री प्राप्त करने वाली श्वेता गुप्ता सेठ ताराचन्द की इकलौती बेटी थी और रवि गोयल नामक कम्प्यूटर इंजीनियर से मुहब्बत करती थी। दोनों की मंगनी हो चुकी थी तथा शादी भी होने वाली थी, लेकिन रवि गोयल का कत्ल हो गया था। केशव ने उस कत्ल की इन्वेस्टीगेशन करके कातिल के रूप में श्वेता के पिता सेठ ताराचन्द को पकड़ा था, जो कि अन्डरवर्ल्ड का बेताज बादशाह था और ड्रेकुला के नाम से जाना जाता है। श्वेता ने अपने बाप से नाता तोड़ा, उसका घर छोड़ा और उसकी चल-अचल सम्पत्ति ठुकरा दी थी। इतना ही नहीं, उसने केशव की मदद से अपने पिता ताराचन्द को मुजरिम साबित करके अदालत द्वारा फांसी की सजा दिलवाई थी। वो केशव के घर में ही रहती है और केशव की असिस्टेन्ट बनकर कानून, इन्वेस्टीगेशन व मार्शल आर्ट के गुर सीख रही है।

सांवली-सलोनी श्वेता गुप्ता केशव को गुरुजी तथा सोफिया को मैडमजी बोलती है। राजन केशव को गुरुवर तथा सोफिया को दीदी कहता है। करतार सिंह केशव को प्राहवाजी तथा सोफिया को परजाई जी बोलकर पुकारता है।

छोटे कद का दुबला-पतला मुंशी फुट-भर लम्बे बालों व छोटे कद वाला तीस वर्षीय युवक है, जोकि केशव के घर में बतौर नौकर काम करता है। वो साफ-सफाई के कार्यों के साथ-साथ किचन में चाय बनाने के लेकर हर तरह का खाना बनाने में भी माहिर है।

ये भाई साहब स्वयं को हाशियारचन्द कहलवाना पसन्द करते हैं। इनका दावा है कि गांव में दूर-दूर से लोग इनसे सलाह-मशविरा लेने आते थे और इनकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर इन्हें हाशियारचन्द की उपाधि से नवाज दिया था। मुम्बई में भी कोई भूला-भटका इनकी 'अमूल्य' राय लेने आ जाता है। इनका दावा है कि इनका 'प्लान' कभी फेल नहीं होता है।

इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे को भला कौन नहीं जानता?

शायद ही किसी मुल्क की पुलिस को इनकी तलाश ना हो—इनके पीछे इन्टरपोल पड़ी रहती है और हरेक मुल्क ने इन पर इनाम भी घोषित किया हुआ है। इनका कहना है कि दुनिया की कोई भी पुलिस इन्हें पकड़ नहीं सकती—अगर कभी पकड़ा भी तो ये अधिक समय तक जेल में कैद नहीं रहे। इनके लिये दुनिया एक जंगल है और ये उस जंगल के राजा शेर हैं। इन्होंने एक बार अपनी जान पर खेलकर केशव और सोफिया को बचाया था तो केशव ने इन्हें अपना मित्र मान लिया था। बाद में केशव को इनकी वास्तविकता मालूम हुई थी—लेकिन दोस्ती का अटूट बन्धन नहीं टूटा। वैसे भी अलफांसे बड़े उसूलों वाला है। वो मुजरिमों या नम्बर दो का धन्धा करने वालों को ही अपना शिकार बनाता है—गरीबों व जरूरतमन्दों की मदद करता है और औरत जात का मान-सम्मान करता है।

लखनऊ निवासी सलमा जितनी खूबसूरत है, उतनी ही खूबसूरत आवाज की भी मल्लिका है। वो अपने प्रेमी के साथ मुम्बई गायिका बनने आई थी लेकिन प्रेमी धोखा देकर भाग निकला था। वो वर्तमान में आकाशवाणी मुम्बई में सिंगर के रूप में काम करती है।

औरत जात से कोसों दूर रहने वाले अलफांसे ने उसे देखा तो उस पर मर-मिटा था और अपनी जीवन संगनी बनाने का निर्णय कर लिया था। उसने सलमा को एक शानदार बंगला और गाड़ी खरीदकर दी हुई है—स्वयं भी उसी बंगले में रहता है। दोनों ने मंगनी तो कर ली है लेकिन अलफांसे कोई मोटा हाथ मारने पर ही शादी करना चाहता है ताकि बाकी की जिन्दगी ईमानदारी, शराफत व आनन्द के साथ व्यतीत कर सके।

सत्तर वर्षीय रमाकान्त चोपड़ा कभी कानून की दुनिया में एक जाना-माना नाम हुआ करता था और केशव ने अपनी वकालत का शुभारम्भ रमाकान्त के असिस्टेन्ट के रूप में किया था। केशव उसे आज भी अपना गुरु मानता है और उसकी बेटी माधवी को धर्म-बहन

बनाया हुआ है, जोकि बला की खूबसूरत है और इन्डिया न्यूज चेनल की रिपोर्टर है।

आइये, अब कथानक का आनन्द लेते हैं—

❑❑❑

❑❑❑

पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद।

इस्लामाबाद के एक बड़े हॉस्पिटल के आई०सी०यू० के बाहर काफी लोग जमा थे—उनमें एक चंगेज खां भी था।

बाकी लोगों की तरह वह भी चिन्तित था तथा व्याकुलता के साथ चहलकदमी-सी किये जा रहा था।

कारण ये था कि जनरल परवेज खान को हार्ट अटैक हुआ और उसे बेहोशी की दशा में हॉस्पिटल लाया गया है।

शीशे वाला दरवाजा खुला और एक डॉक्टर बाहर निकला तो परवेज खान के परिजन उसकी तरफ लपके।

"रिलेक्स, घबराने वाली कोई बात नहीं...।" डॉक्टर ने कहा, "जनरल साहब को होश आ गया है। उनकी हार्ट बीट, पल्स और बी०पी० अब नॉर्मल है...।"

"हमें उनसे मिलना है...।" परवेज की बीवी बोली।

"मुझे उन्हें देखना है...।" परवेज की बेटी ने कहा।

"आयम सॉरी...अभी आप लोगों में से कोई भीतर नहीं जा सकता! ये जनरल साहब का ही हुक्म है। वो सबसे पहले इनसे...।" वह चंगेज खां को इंगित करके बोला, "मिलने के ख्वाहिशमन्द हैं।"

"मुझसे—?" चौंका चंगेज खां।

"हां, जनाब...आपसे! आप भीतर चले जाइये। जनरल साहब आपको याद फरमा रहे हैं—।"

ग्रे कलर के पठानी सूट वाले चंगेज खां ने लम्बा कद होने के कारण सिर झुकाकर दरवाजा पार किया और भीतर पहुंचा।

बेड पर सफेद चादर ओढ़े लेटा परवेज खान काफी दुःखी और निराश दिखलाई पड़ रहा था। शारीरिक कमजोरी से अधिक मानसिक कमजोरी अधिक झलक रही थी।

"कैसे हैं आप जनाब—?" पूछा चंगेज खां ने।

परवेज खां ने हाथ से बैठ जाने का इशारा किया।

चंगेज खां जब बेड के करीब रखे स्टूल पर बैठ गया तो परवेज खां मानो रुलाई रोकने की चेष्टा करते हुये बोला—"बचपन से ही जांबाज किस्म का रहा मैं। मेरे बुजुर्ग हिन्दुस्तान में रहते थे। बंटवारे के वक्त मेरे दादाजान अपने कुनबे को साथ लेकर पाकिस्तान के

वास्ते चले थे—लेकिन रास्ते में ट्रेन पर हिन्दुओं ने हमला बोला। मेरे दादाजान और दादीजान को बड़ी ही बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया गया था। दादाजान के भाई और उनके बीवी-बच्चों को भी कत्ल कर दिया गया! अब्बूजान ने किसी तरह जान बचाई थी और पाकिस्तान आ गये थे! मैं जब भी उनसे वो किस्सा सुनता था...खून खौल जाता था। दिल में हिंदुस्तान के वास्ते नफरत बढ़ती चली गई और दस साल की उम्र में ही मिलिट्री में भर्ती होने का इरादा कर लिया था—ताकि जंग होने पर हिन्दुस्तानियों को चुन-चुनकर मार सकूं! मिलिट्री ज्वाइन की और मेहनत, जांबाजी के बलबूते सबसे ऊंचा मुकाम हासिल किया—जनरल बन गया मैं। लेकिन...पानी...।"

चंगेज खां ने बेड के नीचे व्हील को घुमाकर बेड का सिरहाने वाला हिस्सा ऊपर उठा दिया और फिर परवेज खान को कांच के गिलास से पानी पिलाया।

"बेड नीचे मत करना चंगेज! बैठने की ख्वाहिश है।"

"जी...जनाब...।" चंगेज खां स्टूल पर बैठा तो स्टूल यूं चरमराया कि मानो उसके बोझ से टूटने ही जा रहा हो।

"रिटायर होने में सिर्फ दो महीने ही बचे हैं चंगेज! मैं ये सोचकर खुश था कि मेरे कैरियर पर कोई दाग नहीं लगा है और मेरा नाम जांबाज मिलिट्री अफसरों में शुमार होगा—लेकिन किश्ती डूबी भी तो कहां...साहिल पर पहुंचकर। कैरियर के लास्ट में पेशानी पर धब्बा लग गया। धब्बा भी ऐसा कि दुनिया ही नहीं, अपनी नजरों में भी गिर गया हूं मैं...।"

"ऐसा ना कहिये, जनाब—।"

"हकीकत से आंखें तो नहीं चुराई जा सकतीं—मुंह तो नहीं फेरा जा सकता चंगेज खां! पाकिस्तान की मिलिट्री का जनरल हूं मैं। और मेरे साथ क्या हुआ? जियारत के वास्ते अजमेर शरीफ गया था! केशव पण्डित ने मुझे जख्मी करवाकर गायब कर दिया और मेरा हुलिया बनाकर यहां चला आया वो। वो मुश्ताक को छुड़ा ले गया और मिसाइल के साथ हथियारों, बमों की फैक्ट्री उड़ाकर चला गया! हमारे प्रसीडेन्ट साहब को मजबूर करके अपने साथ बाघा बॉर्डर तक ले आया। कोई कुछ नहीं कर पाया। एक अकेला हिन्दुस्तानी...सारे पाकिस्तान को तमाचा मारकर चला गया। कोई कुछ नहीं कर पाया—हमारे हुक्मरान हाथ बांधे बैठे रह गये। मिलिट्री के सभी जांबाज खामोशी के साथ बेइज्जती का तमाशा देखते रहे। केशव पण्डित को किसी ने घूरकर देखने की भी हिम्मत ना की। ये सब मेरी वजह से ही तो हुआ चंगेज खां। तुम नहीं जानते कि मेरे दिल और दिमाग पर क्या गुजर रही है!

एक-एक सांस भाला बनकर मेरी रूह को जख्मी किये जा रही है। जिन्दगी मौत से भी बदतर महसूस हो रही है। मरते दम तक खून के आंसू रोता रहूंगा। काश...काश कि मुझमें खुदकुशी करने की हिम्मत होती—लेकिन बीवी और बच्चों का ख्याल करके मैं खुदकुशी भी तो नहीं कर सकता! मरते दम तक शर्मिन्दगी और जलालत के घूंट भरता रहूंगा। मैं इस्तीफा दे रहा हूं।"

"नहीं—आप जजबाती होकर ऐसा फैसला मत करें जनाब—।"

"इस ओहदे पर बने रहने का और मिलिट्री की वर्दी पहनने का हक खो चुका हूं मैं चंगेज खां। बुजदिली का ठप्पा तो लग गया—बेशर्मी का ठप्पा नहीं लगवाना चाहता! इस ओहदे के वास्ते तुम एक काबिल उम्मीदवार हो। मेरे बाद जनरल की कुर्सी पर तुम्हारा ही हक बनता है—।"

"नहीं, जनाब! मैं जनरल नहीं बनना चाहता।"

"ये क्या कह रहे हो चंगेज खां! ना जाने कितने लोग जनरल बनने के ख्वाब देखते हैं—लेकिन कोई खुशकिस्मत ही इस मुकाम पर पहुंच पाता है! तुम जनरल का ओहदा क्यों ठकुरा रहे हो—?"

□□□

□□□

"माफी चाहूंगा जनाब! मुझे जनरल के ओहदे में कतई भी दिलचस्पी नहीं है। मुझे लेफ्टीनेंट जनरल की पोस्ट ही पसन्द है। क्योंकि लेफ्टीनेंट जनरल आई०एस०आई० का चीफ होता है। उसे आई०एस०आई० के माध्यम से बहुत कुछ करने का मौका मिलता है—खास तौर से हिन्दुस्तान के खिलाफ। हांलाकि जनरल के अन्डर में ही सारी मिलिट्री और आई०एस०आई० होती है—लेकिन जिस तरह एक थाने का मालिक थानेदार होता है—उसी तरह मैं भी आई०एस०आई० का चीफ ही बने रहना चाहता हूं। आप अपने दो महीने भी पूरे करिये और वक्त पर ही रिटायर होइये—।"

"नहीं, चंगेज खां! तुम सब कुछ जानते हो। प्रेसीडेन्ट साहब से मिलने नहीं जा सका मैं—उनसे नजरें मिलाने की हिम्मत ही नहीं है। मेरी वजह से ही वो जलील हुये। केशव पण्डित ने गले में बम डालकर उन्हें मजबूर कर दिया था और उन्हें बाघा बॉर्डर तक ले जाने की जुर्रत की। उनकी तौहीन सारे मुल्क की तौहीन है। जो भी हुआ, उसके वास्ते मैं ही तो जिम्मेदार हूं...।"

"मेरे ख्याल से ऐसा नहीं है जनाब। केशव पण्डित का तुक्का लग गया और वो आपको अपने कब्जे में करके आपके हुलिये में यहां आने में कामयाब हो गया था। देखा जाये तो गुनाहगार और खतावार

तो मैं भी हूं। मेरी मौजूदगी में ही उसने प्रसीडेन्ट साहब के गले में रिमोट बम डाल दिया था। मुश्ताक हिन्दुस्तानी को छुड़वाया—मिसाइल समेत फैक्ट्री को उड़ा दिया। प्रसीडेन्ट साहब को मेरे साथ बाघा बॉर्डर ले गया वो और मैं कुछ भी तो नहीं कर पाया। बहुत ज्यादा गिल्टी...शर्मिन्दगी महसूस हो रही है मुझे। आपको बतला नहीं सकता कि मुझ पर कैसी बीत रही है। तभी से जैसे अंगारों पर लेट रहा हूं मैं। हवायें भी चलती हैं तो लगता है कि वो मेरा मखौल उड़ा रही हैं। लोग मेरी तरफ यूं ही देखते हैं तो लगता है कि वो मुझे बुजदिल बोल रहे हों। वो हरामजादा केशव पण्डित जैसे मेरे मुंह पर पेशाब करके चला गया। सीने में आग दहक रही है—दिमाग में बारूद-सा फटने को तैयार है जैसे। बिस्तर नुकीली कीलों का बिछौना लगता है। पानी तेजाब की तरह ही जलाता है—रोटियां अपने ही गोश्त के लोथड़े मालूम पड़ती है। मैं इन्तकाम की आग में झुलसा जा रहा हूं। हमारी और हमारे मुल्क की भी बहुत तौहीन हुई है। दुनियाभर में ये बात फैल चुकी है कि हमारे प्रसीडेन्ट साहब ने मुश्ताक हिन्दुस्तानी के बारे में झूठ बोला था और धोखेबाजी से काम लिया था! उससे बड़ी बेइज्जती ये हुई कि एक हिन्दुस्तानी अकेला आया और हमें बुजदिल साबित करके चला गया—हम उसका बाल भी बांका नहीं कर सके। मुझे केशव पण्डित और हिन्दुस्तान से इन्तकाम लेना है—इसके वास्ते मुझे आपकी भी मदद चाहिये जनाब—।"

"मैं क्या कर सकता हूं—?"

"आप इस्तीफा मत दीजिये—अपने ओहदे पर बने रहिये।"

"लेकिन इससे क्या होगा—?"

"मैं हिन्दुस्तान और केशव पण्डित के खिलाफ कोई खतरनाक किस्म के मिशन को अन्जाम देना चाहता हूं। आप अपने ओहदे पर बने रहेंगे तो उसका क्रेडिट आपको भी मिलेगा जनाब—। हम मिल-जुलकर कुछ कर जायेंगे तो शर्मिन्दगी वाह-वाही में बदल जायेगी। हमारी बुजदिली बहादुरी में तब्दील हो जायेगी। हम फिर से सिर उठाकर चल सकेंगे।"

"अगर ऐसा हो जाये तो अपनी जिन्दगी दोजख से जन्नत में बदल जायेगी। लेकिन...क्या ऐसा कुछ हो सकता है चंगेज—?"

"क्यों नहीं हो सकता जनाब! हम लोग किसी से कम हैं क्या? हम लोग जब कुछ करने का फैसला कर लेंगे और प्लान पर अमल करेंगे तो बहुत कुछ होगा! हिन्दुस्तान में ऐसी तबाही मचाई जायेगी कि हरेक हिन्दुस्तानी के दिलो-दिमाग में दहशत भरती चली जायेगी। हिन्दुस्तान में ही केशव पण्डित की जान बसती है। हिन्दुस्तान में

बदअमनी और दहशत का माहौल होने पर वो साला तड़प उठेगा। अपनी आदत से मजबूर होकर वो मैदान में जरूर उतरेगा। तब उससे भी निपट लिया जायेगा। उसका वो हस्र किया जायेगा कि उसके तिरपन्न कांप उठेंगे। बस, आप इस्तीफा मत दीजिये। दो महीने के भीतर ही मैं हिन्दुस्तान में तबाही मचा दूंगा। हमारे हुक्मरान और हमारे प्रसीडेन्ट के साथ मुल्क के लोग भी हमारे कारनामे से खुश हो जायेंगे और वो बीती बातों को भूल जायेंगे। इस देश के लोग हिन्दुस्तान में गड़बड़ी होने पर हमारी सारी खतायें माफ कर देंगे और हमारे नये कारनामे पर शाबाशी देंगे–।"

"हां–ये बात तो है चंगेज खां। लेकिन हिन्दुस्तान में बहुत सोच-विचार के बाद ही कोई कारनामा करना होगा। जब भी वहां कुछ होता है तो वो लोग पाकिस्तान पर ही इल्जाम लगा देते हैं। वैसे भी कसाब के पकड़े जाने से हमारी दुनिया भर में बदनामी हुई है। क्योंकि कसाब पाकिस्तानी है–उसने कैमरे के सामने अपने जुर्म कबूले हैं। उसने बतला दिया कि वो पाकिस्तानी है और उसे पाकिस्तान में ही ट्रेनिंग देकर मुम्बई में हमले करने को भेजा गया था। पाकिस्तान को जवाब देना भारी पड़ गया था। ऊपर से मुश्ताक वाले मामले में हमारी बहुत किरकिरी हुई है। तुम्हें बहुत ही सावधानी बरतनी होगी! हिन्दुस्तान को हमारे खिलाफ कोई सबूत नहीं मिलना चाहिये। वहां का खुफिया महकमा बहुत ही ताकतवर है। फिर...वहां केशव पण्डित भी तो है। वो क्या चीज है, ये बतलाने की जरूरत नहीं है। बेहतर होगा कि पहले तुम कोई फुल प्रूफ प्लान तैयार कर लो और मुझे बतलाओ। फिर मैं जवाब दूंगा–।"

"ठीक है जनाब। मैं अभी से दिमाग के अस्तबल को खोलकर तमाम घोड़े दौड़ा देता हूं। जल्दी ही मैं आपके पास वापिस लौटूंगा और बतलाऊंगा कि मेरा प्लान क्या है–।"

□□□
□□□

"सम्भलकर करतार सिंह...!"

बगल में बैठे राजन की आवाज पर करतार सिंह सम्भला और उसने विन्ड स्क्रीन पर नजरें गड़ाकर बला की फुर्ती के साथ ब्रेक पैडल पर पैर का दबाव डाला।

चिंघाड़कर गाड़ी के टायरों ने घूमना तो बन्द कर दिया, लेकिन वो चिकनी सड़क पर कुछ दूरी तरक फिसलते चले गये–परिणामस्वरूप एक इन्सानी चीख उभरी।

राजन व करतार सिंह भी बाहर निकले–लेकिन उनसे पहले

ही पीछे का दरवाजा खोलकर केशव गाड़ी के आगे पहुंच गया और लगभग सत्तर वर्षीय व्यक्ति को सहारा देकर उठाने पर बोला–

"आपको चोट तो नहीं लगी बड़े मियां–?"

वह सलेटी रंग की पैन्ट व बन्द गले के कोट में था और उसके चेहरे पर सफेद रंग की छोटे-छोटे बालों वाली दाढ़ी भी थी। अपने सहारे खड़े होकर कराहते हुए बोला, "सिगरेट की डिब्बी खरीदकर सड़क पार खड़ी अपनी गाड़ी की तरफ जा रहा था मैं पण्डितजी–लेकिन बीच सड़क में ही चक्कर आने की वजह से मैं सिर पकड़कर खड़ा रह गया। गाड़ी से टच भी नहीं हुआ–लेकिन ब्रेकों की तेज आवाज सुनकर घबरा गया और चीख मारकर गिर पड़ा। घुटनों में थोड़ी चोटें आई हैं–।"

"ओह...चलिये, मैं आपको डॉक्टर के पास लेकर चलता हूं...।"

"नहीं–इतनी गम्भीर चोटें नहीं हैं पण्डितजी! उधर मेरी गाड़ी खड़ी है–मैं घर जाकर ट्रीटमेंट कर लूंगा–।"

"कोई बात नहीं। करीब ही डॉक्टर सुदीप गुप्ता का क्लीनिक है। मैं आपकी गाड़ी ड्राइव करके आपको डॉक्टर के पास लिये चलता हूं। फिर आपको आपके घर भी छोड़ दूंगा।"

"आप तो बहुत बिजी हैं पण्डितजी–किसी जरूरी काम से ही जा रहे होंगे।"

"नहीं–हम लोग घर को लौट रहे थे। प्लीज, आप चलिये। सुनो–।" वह राजन व करतार सिंह से बोला, "तुम दोनों हमारे पीछे-पीछे आओ–।"

फिर केशव उस बूढ़े को उसकी कार में बिठाकर और उसकी कार को ड्राइव करते हुये चल दिया।

"आपने पाकिस्तान जाकर मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी को छुड़ाया और उनकी मिसाइल भी उड़ा आये पण्डितजी!" विल्स की सिगरेट सुलगाकर बोला वह बूढ़ा, "आप तो चारमीनार के अलावा दूसरी कोई सिगरेट पीते नहीं–इसी वास्ते सिगरेट ऑफर ना करने की गुस्ताखी कर गया...।"

"कोई बात नहीं–मैं वास्तव में ही चारमीनार ब्रान्ड के सिवाय दूसरे किसी ब्रान्ड की सिगरेट नहीं पीता।"

"आपने पाकिस्तान जाकर धमाल ही कर दिया। पाकिस्तान वालों को जबरदस्त सबक सिखलाकर आये आप। हम हिन्दुस्तानियों को आप पर फख्र है। ओह, सॉरी...अपना इन्ट्रोडक्शन तो दिया ही नहीं मैंने। खाकसार को मिर्जा बेग कहते हैं–।"

"दिव्यांशी टूवीव्हज वाले–?"

"हां। कमाल है। आपने कैसे जान लिया मुझे–?"

"सिर्फ आपके नाम से मिर्जा साहब!" विन्ड स्क्रीन पर नजरें चिपकाये हुये बोला केशव, "आप मुम्बई की मशहूर हस्ती हैं–।"

"खुदा के वास्ते शर्मिन्दा ना करें पण्डितजी–।"

"आप तो तारीफ के काबिल हैं मिर्जा साहब! हिन्दू-मुस्लिम एकता के उदाहरण हैं आप तो! अपने मित्र की बेटी को एडॉप्ट करके आपने उसे अपनी बेटी बना लिया और उसके नाम से खिलौनों की फैक्ट्री खोली थी।"

"अनुष्का मेरे मरहूम दोस्त अमरचन्द की बेटी थी पण्डितजी। अमरचन्द के मुझ पर बहुत अहसान थे! मेरा एक्सीडेन्ट हो गया था तो अमरचन्द ने अपना खून देकर मेरी जान बचाई थी! फिर मेरी फैक्ट्री में आग लग गई थी! सब कुछ जलकर खाक हो गया था और मैं महल से सड़क पर ही आ गया था! तब अमरचन्द ने अपनी कसम देकर बिना ब्याज के एक लाख रुपये दिये थे–जिनसे मैंने किरयाना की शॉप खोली! फिर हिन्दू-मुस्लिम दंगे में मेरी बीवी, तीन बेटे और दो बेटियां मारी गई थीं तो मैं पागल-सा ही हो गया था। तब अमरचन्द और रागनी भाभी ने ही मुझे सम्भाला था। उन्होंने एक साल की अनुष्का को मेरी गोद में डालकर कहा था कि मुझे उन दोनों और अनुष्का के वास्ते जीना ही होगा! बदकिस्मती से छह महीने बाद ही ट्रेन हादसे में अमरचन्द और रागनी भाभी मारे गये थे। उनका कोई करीबी रिश्तेदार भी नहीं था। डेढ़ साल की अनुष्का को मैंने ही सम्भाला। ना जाने उस बच्ची में क्या जादू था कि उसी में मुझे अपनी सारी दुनिया नजर आने लगी थी। मैंने उसे कानूनी रूप से गोद ले लिया था...।"

"लेकिन उसका नाम और धर्म नहीं बदला आपने–।"

"क्योंकि उसकी रगों में हिन्दू पिता का खून और हिन्दू मां का दूध था। इस हकीकत से भला कैसे इन्कार किया जा सकता था कि अनुष्का हिन्दू थी। वैसे भी मैं मुसलमान होने पर भी सभी धर्मों की इज्जत करता हूं। मैंने अनुष्का के कमरे में गणेश, लक्ष्मी, राम और हनुमान की तस्वीरें लगाई थीं। फिर एक कमरे में पूजाघर भी बनवा दिया था!"

"आपने अपनी फैक्ट्री में भी मस्जिद के साथ मंदिर, चर्च और गुरुद्वारा बनवाया हुआ है...मिर्जा साहब–।"

"क्योंकि मेरी फैक्ट्री में हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई काम करते हैं पण्डितजी–मैं दूसरों के धर्मों का मान-सम्मान करूंगा, तभी

तो वो मेरे मजहब का सम्मान करेंगे। वैसे भी कोई धर्म बुरा नहीं होता। सभी धर्म अच्छी बातें सिखलाते हैं और लोगों को बुराई से दूर करके इन्सान बनाते हैं–इसी वास्ते सभी धर्मों की कद्र होनी ही चाहिये–।"

"आपके विचारों, ख्यालातों की मैं इज्जत करता हूं मिर्जा साहब! आपकी महानता के समक्ष नत-मस्तक हूं मैं! आपके बारे में बहुत सुना है मैंने! आप मस्जिद के साथ मन्दिर, गुरुद्वारा और चर्च के लिये भी चन्दा देते हैं! आपके बनवाये हुये अनाथालय और वृद्ध-आश्रम में सभी धर्मों के लोग रहते हैं। आपके बनवाये हॉस्पिटल में सभी का मुफ्त इलाज होता है और स्कूल में सभी धर्मों के बच्चे मुफ्त में शिक्षा पाते हैं। ईश्वर ना करे कि आपकी जिन्दगी में कभी कोई दिक्कत या परेशानी आये। आप और आपकी बेटी अनुष्का खुश रहें। लेकिन कभी कोई दिक्कत हो, या मेरी कोई जरूरत हो तो निःसंकोच मुझे याद करना। आपके किसी काम आकर मुझे बेहद खुशी होगी–।"

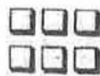
"आप तो सभी के काम आते हैं पण्डितजी! मुझे कभी आपकी जरूरत हुई तो आप मेरे काम आयेंगे–ये पूरी उम्मीद है मुझे!"

"आपकी बेटी अनुष्का क्या कर रही है–?"

"उसने बिजनेस मैनेजमेन्ट का कोर्स किया था पण्डितजी। मैंने उसी को फैक्ट्री की जिम्मेदारी सौंप दी है। वो बढ़िया ढंग से बिजनेस सम्भाल रही है। आप तो जानते ही होंगे कि मार्केट में चाइना के सस्ते खिलौने आ गये हैं। लेकिन हमारी फैक्ट्री में बने खिलौने अपनी खूबसूरती, मजबूती और वाजिब दाम की वजह से खूब बिक रहे हैं। बच्चे ही नहीं, बड़े भी उन्हें देखकर खुश हो जाते हैं। बस, अब तो एक ही अरमान है कि अपनी बच्ची की धूमधाम के साथ शादी कर दूं! अनुष्का से बार-बार बोल देता हूं कि अगर उसे कोई भी लड़का पसन्द आये तो मुझे बतला दें–मैं उस लड़के को खुशी-खुशी अपना दामाद बना लूंगा। हां, उसे मेरी एक शर्त कबूलनी होगी कि उसे मेरा घरदामाद बनकर मेरे ही साथ रहना होगा–मेरा जो कुछ भी है, वो सब अनुष्का का ही तो है। वैसे भी मैं अनुष्का के बिना नहीं रह सकता!"

कुछ ही देर पश्चात् डॉक्टर सुदीप गुप्ता का क्लीनिक आ गया। केशव ने मिर्जा बेग की मरहम-पट्टी करवाई।

चूंकि चोटें बहुत मामूली थीं, इसलिये मिर्जा बेग के कहने पर केशव ने उससे विदा ली और राजन व करतार के संग अपने घर को चल दिया।



वो डरी-सहमी-सी, सकुचाती व झिझकते हुये पचास वर्षीय प्रोफेसर वाटसन के ऑफिस में प्रविष्ट हुई और फिर मानो उसे अपनी गलती का आभास हुआ तो पीछे की तरफ हटने पर बोली—"मे...मे...आई कम इन, सर—?"

लाल आंखों वाले प्रोफेसर वाटसन ने उसे ध्यानपूर्वक देखा, जोकि खूबसूरती की जिन्दा मिसाइल थी—

लगभग इक्कीस वर्षीय उस युवती का जिस्म देखकर यूं ही लगता था कि मानो ईश्वर ने मक्खन में थोड़ा मैदा, थोड़ी गुलाब की पंखुड़ियां, थोड़ा केसर, थोड़ा सोना, थोड़ी चांदी, थोड़े हीरे-मोती, चन्दन, कस्तूरी, केवड़ा, नारियल, थोड़ी धूप, थोड़ी चांदनी को एक साथ घोटकर केले के तनों से बने सांचे में एक नारी जिस्म ढालकर उसमें प्राण फूंक दिये हों और आशीर्वाद दे दिया हो कि...जा, दुनिया की मैली-से-मैली नजरें भी तुझे मैली ना कर पायेंगी। मानो सावन की घटाओं से स्याह, हीरों की चमक लिये हुये, रेशम की कोमलता तथा आसमान के असंख्य सितारों का घनापन लिये हुये लम्बे केश!

अर्ध चन्द्रमा-सा मस्तक!

इन्द्र धनुष के आकार वाली भौंहें!

हिरणी के जैसी आंखें, जिनमें मानो शर्मो-हया का समुद्र ठाठे मार रहा हो।

हिमाचल के ताजे सेबों जैसे चिकने व चमकीले गाल!

बारीक, लम्बी व खूबसूरत नाक!

होंठ ऐसे कि मानो गुलाब की पंखुड़ियों में ओस की बूंदें और शहद घोल दिया गया हो।

अनार के दानों से छोटे-छोटे, राजहंस के से सफेद व सच्चे मोतियों के से दमकते हुये दांत!

सुराही-सी गर्दन!

उन्नत व सुडौल वक्ष!

पतली लचीली कमर!

सून्डाकार पैर।

कुल मिलाकर रूप-यौवन का अनमोल खजाना समेटे हुये थी वो।

बावजूद इसके कि उसने कोई शृंगार या मेकअप नहीं किया हुआ था।

काले रंग के कुर्ते व सलवार में यूं ही प्रतीत हो रही थी कि

मानो स्याह रात में चौदहवीं का चांद निकल आया हो!

गले में पड़े सफेद दुपट्टे से उसने सिर ढांपा हुआ था।

"कम इन शहजादी...प्लीज, सीट डाऊन...।"

लजाते-सकुचाते हुये वो आगे बढ़ी और मेज के इधर रखी दो में से एक कुर्सी पर बहुत धीरे से बैठ गई।

नजरें झुकी हुई थीं।

गुलाबी होंठों के थरथराने पर मानो बगिया के किसी वृक्ष पर बैठी कोयल कूक उठी—"आ...आपने मुझे बुलाया...सर—?"

"हां, शहजादी...।" वाटसन उंगलियों से पेन को नचाते हुये बोला, "तुम्हारे माता-पिता ने बहुत से ख्वाब देखते हुये और बहुत-सी उम्मीदें लगाते हुये तुम्हें अमेरिका के सबसे अधिक प्रसिद्ध और कामयाब मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर बनने के लिये भेजा होगा। इस मेडिकल कॉलेज से डॉक्टर बनकर जाने वाले लोग दुनिया के किसी भी हिस्से में जाकर प्रेक्टिस करें—कामयाबी और शोहरत उनके कदम चूमती है। मानो उनके पास जादू की छड़ी होती है—जिसके दम पर वो अपने मरीज को चुटकी बजाते ही भला-चंगा कर देते हैं। मरीजों की दुआओं के साथ उन पर दौलत भी बरसती है...।"

"ले...लेकिन सर—मैं गरीबों का इलाज करने के मकसद से ही डॉक्टर बनने आई हूं। गुजारे लायक ही कमाई होती रहे...मेरे वास्ते उतना ही काफी है।"

"मुझे बेहद अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि तुम्हारा ये ख्वाब पूरा नहीं होने वाला।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं सर...?" वो घबराकर बोली, "मैं तो पूरी मेहनत के साथ पढ़ाई कर रही हूं।"

"लेकिन फिर भी हरेक सब्जेक्ट में तुम्हारे मार्क्स कम हैं शहजादी! लेकिन अभी वायवा वाला एग्जाम बाकी है। उसमें तुम सेन्ट-परसेन्ट मार्क्स ले आओ तो...तुम पास हो सकती हो—।"

"मैं...मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगी सर—।"

"कोशिश करने से बात ना बनेगी। हांलाकि वायवा के तमाम क्वेश्चन मुझे पूछने हैं और मुझे ही मार्क्स देने हैं—लेकिन ये सब वीडियो कैमरे के सामने होगा और वहां कई दूसरे लोग भी मौजूद होंगे! तुम्हारे जवाबों के आधार पर ही मुझे मार्क्स देने होंगे। हां, एक काम हो सकता है। मैं आज शाम को प्रश्नों वाली शीट तैयार करने जा रहा हूं। मैं तुम्हें बतला दूंगा कि वायवा में कौन-कौन से प्रश्न पूछे जायेंगे। तुम उनके जवाबों को ठीक से याद कर लेना! तुम्हें पूरे मार्क्स मिल जायेंगे और तुम पास हो जाओगी—।"

"थैंक्यू...थैंक्यू, सर।"

"अरे, नहीं। इसमें थैंक्यू वाली कोई बात नहीं है शहजादी। तुम कॉलेज की सबसे शरीफ, सीधी, भोली-भाली, अच्छे संस्कारों और मधुर व्यवहार वाली लड़की हो। अमेरिका जैसे मॉर्डन देश में आने पर भी तुम पर यहां के माहौल का कोई असर नहीं हुआ। दूसरे स्टूडेन्ट्स की तरह तुम रफ-टफ वस्त्र नहीं पहनती, सिगरेट और शराब से दूर हो। लड़कों के साथ दोस्ती नहीं। कभी डिस्को, क्लब, पब, कैसिनो वगैरा में नहीं जाती—पिक्चर देखने भी नहीं जाती तुम। ऐसा करना कि रात के दस बजे के करीब तुम थर्ड फ्लोर पर मेरे रूम नम्बर सिक्सटी में चली आना। तुम्हें सारे क्वेश्चन नोट करा दूंगा। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। तुम आओगी ना?"

"यस, सर। मैं दस बजे आ जाऊंगी।"

"गुड। अब तुम जा सकती हो—।"

"थैंक्यू, सर...।" कहने पर वो कुर्सी से उठी और फिर बाहर चली गई।

वॉटसन के पतले होंठों पर मक्कारी भरी मुस्कान किसी संपोलिये की मानिन्द ही थिरकने लगी—

"शहजादी...इस कॉलेज की सबसे खूबसूरत और हसीन युवती! जिसे पाने की तो ना जाने कितने लोगों ने चेष्टा की, लेकिन कम्बख्त ने कभी किसी को घास नहीं डाली! लेकिन ये बुलबुल मेरे बिछाये जाल में फंस ही गई। आज ये जब मेरे कमरे में आयेगी तो लड़की होगी—लेकिन जब जायेगी तो औरत बन चुकी होगी! भंवरा बनकर इस खिलती कली का रस निचोड़ लूंगा और कली से फूल बना दूंगा। चाय या कॉफी में नशे की गोलियां और फिर जो कुछ भी होगा, उसकी वीडियो फिल्म बना लूंगा—ताकि किसी के सामने मुंह ना खोल सके और हमेशा के लिए मेरे जाल में फंसी रहे। तू रात को आ तो सही शहजादी...फिर देख कि तेरे साथ क्या-क्या होता है—!"

□□□

□□□

"क्या वास्तव में ही तुम मुझसे प्यार करती हो अनुष्का—?"

"विभोर...!" अनुष्का नामक बला की खूबसूरत युवती ने आश्चर्य भरी नजरों से सांवले, लेकिन खूबसूरत व आकर्षक युवक को देखा, फिर सिसकारी-सी भरकर बोली, "ये तुम्हें बार-बार क्या हो जाता है विभोर? कुछ दिन पहले भी तुमने मुझसे यही प्रश्न करके मेरे प्यार, मेरी चाहत पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया था। अपना सीना चीरकर दिखलाऊं क्या तुम्हें—?"

सड़क किनारे खड़ी अनुष्का की सफेद रंग की मर्सीडीज कार की छत पर उंगलियों से तबला-सा बजाते हुये विभोर काफी गम्भीर हो चला, फिर तबला बजाना बन्द करके बोला, "तुममें और मुझमें जमीन-आसमान का फर्क है अनुष्का। तुम्हारे सामने भला मेरी हैसियत ही क्या है? जैसे-तैसे करके सी०ए० की और तुम्हारी कम्पनी में एकाउन्टेन्ट की सर्विस हासिल की। सड़क पार ही मेरा दो कमरों वाला छोटा-सा मकान है। जबकि तुम महल जैसी कोठी में रहती हो।"

"ज्यादा बकवास की तो मैं रो पड़ूंगी...।" और सचमुच ही रोने लगी अनुष्का, भर्राये व रुंधे कण्ठ से बोली, "मेरी दौलत के लालच में ना जाने कितने लोगों ने मेरे करीब आने और मुझ पर डोरे डालने की चेष्टा की—लेकिन उनके लालच और स्वार्थ को भांपकर मैंने उन्हें घास नहीं डाली। लेकिन तुम सबसे अलग थे। अपने काम से मतलब रखने वाले। ऑफिस की कई खूबसूरत युवतियों को तुमने कभी नजरें उठाकर नहीं देखा—सभी को सिस्टर या दीदी बोलते हो। सालभर तक तुम्हें वॉच करती रही और फिर प्यार का इजहार कर दिया था। मुझे दौलतमन्द नहीं, सभ्य, संस्कारवान जीवनसाथी की इच्छा थी, जोकि तुम्हारे रूप में पूरी हुई। लेकिन तुम बार-बार मेरा दिल दुःखा देते हो।"

"अ...आयम सॉरी...अनुष्का...।" विभोर उंगलियों की पोरों से अनुष्का के आंसू पोंछते हुये बोला, "मैं अपनी और तुम्हारी तुलना हैसियत से कर बैठता हूं और तुम्हें दुःखी कर बैठता हूं। आईन्दा ऐसी भूल नहीं होगी। मुझे क्षमा कर दो। अब सड़क क्रॉस करो और मेरे हाथ की बनी चाय पीकर ही जाना—।"

"नहीं—पापाजी मेरी वेट कर रहे होंगे—चाय फिर कभी। मैं तुमसे कई दिनों से एक बात करना चाहती थी—लेकिन साहस नहीं कर पाती हूं—।"

"तुम निःसंकोच अपनी बात रख सकती हो—।"

"वो...वो...।"

"झिझको मत जानेमन। बोल दो—।"

"पापाजी ने बार-बार मुझसे यही कहा कि मैं जिस भी लड़के को पसन्द करूंगी, वो खुशी-खुशी उसे अपना दामाद बना लेंगे—लेकिन वो चाहते हैं कि दामाद बेटा बनकर उनके पास रहे। एक्चुअली वो मेरे बिना नहीं रह सकते। मेरे सिवाय भला उनका है ही कौन? उनका सब कुछ मैं ही तो हूं। प्लीज, मेरी खुशी के

लिये तुम पापा की इच्छा पूरी कर दो—जिन्दगी में तुमसे कभी कुछ नहीं मांगूंगी—।"

"लेकिन लोग क्या कहेंगे अनुष्का? बोलेंगे कि मैंने दौलत के वास्ते ही तुमसे शादी की है...।"

"लोगों की चिन्ता क्यों करते हो तुम? मैं जानती हूं कि तुम जरा से भी लालची नहीं हो। कई बार कह भी चुके हो कि अगर मैं पापा की चल-अचल सम्पत्ति त्याग दूं तो तुम पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा—क्योंकि तुम मुझसे प्यार करते हो, ना कि मेरी दौलत या प्रोपर्टी से। प्लीज, मेरी खुशी के लिये मान जाओ विभोर। फिर मैं पापाजी से अपनी शादी की बात कर लेती हूं।"

"मुझे सोचने के लिये थोड़ा वक्त...।"

"नहीं—अभी निर्णय करो, प्लीज—मेरे आंचल में खुशियों की दौलत भर दो—।"

"ओ०के०! मैं पापाजी का बेटा बनने के लिये तैयार हूं। तुम्हारे लिये तो मैं कुछ भी कर सकता हूं...।"

"ओह...विभोर...।" अनुष्का उसके सीने से लगकर भाव-विभोर होकर बोली—"तुम नहीं जानते कि तुमने मुझे कितनी बड़ी खुशी दे दी है। मैं...मैं बहुत खुश हूं...मैं...मैं...आज ही पापाजी से बात करती हूं। वो खुशी-खुशी तुम्हें अपना दामाद बनाने को राजी हो जायेंगे। उनके हां बोलते ही मैं फोन पर तुम्हें खुशखबरी दूंगी—।"

"ठीक है डार्लिंग। कार में बैठो—।"

"नहीं, पहले तुम सड़क क्रॉस करके घर का ताला खोलो। तुम्हें बाय बोलकर ही जाऊंगी—।"

"ओ०के०। मैं चलता हूं...।"

विभोर सड़क पार करके दूसरी तरफ पहुंचा ही था कि बिना नम्बर प्लेट वाली लाल रंग की मारुति कार उसके करीब आकर रुकी—उसमें से तीन काली पोशाक व नकाब वाले बाहर निकले—जिनमें से एक ने विभोर की कनपटी पर रिवॉल्वर की नाल लगा दी।

देखते-ही-देखते तीनों नकाबपोशों ने विभोर को कार के भीतर डाला।

राइफल से चली गोली की मानिन्द ही कार 'ये जा-वो जा' हो गई।

मारे मानसिक आघात के अनुष्का पत्थर की प्रतिमा बनी किडनेप को देखती रही।

मस्तिक के सचेत होते ही वो मदद के लिये चीखने-चिल्लाने लगी।

उसे इतनी सुध-बुध भी नहीं रही थी कि अपनी कार से किडनेपर्स की कार का पीछा ही कर पाती।

❑❑❑

❑❑❑

प्रोफेसर वाटसन व्हिस्की की आधी बोतल आठ पैगों के माध्यम से हलक से नीचे उतार चुका था।

मूड बनाने के लिये उसने टी०वी० और डी०वी०डी० पर ब्लू फिल्म चलाई हुई थी।

व्हिस्की और ब्लू फिल्म के अश्लील दृश्यों ने उसके खून को खौलते लावे में परिवर्तित कर दिया था।

व्याकुलता के साथ वो शहजादी की प्रतीक्षा कर रहा था।

साढ़े दस बजा रही वाल क्लॉक पर दृष्टिपात करने पर वो सोफे से उठकर दरवाजे पर पहुंचा और सिर बाहर निकालकर गलियारे के दोनों तरफ देखा—शहजादी के दिखलाई ना पड़ने पर वो थोड़ा निराश हुआ, लेकिन फिर बुदबुदाया—"उसके कैरियर और फ्यूचर का सवाल है। वो आयेगी—क्योंकि उसे डॉक्टर बनना है। लेकिन वो आने में इतनी देर क्यों लगा रही है?"

वो पलटा तो मुंह खुला-का-खुला और आंखें फटी-की-फटी रह गईं।

"कहीं अधिक नशा तो नहीं हो गया?" ये सोचकर उसने आंखें बन्द करके उंगलियों से मलीं, फिर खोलीं तो फिर भी वो काले बुर्के वाली दिखलाई पड़ी, जोकि उसके बेडरूम में उपस्थित थी!

इससे पूर्व कि वो कुछ पूछ पाता, वह बुर्के को उतारकर तथा सोफे पर डालकर बड़ी मासूमियत से बोली—"मैं...मैं आ गई सर—।"

"ले—लेकिन...किधर से...कैसे आ गई—?"

"उधर से...।" उसने दायें वाली खिड़की की तरफ पतली, लम्बी व गोरी-चिट्टी उंगली उठा दी।

"उस खिड़की से...?" वाटसन आश्चर्य से भौंहें फैलाकर बोला, "थर्ड फ्लोर पर खिड़की है। तुम वहां से कैसे...?"

"रेन वॉटर पाइप से चढ़कर...सर—।"

"ओ...माई गॉड...! तुम रेन वॉटर पाइप से चढ़कर यहां पहुंची। अगर हाथ छूट जाते...तुम नीचे जा गिरती तो...मौत निश्चित थी। डर नहीं लगा तुम्हें—?"

"लगा था सर—लेकिन मैं सीढ़ियों से या लिफ्ट से आती तो देखने वाले सोचते कि मैं इतनी रात को आपके पास क्यों आई हूं? किसी को पता भी तो नहीं चलना चाहिये कि आप मुझे वायवा के क्वेश्चंस बतलाने वाले हैं। दरवाजा बन्द कर दीजिये सर। कोई देख लेगा—।"

वाटसन ने खिले हुये चेहरे के साथ पलटकर दरवाजा बन्द कर दिया और बुदबुदाया—"शायद ये समझ चुकी है कि वायवा टेस्ट में पास होने के लिये इसे मुझको 'खुश' करना होगा—तभी इतना रिस्क उठाकर यह चोरों की तरह आई है। लेकिन ये इस टाइप की लड़की नहीं है। बहुत ही भोली-भाली और मासूम है। शायद इस डर से ये रेन वॉटर पाइप पर चढ़कर आई हो कि किसी को मालूम ना हो जाये कि मैं इसे वायवा के क्वेश्चंस बतलाने वाला हूं। अगर ऐसा है तो ये आसानी से नहीं मानेगी। इस तरह की लड़कियां अपनी इज्जत को जान से भी बढ़कर अहमियत देती हैं। लेकिन इस हसीना को छोड़ने वाला नहीं हूं मैं! पास होने के लिए इसे मुझको खुश करना ही होगा। राजी से नहीं तो...जबरदस्ती से ही! वीडियो कैमरा ऑन करके इसका रेप करूंगा तो मूवी के डर से जुबान बन्द रखेगी। वैसे भी शोर मचाने से इसे कोई फायदा नहीं होने वाला। साउण्ड प्रूफ रूम है।"

वो पलटा तो मुख से पीड़ा भरी चीख उबल पड़ी और आंखों के सामने रंगीन सितारे से नाचने लगे।

उसे यूं ही लगा कि मानो कनपटी पर शहजादी के हाथ का घूंसा नहीं, कोई हथौड़ा ही पड़ा हो।

स्वयं को बेहोश होने से नहीं बचा सका वो।

ना जाने कितनी देर पश्चात् उसका सोया हुआ दिमाग जागा। मानस-पटल पर शहजादी का वो चेहरा थिरकने लगा, जो उसने कनपटी पर घूंसा पड़ने पर कुछ क्षणों के लिये ही देखा था।

जाना-पहचाना, चिर-परिचित मासूम-सा चेहरा नहीं था वो—उस चेहरे की गोरी व कोमल त्वचा सख्त व खुरदुरी-सी होकर सुर्ख पड़ गई थी। आंखों में किसी की भी रीढ़ में शीत-लहर उत्पन्न कर देने वाले खतरनाक भाव परिलक्षित हो रहे थे तथा गुलाबी होंठों पर पोटेशियम-सायनाइड जैसी घातक मुस्कान चिपकी हुई थी।

शहजादी के उस भयंकर रूप की तो कल्पना भी ना की थी उसने।

शहजादी का रेन वॉटर पाइप से चढ़कर खिड़की के रास्ते कमरे में आना और उस पर शक्तिशाली घूंसे से प्रहार करना—

शहजादी के इरादे क्या हैं?

□□□
□□□

अमेरिका में जहां रात थी तो भारत में दिन हो रहा था।

केशव, सोफिया, राजन, करतार सिंह, चांदनी व श्वेता 'भारत-इंग्लैंड' के मध्य चल रहे टेस्ट मेच को टी०वी० पर देखते हुए अदरक व इलायची वाली चाय का रसास्वादन ले रहे थे कि कॉलबैल एक भजन के रूप में बजने लगी—

'हे रामचन्द्र कह गये सिया से, ऐसा कलयुग आयेगा—हंस चुगगा दाना—तुनका, कौआ मोती खायेगा...।'

लाल टी-शर्ट, नीली जींस व पीले रंग की हवाई चप्पल पहने हुये मुंशी किचन से निकलकर बाहर को लपका चला गया।

वो जल्दी से वापिस लौटा और केशव को एक कार्ड देकर बोला—"ये साहब आपसे मिलना चाहते हैं सरजी—।"

"मिर्जा बेग...।" केशव चौंककर बोला, "इन्हें मैं लेने जाऊंगा। तब तक मेज पर से सारे कप हटवा दो सोफी और मेहमान के लिये चाय-नाश्ते की व्यवस्था कराओ—।"

केशव बंगले के गेट पर पहुंचा तो मिर्जा बेग को अनुष्का के साथ खड़े पाया—

"नमस्कार, मिर्जा साहब—।"

"नमस्कार, पण्डितजी। ये मेरी बेटी अनुष्का—।"

"नमस्कार, पण्डितजी—।"

"नमस्कार! आइये, पधारिये—।"

केशव दोनों को भीतर ले आया और सभी से परिचय करवाकर दोनों को सम्मान के साथ बिठाया।

केशव ने चारमीनार की तो मिर्जा बेग ने विल्स की सिगरेट सुलगा ली।

कश लगाकर केशव नथुनों से धुआं उगलने पर बोला—"आप दोनों काफी टेंशन में मालूम पड़ रहे हैं। अवश्य ही किसी दिक्कत में हैं आप दोनों। बतलाइये कि क्या प्रॉब्लम है—?"

मिर्जा बेग बोला—

"मुझे तो मालूम ही नहीं था कि अनुष्का अपने ऑफिस के एकाउन्टेन्ट विभोर से प्यार करती है। ये विभोर से प्यार करती है और उससे शादी करने की भी इच्छुक है। ये कल शाम ऑफिस टाइम के बाद विभोर को अपनी गाड़ी से उसके घर छोड़ने गई थी कि विभोर का किडनेप हो गया...।"

अनुष्का रोने लगी!

"साहस और संयम से काम लो अनुष्का। विभोर को कुछ नहीं होगा। ईश्वर की कृपा से उसे किडनेपर्स के चंगुल से छुड़ा लिया जायेगा! मुझे सारी बातें बतलाओ। किडनेप से सम्बन्धित बातों को फुल डिटेल्स में बतलाओ...।"

अनुष्का ने पहले आंसू पोंछे, फिर सारी बातें बतलाने लगी। उसने कार के बारे में भी जानकारी दी कि वो लाल रंग की मारुति आठ सौ थी, लेकिन उस पर कोई नम्बर-प्लेट नहीं थी।

केशव के पूछने पर उसने विभोर के घर का पता बतलाकर ये भी बतलाया कि वो कार किस दिशा से आई थी और किस दिशा को गई थी। किडनेप के वक्त वो नर्वस हो गई थी और उसे किडनेपर्स की गाड़ी का पीछा करने की सूझी ही नहीं थी। थोड़ा नॉर्मल होने पर उसने पुलिस को फोन किया था। फिर उसने फोन करके मिर्जा बेग को वहीं बुला लिया था और सारी बातें बतलाने पर उसके साथ उस इलाके के पुलिस स्टेशन जाकर विभोर के किडनेप की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी।

"पुलिस ने वायरलेस पर मुम्बई पुलिस को विभोर के किडनेप की जानकारी दी थी पण्डितजी...।" मिर्जा बेग अनुष्का के चुप होते ही बोला, "पैट्रोलिंग गाड़ियां उस लाल मारुति और किडनेपर्स समेत विभोर की तलाश में जुट गई थीं—लेकिन वो कार अचानक ही मुम्बई की सड़कों से गायब हो गई थी। पुलिस ने हांलाकि रातभर कोशिश की और अब भी कर रही होगी—लेकिन मुझे लगा कि विभोर के ढूंढने में आप हमारी बेहतर तरीके से मदद कर सकते हैं—इसी वास्ते मैं अनुष्का के साथ आपके पास चला आया।"

"मैं...मैं विभोर के बिना नहीं रह सकती...पण्डितजी...।" अनुष्का रोते हुये बोली, "उसे कुछ हो गया तो...मैं...मैं...पापाजी की वजह से सूसाइड तो नहीं करूंगी लेकिन जीते-जी ही मर जाऊंगी—टूटकर बिखर जाऊंगी।"

"साहस से काम लो अनुष्का।" केशव ने उसे सांत्वना के साथ आश्वासन भी दिया, "विभोर को कुछ नहीं होगा। तुमने बतलाया कि विभोर के पिता बैंक में क्लर्क थे और वो एक हादसे में अपनी पत्नी के साथ मारे गये थे। विभोर का कोई भाई या बहन भी नहीं है। वो अकेला ही था। उसका घर छोटा-सा है और तुम्हारे यहां सर्विस करने से पहले वो ट्यूशन देकर, पार्ट टाइम जॉब करके अपना घर चलाता था। तुम्हारी फर्म से उसे सेलरी के रूप में पच्चीस हजार रुपये महीना मिल रहे थे। यानि वो इतनी बड़ी हस्ती नहीं था कि कोई उसको फिरौती के लिये किडनेप करे। क्या विभोर की किसी के साथ कोई दुश्मनी थी?"

"नहीं। वो बहुत ही मृदुभाषी और मिलनसार प्रवृत्ति का है। किसी के साथ उसकी कभी 'तू-तू मैं-मैं' भी नहीं हुई! कभी किसी से कोई झगड़ा नहीं हुआ। मेरी जानकारी में कोई भी ऐसा नहीं है, जिस पर उसके किडनेप का संदेह किया जा सके। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि उसका किडनेप क्यों हुआ है—किसलिये हुआ है—?"

"विभोर के दोस्त तो होंगे—?"

"सिर्फ एक ही दोस्त है पण्डितजी—उसका नाम समीर है। वो मेरे ही ऑफिस में सुपरवाइजर है। उसी के कहने पर मैंने विभोर को अपने यहां सर्विस दी थी। समीर का घर विभोर के घर के बराबर में ही है। दोनों बचपन के मित्र हैं। एक साथ एक ही स्कूल और कॉलेज में पढ़े थे। सुख-दुःख में एक-दूसरे के काम आने वाले! समीर बहुत ही अच्छा इन्सान है। टेंशन के कारण मैं अभी तक समीर को विभोर के किडनेप की जानकारी नहीं दे सकी हूं। आज ऑफिस भी नहीं गई मैं।"

"डोन्ट वरी, अनुष्का! तुम निश्चिन्त रहो। हम लोग चाय-नाश्ता ले लेते हैं—फिर मैं अपनी टीम के साथ निकलता हूं। समीर से भी मिलूंगा। तुम्हारी फैक्ट्री और ऑफिस के लोगों से भी मिलूंगा। क्या विभोर के घर की चाबी मिल पायेगी—?"

"चाबी तो विभोर के पास ही होगी—।"

"कोई बात नहीं। मास्टर-की है अपने पास। विभोर के घर की तलाशी तो लेनी पड़ेगी। शायद कोई क्लू या हिन्ट मिल जाये! अगर तुम्हारे पास किडनेपर का कोई फोन आये तो तुरन्त ही मुझे बतलाना। मेरा सेल नम्बर ले लो और अपना नम्बर मुझे दे दो। फिर देखते हैं कि क्या करना है—?"

मुंशी चाय व नाश्ता लेकर हाजिर हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

"होश आ गया तुझे प्रोफेसर—?"

उफ्...ऐसी आवाज कि मानो कोई इच्छाधारी नागिन ही बोली हो।

प्रोफेसर वाटसन ने आंखें खोलीं तो शहजादी का वो चेहरा दिखलाई पड़ा, जो कि खूबसूरत होने पर भी विकृत हो चुका था और लावा-सा धधक रहा था।

उठना चाहा वाटसन ने, लेकिन वो हिल भी नहीं सका—

कारण ये था कि वो मेज पर लेटा हुआ था और उसके

हाथों-पैरों के साथ पेट व सीने को भी नाइलोन की डोरियों से जकड़ दिया गया था।

"ये...ये क्या किया तुमने...?" वह बौखलाकर बोला, "मुझे यूं क्यों बांध दिया है तुमने? पहले मुझे घूंसा मारकर बेहोश कर दिया था। ये तुम्हारा कौन-सा रूप देखने को मिल रहा है? बर्फ की डली दहकती हुई आग क्यों और कैसे बन गई? आखिर तुम चाहती क्या हो—तुम्हारे इरादे क्या हैं—?"

काली जींस व काली शर्ट वाली शहजादी उछलकर वाटसन के पेट पर सवार हो गई और दोनों पैर मेज के इधर-उधर लटका लिये उसने। फिर वो थोड़ा झुकी और वाटसन के चेहरे पर तर्जनी उंगली का लम्बा नाखून चलाते हुये बेहद ठण्डी आवाज में बोली, "बर्फ हूं नहीं मैं—लेकिन खास मकसद से ठण्डी बनी हुई हूं। यूं समझ कि शेरनी ने खास वजह से भेड़ की खाल ओढ़ी हुई है। तूने मुझे वो खाल उतारकर वास्तविक रूप में आने के लिये मजबूर कर दिया साले...कुत्ते—।"

"क...क्या बदतमीजी है ये शहजादी? मैं तुम्हारा गुरु हूं। एक शिष्या को अपने गुरु के साथ ऐसा दुर्व्यवहार करना शोभा नहीं...ई...ई...आह...।"

शहजादी ने घूंसा मारकर वाटसन की नाक से खून चलता कर दिया और मुट्ठी में उसके सुर्ख बालों को जकड़कर गुर्रा-सी उठी—"उल्लू के पट्ठे! गुरु-शिष्या के रिश्ते की दुहाई देता है साले! क्या मुझे यहां अपनी बेटी बनाने के वास्ते बुलाया था सूअर के बच्चे? एक्स-रे मशीन हैं मेरी आंखें—सामने वाले के दिल की बात पकड़ लेती हूं। जबकि तेरी आंखों में तो हवस के कीड़े साफ-साफ गिजगिजाते हुये दिखलाई पड़ रहे थे। वायवा में पास करने के बहाने मेरे इस खूबसूरत जिस्म को भोगना चाहता था—मेरी अस्मत को रौंदने का ख्वाहिशमन्द था तू। व्हिस्की की बोतल खुली पड़ी थी—आधी बोतल गटक चुका और अपने खून को गर्म करने के वास्ते ब्लू फिल्म देख रहा था। ख्याली पुलाव पका रहा था कि शहजादी डरी-सहमी-सी, झिझकते हुये आयेगी। पहले तू वायवा में पास करने का लालच देकर मुझे बिस्तर पर पहुंचने को राजी कर लेगा—अगर मैं राजी ना हुई तो फिर मेरे साथ जबरदस्ती करेगा। एक-एक करके मेरे सारे कपड़े फाड़कर मुझे नंगी कर देगा और फिर बिस्तर पर पटककर वैसे ही रौंद डालेगा, जैसे बर्तन बनाने से पहले कुम्हार गीली मिट्टी को पैरों से रौंदता है। मेरे साथ मुंह काला करने को इतना उतावला था कि बार-बार दरवाजे पर जाकर गलियारे में झांक रहा

था। लेकिन मुझे गलियारे से कहां आना था? मुझे तो चोर रास्ते से आना था, ताकि कोई भी देख ना सके! इसलिये कतई नहीं कि मुझे तुझसे वायवा में पूछे जाने वाले सवालों के बारे में जानना था...।"

"तो फिर...आह...क्यों आई तुम—?"

"पहले घूंसा मारकर तुझे बेहोश किया और फिर तुझे मेज पर पटककर बांध दिया—ये अन्दाजा तो हो ही गया होगा कि तेरे साथ कुछ अच्छा तो होने नहीं जा रहा है—।"

"तु...तुम ऐसा-वैसा कुछ मत करना...वर्ना...।"

"वर्ना क्या करेगा बे तू—?"

"मैं शोर मचाकर सिक्योरिटी गार्डस् को बुला लूंगा...।"

"लेकिन सिक्योरिटी गार्डस् तक तेरी आवाज भला पहुंचेगी कैसे? ये कमरा तो साउन्ड प्रूफ है जॉनी। गला फाड़कर भी चिल्लायेगा तो भी आवाज बाहर नहीं जाने वाली। चल, कोशिश कर...गला फाड़कर चिल्ला कुत्ते! चल, मैं तेरी मदद करती हूं...ये ले...।"

और शहजादी वाटसन के पेट से उठकर नीचे फर्श पर खड़ी हुई और उसके पेट पर भीषण किस्म के घूंसे जड़ने लगी।

मारे पीड़ा के वाटसन चीखने-चिल्लाने लगा।

"देख...कोई नहीं आया तेरी मदद को कुत्ते...।" वहशी किस्म का ठहाका लगाने पर बोली शहजादी, "क्योंकि इस साउन्ड प्रूफ कमरे से आवाज बाहर जा ही नहीं सकती! इतना क्यों चिल्ला रहा है बे तू? अभी से गले की नसों को बेकार कर देगा तो फिर आगे होने वाले टॉर्चर पर कैसे चीखेगा तू? ये देख...।" उसने कमर व जींस के बीच से स्टेनलेस स्टील का चाकू निकाला और उसके चार इंच लम्बे फल को वाटसन की आंखों के सामने लहराते हुये बोली, "बहुत तेज धार है इसकी। ये तेरे उस खास अंग को गाजर की तरह ही काट डालेगा—जिस अंग के दम पर तू मेरे साथ हवस का खेल खेलना चाहता था—हिजड़ा बनना पसन्द करेगा ना तू वाटसन—?"

"न...नहीं...।" चीख उठा वाटसन, "तु...तुम ऐसा नहीं कर सकती शहजादी। अभी मेरी उम्र ही क्या है? मेरी पच्चीस साल की जवान और खूबसूरत बीवी है—मुझ पर नहीं तो...मेरी बीवी मारिया पर तरस खाओ...ये...ये क्या कर रही हो तुम...मेरी पैन्ट की बैल्ट क्यों खोल रही हो? मेरी पैन्ट की जिप क्यों खोल रही हो...मेरी पेन्ट नीचे क्यों खिसका रही हो...नहीं, तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकती...।"

"क्यों नहीं कर सकती साले–?"

"य...ये जुर्म है...तुम बच नहीं सकती! मैं पुलिस में तुम्हारी कम्पलेन्ट करूंगा। तुम गिरफ्तार हो जाओगी और सजा मिलने पर जेल पहुंच जाओगी। तुम्हारा फ्यूचर...तुम्हारा कैरियर बर्बाद हो जायेगा। डॉक्टर नहीं बन सकोगी तुम...।"

"डॉक्टर बनना भी किसे है हरामी...?" दायें हाथ से चाकू पकड़े हुये बायें हाथ से वाटसन का अन्डरवियर एक ही झटके में खींचकर घुटनों से भी नीचे खिसकाकर बोली शहजादी–"मुझे तो लोगों को जख्म देने में मजा आता है। लोगों को काटकर...उनकी जिन्दगी को मौत में तब्दील करके जश्न मनाना मेरा पसन्दीदा शौक है। जबकि डॉक्टर जिन्दगी देता है...कानून से बचने के लिये और लोगों को धोखे में रखने के वास्ते ही मैं मेडिकल कॉलेज में रह रही हूं और थोड़ी-बहुत पढ़ाई करने का ड्रामा भी कर लेती हूं। क्या मरने से पहले जानना चाहेगा कि मैं कौन हूं और मेरा असल मकसद क्या है–?"



जब फोन की घण्टी बजी, तब अनुष्का कार ड्राइव कर रही थी और मिर्जा बेग उसकी बगल में बैठा सिगरेट का धुआं उड़ा रहा था।

कार को सड़क किनारे करके रोका अनुष्का ने और डैशबोर्ड से फोन उठाकर रिसीव किया–"हैलो–।"

"अनुष्का बोल रेली है–?" फटे बांस जैसी आवाज।

"हां, बोल रही हूं...लेकिन तुम कौन–?"

"अपुन कौन है...इससे तेरे कू क्या लेना है? तेरे कू तो वभोर से इच मतलब होना चाहिये...।"

"विभोर? तुम कैसे जानते हो विभोर को–?"

"अपुन नेई जानेगा तो फिर कौन जानेगा? अपुन ने इच तो उसकू किडनेप कियेला है–।"

"लेकिन क्यों...?" मानो वह तड़पकर बोली, "विभोर ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है भला–?"

"कुछ बी नेई। लेकिन अपुन कू दौलत से बहोत लव है। दस करोड़ की फिरौती के वास्ते किडनेप कियेला उसकू–।"

"लेकिन विभोर के पास भला इतनी रकम कहां...?"

"मालूम है अपुन कू। वो एकदम कड़का है। पन अपुन कू ये बी मालूम है कि तू बहोत अमीर है। मिर्जा बेग की इकलौती वारिस

है तू। अपुन कू ये बी मालूम है कि तू विभोर कू बहोत लव करती है–उसपे मरती है। उसके वास्ते कुछ बी करने कू सकती है...क्या? तेरे से दस करोड़ की मामूली रकम वसूलने के वास्ते इच अपुन ने विभोर कू किडनेप कियेला है। पन तूने एक गड़बड़ी कर डाली–पुलिस कू खबर कर दी तूने। अब्बी तो तू फिरौती की रकम देने की हामी भर लेगी–पन फिर पुलिस की मदद लेने कू सकती है। तो अपुन कायकू रिस्क उठाने का? पन अपुन विभोर कू छोड़ने कू बी नेई सकता–अपुन का थोबड़ा जो देख लिया है उस भीडू ने। क्यूं ना अपुन उसकू खल्लास करके उसकी डैड-बॉडी के टुकड़े समुन्दर में फेंक डाले...?"

"न...नहीं...भगवान के लिये ऐसा मत करना...।" अनुष्का चिन्तित व भयभीत होकर रूआंसी-सी हो चली, "मेरे विभोर को कुछ भी मत करना...उसे जरा-सा भी नुकसान नहीं होना चाहिये...मैं...मैं तुम्हें फिरौती की रकम दूंगी...मेरे विभोर को कुछ भी नहीं होना चाहिये।"

"पूरे दस करोड़ चाहिये अपुन कू...।"

"हां–मैं दस करोड़ ही दूंगी–बदले में मुझे विभोर चाहिये–।"

"मिल जायेगा। पन इस बात की क्या गारन्टी है कि तू पुलिस कू खबर नेई करेगी–?"

"मैं भगवान की...विभोर की कसम खाकर बोलती हूं कि पुलिस को इन्फॉर्म नहीं करूंगी। तुम ये बोलो कि रकम कहां लानी है–?"

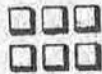
"पैले रकम का जुगाड़ तो कर ले–।"

"रकम की व्यवस्था हो जायेगी। मेरे पास चैक बुक है। अभी बैंक जाकर रकम निकाल लूंगी।"

"ये तो बहोत बढ़िया बात है। तू ऐसा कर कि अब्बी बैंक पहुंच और चैक पे साइन करके दस खोखा निकाल। रास्ते में मराठा डिपार्टमेंटल स्टोर पड़ने वाला है–उदर से बड़े वाला बैग खरीद लेना–दो बैग लेने का। उनमें रकम भरने का और कार में बैठने का। मिर्जा बेग कू बी अपने साथ रखने का–।"

"तुम कैसे जानते हो कि पापाजी मेरे साथ ही हैं–?"

"अपुन तुम्हेरे कू वॉच कर रेला है। पन इदर-उदर नेई देखने का–अपुन नजर नेई आने का। जब तुम रकम लेके गाड़ी में बैठ जायेगी तो अपुन फोन पे बतलायेगा कि तुम्हेरे कू किदर पहोंचना है। पन पुलिस कू खबर नेई करने का–नेई तो विभोर कू खल्लास कर डालेगा अपुन...क्या–?"



मारे पीड़ा के बुरी तरह तड़पते हुए वो चींख-चिल्ला रहा था। उसके पेट के नीचे खून का कुन्ड-सा बना हुआ था, जो कि धीरे-धीरे अपना आकार बढ़ाये जा रहा था।

एक हाथ में खून से सना चाकू तथा दूसरे हाथ में कटा हुआ विशेष अंग लिये खड़ी शहजादी का चेहरा खिला हुआ था और आंखें यूं चमचमा रही थीं कि मानो ओलम्पिक में गोल्ड मैडल हासिल कर लिया हो।

"ये देख...ये है तेरा वो हथियार—जिससे तू मेरी अस्मत का शिकार करने को तड़प रहा था...।" खून से सने उस अंग को वाटसन की आंसू भरी आंखों के सामने वाल-क्लॉक के पैन्डुलम की मानिन्द ही थिरकाते बोली शहजादी, "इसे तेरे जिस्म से अलग करके तुझे हिजड़ा बना दिया मैंने।"

"तू...तूने मुझे बर्बाद कर दिया...आह...आह...मैं अपनी बीवी को क्या मुंह दिखलाऊंगा...आह...!"

"अब तेरी अपनी बीवी से कभी भी मुलाकात नहीं होने वाली...।" फ्रिज में जमी बर्फ-सी ठण्डी आवाज में बोली शहजादी, "क्योंकि अपनी जिन्दगी के आखिरी पड़ाव पर आ पहुंचा है तू। तेरा ये बहता हुआ खून रुकने वाला नहीं है। तेरे खूब चींखने-चिल्लाने पर भी कोई तेरी मदद को नहीं आयेगा और तू इलाज के वास्ते हॉस्पिटल नहीं जा सकेगा।"

"न...हीं...मुझे मत मारो...ओह...आह...मुझे सजा तो दे चुकी हो तुम...आ...मुझे बख्श दो—मेरी जान मत लो...आह...!"

"तेरी जान तो लेनी पड़ेगी मुझे। इस वास्ते नहीं कि तू मुझे पकड़वा देगा—बल्कि इस वास्ते भी कि दुश्मन को चोटिल करके छोड़ देना मेरी फितरत में शामिल नहीं है। दुश्मन को जान से मारकर मुझे बहुत खुशी होती है। लेकिन तेरी जान निकलने से पहले मैं तुझे अपने बारे में जरूर बतलाऊंगी। नाम तो मेरा जानता ही है तू...शहजादी खां। मेरे वालिद का नाम चंगेज खां है। वो पाकिस्तानी मिलिट्री के लेफ्टीनेंट जनरल और आई०एस०आई के मुखिया हैं। जासूसी के तमाम गुर सीखे—मार्शल आर्ट में माहिर हुई। फिर मैंने आई०एस०आई० ज्वाइन की थी। जब अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने ओसामा-बिन-लादेन को कत्ल करवाया तो खून खौल उठा था मेरा। अब्बूजान से कहा था कि मुझे अमेरिका की ऐसी की तैसी करनी है। मुझे अमेरिका भेज दिया जाये। तब अब्बूजान ने

मुझे यहां पर आई०एस०आई० की कमाण्डर बनाकर भेज दिया था।"

"तु...तुम...आई०एस०आई० की कमाण्डर हो...ओ...आह...!"

"हां—आई०एस०आई० कमाण्डर...।" कटे अंग तथा चाकू को वाटसन के सीने पर रखकर वह खून से सनी उंगली उसके चेहरे पर फिराते हुये बोली, "अमेरिका में आई०एस०आई० के ढेरों एजेन्ट हैं—जो कि बाकायदा ट्रेनिंग लिये हुये हैं—उन सबकी हैड हूं मैं। हम सभी मिलते भी रहते हैं और ट्रांसमीटर सिस्टम से भी जुड़े हुये हैं। मुझ पर किसी को शक ना हो—इसी वास्ते मैंने इस मेडिकल कॉलेज में एडमिशन ले लिया था। हॉस्टल के वार्डन और सिक्योरिटी गार्ड्स के साथ सैटिंग की हुई है। उन्हें मोटी रकम दी जाती है—बदले में वो मुझे बाहर जाने देते हैं। मेरे यहां से गायब होने की खबर किसी को नहीं लगने देते वो। मेरा मकसद डॉक्टर बनने का कतई नहीं है। मुझे डॉक्टरों वाले नहीं, कसाइयों वाले काम ही पसन्द हैं। लोगों का खून बहाकर वैसी ही खुशी होती है—जैसी खुशी बच्चे को मनपसन्द खिलौने मिल जाने पर होती है। ऐसा नहीं है कि मैं दूध धुली हुई हूं...कुंवारी हूं। दुश्मनों से अन्दर की जानकारियां निकालने के वास्ते उनका बिस्तर गर्म करती हूं मैं। खूबसूरत लड़की हरेक मर्द की कमजोरी होती है—बिस्तर पर उसे हवस का नशा कराकर उसके मन की सारी बातें निकलवाई जा सकती हैं। लेकिन तू तो फोकट में ही मेरे हुस्नो-शबाब से खेलने के चक्कर में था। तेरी मंशा जाहिर होने पर मेरा खून फुंक गया था और तुझे सबक सिखलाने का इरादा बना लिया था मैंने। तेरा काम तमाम करके चुपचाप यहां से निकल जाऊंगी। पुलिस लाख कोशिश करने पर भी मुझ तक नहीं पहुंच पायेगी। बस, एक बार और तुझे चींखने-चिल्लाने की तकलीफ दूंगी—फिर यहां से चली जाऊंगी...।"

और फिर शहजादी ने चाकू उठाकर वाटसन की बायीं आंख में घोंप दिया...खचाक।

"आ...आहऽऽऽ!"

वाटसन की चींखों से कमरा दहल उठा—लेकिन शहजादी पर कोई फर्क नहीं पड़ा। मुस्कुराते हुये उसने फूटी आंख से चाकू निकालकर दूसरी आंख में घोंप दिया।

फूटी आंख से फूटी खून की पिचकारी उसके चेहरे को सानती चली गई और वो खून पीने वाली डायन डायन सरीखी ही दिखलाई पड़ने लगी।

❑❑❑
❑❑❑

बैंक से अनुष्का और मिर्जा बेग दो काले बैगों में दस करोड़ की रकम लेकर बाहर निकले और कार में सवार हो गये।

फोन की घण्टी बजने पर अनुष्का ने रिसीव किया तो किडनेपर की फटे बांस जैसी आवाज कान के पर्दे से टकराने लगी—"रकम बराबर है ना अनुष्का—?"

"हां—पूरे दस करोड़ रुपये निकाले हैं बैंक से—। ये रकम लेकर मुझे कहां आना है—?"

"अब्बी तू होटल मिनर्वा वाले चौराहे पे पहोंच और वहीं पे गाड़ी रोककर रखना। एक बच्चा आयेगा और वो तुझे एक फोन देगा।"

"फोन? क्या मतलब—?"

"मतलब बी बतलायेगा अपुन। पन पैले तू अपना और मिर्जा बेग का फोन खिड़की से बाहर फेंक दे...।"

"क...क्या मतलब?"

"मतलब-वतलब कुछ नेई। जो बोला...फौरन इच कर। क्यूं खाली-पीली टाइम खोटी कर रेली है? विभोर की जान की कोई परवाह नेई है क्या—?"

"मैं...मैं फेंक रही हूं...।"

"मिर्जा बेग वाला फोन भी फेंकना और होटल मिनर्वा वाले चौक पे बच्चे का इन्तजार करना। फोन ले लेने का उससे...चल, जल्दी कर...।"

अनुष्का ने घबराकर फोन खिड़की से बाहर फेंका तो बगल में बैठा मिर्जा बेग चौंककर बोला, "फोन बाहर क्यों फेंक दिया बेटा—?"

"किडनेपर ने ऐसा करने को कहा है पापाजी। आपको भी अपना फोन बाहर फेंकना होगा...।"

"लेकिन...।"

"प्लीज, पापाजी। नो मोर क्वेश्चन। जल्दी से अपना मोबाइल बाहर फेंक दीजिये। विभोर की जान बचाने के लिये हमें किडनेपर के ऑर्डर्स फॉलो करने ही होंगे—।"

दुविधा में फंसे मिर्जा बेग ने अपना फोन खिड़की से बाहर फेंका ही था कि अनुष्का ने गियर चेंज करके गाड़ी को दौड़ा दिया।

होटल मिनर्वा के करीब वाले चौराहे पर उसने गाड़ी को सड़क

किनारे करके रोक लिया और मोबाइल लेकर आने वाले बच्चे की प्रतीक्षा करने लगी।

वो समझ नहीं पा रही थी कि किडनेपर ने फोन फेंकने को क्यों कहा और बच्चे के हाथों दूसरा फोन क्यों भिजवा रहा है?

आखिर किडनेपर की मंशा क्या है?

❑❑❑
❑❑❑

मुश्ताक हिन्दुस्तानी की बीवी सायरा बेटे आमिर को लेकर अपने मायके 'पनवेल, नयी मुम्बई' गई हुई थी। वो चाहती थी कि मुश्ताक भी उसके साथ चले, लेकिन मुश्ताक को ट्रेनिंग सेन्टर खोलना था, जिसे वो जल्द-से-जल्द शुरू कर देना चाहता था। उसने ऑन रोड पर एक प्लॉट खरीदा था, जिस पर निर्माण कार्य चल रहा था—सो वह ससुराल नहीं गया।

सुबह पांच बजे उसकी ससुराल के एक पड़ोसी ने फोन पर ऐसी खबर दी कि उसके होश फाख्ता हो गये।

एक पड़ोसी के पास टैक्सी थी, उसने उसे उठाया और उसकी टैक्सी में सवार होकर चल दिया।

हालांकि सारी बातें सुनने पर ड्राइवर ने टैक्सी को काफी तेज गति से दौड़ा रखा था, लेकिन मुश्ताक बार-बार उसे टैक्सी की गति बढ़ाने को कहता रहा।

बहुत अधिक व्याकुल था वो। बार-बार आंखें मूंदकर और हथेलियों को जोड़कर प्रार्थना किये जा रहा था।

खैर, वो लोग गन्तव्य पर पहुंचे।

इलाके में गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था।

कदम-कदम पर पुलिस व अर्धसैनिक तैनात थे।

कर्फ्यू लगा दिया गया था वहां पर।

नुक्कड़ पर उपस्थित मजिस्ट्रेट को सारी बातें बतलाकर मुश्ताक ने रिक्वेस्ट की तो मजिस्ट्रेट ने कुछ पुलिस के जवानों के साथ उसकी ससुराल वाले मकान पर भेज दिया।

कर्फ्यू के बावजूद भी मकान के बाहर आस-पड़ोस के बहुत-से लोग लोग एकत्रित थे।

"अरे...दूल्हे भाई...।"

सायरा का चचेरा भाई लपककर मुश्ताक के पास आया और रोने लगा।

"क...क्या हुआ सलीम...?"

"बहुत बड़ा अनर्थ हो गया दूल्हा भाई। धार्मिक जुलूस पर

पथराव होने पर दंगा भड़क उठा था। यहां पर मुसलमानों के कुछ ही घर हैं—ज्यादा घर तो हिन्दुओं के हैं। रात को बहुत सारे नकाबपोशों ने हथियारों के साथ हमला बोल दिया था। गोलियां चलाईं—बम भी फोड़े। सभी ने घबराकर घरों के भीतर शोर मचाना शुरू कर दिया। पुलिस को फोन भी किया था। बम से तायाजान के घर का दरवाजा तोड़कर दंगाई भीतर घुसे। चीखने-चिल्लाने की तेज-तेज आवाजें आ रही थीं। दंगाइयों ने बाहर निकलने पर गोलियां मारने की धमकी दी थीं। वो चले गये तो सभी बाहर निकले—तायाजान के घर पहुंचे। दिल दहला देने वाला नजारा सामने था। खून-ही-खून बिखरा पड़ा था। तायाजान, तायीजान, असलम भाई, जोहरा भाभी की लहूलुहान लाशें पड़ी थीं। घर का सामान बिखरा पड़ा था—तिजौरी खुली पड़ी थी...और...।"

"सायरा और आमिर कहां है? कैसे हैं वो—?"

"वो...वो दोनों नहीं थे—।"

"नहीं थे? क्या मतलब हुआ इसका—?"

"दंगाई उन दोनों को उठाकर ले गये थे—?"

"न...नहीं...ऐसा नहीं हो सकता। दंगाई शायरा और आमिर को क्यों ले गये भला—?"

"मालूम नहीं। पुलिस के आने पर हमने सारी बातें बतला दी थीं। पुलिसवालों ने घर-घर की तलाशी ली—लेकिन सायरा आपा और आमिर का कोई अता-पता नहीं मिला। पुलिस बोल रही है कि वो दोनों की तलाश कर रही है...।"

"या खुदा...!" मुश्ताक हथेलियों से सिर थामकर बोला, "ये क्या हो गया? मेरी सायरा और आमिर को सही-सलामत रखना। मैं...मैं क्या करूं...कैसे उन दोनों का पता लगाऊं? ना जाने वो दोनों कहां होंगे—किस हाल में होंगे—?"

❑❑❑
❑❑❑

करीब बारह वर्ष के एक लड़के ने खिड़की से अनुष्का को एक मोबाइल फोन पकड़ाया और पलटकर भाग निकला।

अनुष्का कुछ सोच-समझकर पाती, वह फोन नींद से जागे बच्चे की मानिन्द कुनमुनाने लगा।

अनुष्का ने धड़कते दिल के साथ हरे वाला बटन पुश करके फोन कान से सटाया और बोली—"ह...हैलो—।"

"तुमने अपना और मिर्जा बेग का फोन बाहर फेंक के बहोत समझदारी दिखलाई अनुष्का। एक बात बिल्कुल सच बोलने

का...क्या तुमने पुलिस कू फोन कियेला था—?"

"नहीं। मैंने किसी को भी फोन नहीं किया। भगवान के वास्ते मेरा विश्वास करो।"

"तू बोल रेली है तो अपुन विश्वास कर रेला है। पन तू अब चाहकर की किसी कू फोन नेई करने कू सकती। इस फोन पे सिर्फ इनकमिंग इच चालू—आउटगोइंग की सुविधा है इच नेई। फोन चोरी का है—बाद में इसकू किदर बी फेंक देने का! अब अपुन निश्चिंत रहेगा कि तू कोई गड़बड़ी नेई करने कू सकती। अब तू ऐइसा कर कि...तूने बसई का किला तो देखा इच होयेगा? टूटा-फूटा...खण्डहर की माफिक इच है—पन है बहुत बड़ा। वो जगह बढ़िया रहेगी। तू उदर इच पहोंच। अपुन बी उदर पहोंच रेला है...क्या? मिर्जा बेग कू साथ लेके तू किले के भीतर पहोंच। इदर-उदर घूमने का। अपुन बतला देगा कि तुम्हेरे कू रकम किदर देना है। रकम गाड़ी के भीतर इच छोड़के किले के भीतर पहोंचने का। अपुन पैले इस बात की तसल्ली करेगा कि तेरे पीछू पुलिस तो नेई लगेली है। जब अपुन की तसल्ली हो जायेगी तो अपुन तेरे कू बोल देने का कि रकम किदर लेके आने का है...क्या—?"

❑❑❑
❑❑❑

'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा—हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिश्तां हमारा—।'

डैश बोर्ड पर रखे फोन से मधुर गान के उभरने पर केशव ने पहले होन्डा सिटी कार की स्पीड कम की और फिर सड़क से नीचे उतारकर रोक दी। फोन उठाकर डिस्प्ले स्क्रीन पर उभर रहे नाम को देखा...मुश्ताक हिन्दुस्तानी।

"हैलो, मुश्ताक! कैसे हो तुम—?"

"मैं...मैं ठीक नहीं हूं...भाईजान। बहुत बड़ी मुसीबत हो गई है। समझ में नहीं आता कि...क्या करूं? आपका ख्याल आया तो...फोन कर दिया...।"

"तुम काफी घबराये हुये हो मुश्ताक। हिम्मत से काम लो और बतलाओ कि क्या बात है—?"

"वो सायरा आमिर को लेकर अपने मायके आई थी। रात यहां दंगा हुआ। कुछ दंगाइयों ने हमला बोलकर मेरे सास-ससुर, साले और सलहज को कत्ल कर दिया। वो कमीने सायरा और आमिर को अपने साथ ले गये...।"

"क...क्या...?" चौंक उठा केशव, "दंगाई सायरा और

आमिर को उठा ले गये? क्या वास्तव में ही ऐसा हुआ? मैं इसलिये पूछ रहा हूं कि अक्सर दंगाई लूट-पाट, कत्ल, आगजनी तो करते हैं लेकिन वो यूं इस तरह किसी को उठाकर नहीं ले जाते। क्योंकि वो घबराये हुये, बौखलाये हुये होते हैं। जल्दबाजी में भी होते हैं। उन्हें डर होता है कि पुलिस ना आ जाये। काम करके वो अपने घरों में जा दुबकते हैं—ऐसे में दंगाई सायरा और आमिर को उठा ले गये। क्या किसी ने देखा था दंगाई सायरा और आमिर को उठाकर ले गये...?"

"नहीं, पण्डितजी। जब दंगाइयों ने हमला बोला तो दहशत का माहौल बन गया था। दंगाइयों ने सबको धमकी भी दी थी कि कोई घर से बाहर निकला तो उसे गोलियां मार दी जायेंगी। कोई भी बाहर ना निकला था। दंगाई चले गये तो पड़ोसियों के साथ-साथ सायरा का चचेरा भाई सलीम भी मकान में पहुंचा! सायरा के अम्मी-अब्बू, भाई और भाभी की लाशें पड़ी थीं। सायरा और आमिर गायब थे...।"

"क्या पुलिस को इन्फॉर्म किया गया था—?"

"जी, भाईजान। पुलिस ने इलाके के सभी हिन्दुओं के घरों की तलाशी भी ली थी—लेकिन सायरा-आमिर नहीं मिले! मुझे नहीं लगता कि पुलिस वाले कुछ कर पायेंगे, वो सायरा और आमिर को खोज पायेंगे। सायरा और आमिर की जान खतरे में है। खुदा के वास्ते आप यहां आ जाइये। आपकी तो मुख्यमन्त्री और प्रधानमन्त्री तक पहुंच है। आपके आने पर पुलिस पूरी गम्भीरता के साथ सायरा, आमिर की खोज करेगी।"

"हां—मैं आ रहा हूं। लेकिन मुझे वहां पहुंचने में वक्त लगेगा—क्योंकि यहां से तुम्हारी ससुराल काफी दर पड़ती है। फिर भी मैं फास्ट ड्राइविंग करके जल्द-से-जल्द पहुंचने की चेष्टा करता हूं। तब तक तुम धैर्य और साहस से काम लेना—।"

"जी, भाईजान! आप जल्द-से-जल्द पहुंचें। ना जाने सायरा और आमिर कहां होंगे...किस हाल में होंगे...?"

□□□
□□□

बसई किला बहुत ही बड़ा था। अनुष्का ने गाड़ी को पार्क किया और किडनेपर की हिदायत पर अमल करते हुये गाड़ी में दस करोड़ रुपये की रकम को छोड़कर मिर्जा बेग के साथ किले के भीतर चली आई थी।

दोनों यूं ही इधर-उधर घूमते रहे—टहलते रहे।

हांलाकि किला दर्शनीय था, लेकिन टेंशन में होने के कारण दोनों का मन नहीं लग रहा था। विशेष करके अनुष्का को किडनेपर के फोन की प्रतीक्षा थी—किडनेपर द्वारा दिया फोन उसकी दायीं मुट्ठी में ही दबा हुआ था।

लगभग एक घण्टा पश्चात् घन्टी बजने पर अनुष्का फोन कान से लगाकर बोली—"हैलो...।"

"थैंक्यू, अनुष्का...।" फटे बांस जैसी आवाज ही निकली फोन के स्पीकर से, "तुमने अपुन की बातें मानके अपुन की तबियत खुश कर दी...क्या? अपुन कू दस करोड़ रुपे मिल गये हैं...।"

"मिल गये...?" वह चौंककर बोली—"लेकिन रुपये तो गाड़ी में थे और गाड़ी की चाबी मेरे पास...।"

"अपुन जैसे मुजरिम के वास्ते ये बात कोई बड़ी थोड़े इच है। मास्टर-की से गाड़ी कू खोला और रकम वाले दोनों इच बैग निकाल लिये। अपुन दस खोखा लेके इदर से निकल लिया है...।"

"देखो—मैंने तुम्हारी मांग पूरी कर दी है। प्लीज, विभोर को छोड़ दो—तुम्हारी बहुत कृपा होगी।"

"अपुन मुजरिम है, पन धन्धा पूरी ईमानदारी के साथ इच करता है—क्या? तुमने अपुन की बात मानी तो अपुन तुम्हेरी बात बी मान रेला है। अब्बी अपने ठिकाने पे पहोंचकर विभोर कू आजाद कर देगा। वो शाम से पैले अपने घर पहोंच जायेगा...क्या...? अब तुम चाहो तो चोरी के इस फोन कू फेंक सकती हो। अपुन के किसी काम का नेई—तुम्हेरे बी किसी काम का नेई। अच्छा...नमस्ते...।"

दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया।

"चलिये, पापाजी...।"

"क्या हुआ बेटी—?" पूछा मिर्जा बेग ने।

"किडनेपर मास्टर-की से गाड़ी का दरवाजा खोलकर दस करोड़ रुपये निकालकर ले गया पापाजी। उसने विभोर को छोड़ने की बात की है। बोल रहा था कि शाम से पहले ही विभोर घर पहुंच जायेगा।"

"ये तो बहुत अच्छी बात है अनुष्का! भले ही दस करोड़ रुपये चले गये—लेकिन विभोर तो छूट जायेगा। खुदा ना करे कि किडनेपर के दिमाग में कोई बेईमानी आये। उसे दस करोड़ रुपये मांगते ही बिना ना-नुकर के मिल गये। कहीं उसके दिमाग में ये बात ना आ जाये कि वो विभोर को मारने की धमकी देकर और भी रकम हासिल कर सकता है? चलो, चलते हैं। देख लेते हैं कि किडनेपर विभोर को छोड़ता है कि नहीं—!"

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 135 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. **कानून की लोमड़ी**
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. **तू लोमड़ी मैं चाणक्य**
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊंट पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. **बब्बर शेर**
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लौहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. केकड़ा
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊंचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. **केशव की शादी**
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. वो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से
118. चिड़िया लड़ाऊंगा बाज से
119. पुतला नहीं रावण जलेगा
120. तलवार उठा लो गांधी जी
121. सुदर्शन चक्र है दिमाग मेरा
122. मेरे पति हैं 10 हजार
123. मैं हूं कानून का अवतार
124. अंग्रेजो वापस आ जाओ
125. 125 साल का महापण्डित
126. घुंघरू बांध नाचेगा मुर्दा
127. श्मशान में लूंगी 7 फेरे
128. हड्डियों से बनेगा ताजमहल
129. संसद में गरजेगी तोप
130. कानून का पाण्डव करेगा ताण्डव
131. डुगडुगी बजाऊंगा फौज नचाऊंगा
132. अब देख नारद की लीला
133. ये अयोध्या है रावण की
134. जहांगीर मांग रहा इन्साफ
135. बेटी हूं चंगेज खां की



केशव नवी मुम्बई के जवाहर हॉस्पिटल पहुंचा तो मुश्ताक उसकी कोहली भरकर बुरी तरह रोने लगा और फिर बेहोश हो गया।

केशव उसे बांहों में उठाकर डॉक्टर के पास ले जा ही रहा था कि वो होश में आ गया और रोने व विलाप करने लगा।

केशव ने उसे किसी तरह समझा—बुझाकर शान्त किया और बोला—"मैं तुम्हारी ससुराल पहुंचा था। वहां पता लगा कि...सायरा और आमिर मिल गये हैं—लेकिन आमिर मृत था। शैतानों ने उस मासूम का गला घोंटकर...जान ले ली थी—सायरा को भी धारदार हथियारों से बुरी तरह जख्मी किया गया—लेकिन वो जिन्दा थी। पुलिस दोनों को इस हॉस्पिटल में लेकर आई और तुम भी यहीं पर हो। एक पुलिस अफसर ने मुझे जानकारी दी कि दोनों इलाके की एक बन्द पड़ी फैक्ट्री के गोदाम में मिले थे। चूंकि सायरा बेहोश थी, इसलिये कोई जानकारी नहीं मिल सकी है।"

"आ...आइये, भाईजान...मेरे साथ आइये...।"

मुश्ताक केशव का हाथ पकड़कर मोर्ग में ले गया—जहां एक बेड पर आमिर की लाश पड़ी थी...।

"ये...ये देखिये...भाईजान...।" रोते हुये बोला मुश्ताक, "मेरे बच्चे को हमेशा के वास्ते मौत की नींद में सुला दिया गया। अब ये कभी आंखें नहीं खोलेगा। अपनी तोतली जुबान में मुझे अब्बू नहीं बोल सकेगा। मेरी उंगली थामकर ठुमक-ठुमककर नहीं चल सकेगा। देखिये...कैसे सो रहा है मेरा बच्चा—लगता ही नहीं कि ये मर चुका है। इसे लेकर बहुत ख्वाब देखे थे मैंने। इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ाऊंगा...और मिलिट्री में भर्ती करा दूंगा तो ये वतन की खिदमत करके मेरा सीना फख्र से चौड़ा कर देगा। गरीब घर की बच्ची से इसकी शादी करूंगा—बिना दहेज के। बहू को बेटी बनाकर रखूंगा। लेकिन जब पौधा ही पेड़ बनने से पहले हमेशा के वास्ते मुरझा गया तो...फल आने का तो सवाल ही नहीं बनता! मैंने आपको बतलाया नहीं—लेकिन मैं अपनी मर्दाना ताकत खो चुका हूं...।"

"व्हाटऽऽऽ?" चौंका केशव, "ये...ये क्या कह रहे हो तुम मुश्ताक—?"

"पाकिस्तान की जेल में मुझे बहुत टॉर्चर किया गया था। एक बार जेलर ने मेरे गुप्तांग पर पैर से बहुत ठोकरें मारी थीं। यहां तक कि इलैक्ट्रिक शॉक भी दिया था। यहां आने पर मुझे अपनी नामर्दी का अहसास हुआ तो...सैक्सोलोजिस्ट से मिला था मैं। चैकअप करने

पर उसने बतलाया कि मैं हमेशा-हमेशा के वास्ते अपनी मर्दानगी खो चुका हूं।"

"ओह...नो—!"

"यानि अब मैं दोबारा पिता नहीं बन सकूंगा। आमिर के साथ ही मेरे वंश का वजूद भी मिट गया। बाप मरता है तो बेटा उसके जनाजे को कन्धा देता है—लेकिन मेरा बेटा तो मुझसे पहले ही चला गया। इसके जिस्म को सुपुर्दे-खाक करना होगा मुझे...मेरा बच्चा...।" वह सुबक-सुबक कर रोने लगा।

केशव ने उसे बांहों में भर लिया तथा उसकी पीठ पर हथेली फेरते हुये बोला, "मैं तुम्हारे दुःख में बराबर का भागीदार हूं मुश्ताक! जो भी हुआ...बड़ा ही बुरा हुआ! सिवाय इसके मैं कुछ नहीं कर सकूंगा कि मुजरिमों को उनके किये की सजा अवश्य ही दिलाऊंगा—वो किसी भी कीमत पर बच नहीं पायेंगे। सायरा आई०सी०यू० में है। चलो, उसके बारे में मालूम करते हैं...कैसी है वो—?"



अमेरिका में तब आधी रात से भी बाद का समय था।

शहजादी मार्कोनी के साथ थी—बिस्तर पर।

कौन मार्कोनी?

मार्कोनी अमेरिका की सबसे बड़ी जासूसी संस्था सी०आई०ए० का बहुत बड़ा अधिकारी था और उसकी ड्यूटी अमेरिकी राष्ट्रपति के निवास 'व्हाइट हाउस' में चल रही थी। उसकी ड्यूटी ये थी कि वो व्हाइट हाउस में कार्यरत सभी लोगों की गतिविधियों पर नजरें रखे और राष्ट्रपति की सुरक्षा को सुनिश्चित करे। वो व्हाइट हाउस मे बतौर सिक्योरिटी ऑफिसर नियुक्त था—अधिकांश लोग नहीं जानते थे कि वो सी०आई०ए० से सम्बन्धित है।

लेकिन शहजादी जानती थी—उसके बारे में सब कुछ जानती थी।

मार्कोनी ने लगभग तीन महीने पूर्व शहजादी को एक शॉपिंग मॉल में देखा था—जहां वो हॉस्टल की कुछ स्टूडेन्ट्स के साथ खरीदारी करने गई थी।

मार्कोनी लट्टू हो गया था—उस पर मर-मिटा था।

उसने शहजादी की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया और अपना परिचय व्हाइट हाउस के सिक्योरिटी ऑफिसर के रूप में दिया था।

व्हाइट हाउस से जुड़े सिक्योरिटी ऑफिसर से काफी

जानकारियां मिल सकती थीं और उसके माध्यम से व्हाइट हाऊस में आई०एस०आई० की घुसपैठ की जा सकती थी—सो शहजादी ने झिझकने की शानदार एक्टिंग के साथ दोस्ती का हाथ मिला लिया था। फिर तो दोनों की मुलाकातों का सिलसिला चल निकला और जल्दी ही शहजादी मार्कोनी के कमरे तक पहुंच गई—जो कि व्हाइट हाउस में ही था।

थोड़ी ना-नुकर के पश्चात्, कुंवारे मार्कोनी से शादी का प्रॉमिस लेने पर शहजादी ने उसे अपना खूबसूरत जिस्म सौंप दिया था—ना सिर्फ सौंप दिया था, उसे अपना इतना बड़ा दिवाना बना लिया था कि उसके कहने पर मार्कोनी लम्बी जीभ निकालकर उसके पैरों के तलुए भी चाट लेता था।

वासना का खेल समाप्त होने पर दोनों बुरी तरह से हांफने लगे—पसीने से तर-ब-तर जिस्म ढीले-से पड़ गये।

चेहरे पर थकान, लेकिन आंखों में सन्तुष्टि के भाव हिचकोले ले रहे थे।

फिर बिस्तर से उठकर शहजादी ने व्हिस्की की बोतल उठाकर लार्ज पैग बनाकर मार्कोनी को दिया, जो कि पहले ही आधी बोतल गटक चुका था।

एक ही सांस में गिलास खाली करने पर मार्कोनी ने निर्वस्त्र शहजादी को अपनी मजबूत बांहों में भर लिया और दीवानावार उसके सुन्दर मुखड़े को चूमते हुये फुसफुसाया-सा, "शहजादी...माई डार्लिंग...तुम दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की हो...अप्सरा हो टुम... मैं बहुत खुशनसीब हूं कि टुम मुझे मिली। जल्दी ही हम शादी कर लेंगे। मेरा तो कोई रिश्तेदार नहीं है। तुम अपने फादर से बाट कर लो...।"

"लेकिन अभी दो प्रॉब्लम हैं मार्कोनी—जिनकी वजह से हमारी शादी नहीं हो सकती...।"

"कौन-सी प्रॉब्लम...?"

"मैं पहले एम०बी०बी०एस० की डिग्री हासिल करूंगी—उसके बाद ही शादी करूंगी। दूसरी प्रॉब्लम ये है कि तुमने अभी ये साबित नहीं किया कि तुम मुझसे सच्ची मुहब्बत करते हो—।"

"ये, ये क्या बोल रही हो टुम शहजादी डार्लिंग? टुम मेरी मुहब्बत पर शक कर रही हो? मैं टुम्हारे वास्टे अपनी जान भी दे सकता हूं डार्लिंग। चाहो टो मुझे आजमा सकटी हो तुम—।"

"तुम्हें कहा था कि मेरा फुफेरा भाई अजमल अमेरिका में पोस्ट ग्रेजुएशन करके सी०ए० की डिगी भी हासिल कर चुका है—उसे व्हाइट हाउस में कोई सर्विस दिलवा दो। लेकिन तुमने इस बारे में कोई जवाब ना दिया—।"

"टुम मेरी मजबूरी नहीं समझ रही हो शहजादी। अमेरिका में पाकिस्तानियों को शक की नजरों से देखा जाने लगा है। क्योंकि अमेरिका में कई बम-विस्फोट हुये—कई इमारतें टबाह कर दी गईं और कई लोगों की जानें चली गईं। सारी वारदातों के पीछे पाकिस्तानियों का हाथ पाया गया ठा। व्हाइट हाउस अमेरिका की वी०आई०पी० बिल्डिंग है—क्योंकि उसका कनेक्शन अमेरिका के प्रेसीडेन्ट से होटा हाय!"

"लेकिन अजमल शुरू से ही अमेरिका में ही रहता है—वो इसी देश में पैदा हुआ है। उसके पैरेन्ट्स उसकी पैदाईश से पहले ही अमेरिका के नागरिक बन चुके थे। तुम चाहो तो अजमल के बारे में पूरी छानबीन करवा सकते हो। तुमने कहा था कि तुम अजमल को कहीं भी सर्विस दिलवा सकते हो। लेकिन अजमल व्हाइट हाउस में सर्विस करने का ख्वाहिशमन्द है। मैंने उससे प्रॉमिस कर लिया था। मेरा प्रॉमिस पूरा नहीं हुआ तो अजमल के सामने शर्मिन्दगी होगी। ये तुम्हारा इम्तहान है मार्कोनी। अगर तुमने अजमल को व्हाइट हाउस में सर्विस ना दिलवाई तो...तो अपना रिश्ता खत्म ही समझो तुम—।"

"न...नहीं, ऐसा मट बोलो डार्लिंग...।" मार्कोनी तड़पकर बोला, "मैं टुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मर जाऊंगा मैं टुम्हारे बिना। ठीक है...मैं कुछ करटा हूं। कुछ-ना-कुछ करके मैं अजमल को व्हाइट हाउस में सर्विस दिलवा ही दूंगा...।"

"ओ...थैंक्यू...।" शहजादी ने मखमली बाहें मार्कोनी के गले में डाल दीं—तब उसकी आंखों में उभरने वाली चमक मार्कोनी नहीं देख पा रहा था!



"विभोर के घर का दरवाजा खुला है पापाजी...।" प्रसन्नता के साथ बोली अनुष्का, "लगता है कि वो आ गया है।"

"खुदा करे कि ऐसा ही हो बेटी।"

अनुष्का ने विभोर के मकान के सामने कार रोकी और दरवाजा खोलकर लपक ली—दरवाजा भी बन्द ना किया उसने।

बाहर निकलकर मिर्जा बेग ने ही पहले अपनी साइड का दरवाजा बन्द किया और फिर दूसरी तरफ पहुंचकर उक्त दरवाजे को बन्द किया।

उधर अनुष्का मकान के भीतर पहुंची और बिस्तर पर लेटे विभोर को देखकर बोली, "विभोर...!"

विभोर ने आंखें खोलीं और फिर उठ बैठने पर चौंककर बोला, "अरे, तुम अनुष्का?"

"हां—मैं...।" वह विभोर को बांहों में भरकर बोली, "थैंक्स, गॉड! तुम सही-सलामत किडनेपर के चंगुल से निकलकर वापिस आ गये। ठीक तो हो ना तुम? किडनेपर ने तुम्हें सताया तो नहीं—?"

गला खंखारते हुये मिर्जा बेग भी आ पहुंचा तो अनुष्का विभोर से अलग हो गई।

"नमस्ते, सर...।" विभोर ने आगे बढ़कर मिर्जा बेग के चरण स्पर्श करके कहा, "आप...मेरे घर पर...विश्वास ही नहीं हो रहा मुझे—।"

"अनुष्का ने मुझे सब कुछ बतला दिया है विभोर बेटा...।" मिर्जा बेग उसके सिर पर आशीर्वाद की मुद्रा में हथेली रखकर बोला, "मुझे अपनी बेटी की पसन्द पर नाज है। तुम्हारे किडनेप ने हमें फिक्रमन्द कर दिया था। तुम...तुम ठीक तो हो ना बेटे—?"

"जी...ठीक हूं मैं। वो तीन लोग थे। काली पोशाक और काली नकाबों में थे। मुझे कार में डालते ही क्लोरोफॉर्म सुंघाकर बेहोश कर दिया था। होश में आया तो एक अन्धेरे-से कमरे में था मैं। मुझे कुर्सी पर बिठाकर डोरियों से कसकर बांध दिया गया था। मुझे खाना-पीना दिया उन्होंने। कनपटी पर रिवॉल्वर लगाकर कमरे से जुड़े बाथरूम ले जाते थे। उन्होंने मुझे तंग नहीं किया—लेकिन मैं सो नहीं सका—मन में दहशत जो थी—सो थोड़ी थकान ही है। आप दोनों बैठिये ना...प्लीज। मुझे इस बात का बहुत ही अफसोस है कि आपको मेरी वजह से दस करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आप लोगों को उन कम्बख्तों की मांग नहीं माननी चाहिये थी...।"

"कैसी बात करते हो विभोर बेटे! क्या दस करोड़ रुपये तुम्हारी जान से बढ़कर थे? खुदा ने बहुत दौलत दी है। और कमा लेंगे। कोई अफसोस करने की जरूरत नहीं है। बस, तुम दोनों शादी का प्रोग्राम तय करो। बहुत ही धूमधाम के साथ शादी करने का अरमान है मेरा...।"

"आप बैठिये तो सही—मैं चाय बना लाता हूं...।"

"तुम नहीं—चाय मैं बनाकर लाती हूं...।" कहने पर अनुष्का किचन की तरफ बढ़ी ही थी कि राजन, करतार सिंह व श्वेता का पदार्पण हुआ।

"अरे! आप लोग...?" मिर्जा बेग चौंककर बोला, "लेकिन यहां पर कैसे—?"

"नमस्कार जी...।" विभोर हाथ जोड़कर बोला, "मेरा अहोभाग्य कि आप तीनों मेरे घर पधारे हैं। मैंने आप तीनों को पहचान लिया है। क्या आपके साथ पण्डितजी भी हैं—?"

"नहीं—वो किसी जरूरी काम से नवी मुम्बई गये हैं...।" राजन च्यूंगम चबाते हुये बोला, "वैसे भी ये कोई खास केस नहीं था। हम तीनों ही बहुत थे।"

"कौन-सा केस...शुक्ला जी?" बोली अनुष्का।

"यही...विभोर के किडनेप वाला—।"

"क्या मतलब...?" चौंककर बोला विभोर, "क्या आप लोगों ने मेरे किडनेप के लिए इन लोगों की मदद ली थी—?"

"मैं पण्डितजी की कार से टकराकर मामूली रूप से जख्मी हो गया था...।" बोला मिर्जा बेग, "पण्डितजी मुझे डॉक्टर के पास ले गये थे। पहली ही मुलाकात में हम दोनों काफी करीब आ गये थे। पण्डितजी ने मुझसे कहा था कि कभी उनकी जरूरत पड़े तो मैं उनकी मदद लेने से हिचकिचाऊं नहीं। जब हम दोनों को लगा कि शायद पुलिस तुम्हें किडनेपर के चंगुल से आजाद ना करा पायेगी तो हम आज सवेरे ही पण्डितजी के पास गये थे।"

"लेकिन आप लोगों ने गुरुवर को नहीं बतलाया कि किडनेपर ने दस करोड़ की मांग की है...।" शिकायती लहजे में बोली श्वेता, "आपको बतलाना चाहिये था—।"

"आयम सॉरी...।" खेद के साथ बोली अनुष्का, "किडनेपर की धमकी से डर गई थी मैं। मैंने किडनेपर को फिरौती की रकम देकर विभोर को छुड़ाने में ही भलाई समझी थी...।"

"इसका मतलब तैनू साढे प्राइवाजी तो भरोसा नहीं था कुड़िये...।" नाराजगी के साथ बोला करतार सिंह, "जिस ऐतबार तो उन्हां दे कौल गये सी...उस ऐतबार तो कायम रहना चाहिये सी। कोई गल नहीं। प्राहवाजी ने असी लोकी नूं किडनेप दा मामला सुलझाने की जिम्मेदारी सौंपी सी—सो असी लोकी तुम दोनों नूं फॉलो कर रहे सी!"

"क...क्या?" चौंककर बोला मिर्जा बेग, "आ...आप लोग हम दोनों का पीछा कर रहे थे—?"

"हां—हमें अपने कर्त्तव्य का पालन तो करना ही था बेग साहब—।" बोला राजन, "हम ना सिर्फ आप दोनों को फॉलो कर रहे थे, बल्कि आप दोनों के फोन को सुनने की भी व्यवस्था की गई थी। लेकिन किडनेपर ने सिर्फ अनुष्का से ही बात की और फिर आप दोनों के फोन बाहर फिंकवाकर एक बच्चे के हाथों अपना फोन भिजवा दिया था। तब हमें ये मालूम नहीं पड़ रहा था कि अनुष्का और किडनेपर के बीच क्या बातें हो रही हैं। लेकिन हम लोग आपकी गाड़ी को फॉलो करते रहे और बसई किले तक पहुंच गये थे। आप

दोनों दस करोड़ की रकम गाड़ी में छोड़कर किले के भीतर चले गये थे। करतार सिंह और श्वेता आप दोनों के पीछे-पीछे किले के भीतर चले गये थे—लेकिन मैं बाहर ही रुक गया था।"

"इसका मतलब...जब किडनेपर ने हमारी गाड़ी से दस करोड़ रुपये निकाले थे तो आपने उसको देखा था...?"

"सिर्फ देखा ही नहीं था मिर्जा साहब—बल्कि उसका पीछा भी किया था...।" मुस्कुराने पर बोला राजन, "फोन करके मैंने करतार सिंह और श्वेता को भी बुला लिया था।"

"तो क्या आपने किडनेपर को पकड़ लिया—?"

"तीनों किडनेपर पकड़ लिये गये हैं मिर्जा साहब। लेकिन इस किडनेप का मास्टर-माइन्ड पकड़ा जाना अभी बाकी है। उसे ही पकड़ने के लिये आये हैं हम। क्यों प्यारे लाल...?" राजन विभोर के करीब पहुंचकर तथा उसका गिरेहबान पकड़कर सर्द लहजे में बोला, "प्यार से अपना जुर्म कबूलोगे...या तेरे हाथ-पैर तोड़ने पड़ेंगे—?"

□□□
□□□

आई०सी०यू० से बाहर निकलकर आये डॉक्टर ने केशव को पहचानकर हाथ जोड़कर अभिवादन किया तो केशव ने भी हाथ जोड़ दिये तथा पूछा—"सायरा की तबियत कैसी है डॉक्टर साहब—?"

"आयम सॉरी, पण्डितजी! सायरा की कन्डीशन बहुत ही खराब थी। चाकू के कई गहरे घाव थे। हमने ऑपरेशन भी किये—खून चढ़ाया, लेकिन...कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे बेहद अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि वो मुश्किल से दो-चार मिनट की ही मेहमान है। उनके पति उनसे जल्दी से मिल लें...वो अन्तिम-सांसें ले रही हैं...।"

"हे खुदा...!" मुश्ताक गश खाकर गिरने को हुआ तो केशव ने उसे सम्भाला और बोला, "हौंसले से और हिम्मत से काम लो मुश्ताक! अपने आपको सम्भालो। चलो, सायरा से मिल लेते हैं...।"

दोनों भीतर पहुंचे।

बेड पर लेटी सायरा की दोनों कलाइयों में खून व ग्लूकोज की ड्रिप लगी हुई थी। उसके गले, पेट, हाथों-पैरों पर पट्टियां बन्धी हुई थीं।

ऑक्सीजन मास्क लगा होने पर भी वो गहरी-गहरी सांसें भर रही थी और सांसों को लेते व छोड़ते वक्त उसका जिस्म हिल रहा था।

दोनों को देखकर उसने स्वयं ही ऑक्सीजन मास्क उतार दिया

और कठिनता से ही बोली, "मेरा बेटा...अ...अजान...जालिमों ने गला घोंटकर उसे मार डाला...।"

"खुदा की मर्जी के आगे किसी का जोर नहीं चलता है सायरा...।" स्टूल पर बैठकर मुश्ताक ने उसकी कलाइयां थाम लीं और रोते हुये बोला, "खुदा के वास्ते सब्र से काम लो...।"

"अम्मी...अब्बू...आह...भाई जान और भाभी जान...सबको बेरहमी से कत्ल कर दिया...दंगाइयों ने...मुझे और आमिर को उठाकर उस फैक्ट्री में ले गये...आमिर का गला घोंट दिया...मेरी अस्मत लूटी...आह...आठ हैवानों ने। बार-बार मेरी अस्मत को रौंदा...फिर चाकू से...कई वार किये। आह...बोल रहे थे कि...मुसलमानी के साथ...ऐसा करो तो...पुण्य मिलेगा...आह...मैं...मैं शायद...बचूंगी...नहीं।"

"खुदा के वास्ते ऐसा मत बोलो...सायरा...।"

"मे...मेरी और आ...आमिर की याद में...रोना मत जी...आह...भूलने की को...कोशिश...दूसरी...शादी...कर... लेना...आह...अल्ला हुम-म-अजिन्नी अ...अला ग—म—गाबिल... मौति व स—क—गालिब मौबि...आह...।"

बस!

आखिरी दुआ पढ़ने पर सायरा की आंखें खुली-की-खुली रह गईं—होंठ खुले-के-खुले रह गये।

होंठों को भींचकर बिना कोई आवाज किये हुये रोने लगा मुश्ताक।

फिर उसने सायरा की आंखें बन्द करके कलिमा पढ़ा—

"ला—इला—ह इल्लल्लाहु—।"

केशव की भी झील-सी नीली आंखें नम हो उठीं।

□□□
□□□

"क...क्या मतलब...?" राजन के कथन पर चौंककर बोला मिर्जा बेग, "ये...ये आप क्या कह रहे हैं शुक्लाजी? आप कहना क्या चाहते हैं—?"

"वो ही...जो आपने सुना है।" बोला करतार सिंह, "किडनेप दा मास्टर माइन्ड ये बन्दा ही है...जिसका नाम विभोर है।"

"न...नहीं...ये...ये नहीं हो सकता...।" अनुष्का मानो तड़पकर ही बोली, "भ...भला विभोर अपने ही किडनेप प्लान क्यों करेगा—?"

"दस करोड़ की फिरौती के लिये...।" विभोर का गिरेहबान

पकड़े हुये बोला राजन, "इसे पूरा विश्वास था कि तुम इसका किडनेप होने पर परेशान हो जाओगी और फिरौती की रकम दे दोगी। क्यों, विभोर—?"

विभोर...बोले भी तो क्या बोले? मानो जुबान अकड़कर ऐंठ गई थी और होंठों पर 'लिंक' का ताला जड़ दिया गया था।

उसकी दशा ऐसी ही हो चली कि अगर आरी से भी काटा जाता तो खून की एक बूंद भी नहीं निकलती।

मानो ऋषि दुर्वासा ने कुपित होकर उसे पत्थर की मूर्ति में परिवर्तित हो जाने का श्राप दे डाला ो।

समूचा जिस्म पसीने से यूं तर-ब-तर हो चला कि मानो पसीने का पूरा ड्रम ही उसके ऊपर उंडेल दिया गया हो।

"नहीं, आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है शुक्लाजी...।" राजन के हाथ को विभोर के गिरेहबान से अलग करके रूआंसी-सी होकर बोली अनुष्का, "विभोर ऐसा नहीं करेगा। ये दौलत का लालची कतई नहीं है। ये...ये मुझसे सच्ची मुहब्बत करता है।"

"श्वेता...।"

"जी, शुक्ला जी...।"

"सामने टी०वी० है और डी०वी०डी० भी। वीडियो कैमरे से बनी मूवी वाली चिप को डी०वी०डी० से कनेक्ट करके अनुष्का और बेग साहब को मूवी दिखलाओ जरा।"

"हां—मैं अभी दिखला देती हूं शुक्लाजी। उस मूवी वाली चिप को मैंने पेन ड्राइव में डाल दिया था और इस डी०वी०डी० प्लेयर में पेन ड्राइव ऑपरेट करने की सुविधा है—।" कहने पर श्वेता ने अपने पर्स से पेन ड्राइव निकालकर टी०वी० के ऊपर रखे डी०वी०डी० प्लेयर में फिट करके प्लेयर और टी०वी० ऑन कर दिये।

"नकाबपोश किडनेपर का पीछा किया था हम लोगों ने।" बोला राजन, "वो विभोर के पड़ोस वाले मकान में ही रकम वाले दोनों बैग लेकर गया था। मास्टर-की से मेनगेट खोलकर हम लोग भी भीतर पहुंचे थे और एक खिड़की से कमरे के भीतर के दृश्यों की वीडियो फिल्म बना ली थी। आप दोनों भी देखिये और विभोर भी देखेगा। फिल्म देखने पर आपको मालूम पड़ जायेगा कि असल मामला क्या था...!"

□□□
□□□

टी०वी० स्क्रीन पर एक कमरे का दृश्य उभरा—

बेड पर पैर फैलाये बैठा विभोर टी०वी० पर चल रही एक्शन

मूवी देखते हुये सिगरेट फूंके जा रहा था—उसके करीब ही दो युवक बैठे हुये थे, जो कि अनुष्का की फैक्ट्री में ही खिलौने बनाने का कार्य करते थे।

दोनों बैग लिये हुये नकाबपोश कमरे में प्रविष्ट हुआ और प्रफुल्लित भाव से बोला, "फतह विभोर...फतह! सोचा भी नहीं था कि इतनी आसानी से दस करोड़ रुपये अपने हाथ में आ जायेंगे। मैंने मवाली वाली जुबान में अनुष्का को हुक्म दिया था कि वो रकम कार में छोड़कर अपने बाप के साथ किले के भीतर चली जाये। वो दोनों किले के भीतर चले गये थे। मैंने मास्टर-की से कार खोलकर रकम वाले दोनों बैग निकाले और यहां चला आया। हम कामयाब हो गये।"

"कामयाब तो होना ही था प्यारे...।" होंठों पर मक्कारी भरी मुस्कान सजाये हुये बोला विभोर, "आखिर प्लान किसका था...मेरा—दि ग्रेट विभोर कुमार का। शुरू से ही उस उल्लू की पट्ठी अनुष्का को हिन्दी में बेवकूफ बनाया मैंने। शराफत की नकाब ओढ़कर संस्कारवान और सुशील होने का नाटक किया तो वो मेरे जाल में फंस गई। मुझसे मुहब्बत करने लगी वो। कल उसने मुझसे कहा कि मिर्जा बेग मुझे अपना घर-दामाद बनाना चाहता है तो मैं खुश हो गया कि घर दामाद बनने पर मैं मिर्जा बेग की तमाम प्रोपर्टी और दौलत का मालिक बन जाऊंगा। तब अपना किडनेप कराके दस करोड़ की रकम ऐंठने की जरूरत नहीं रह गई थी। लेकिन प्लान बन चुका था। और तुम तीनों ने मेरा किडनेप करने का नाटक कर दिया। मैं तेरे घर में मौज-मस्ती करता रहा समीर—जबकि अनुष्का मेरे किडनेप से दुःखी और चिन्तित होती रही। उसकी जान निकली जा रही होगी—तभी तो उसने इतनी आसानी से दस करोड़ रुपये दे दिये। अब ये नकाब उतार दो ना यार—।"

उसने नकाब उतार दी—

वो समीर ही था—विभोर का मित्र और पड़ोसी तथा अनुष्का की फैक्ट्री का सुपरवाइजर।

"जरा...दौलत के दर्शन तो करा दे यार...समीर—।"

समीर ने दोनों बैग खोलकर हजार-हजार के नोटों की ढेरों गड्डियां बेड के ऊपर उलट दीं।

विभोर ने पांच-पांच गड्डियां उठाकर दोनों युवकों को दीं और बोला, "लो, मौज करो। जब मेरी और अनुष्का की शादी हो जायेगी तो तुम दोनों को भी माला-माल कर दूंगा। समीर तो मेरी फैक्ट्री का मेनेजर बनेगा। हम लोग जमकर ऐश करेंगे। शराब, कबाब और

शवाब। अनुष्का भी हांलाकि बहुत खूबसूरत है—लेकिन घर की मुर्गी तो दाल बराबर होती है। बाजारू किस्म की लड़कियों के साथ मौज-मस्ती करने का कुछ और ही मजा होता है। अपने हिस्से के दो करोड़ रुपये तू भी ले ले समीर! बाकी की रकम को अभी अपने पास ही रखना। मैं अपने घर जा रहा हूं। मिर्जा बेग के साथ अनुष्का कभी भी आ सकती है। रात को होटल में ऐश करने चलेंगे।"

बस, इतना ही था उस फिल्म में—

फिर श्वेता ने पेन ड्राइव निकालकर टी०वी० और डी०वी०डी० प्लेयर ऑफ कर दिये।

लुटे-पिटे से खड़े विभोर की दशा तो पतली थी ही—अनुष्का भी ठगी-सी खड़ी थी।

विभोर की सच्चाई ने उसको काफी मानसिक आघात पहुंचाया था।

"समीर, गोकुल और गोविन्द को गिरफ्तार करके पुलिस के हवाले कर दिया गया है...।" राजन विभोर की परिक्रमा करते हुये बोला, "वो रकम मिर्जा बेग साहब और अनुष्का को वापिस कर दी जायेगी। तुम अभी अपना जुर्म स्वीकार करो, चाहे ना करो—कोई फर्क नहीं पड़ता। वीडियो फिल्म के दम पर तुम्हें भी मुजरिम साबित कर दिया जायेगा। देखा जाये तो किडनेप का ये ड्रामा अनुष्का और मिर्जा साहब के लिये फायदेमन्द ही रहा है। क्योंकि तुम्हारा असली चेहरा इनके सामने आ गया। अनुष्का एक भेड़िये के चंगुल से निकल गई है।"

तभी अनुष्का ने आगे बढ़कर विभोर के गालों पर तमाचों की बरसात सी कर दी और फिर रोते हुये राजन से बोली, "इस कमीने को गिरफ्तार करके पुलिस के हवाले कर दीजिये। इसे कड़ी-से-कड़ी सजा दिलवाइये। मैं जिन्दगी में कभी भी इस शैतान का चेहरा देखना पसन्द नहीं करूंगी।"

फिर वो मिर्जा बेग के सीने से जा लगी और सुबकने लगी।

□□□

□□□

"अस्सलामु अलैकुम, जनाब।"

"व अलैकुमुस्सलामु...चंगेज खां। बैठो...।"

"शुक्रिया, जनाब...।" कहने पर चंगेज खां जनरल परवेज खान के बेड के करीब रखे स्टूल पर बैठ गया।

"तुम्हारे चेहरे को देखकर ही ऐसा लगता है कि तुमने कोई प्लान तैयार कर लिया है चंगेज खां—।"

"जी, जनाब। मैंने एक मिशन तैयार कर लिया है—जिसे नाम दिया है—मिशन बाबर।"

"मिशन बाबर...।" चौंककर बोला परवेज खान, "बाबर तो हमारी एक मिसाइल का नाम है। क्या तुम बाबर मिसाइल का हिन्दुस्तान के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहते हो—?"

"नहीं, जनाब। यूं मिसाइल का इस्तेमाल कहां हो सकता है भला? उसका इस्तेमाल तो जंग के दौरान ही हो सकता है। मैंने मिसाइल के नाम पर अपने मिशन का बाबर नाम नहीं दिया है—।"

"तो फिर—?"

"हिन्दुस्तान में हमारी आई०एस०आई० एक्टिव है जनाब—लेकिन उसकी तरफ से कोई बड़ी वारदात नहीं हो पा रही है। क्योंकि फौज चाहे जितनी ताकतवर क्यों ना हो—लेकिन बिना सिपहसालार या कमाण्डर के वो बेकार ही होती है। हमने वहां जितने भी कमाण्डर मुकर्रर किये थे, वो एक-एक करके मारे गये। पिछले दो तो उस साले केशव पण्डित ने हलाक किये हैं। वैसे भी वहां की मिलिट्री काफी एक्टिव है। वहां खुफिया महकमें बहुत ही ताकतवर और सख्त हो गये हैं। अगर कोई उनके बस में नहीं आता तो...वहां के हुक्मरान केशव पण्डित की मदद ले लेते हैं। सो मैंने तय किया है कि इस बार हिन्दुस्तान में जिसे भी कमाण्डर बनाया जायेगा, उसको पर्दे में छिपाकर रखा जायेगा। यहां तक कि वहां मौजूद आई०एस०आई० के एजेन्टों और ओहदेदारों को भी मालूम नहीं होगा कि उनका कमाण्डर बाबर कौन है। जरूरत पड़ने पर बाबर उनके सामने जायेगा भी तो खुद को नकाब वगैरा में छिपाकर—या ऐसा मेकअप करके कि कोई उसकी असली सूरत देख ही ना सके। वो हुलिया बदलने में माहिर होगा और आवाज बदलने में भी माहिर होगा वो।"

"लेकिन...फिर आई०एस०आई० के लोगों को यकीन कैसे होगा कि उसके सामने पेश होने वाला बाबर ही है? कोई दूसरा खुद को बाबर बतलाकर उन्हें अपने जाल में फांस सकता है—।"

"नहीं—ऐसा कतई नहीं होगा जनाब! बाबर को बहुत ही खास किस्म का ट्रांसमीटर सैट मुहैया कराया जायेगा और उस ट्रांसमीटर से जुड़े ट्रांसमीटर्स सभी ओहदेदारों को भी दिये जायेंगे। उन्हें कोड वर्ड दिये जायेंगे, जिन्हें बोलकर बाबर अपना तआरूफ यानि इन्ट्रोडक्शन देगा। वो अपनी कोई खास पहचान या ऐसी निशानी भी बनाकर रखेगा कि दूसरा कोई उस पहचान या निशानी की नकल ना करने पाये। कुल मिलाकर हिन्दुस्तानी आई०एस०आई० के ओहदेदारों को मालूम नहीं होगा कि उनका चीफ बाबर कौन है? बस

उन्हें बाबर के हुक्म पर अमल करना है। बाबर का हुक्म उनके वास्ते खुदा के फरमान जैसा ही होगा। क्योंकि किसी को मालूम नहीं होगा कि बाबर कौन है और कहां रहता है—इस वास्ते उसके पकड़े जाने की कोई गुंजाईश ही नहीं होगी। अपना ये बाबर हिन्दुस्तान के वास्ते बेहद खतरनाक साबित होगा।"

"लेकिन बाबर को एक टारगेट तो देना ही होगा चंगेज खां। उसे अपनी मनमर्जी से काम करने की छूट नहीं दे सकते हम लोग। हालात पहले जैसे नहीं रहे हैं। हिन्दुस्तान के खिलाफ हमारी कई साजिशें बेनकाब हो गई तो हम दुनिया की नजरों में आ गये और हिन्दुस्तान का पलड़ा थोड़ा भारी हो चला है। हमारा सबसे बड़ा आका...अमेरिका भी हमें आंखें दिखलाने लगा है। वो पहले जैसा नहीं रहा। वो हमारी हेल्प तो कर रहा है—लेकिन शर्तें लगाकर। हिन्दुस्तान में कोई गड़बड़ी होती है और उसमें पाकिस्तान का हाथ साबित होगा तो अमेरिका हम पर गरज-बरस सकता है। सो हमें पूरी एहतियात बरतनी होगी।"

"बिल्कुल बरतनी होगी जनाब! ऐसा कोई सबूत नहीं छोड़ा जायेगा कि पाकिस्तान की जानिब उंगली उठ सके। बाबर अपनी मर्जी से कुछ नहीं करेगा। उसे मेरे प्लान पर ही अमल करना होगा। मैं उसे बतलाऊंगा कि उसे क्या-क्या करना है। मैं भी हिन्दुस्तान जाऊंगा...मैंने कश्मीर में अपने वास्ते एक खुफिया ठिकाना तय कर लिया है। मैं वहीं रहकर बाबर को हिदायतें देता रहूंगा। जरूरत पड़ने पर भेष बदलकर हिन्दुस्तान के दूसरे इलाकों में भी जाऊंगा। चूंकि मुझे बाबर की तलाश करनी है—इस वास्ते वहां जाना जरूरी है। मेरे मैदान में उतरे बिना ये काम नहीं होगा जनाब! मैं जाऊंगा तो ही हिन्दुस्तान और केशव पण्डित की तबाही की जमीन तैयार होगी। वैसे भी हमें इस मिशन को दो महीने के भीतर ही मुकम्मल करना है—ताकि आपके रिटायरमेंट से पहले ही हिन्दुस्तान में कुछ ऐसा हो जाये कि आपकी खोई हुई इज्जत वापिस लौट आये और मेरी शर्मिन्दगी भी गुरूर में तब्दील हो सके। बस, मुझे जनाब की इजाजत मिल जाये—।"

"मेरी इजाजत तो मिल ही जायेगी। लेकिन ये तो बतलाओ कि तुम मिशन बाबर के तहत हिन्दुस्तान में क्या-क्या करने का इरादा रखते हो—?"

□□□

□□□

बिल्लौरी आंखों वाला इंसपेक्टर अनिल यादव!

ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस अफसर!

वह केशव को अपना गुरु...अपना आइडियल मानता है और किसी केस की गुत्थी ना सुलझने पर केशव की ही हेल्प लेता है।

केशव के कहने पर पुलिस कमिश्नर ने अनिल यादव को नवी मुम्बई के पनवेल थाना का इन्चार्ज बना दिया और केशव ने अनिल यादव को कहा कि वो पूरी सख्ती से पेश आते हुये सायरा, आमिर, सायरा के मां-बाप और भाई-भाभी के कातिल दंगाइयों को पकड़े।

अनिल यादव ने पुलिस फोर्स के साथ इलाके के हरेक घर की तलाशी ली और सभी युवाओं को पकड़कर पुलिस स्टेशन ले गया—जहां पहले से ही केशव मौजूद था।

सभी पकड़े गये लोगों को एक कतार में खड़ा कर दिया गया और अनिल यादव हाथ में हॉकी लेकर सख्त लहजे में बोला—"मोहम्मद यूनुस के घर पर एक दर्जन लोगों ने हमला बोला था। यूनुस की फेमिली को कत्ल करके दंगाई उसकी बेटी सायरा और नाती आमिर को उठा ले गये थे। सायरा के साथ बेरहमी के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और धारदार हथियारों से बुरी तरह जख्मी करके उसकी हत्या कर दी। डेढ़ वर्ष के मासूम आमिर को भी गला घोटकर मारा गया। यहां पर पण्डितजी उपस्थित हैं। इनके बारे में मुझे कुछ भी बतलाने की जरूरत नहीं है। ये उन दंगाइयों को पकड़कर सजा दिलवाने के लिये कृत संकल्प हैं। अगर मुजरिम स्वयं ही आगे आकर अपना जुर्म कबूल कर लेते हैं तो उनके लिये बढ़िया होगा। अगर पण्डितजी ने अपने तरीके से मुजरिमों को पकड़ा तो उनकी जिन्दगी को नरक से भी बदतर बना दिया जायेगा। सिर्फ पांच मिनट का टाइम देता हूं। पांच मिनट के भीतर कतार से बाहर निकलकर अपना जुर्म कबूल कर लो—वर्ना फिर पण्डितजी मुजरिमों को अपने तरीके से आधा-पौना घण्टा के भीतर ही पकड़ लेंगे और मेरे हवाले कर देंगे। फिर मैं सबको वो मार मारूंगा कि फरिश्ते भी दहल उठेंगे। रात को एनकाउन्टर के बहाने सबको मार भी सकता हूं—बोल दूंगा कि भागने की चेष्टा कर रहे थे, इसलिये पुलिस की गोलियों से मारे गये। सिर्फ साढ़े चार मिनट ही रह गई हैं। पांच मिनट पूरी होते ही पण्डितजी का सामना करना पड़ेगा सबको।"

पांच मिनट पूरी होने पर भी जब किसी ने भी आगे बढ़कर जुर्म नहीं कबूला तो केशव उठा और एक-एक के चेहरे को ध्यानपूर्वक पढ़ने लगा तथा उनकी आंखों में भी झांककर देखने लगा।

आधा घण्टे पश्चात् वो अनिल यादव से बोला, "इन्हें छोड़ दो अनिल भाई—इनमें से कोई भी मुजरिम नहीं है। ये सभी निर्दोष हैं—।"

"तो फिर? दंगाई कौन थे पण्डितजी–?"

"वो इलाके से बाहर के हो सकते हैं–या फिर वो पकड़े नहीं गये हैं। क्या तुमने इस बात की जांच की कि इलाके के सभी युवकों को पकड़कर लाये हो–कुछ युवक बचे तो नहीं रह गये–?"

"न–नहीं। मैंने तो हर घर की तलाशी ली और जो भी मिला, उसी को पकड़ लाया।"

"तो इन लोगों से पूछताछ करो...फौरन ही–।"

अनिल यादव ने सभी से पूछताछ की तो मालूम हुआ कि एक दर्जन युवक और हैं, जो कि यहां उपस्थित नहीं हैं।

अनिल यादव ने उन सभी एक दर्जन युवकों के नाम व पते लिये तथा पुलिस फोर्स लेकर उनके घरों पर गया तो सभी के घरों से यही जवाब मिला कि वो लोग कल शाम ही वैष्णो देवी की यात्रा पर चले गये थे।

फिर खबर आई कि मुम्बई के करीब ही एक मिनी बस एक गहरी खाई में गिरी थी और उसमें सवार सभी बीस लोग मारे गये थे।

मृतकों में एक दर्जन युवक पनवेल इलाके के थे और बाकी मुम्बई के थे। वो सभी आपस में मित्र या रिश्तेदार थे और वैष्णों देवी की यात्रा के लिये मिनी बस करके चले थे लेकिन मिनी बस के खाई में गिरने से मारे गये थे।

□□□

□□□

व्हिस्की से भरे गिलास को मेज पर रखकर उठा मार्कोनी और विलियम नामक लम्बे व तन्दुरुस्त युवक के समक्ष पहुंचकर बोला, "इतनी रात गये तुम मेरे कमरे में क्यों आये हो–?"

"मुझे उस लड़की शहजादी के बारे में बात करनी है आपसे मार्कोनी श्रीमान...।"

"हां, बोलो–क्या बात करनी है–?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप उस लड़की के चक्कर में कैसे फंस गये?"

"क्यों...क्या बुराई है उसमें? वो बहुत खूबसूरत है। मैंने उससे प्यार करने की बात की और उसके खूबसूरत जिस्म के साथ खेल रहा हूं...।"

"मुझे लगता है कि वो आपके साथ खेल रही है।"

"क्या मतलब–?"

"वो पाकिस्तानी है–।"

"तो–?"

"पाकिस्तानियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता श्रीमान! मुझे उसकी गतिविधियां संदिग्ध मालूम पड़ रही हैं। वो किसी आतंकी संगठन या आई०एस०आई० से जुड़ी हुई है। उसने अपनी खूबसूरती का जाल बिछाकर आपको फांस लिया है और व्हाइट हाउस में घुसपैठ कर ली है। वो अपने फुफेरे भाई अजमल को व्हाइट हाउस में सर्विस दिलवाने की चेष्टा कर रही है।"

"तुम...।" मार्कोनी की आखें सिकुड़ चलीं, "तुम ये सब कैसे जानते हो विलियम–?"

दोनों के बीच इंग्लिश भाषा में ही वार्तालाप हो रहा था–लेकिन यहां पर उसका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है–

कोई जवाब देने की बजाय विलियम सिर्फ मुस्कुराया।

मार्कोनी ने उसका गिरेहबान पकड़ लिया और क्रोधित भाव से बोला, "यानि तुम मेरी जासूसी कर रहे हो? मत भूलो कि मैं तुम्हारा सीनियर हूं। सी०आई०ए० के सभी जासूस मेरे अधीन ही व्हाइट हाउस में काम कर रहे हैं। मेरी जासूसी करते शर्म नहीं आती तुम्हें–?"

"क्षमा चाहूंगा श्रीमान...।" विलियम सख्त व खुरदुरे लहजे में बोला, "मेरी निष्ठा सी०आई०ए० और अपने देश के प्रति है–मेरी ये जिम्मेदारी है कि मेरे देश में कोई गड़बड़ी ना होने पाये। शहजादी की गतिविधियां संदिग्ध लगीं तो मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया। हांलाकि मेरे पास कोई सबूत नहीं है–लेकिन शहजादी के इरादे ठीक नहीं हैं। वो आपके माध्यम से व्हाइट हाउस में साजिश करने के चक्कर में है। बेहतर होगा कि हम शहजादी को गिरफ्तार करके उसकी हकीकत मालूम करें–।"

"नहीं–ऐसा कुछ नहीं होगा। शहजादी बहुत अच्छी लड़की है। वो आतंकी संगठन या आई०एस०आई० से सम्बन्धित नहीं है। अगर ऐसा होता तो मुझे महसूस हो जाता। मैं जासूस हूं। सामने वाले की आंखों से जान जाता हूं कि वो क्या है–उसके मन में क्या चल रहा...।"

मार्कोनी के होंठ जहां के तहां रह गये–जिव्हा अपने स्थान पर जाम हो गई–वो मानो अचानक ही पत्थर की प्रतिमा में परिवर्तित हो गया।

ऐसा इसलिये हुआ कि विलियम ने शर्ट की जेब से एक पेन निकालकर उसमें लगे लाल रंग के नन्हें-से बटन को दबा दिया और पेन से निकला एक नन्हा-सा पिन मार्कोनी के गले में जा धंसा था।

मार्कोनी को जरा-सा धक्का देकर फर्श पर गिरा दिया विलियम

ने और उसके ऊपर झुककर बोला—"आयम सॉरी, सर! आप पर शहजादी का नशा सवार है। आप उसके चंगुल से निकलने वाले नहीं। मैं नहीं चाहता कि वो आपके माध्यम से हमारे देश के खिलाफ कोई साज़िश या गड़बड़ी करने में कामयाब हो जाये। मैंने आपको स्पेशल ड्रग की सूईं लगाकर आपको एक तरह से कोमा की हालत में पहुंचा दिया है। आपका दिमाग सक्रिय है। आप देख सकते हैं—सुन भी सकते हैं—लेकिन लाख प्रयत्न करके अपने शरीर को हिला-डुला नहीं सकते। पलकें भी नहीं झपका सकते—आंखों की पुतलियों को भी नहीं हिला सकेंगे। अब मैं आपको जहर का इंजेक्शन लगाने जा रहा हूं। ऐसा जहर कि जो धीरे-धीरे आपके दिल की धड़कनें बन्द कर देगा। अगर पोस्टमार्टम भी होगा तो यही रिपोर्ट आयेगी कि आपका हार्ट फेल हो गया। अपने देश की भलाई के लिये मुझे आपकी जान लेनी पड़ रही है—।"

फिर विलियम ने कोट की जेब से इंजेक्शन व एक सीरिंज निकाल ली। सीरिंज में इंजेक्शन का तरल पदार्थ भरा और फिर मार्कोनी की बांह में सीरिंज की सूईं पेवस्त करके जहर को उसके जिस्म में पहुंचा दिया।

फिर मार्कोनी की आंखों में झांकते हुये बोला, "मरते वक्त आपको जरा-सा भी कष्ट ना होगा श्रीमान। बहुत आराम की मौत मरेंगे आप। उस हरामजादी शहजादी को भी ऐसा सबक सिखलाऊंगा कि वो मरने के बाद भी याद रखेगी। जल्दी ही उसे भी आपके पास भेज दूंगा मैं—बाय...गुड बाय...।"

❑❑❑

❑❑❑

धार्मिक नेता हाजी इकबाल सिद्दीकी चेहरे पर मातमी भाव और आंखों में आंसू लिये हुये मुश्ताक के घर में प्रविष्ट हुआ, जहां सायरा और आमिर के शव रखे हुये थे।

"अस्सलामु अलैकुम, हाजी साहब...।" रिश्तेदारों के साथ बैठे मुश्ताक ने उसका अभिवादन किया।

"व अलैकुमस्सलामु...मुश्ताक मियां...।" हाजी इकबाल फर्श पर बिछी चटाई पर बैठा और मुश्ताक के कन्धे पर हाथ रखकर दुःखी भाव से बोला, "खुदा तुम्हें इस गम से उबरने की हिम्मत अता करे। बुरा हुआ...बहुत बुरा हुआ। अपने मरहूम वालिद की तरह ही तुम सच्चे और नेक मुसलमान हो। अपनी वतन-परस्ती को तो तुमने पाकिस्तान के खिलाफ जंग लड़कर और पाकिस्तान की जेल में रहकर साबित कर दिया है। तुम चाहते तो पाकिस्तान के जासूस बनकर

दोनों हाथों से दौलत बटोर सकते थे—अपनी तकदीर संवार सकते थे—लेकिन तुमने मना कर दिया था और बदले में उनके सितम बर्दाश्त किये। लेकिन ये सब करके भी मुसलमानों को मिला क्या मिलता है?"

"आप कहना क्या चाहते हैं हाजी साहब—?"

"भई...हम लोग हिन्दुस्तान के पूरे वफादार हैं—हमारी वतन-परस्ती में जरा-सा भी खोट नहीं है। हमने आजादी की जंग में शिरकत की...बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दीं। सेना और पुलिस में भर्ती होने पर पूरी शिद्दत से अपनी ड्यूटी को अन्जाम देते हैं। आम मुसलमान भी हिन्दुस्तान की खैरियत के वास्ते एक दिन दुआ करता है। क्योंकि हमारी पैदाईश यहीं हुई है और उम्र पूरी होने पर यहीं की मिट्टी में दफन होना है। लेकिन फिर भी हमें शक की नजरों से देखा जाता है। कोई आतंकी घटना होती है तो मिलिट्री और पुलिस मुसलमानों को ही पड़कती है। मुसलमानों की बस्तियों की ही तलाशी ली जाती है। हमारे बच्चों को उठाकर उन पर तरह-तरह के सितम किये जाते हैं। यहां के लोग हमें नफरत की नजरों से देखते हैं। पनवेल की घटना को ही ले लो। हिन्दुओं ने तुम्हारी ससुराल पर हमला बोला। तुम्हारे ससुरालियो, बेटे और बीवी के खत्म कर दिया। तुम्हारी बीवी की आबरू भी लूटी गई। वो कम्बख्त गाड़ी के खाई में गिरने से मारे गये—लेकिन उनके मरने से तुम्हारी बीवी और बेटे की जिन्दगी तो वापिस ना लौटेगी। तुम्हें तो जिन्दगी-भर का गम दे दिया गया। हम मुसलमानों की सिक्योरिटी ही नहीं है। मुल्क की तमाम सियासी पार्टी वोटों की खातिर ही हम लोगों को बहलाती-फुसलाती रहती हैं। लेकिन आजादी के इतने सालों बाद भी हम लोग गरीब और बेरोजगार हैं—अनपढ़ हैं। हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हालत बद से बदतर होती जा रही है।"

"आप ठीक फरमा रहे हैं हाजी साहब...।" मुश्ताक का एक रिश्तेदार क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोला, "गुजरात का मामला ही ले लो ना। वहां पर मुसलमानों के साथ कितना बुरा हुआ। ना जाने कितने बेगुनाह मुसलमान हलाक कर दिये गये। औरतों को बे-आबरू किया गया। घर, दुकानें और फैक्ट्रियां फूंक दी गईं। काश कि...हमारे बड़े-बुजुर्ग बंटवारे के वक्त पाकिस्तान चले गये होते।"

"मेहरबानी करके आप लोग खामोश हो जाइये...।" एक बूढ़ा उठकर बोला, "ये वक्त ऐसी बातें करने का कतई नहीं है। हमें सायरा और आमिर के जनाजे की तैयारी करनी चाहिये। इनकी मिट्टी को घर में कब तक रखा जा सकता है?"

हाजी इकबाल ने कुछ कहने को होंठ खोले ही थे लेकिन केशव को भीतर आते देखकर होंठों को कसकर भींच लिया।

□□□
□□□

चूंकि मुश्ताक हिन्दुस्तानी को केशव ने मीडिया के सामने प्रस्तुत करके उसे बहुत पॉपुलर करवा दिया था, इसलिये अखबारों व न्यूज चैनल्स के माध्यम से उसकी बीवी सायरा व बेटे आमिर की हत्या की खबर पूरे देश में पहुंची।

सायरा व आमिर के जनाजे में सैकड़ों, नहीं हजारों की भीड़ सम्मिलित हुई। मुस्लिमों के साथ हिन्दू, सिख व ईसाई भी थे। मिलिट्री से सम्बन्धित लोग भी थे तो राजनीति से जुड़े बहुत-से लोग भी थे। मुम्बई से इलेक्शन जीतकर स्टेट मिनिस्टर बना सुलेमान परदेशी भी था और मुस्लिमों की राजनीति करने वाला हाजी इकबाल सिद्दीकी भी था।

मस्जिद में आये मौलवी के डायरेक्शन में सायरा व आमिर को गुसल अर्थात् स्नान करवाया गया और मुश्ताक समेत उसके रिश्तेदारों ने पढ़ा—

'अल्लाहुम—मशिफ़ली व लहू व अजक्यूनी मिन्ह उक्बा ह-स-न-तन।'

फिर 'बिस्मिल्लाह' कहते हुये जनाजा उठाया गया—जिसमें एक कन्धा केशव ने भी दिया।

वैसे मुश्ताक के घर सोफिया, चांदनी, श्वेता और सलमा भी आई थीं—जबकि जनाजे में राजन, करतार सिंह, अलफांसे और इंसपैक्टर अनिल यादव भी सम्मिलित थे और उन्होंने जनाजे को कन्धा भी दिया!

कब्रिस्तान में पहुंचकर अगल-बगल में खुदी कब्रों में जब सायरा व आमिर के शवों को रखा गया तो बहुत-से लोगों ने समवेत् स्वर में दुआ पढ़ी—

'बिमिल्लाहि व बिल्लाहि व अल्ला मिल्लति रसूल्लिाहि।' जिसका मतलब था—मैं इसे अल्लाह का नाम लेकर और अल्लाह की मदद के साथ और उसके धर्म पर (कब्र में) रखता हूं।

दोनों कब्रों पर मिट्टी डालने वालों की संख्या बहुत अधिक थी—इस बीच मौलवी साहब ने सूरः फातिहा शरीफ और सूरः बकरः की आयतें पढ़ीं।

मुश्ताक का रो-रोकर बुरा हाल था—केशव के साथ राजन, करतार सिंह, अलफांसे ने तो उसको सांत्वना दी ही, हाजी इकबाल

भी उसका हमदर्द बनने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ रहा था।

"चलो, घर चलें मुश्ताक मियां...!" चलने का समय आने पर हाजी इकबाल मुश्ताक के कन्धे पर हथेली रखकर बहुत धीमी आवाज में बोला, "हिन्दुस्तान में रहने वाले मुसलमानों को ऐसे ही रहना पड़ेगा, जैसे दांतों के दरम्यान बेचारी जुबान को रहना पड़ता है। ये लोग दिखावे को गम और अफसोस जाहिर करेंगे—लेकिन ऐसे हालात और सख्त कानून कभी नहीं बनायेंगे कि हम मुसलमानों पर जुल्मो-सितम बन्द हो जायें। मुस्लिमों के खैरख्वाह और सच्चे हमदर्द सिर्फ मुसलमान ही हो सकते हैं—जो काफिरों पर ऐतबार करे...वो नादान ही है और एक-ना-एक दिन खता खायेगा-ही-खायेगा। अल्लाह तुम्हें ये रंजो-गम बर्दाश्त करने की ताकत बख्शें...।"

□□□
□□□

सूई चुभने का अहसास हुआ शहजादी को—फिर उसके साथ क्या हो रहा था, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

अपने जिस्म को तो क्या, किसी अंग को, यहां तक कि पलकों को भी नहीं झपक पा रही थी वो। पुतलियां तक नहीं घुमा पा रही थी वो—बस, सामने ही देख पा रही थी वो—टैक्सी की अगली सीट, विन्ड स्क्रीन और ड्राइवर की गर्दन व सिर का पृष्ठ भाग।

चाहकर भी नजरें हिला नहीं पा रही थी वो।

ड्राइवर को मदद के लिये पुकारना चाहती थी, लेकिन पुकारती कैसे?

मन-ही-मन बोल रही थी कि ड्राइवर को उसकी दशा का जल्द-से-जल्द पता हो जाये और वो उसकी मदद करे।

पांच मिनट पहले ही शहजादी हॉस्टल से निकलकर बाहर आई थी—मार्कोनी के पास जाने के लिये। सामने ही एक टैक्सी खड़ी थी—जिसमें सवार होकर उसने व्हाइट हाउस चलने के लिये कहा।

फिर उसके गले पर कोई सूई-सी चुभी और वो जीती-जागती लाश में परिवर्तित हो गई।

धीरे-धीरे करके ड्राइवर सिर घुमाकर चेहरा उसकी तरफ लाने लगा तो वो प्रसन्न हुई कि ड्राइवर को उसकी दशा के बारे में मालूम हो जायेगा और वो उसे किसी डॉक्टर के पास ले जायेगा—लेकिन...!

लेकिन विलियम का चेहरा सामने आने पर वो मन-ही-मन चौंकी—क्योंकि वो जानती थी कि विलियम भी मार्कोनी की भांति सी०आई०ए० का जासूस और व्हाइट हाउस से सबद्ध है।

विलियम ड्राइवर के रूप में टैक्सी में क्यों है?

"हाय...जानेमन...!" होंठों पर बहुत ही घातक किस्म की मुस्कान सजाकर पिरामिड से निकली ममी-सी शांत व अकड़ी हुई सी आवाज में बोला. "पहचान तो लिया ही है तूने। मार्कोनी की तरह मैं भी सी०आई०ए० का जासूस हूं। हालांकि मार्कोनी मुझसे सीनियर था, लेकिन उसमें और मुझमें जमीन-आसमान का अन्तर है। हालांकि मैं भी उसकी तरह खूबसूरत औरतों का दीवाना हूं लेकिन मैं अपनी ड्यूटी पर आंच नहीं आने देता और अपने देश की सुरक्षा-व्यवस्था को भी प्रभावित नहीं होने देता! इस मामले में मार्कोनी बेवकूफ ठा—उल्लू का पट्ठा ठा। टेरे पर मुझे बहुत पहले से शक ठा। टभी से टेरी जासूसी शुरू कर डी ठी मैंने। बैसे मैं समझ रहा ठा टेरा खेल। टू मार्कोनी का बिस्टर गरम करके व्हाइट हाउस में सेंध लगाना चाहटी थी। अपने फुफेरे भाई को व्हाइट हाउस में नौकरी दिलवाने के चक्कर में ठी टू। मैंने मार्कोनी को टेरी हकीकत बटलाकर एक्शन लेने को कहा—लेकिन उस पर टेरी खूबसूरटी का रंग चढ़ा ठा—वो टुझे गलट मानने को राजी नहीं ठा। क्या करटा मैं—मजबूरी ठी। मुझे मार्कोनी की जान लेनी पड़ी...।"

अगर शहजादी नॉर्मल होती तो...चिहुंक उठती—लेकिन उसके दिमाग में जबरदस्त आतिशबाजी तो हुई ही।

ये बात दूसरी रही कि वो कोई प्रतिक्रिया व्यक्त ना कर पाई।

सीट पर पलटकर और शहजादी की तरफ मुंह करके आलथी-पालथी मारकर बैठ गया।

गोल्डन कलर के लाइटर से सिगरेट सुलगाकर कश लगाकर मुंह में भरा धुआं शहजादी के चेहरे पर फेंकने पर उसकी बे-हरकत आंखों में झांकते हुये बोला, "लेकिन उसकी जान ऐसे जहर से ली ठी कि यही साबिट हुआ कि उसका सोटे वक्ट हार्ट फेल हो गया ठा। उसको पूरे सम्मान के साठ कब्रिस्टान में डफनाया गया हाय। प्रेसीडेन्ट साहब ने भी उस कॉफिन पर बुके चढ़ाया ठा! न्यूज चैनल, न्यूज पेपर्स में उसकी जमकर टारीफें होंगी। उसे ईमानडारी से फर्ज निभाने वाला जांबाज जासूस बटलाया जायेगा। वैसे वो ईमानदार और जांबाज ठा—डेश के वास्टे वफाडार ठा। लेकिन वो टेरी हकीकट नहीं जान सका—टुझे पहचान नहीं सका! मैं टो टेरी हकीकत जान गया हूं। पाकिस्तान में मौजूद सी०आई०ए० के एक जासूस ने मुझे एक घण्टा पहले ही बटलाया कि टू आई०एस०आई० के चीफ चंगेज खां की बेटी है हाय...और अमेरिका में आई०एस०आई० की कमाण्डर बनाकर भेजी गई ठी। मेरी उम्मीड से भी ज्याडा खटरनाक निकली टू टो। टुझे टॉर्चर करके टेरे अन्डर में काम करने वाले सभी लोगों

के नाम-पटे मालूम करूंगा। सभी को गिरफ्टार करके फांसी पर लटकाया जायेगा—या फिर एनकाउन्टर के बहाने मार डिया जायेगा! ये मेरी जिन्डगी का सबसे बड़ा केस होगा। बहुट नाम होगा मेरा। प्रमोशन के साठ मान-सम्मान और इनाम भी मिलेगा। सी०आई०ए० के कामयाब और फेमस जासूसों की लिस्ट में नाम शामिल हो जायेगा। लेकिन टेरी गिरफ्टारी टभी डिखलाऊंगा, जब टू अपने सभी आडमियों के नाम-पटे बटला डेगी। अभी टो मैं टुझे अपने घर लेकर चल रहा हूं। जब टक टू अपना मुंह खोलकर अपने सारे जुर्म नहीं कबूल लेगी—टब टक मेरी मेहमान बनी रहेगी टू! चल, टुझे अपने घर लेकर चलटा हूं। डेख कि मेरी मेहमाननवाजी और खाटिरदारी किटनी बढ़िया हाय...।"

❑❑❑
❑❑❑

"अस्सलामु अलैकुम, हाजी साहब।"

"व अलैकुमुस्सलामु...मियां...।" धार्मिक नेता हाजी इकबाल सिद्दीकी कार का दरवाजा खोलकर बोला, "...भीतर आकर बैठ जाओ।"

"क्या हम कहीं घूमने चलेंगे हाजी साहब—?" प्रश्न करने पर वो दरवाजा खोलकर हाजी इकबाल की कार में उसकी बगल में बैठ गया और दरवाजा बन्द कर लिया।

"नहीं—हम कहीं नहीं जायेंगे। बस, यहीं बैठकर थोड़ी गुफ्तगू करेंगे...।"

"आप मेरे गरीबखाने पर तशरीफ ला सकते थे—या मुझे अपने घर आने को बोल सकते थे—।"

"वो कतई भी ठीक नहीं होता। होशियारी और एहतियात बरतना लाजिमी था। फोन पर तुम्हें इशारा कर ही दिया था मैंने।"

"जी—आप बतला रहे थे कि बहुत ही जिम्मेदारी वाला काम है। मुझे इतना बड़ा ओहदा मिलेगा कि मेरी ताकत बहुत ज्यादा बढ़ जायेगी...।"

"और बेहिसाब कमाई भी होगी। हजारों या लाखों में नहीं, बल्कि करोड़ों में...वो भी हर महीने...।"

"इतनी मोटी कमाई? यकीन नहीं होता! खैर, फरमाइये कि वो काम क्या है—?"

"हिन्दुस्तान में हम मुसलमानों की क्या पोजीशन है, क्या रुतबा और हक रह गये हैं, बतलाने की जरूरत नहीं...।" गम्भीर होकर बोला हाजी इकबाल, "...कायदे आजम जिन्ना अली साहब ने अगर

अलग मुल्क की मांग करके पाकिस्तान की तामीर ना करा दी होती तो...हालात बद से भी बदतर हो जाते। पाकिस्तान के हुक्मरानों का एक ही ख्वाब है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को उनकी तादाद के मुताबिक ही अलग जमीन मिल जाये, जहां वो चैनो-अमन के साथ रह सकें। हालांकि हमारी तादाद और जरूरतों को देखते हुये कश्मीर की जमीन नाकाफी है—लेकिन हम एडजस्ट कर लेंगे। पाकिस्तान वालों का दिल और कलेजा बहुत बड़ा है। वो हमें जरूरत के मुताबिक अपनी जमीन भी दे देंगे और हमें नया मुल्क मिल जायेगा—जिसमें हमें पूरी आजादी हासिल हो जायेगी। किसी की भी दखलअन्दाजी नहीं होगी। हम पर कोई जुल्मो-सितम ना करेगा और हुकूमत नहीं करेगा। हमारी अपनी हुकूमत होगी। हमारी अदालतें होंगी—हमारा कानून होगा...।"

"लेकिन...क्या ये मुमकिन है हाजी साहब—?"

"अगर हम लोग पाकिस्तान को अपना खैरख्वाह मानकर उसके मुताबिक चले तो ये मुमकिन हो जायेगा मियां! आई०एस०आई० के जरिये पाकिस्तान इसी कोशिश में ही तो मुसलसल लगा हुआ है। यहां की हुकूमत, हुक्मरान और सियासी पार्टियां कमजोर पड़ेंगी तो हिन्दुस्तान कमजोर पड़ेगा और हमें अलग मुल्क मिल जायेगा। पाकिस्तान के हुक्मरान चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में आई०एस०आई० की जिम्मेदारी तुम्हारे मजबूत कन्धों पर डाली जाये—तुम आई०एस०आई० के मुखिया का ओहदा कबूल कर लो। तुममें काबिलियत है कि तुम इस ओहदे को ठीक से सम्भाल सकते हो और दिये गये मिशन को ठीक से अन्जाम दे सकते हो—।"

"लेकिन...ये तो खतरे वाली बात है हाजी साहब—।"

"पहली बात तो ये मियां कि कुछ पाने को थोड़ा खतरा तो उठाना ही पड़ता है। इस खास अवसर को हासिल करने को थोड़े-बहुत खतरे तो उठाने ही होंगे। वैसे आई०एस०आई० के मुखिया चंगेज खां ने इस बार ऐसी तरकीब निकाली है कि खतरे की गुंजाईश ना के बराबर ही रहेगी।"

"वो तरकीब क्या है हाजी साहब—?"

"इस मर्तबा आई०एस०आई० का मुखिया खुफिया रूप से ही काम-काज करेगा। तुम पर्दे के पीछे रहकर काम करोगे। अगर अपने मातहतों के सामने जाओगे भी तो हुलिया बदलकर ही जाओगे। आवाज बदलकर बात करोगे। तुम्हें एक नाम दिया जायेगा...बाबर! वैसे सारी बातें तो खुद चंगेज खां साहब ही बतलायेंगे। वो दो महीने का एक खास मिशन चलाना चाहते हैं। दो महीने तक वो हिन्दुस्तान

में ही रहेंगे। जरूरत के मुताबिक वो इधर-उधर भी जायेंगे—लेकिन मुस्तकबिल रूप से वो कश्मीर के एक खुफिया ठिकाने पर ही रहेंगे। अगर तुम इस जिम्मेदारी को उठाने के वास्ते राजी हो तो...तुम्हारे कश्मीर जाने का बन्दोबस्त कर दिया जायेगा। चंगेज खां साहब के सामने बैठकर तुम अपनी बात कहना—वो अपनी बात कहेंगे। वहीं पर सारी बातें तय हो जायेंगी। तुम्हें एक-एक बात समझा दी जायेगी। चंगेज खां साहब ने मुझसे कहा था कि अगर मेरी नजर में आई०एस०आई० का मुखिया बनने के काबिल कोई बन्दा हो तो मैं उन्हें बतलाऊं। मेरी नजर में तुम थे। जेहन में सबसे पहला नाम तुम्हारा ही आया! सोच-समझ लो। अपने मजहब और अपनी कौम की खिदमत करने का बहुत बढ़िया मौका मिल रहा है। कुछ बेहतर करके तुम तवारीख में अपना नाम सुनहरे हर्फों में दर्ज कर जाओगे। आने वाली पुश्तें तुम्हें यूं ही याद करेंगी—जैसे पाकिस्तान में मरहूम कायदे आजम जनाब जिन्ना अली को याद फरमाया जाता है! मैं पूरी बेकरारी के साथ तुम्हारी हामी का इन्तजार कर रहा हूं। बोलो, क्या तुम हिन्दुस्तान में आई०एस०आई० मुखिया की जिम्मेदारी उठाने के वास्ते राजी हो—?"

□□□
□□□

शहजादी को बेड पर लिटाकर विलियम ने बड़े कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और छोटे से काउन्टर पर पहुंच गया, जहां सोडा, साइफन व खाली गिलासों के साथ पीछे की रैक में शराब के विभिन्न ब्रान्ड वाली बोतलें सजी हुई थीं। करीब ही छोटे साइज का रेफ्रिजेरेटर भी रखा हुआ था।

फ्रिज से रेडीमेड चिकन लेग्स का पैकेट तथा बर्फ निकालकर उसने लार्ज पैग तैयार किया और चिकन-लेग्स व सिगरेट के साथ व्हिस्की पीने लगा।

भले ही शहजादी अपने शरीर का कोई अंग नहीं हिला पा रही थी, लेकिन उसका दिमाग पूर्णतया: सक्रिय था—

"इस हरामजादे के इरादे कतई भी ठीक नहीं हैं। शायद ये मुझे जान से तो नहीं मारेगा—लेकिन मुंह से सच्चाई उगलवाने के वास्ते से टॉर्चर जरूर करेगा। न जाने किस तरह से मुझे टॉर्चर करेगा ये? मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रही हूं। मुकाबला करने की बात दूर रही—अपना बचाव भी नहीं कर सकूंगी। ऐसा मुर्दा बन गई हूं...जो कि जिन्दा है। सी०आई०ए० का जासूस होने के नाते इसका फर्ज बनता था कि मुझे गिरफ्तार करके अपने हैडक्वार्टर ले जाता और

वहां पर मुझे इन्टेरोगेट करता। लेकिन इसने ऐसा नहीं किया—क्यों नहीं किया? आखिर इसके इरादे क्या हैं—?"

हलक के रास्ते चार लार्ज पैग पेट में पहुंचाने पर विलियम ने एक सिगरेट सुलगा ली और झूमते हुये शहजादी के करीब आ पहुंचा।

उसने शहजादी को निःवस्त्र करना शुरू कर दिया और बोला—"...इसमें तो कोई शक नहीं हाय कि टू बहुत खूबसूरत हाय! टेरा चेहरा, ये नशीली आंखें, रस से भरे गुलाबी होंठ...सफेद-सफेद डांट...टुझमें डम होगा...टभी टो मार्कोनी को टूने अपना डीवाना वना लिया ठा! लेकिन उसने टेरे चेहरे से चाहठ ठोड़े ही की ठी। वो टेरे जिस्म का मजा ले रहा ठा। मैं भी डेखना चाहटा हूं कि टेरे जिस्म में ऐसी क्या बाट हाय कि मार्कोनी के डिमाग ने काम करना बन्ड कर डिया ठा—?"

शहजादी का वश चलता तो वो विलियम को कच्चा ही चबा जाती—लेकिन बहुत विवश थी वो। उसने सिर्फ वो ही किया, जो उसके वश में था—

मन-ही-मन विलियम को भद्दी-भद्दी, गन्दी-गन्दी गालिया देने लगी।

विलियम तो वो गालियां सुन नहीं पा रहा था। सुनता भी तो उस पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। उसने जो ठान लिया था, वो करना ही था।

शहजादी के तन पर उसने वस्त्र के नाम पर एक धागा तक भी नहीं छोड़ा।

आंखों की नीली कटोरियों में सुर्ख रंग वाले वासना के असंख्य कीड़े गिजगिजाने लगे और मुंह में पानी भी भर आया। चेहरे समेत आंखों को शहजादी के जिस्म के करीब लाकर एक-एक इंच का मुआयना करते हुये बोला, "वाओ...क्या खूबसूरत जिस्म हाय...। एक बार इन्डिया गया ठा मैं। वहां टाजमहल डेखा ठा। लगा ठा कि वो डुनिया की सबसे खूबसूरत इमारट हाय। लेकिन गलटफहमी टी मेरी। डुनिया की सबसे खूबसूरत चीज है ये...टेरा बडन। वाओ...एक-एक हिस्सा लाजवाब। माइका के जैसी चमकीली बॉडी। मक्खन के जैसी चिकनी खाल। डूट जैसी गोरी और मोटियों जैसी साफ और चमकीली। ऊपर वाले ने स्पेशल ऑर्डर पर सबसे बढ़िया कारखाने के बढ़िया कारीगरों से बनवाया होगा। पट्ठर भी मोम की तरह पिघल जायें...टेरे जिस्म की गरमी से! जी भरकर खेलूंगा। मैं इस हसीन जिस्म के साठ! लेकिन पहले इसे सूंघूंगा मैं। चूमूंगा होंटों से...जीभ लगाकर इसका स्वाद लूंगा। फिर करुंगा टेरे साठ

रेप...हिन्दी में क्या बोलटे हय...हां, बलाटकार। टेरे साथ बलाटकार करूंगा मैं। नहीं, ऐसे मजा नहीं आयेगा। टो कैसे मजा आयेगा? टेरे इस खूबसूरत जिस्म को पहले व्हिस्की से नहलाटा हूं—टाकि इसका नशा बढ़ जाये।"

और फिर विलियम ने व्हिस्की की दो बोतलें खाली करके शहजादी के सिर को सिर के बालों से लेकर पैरों के नाखूनों तक भिगो दिया—फिर स्वयं के वस्त्र उतारने लगा।

और फिर वो शहजादी के बहुत करीब पहुंच गया—किसी कुत्ते की मानिन्द ही नथुनों को सिकोड़कर, फैलाकर, सिकोड़कर, फैलाकर शहजादी के अंग-प्रत्यंग को गहरी-गहरी सांसें लेकर सूंघने लगा व सांसें छोड़ने लगा।

शहजादी चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रही थी—वर्ना उसे यूं ही लग रहा था कि कोई जानवर गन्दगी के ढेर से निकलकर उसके जिस्म पर बदबूदार सांसें छोड़ रहा था।

विलियम के होंठों का स्पर्श उसे बड़ा ही भद्दा लग रहा था। जीभ के स्पर्श से तो यूं ही लगा कि मानो उसके तन पर गन्दगी चिपकाई जा रही हो।

और फिर अचानक ही उसे यूं लगा कि भट्टी से निकलकर कोई दहकती हुई सलाख उसके भीतर पेवस्त कर दी गई हो—

लेकिन चीख ना सकी वो—तड़प ना सकी वो।

सिर्फ दिल व दिमाग ही मारे पीड़ा के चीख-चिल्ला रहे थे।

मानो पागल ही हो गया था विलियम—वो पूरी निर्दयता के साथ शहजादी को नोच-खसोट रहा था, चिंगल-चिंगलकर खा रहा था।

अचानक ही उसका जिस्म धनुष की मानिन्द ऐंठकर तीर-सा सीधा हो गया और पसीने से तर-ब-तर होकर वो दमे के मरीज की मानिन्द ही हांफने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

"जय हिन्द, भाईजान...।"

बंगले से अटैच्ड शानदार ऑफिस में बैठा केशव उपन्यास लिखने में मग्न था कि एक आवाज ने उसकी सोचों को यूं ही बिखेर दिया, जैसे कैरम-बोर्ड पर स्ट्राइकर के प्रहार से तमाम गोटियां इधर-उधर छितरा जाया करती हैं।

उसने मुश्ताक को देखा, जो कि काफी गमगीन, उदास व कमजोर भी दिखलाई पड़ रहा था। उसकी शेव बढ़ी हुई थी तथा आंखों के नीचे स्याह दायरे भी उभर आये थे।

पेन को रखकर स्क्रिप्ट वाले रजिस्टर को बन्द करके मेज की दराज में रखकर उठा केशव। मुश्ताक के नजदीक पहुंचकर उसके कन्धों पर हथेलियां रखकर बोला, "ये क्या हाल बना रखा है तुमने अपना? लगता है कि मेरे समझाने-बुझाने का कोई फर्क नहीं पड़ा है। तुम जैसे बहादुर इन्सान को प्रत्येक दुविधा, प्रत्येक संकट को मुस्कराकर फेस करना चाहिये। मानता हूं कि सायरा और आमिर को भुला पाना आसान नहीं होगा—लेकिन तुम्हारा ये हाल देखकर उनकी आत्मा दुःखी हो रही होगी। तुम्हें उन्हें अपने दिल में रखकर संघर्ष की राह पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना है...रुकना नहीं है, ठिठकना नहीं है। फौजी हो, बिना वर्दी के भी फौजी वाली लाइफ स्टाइल ही अपनानी है—।"

"मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं भाईजान...।" बलात मुस्कुराकर बोला मुश्ताक, "अपना ज्यादातर वक्त ट्रेनिंग सैन्टर में ही बिता रहा हूं। अपनी मदद के वास्ते मैंने चार ट्रेनर भी रख लिये हैं, जो कि मिलिट्री से रिटायर्ड हैं और मिलिट्री कैम्प में कमाण्डो ट्रेनर थे! लोगों में वतनपरस्ती का जज्बा भरने के वास्ते मैंने एक नुक्कड़ नाटक कम्पनी के साथ कॉन्ट्रेक्ट कर लिया है। हम लोग अलग-अलग शहरों में जाकर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से देशभक्ति का प्रचार करेंगे। आज शाम ही मैं कम्पनी को साथ लेकर कश्मीर जा रहा हूं। जम्मू, श्रीनगर वगैरह में नाटक करेंगे...।"

"गुड...ये बढ़िया रहेगा। इससे तुम्हारा मन भी लगेगा और तुम देश की सेवा भी करोगे। उन दर्जन-भर शैतानों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट आ गई है। उन्होंने ही सायरा को रेप किया था। लेकिन इसी के साथ एक चौंकने वाली बात का भी खुलासा हुआ है मुश्ताक...।"

"वो क्या भाईजान—?"

"उनकी मौत हादसे में या एक्सीडेन्ट में नहीं हुई—बल्कि उनका जानबूझकर एक्सीडेन्ट किया गया था। रांग साइड से एक ट्रक ने पीछे से उस मिनी बस को टक्कर मारी थी और फिर साइड से टक्करें मारकर उसे खाई में धकेल दिया था। वो ट्रक पकड़ा गया है—लेकिन उसका ड्राइवर और क्लीनर गायब हैं। पुलिस दोनों की तलाश कर रही है। समय निकालकर राजन और करतार सिंह भी इस केस की इन्वेस्टीगेशन करेंगे। चलो, घर चलते हैं...।"

"बस, आपसे मिल लिया भाईजान। मुझे कश्मीर जाने की तैयारी करनी होगी...।"

"कोई बात नहीं—चले जाना। चाय पी लेते हैं। सोफिया, चांदनी, और मुंशी से भी मिल लेना। राजन, करतार सिंह और श्वेत तो एक केस के सिलसिले में गये हुये हैं।"

"आप शायद उपन्यास लिख रहे थे। कौन-सा चल रहा है—?"

"तख्त बदल दो ताज बदल दो।"

❑❑❑
❑❑❑

ड्रग का प्रभाव खत्म होने पर शहजादी नॉर्मल हो गई तो कराहने लगी—क्योंकि रेप के कारण उसे काफी पीड़ा हो रही थी।

वो अभी भी उठ नहीं सकती थी—क्योंकि उसके नॉर्मल होने से पहले ही विलियम उसे निःवस्त्रावस्था में ही उठाकर दूसरे कमरे में ले आया था और एक बड़ी मेज पर लिटाकर उसे लाल रंग की नाइलोन की डोरी से कसकर बांध दिया था।

विलियम की अनुपस्थिति का लाभ उठाने के लिये उसने बन्धन-मुक्त होने की चेष्टा की ही थी कि दरवाजा खेलकर विलियम भीतर आया और मुस्कुराया—

जल-भुनकर राख-सी हो गई शहजादी और 'चोटिल नागिन' की मानिन्द ही फुंफकारकर बोलीं, "सूअर की बच्चे! ठीक नहीं किया तूने मेरे साथ। ऐसा डसूंगी कि पानी भी नहीं मांगेगा। तूने इच्छाधारी नागिन को जख्मी कर दिया है।"

मुस्कुराया विलियम—फिर उसके गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ जड़कर बोला, "अब टू नागिन नहीं रही। टेरा सारा जहर चूस-चूस कर पी लिया है मैंने। तेरी फुंफकार भी खटम कर डालूंगा। जब मैंने टुझे रेप किया तो टू ड्रग के प्रभाव में ठी। इस खूबसूरत जिस्म को हिला नहीं सकी ठी। रोई-गिड़गिड़ाई नहीं। चींखी-चिल्लाई नहीं...पूरा मजा नहीं आया। पहले पूरा मजा...फिर आगे बाट होगी...।"

और विलियम एक बार फिर शहजादी पर टूट पड़ा।

शहजादी गालियां और धमकी देने के सिवाय कुछ भी नहीं कर पाई—

वासना का खेल खेलने पर विलियम ने वस्त्र पहने और फिर एक सूटकेस लाकर मेज के करीब वाले स्टूल पर रखने पर बोला—"मौज-मस्ती बहुट हुई शहजादी—अब हम मटलब की बाटों पर आटे हाय। ये टो साफ हो गया कि टू आई०एस०आई० की कमाण्डर हाय! अपने अन्डर में काम करने वाले सभी लोगों के नाम बटलाने हैं टुझे। अपने सभी अड्डों के पटे भी बटलाने हैं...।"

"तू कुछ भी कर ले कुत्ते के बच्चे—लेकिन मुझसे कोई भी जानकारी नहीं निकाल सकेगा तू...आ...आह...आऽऽऽ।"

हथेली से सीने का एक उभार दबोचकर अंगूठे व तर्जनी उंगली

से निप्पल को कसकर पकड़ लिया और बुरी तरह उसे उमेठते हुये हिंसक भाव से बोला—"सी०आई०ए० के कब्जे में हाय टू कुटिया! जब हम अपनी पर आटे हैं टो पट्ठर भी चींख-चींखकर बोलने लगटे हाय! टू बोलेगी—ट्रांजिस्टर की टरह ही बोलेगी पाकिस्तानी कुटिया। मुझे कोई जल्डी नहीं हाय। टुझे जल्डी ही अडालत में पेश नहीं करना हाय। टाइम-ही-टाइम हाय। टेरी जुबान खुलवाने के वास्टे पूरा टाइम लूंगा। जब टू सब कुछ उगल डेगी टों...टुझे अपने हैडक्वार्टर लेकर जाऊंगा। डर्ड हो रहा हाय...बहुट डर्ड हो रहा है? इस डर्ड को बढ़ा रहा हूं। डूसरा निप्पल भी पकड़ लेटा हूं...हां...डोनों को एक साठ मरोड़टा हूं...चींख...खूब जोर लगाकर चींख कुटिया...टेरी चींखें सुनकर उटना ही मजा आ रहा हाय...जिटना शकीरा का गाना सुनने में मजा आटा है...अब डेख कि मैं टेरे साथ क्या-क्या करटा हूं...!"

❑❑❑

❑❑❑

इन्डियन मिलिट्री की वर्दी वाले उन दर्जनभर युवकों ने मिलिट्री की जीप में सवार होकर कश्मीर के छोटे-से गांव 'लिच्छा' में प्रवेश किया और फिर कबीर का घर का दरवाजा तोड़कर भीतर प्रविष्ट हुये।

दो युवक ए०के० सैंतालीस के साथ मेन गेट पर रुक गये थे।

शोर-शराबा सुनकर आस-पड़ोस के लोग बाहर निकल आये लेकिन हथियारबन्द जवानों को देखकर किसी की भी आगे बढ़ने या कुछ बोलने की हिम्मत ना हुई।

भीतर गये दस जवान कबीर और उसके परिवार को मारते-पीटते, डांटते-फटकारते और भद्दी-भद्दी गालियां देते हुये बाहर खींचकर ले आये।

अट्ठारह वर्ष की खूबसूरत युवती को छोड़कर बाकी सभी को अर्थात् कबीर, उसकी बीवी, तीन बेटों और दो छोटी बेटियों को गोलियों से भून डाला।

जिन्दा रह गई युवती शबाना पहले तो सकते की-सी अवस्था में रह गई, फिर रोते हुये अपने परिजनों की लाशों की तरफ बढ़ना चाहा—लेकिन एक जवान ने उसे पकड़ने के नाम पर दबोच लिया और चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "चुप साली कुतिया। नाटक करती है। ये सभी हिन्दुस्तान के दुश्मन थे। तुम लोग अपने घर में आतंकियों को शरण देते थे। तू तो आई०एस०आई० की सरगना है। तुझे आई०एस०आई० के सभी ठिकानों और आतंकियों की जानकारी है। यूं तो तू जुबान खोलने वाली नहीं है। इसे हैडक्वार्टर लेकर चलते

हैं। ब्रिगेडियर साहब के सामने पेश करते हैं। वो ही इसके बारे में निर्णय करेंगे कि इसके साथ क्या करना है— चलो, इसे जीप में डालो...।"

रोती-चींखती, मदद के लिये चिल्लाती शबाना को जबरन उठाकर जीप में डाल दिया गया।

जीप में सवार होने पर मेजर की वर्दी वाला वहां खड़े ग्रामीणों से सम्बोधित होकर बोला, "दुनिया सुधर जायेगी, लेकिन तुम नहीं सुधरोगे मुसलमानों! रहते हिन्दुस्तान में हो—लेकिन गुण पाकिस्तान के ही गाओगे। राशन में लगभग मुफ्त में हमारी सरकार तुम्हें चीनी, गेहूं, चावल, मिट्टी का तेल, कपड़े, साबुन, सर्फ वगैरह देती है—लेकिन सालो गद्दारो...पाकिस्तान का साथ देते हो। पाकिस्तानी आतंकियों और आई०एस०आई० वालों की हर तरह से मदद करते हो। सरकार तो तुम्हें अपना दामाद मानकर पाल-पोस रही है, वोट जो लेनी है--लेकिन हम मिलिट्री वाले तुम सबको सुधार देंगे। अगर नहीं सुधरोगे तो हम तुम्हें ऐसा सुधारेंगे कि...नामोनिशान मिटा देंगे कुत्तों—।"

और फिर जीप धूल उड़ाते हुये वहां से चली गई।

अपने पीछे छोड़ गई कुछ लाशें और बहुत-सा सन्नाटा!

❑❑❑

❑❑❑

व्हिस्की में रूई की आठ छोटी गोलियां भिगोने पर उन्हें शहजादी के पैरों की उंगलियों के बीच फंसा दिया विलियम ने और फिर लक्की स्ट्राइक ब्रान्ड की सिगरेट को माचिस की तीली से सुलगा लिया।

दूसरी तीली जलाने पर वो पैरों की उंगलियों में फंसी और व्हिस्की में भीगी रूई की गोलियों को जलाने लगा।

मारे पीड़ा के चींखते-चिल्लाते हुये शहजादी ने जलती हुई रूई को पैरों से अलग करने को बहुत जोर लगाये—लेकिन वो पैरों को हिलाने या झटकने में सफल नहीं हो सकी।

पैरों की उंगलियों के बीच हो रही जलन की मार सीधे दिमाग तक पहुंच रही थी।

विलियम ने सूटकेस से नोज प्लायर निकाल लिया और शहजादी के सीधे हाथ के अंगूठे को पकड़कर उसके नाखून को नोजप्लायर से पकड़कर ऐसा झटका दिया कि नाखून अंगूठे से अलग होकर नोज प्लायर के साथ चला गया और नाखून विहीन अंगूठे से खून निकलने लगा।

व्हिस्की की घूंट भरते हुये तथा सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये विलियम ने शहजादी के हाथों-पैरों के तमाम बीसों नाखून नोज प्लायर से उखाड़कर एक प्लेट में डाल दिये--फिर उखड़े नाखूनों वाले जख्मों पर व्हिस्की की बूंदें टपकाकर नमक भी छिड़का।

फिर विलियम ने नोज प्लायर सूटकेस में रखकर चार मोटी व बड़ी कीलें तथा एक हथौड़ा निकाल लिया और शहजादी के होठों पर होठ रगड़ते हुये फुसफुसाकर बोला, "टू अगली टकलीफ के वास्टे टैयार है ना डार्लिंग?"

विलियम के इरादों ने शहजादी को थोड़ा विचलित कर दिया।

विलियम ने एक कील की नोक शहजादी की हथेली की बीचो-बीच रखकर हथौड़ा उठाया ही था कि स्टूल पर रखा फोन बजने लगा।

हथौड़ा व कील मेज पर रखकर विलियम ने फोन रिसीव किया—किसी से बात करने तथा फोन रखने पर शहजादी से बोला—"टू कुछ डेर टक रिलैक्स हो सकटी हाय! मेरी बीवी का फोन ठा। वो गर्भवटी हाय और उसकी टबियट ठोड़ा खराब हाय। मुझे उसके पास उसके बाप के घर जाना हाय। सुबह टक आ जाऊंगा। रहमान...ओये रहमान...।"

छोटी-सी दाढ़ी वाला और अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति कमरे के भीतर आया और विलियम को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा।

"मैं जरूरी काम से जा रहा हूं रहमान। मेरे पीछे शहजादी का ख्याल रखना। अभी इसको जिन्दा रखना हाय—इसको पानी और जूश डे सकटे हो। लेकिन खाने की आइटम नहीं डेना। इसको खोलना मट! बहुत ही खतरनाक डाय ये—। पिस्टल जेब में रखना। अगर ये कोई गलत हरकत करे टो इसको गोली मार डेना...।"

"ये बाथरूम या ट्वायलेट जाना चाहते तो...?"

"नो...खोलना मट--बिल्कुल मट खोलना। इसे जो भी करना है—यहीं पर...करेगा। मैंने इसके सारे कपड़े निकालकर इसको नंगी कर दिया हाय। ये मेज पर गन्दगी करेगी टो...कर डे—स्वीपर आकर साफ कर डेगा। मैं जाकर आटा हूं...।" विलियम दरवाजे पर पहुंचकर पलटा और होंठों पर मक्कारी भरी मुस्कान सजाकर शहजादी से बोला, "जल्दी ही लौटकर आटा हूं डार्लिंग! फिर टॉर्चर शुरू होगा। टब टक सोच कि टेरे साठ क्या-क्या होना हाय...!"

□□□

□□□

"रहमान मियां! मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है...।"

"तुम शायद गलतफहमी की शिकार हो लड़की...।" सख्त व खुरदरे लहजे में बोला रहमान, "भले ही मैं मुस्लिम हूं--लेकिन अपने मालिक के वास्ते पूरा वफादार हूं। तुम्हारी कोई मदद करके अपने मालिक के साथ नमकहरामी नहीं करूंगा मैं—।"

"तुम गलत समझ रहे हो रहमान मियां। मैं जानती हूं कि तुम मुसलमान होने के नाते अपने मालिक के साथ गद्दारी नहीं करोगे। मैं तुमसे किसी मदद की उम्मीद नहीं कर रही हूं...।"

"तो फिर—?"

"बचपन से ही इंगलिश स्कूलों में पढ़ी हूं। मुझे मजहबी तामील नहीं मिल सकी। दुश्वारी के इस मौके पर मैं अल्लाह से अपनी सलामती की दुआ करना चाहती हूं। अपनी सलामती की दुआ करने का तो हक है ना मुझे—?"

"बेशक है—।"

"अब्बूजान ने एक मर्तबा मुझे बतलाया था कि मुसलमान पर कोई मुसीबत आ जाये तो उसे कौन-सी दुआ करनी चाहिए—लेकिन मैं भूल गई। मेहरबानी करके मुझे बतलाओ कि वो दुआ कौन-सी है—?"

रहमान शहजादी के सामने आकर बोला, "मैं तुम्हें एक कलिमा बतला रहा हूं। कुरआन शरीफ में है कि हजरत यूनुस अलै० ने मछली के पेट में अल्लाह को पुकारा था और ये कलिमा पढ़ा था। वो कलिमा है...ला इल-ह इल्ला अन-त सुबहान-क इन्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन। जिसका तर्जुमा ये है कि हे अल्लाह! तेरे सिवा कोई माबूर नहीं, तू पाक है। बेशक मैं अपनी जान पर जुल्म करने वालों में से हूं। या फिर तुम पढ़ सकती हो...या हय्यु या कय्यूमु बिरहमति-क अस्तगीसु—जिसका मतलब है कि ऐ जिन्दा और कायम रखने वाले। मैं तेरी रहमत के वास्ते से फरियाद करता हूं।"

"मेहरबानी करके दोबारा बोलिये...।"

रहमान ने दोबारा बोल दिया और शहजादी ने उसके साथ-साथ दोहरा दिया, फिर पूछा, "कहां के रहने वाले हो तुम—?"

"लाहौर—।"

"वाकई? तुम पाकिस्तानी हो? मैं भी पाकिस्तानी। हम दोनों हम-वतन हैं। तुम्हें तो मेरी मदद करनी चाहिये—।"

"नहीं—।"

"क्या मुझसे हमदर्दी नहीं है तुम्हें—?"

"नहीं—।"

"मेरी आंखों में आंखें डालकर बोलो कि तुम्हें मुझसे जरा-सी भी हमदर्दी नहीं है—?"

"मुझे तुझसे जरा-सी भी हमदर्दी नहीं है...।" रहमान उसकी आंखों में आंखें डालकर बोला और खता कर गया।

नहीं जानता था कि शहजादी हिप्नोटिज्म की माहिर खिलाड़ी है और अपनी आंखों में झांकने वाले को हिप्नोटाइज अथवा सम्मोहित करने में पूर्णतया सक्षम है।

सम्मोहित हो गया रहमान।

उसका दिमाग उसके वश में नहीं रहा।

उसकी आंखें खोई-खोई सी हो चलीं और समूचा जिस्म ढीला पड़ता चला गया।

"रहमान...।" शहजादी उसकी उनींदी-सी आंखों में झांकते हुये सर्द-से लहजे में बोली, "अब तुम मेरे कब्जे में हो—मेरे काबू में हो—मेरे हुक्म के गुलाम! मैं जो कहूंगी...वो ही करोगे तुम। करोगे ना?"

"हां—करूंगा...।" मानो उसकी आवाज किसी गहरे कुएं से ही निकल रही हो, "मैं तुम्हारे हुक्म का गुलाम हूं।"

"तो मेरा पहल हुक्म ये है कि तुम मुझे खोल दो—।"

यन्त्र-चालित से रहमान ने शहजादी को बन्धन-मुक्त कर दिया।

"बड़े जोरो की भूख लगी है मुझे...।" मेज से उतरकर बोली शहजादी, "मेरे वास्ते स्ट्रांग कॉफी बनाकर ला। खाने में जो भी हो, ले आ। अण्डे हैं—?"

"अण्डे हैं—।"

"गुड! आमलेट बनाकर ले आ। पहले आमलेट बना, फिर कॉफी बना लेना। जल्दी कर...देरी नहीं होनी चाहिए—।"

रहमान कमरे से यूं ही बाहर गया कि मानो नींद में चल रहा हो।

शहजादी ने फर्श पर पड़े वस्त्र उठाकर पहने और फिर फर्स्ट-एड-बॉक्स ढूंढकर अपने जख्मों पर मलहम लगाया।

रहमान चार अण्डों का आमलेट और कॉफी बना लाया।

"गुड...वैरी गुड...।" शहजादी पीतल का वजनी गुलदान उठाकर बोली, "तूने वो ही किया, जो मैंने कहा—लेकिन मजबूरी में। अगर मैंने तुझे हिप्नोटाइज ना किया होता तो तूने मेरी कोई मदद नहीं की होती। पाकिस्तानी मुसलमान होने पर भी तू अंग्रेज का वफादार नौकर बना रहता। सो सजा का हकदार तो तू है—सजा पाने को तैयार है ना? ये ले...।"

और शहजादी ने गुलदान से इतना शक्तिशाली वार किया कि

रहमान का सिर तरबूज की मानिन्द ही खिल उठा और फूटे सिर से खून का फौव्वारा-सा छूटा।

शहजादी ने उसके पेट पर ठोकर मारकर उसे फर्श पर गिरा दिया और नफरत से उस पर थूककर फुंफकारी-सी—

"साला...हरामी...सूअर कहीं का...।"

फिर वो कमरे की दीवार पर लगे विलियम के फोटो को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरते हुये बोली, "बेसब्री के साथ तेरे वापिस लौटने का इन्तजार कर रही हूं अंग्रेजी कुत्ते। तू वापिस तो आ—बतलाऊंगी कि शहजादी से पंगा लेने का कितना खतरनाक अन्जाम होता है—।"

□□□
□□□

अपने परिजनों की हत्या से बेहद दुःखी तथा भयभीत शबाना को वो एक दर्जन मिलिट्री वाले एक पुराने किले में लेकर पहुंचे—जो कि घने जंगल में गोल झील में अवस्थित था।

रोती-सुबकती शबाना को ब्रिगेडियर की वर्दी वाले जिस सात फुटे और बेहद तन्दुरूस्त अधेड़ के सामने पेश किया, उसकी मेहन्दी से रंगी सुर्ख दाढ़ी सीने को चूम रही थी और गंजा सिर मकराना के संगमरमर की मानिन्द ही लाइट मार रहा था।

चौड़ी नाक वाला वो व्यक्ति अंग्रेजों-सा गोरा-चिट्टा था तथा उसकी छोटी-छोटी आंखों में उस्तरे की धार जैसा पैनापन था।

उसने शबाना को यूं ही देखा कि मानो कोई कसाई हलाल करने से पहले अन्दाजा लगा रहा हो कि जानवर में कितना गोश्त उपलब्ध है?

"दुहाई सरजी—दुहाई...।" शबाना उसके पैर पकड़कर रोते हुये गिड़गिड़ाई, "आपके जवानों ने मुझ बदनसीब के साथ बहुत ही ज्यादती की है। इन्होंने मेरे अम्मी-अब्बू और तीन भाइयों, दो बहनों को कत्ल कर दिया झूठा इल्जाम लगाकर कि वो हिन्दुस्तान के दुश्मन थे, आतंकियों की मदद करते थे। मुझे आई०एस०आई० की सरगना बतलाकर जबरदस्ती उठाकर यहां ले आये। अपने घरवालों की तरह मैं भी सच्ची हिन्दुस्तानी हूं...वतन-परस्त हूं। मेरे खून में गद्दारी के कीटाणु नहीं हैं। बेमतलब में ही हम कश्मीरी मुसलमानों की वफादारी पर शक किया जाता है। हम पर बेमतलब में ही ये इल्जाम लगाया जाता है कि हम पाकिस्तान की तरफदारी करते हैं। मैं बेगुनाह हूं। मेरा आई०एस०आई० से कोई मतलब-वास्ता नहीं है—।"

"हां—मैं जानता हूं कि तू बेगुनाह है। तेरे घरवाले भी बे-गुनाह थे।"

"आप जानते हैं ये बात...?" वह चौंककर बोली, "तो फिर इन लोगों ने मेरे घरवालों को कत्ल क्यों किया? ये मुझे उठाकर आपके पास क्यों लाये हैं? इन लोगों को सजा दीजिये...।"

"नहीं! इन लोगों को सजा नहीं मिल सकती...।"

"लेकिन...क्यों–?"

शबाना के कन्धे पकड़कर उसे उठाया और उसकी आंखों में झांकते हुये बोला वह, "क्योंकि इन लोगों ने वो ही किया, जो मैंने इनसे कहा था। ये लोग तो मेरे हुक्म के गुलाम हैं–।"

"आ...आपने...सरजी...? ले...लेकिन क्यों? आपने इन लोगों को मेरे घरवालों को कत्ल करने का हुक्म क्यों दिया था–?"

"मुझे एक खूबसूरत...जवान...कमसिन लड़की की जरूरत थी। इनसे बोला कि किसी गांव में जाकर बढ़िया-सी लड़की उठाकर ले आओ और इल्जाम हिन्दुस्तानी मिलिट्री पर डाल देना...।"

"हिन्दुस्तानी मिलिट्री? क्या मतलब? क्या ये मिलिट्री वाले नहीं हैं–?"

"नहीं...कतई नहीं–?"

"ओह...तो फिर कौन हैं ये–?"

"ये आई०एस०आई० के एजेन्ट हैं। हिन्दुस्तानी मिलिट्री को बदनाम करने के वास्ते ही इन्होंने तेरे घरवालों को हलाक किया और ऐसी हरकतें की होंगी कि गांव वालों को हिन्दुस्तानी मिलिट्री से नफरत हो जाये। तभी तो वो हमारे वास्ते काम करेंगे–।"

अवाक्-सी रह गई शबाना।

मुंह खुला-का-खुला रह गया।

फिर उसका चेहरा लाल-भभूका हो गया और आंखें चिंगारियां-सी छोड़ने लगीं–

"फिर तो तू भी मिलिट्री का अफसर नहीं होगा...?"

"नहीं–कतई नहीं...।" विषाक्त मुस्कान के साथ बोला वह, "मेरा नाम है चंगेज खां! पाकिस्तानी मिलिट्री का लेफ्टिनेंट जनरल हूं और आई०एस०आई० का मुखिया। खास मिशन के वास्ते हिन्दुस्तान में आया हूं...।"

"नीच...कमीने...कुत्ते...।" बिफर उठी शबाना और उग्र बिल्ली की मानिन्द ही चंगेज खां पर आक्रमण करते हुये चीख-चीखकर बोली, "मेरे खानदान के कातिल! तेरी साजिश कामयाब नहीं होने दूंगी मैं। सबको बतलाऊंगी तुम लोगों के बारे में...आह...।"

चंगेज खां ने शबाना के रेशमी व घने बालों को मुट्ठी में जकड़

लिया और झटके देते हुये क्रुद्ध भेड़िये-सा गुर्राया–"हरामजादी! सबको हमारे बारे में बतलायेगी तो तब...जब यहां से जिन्दा लौटकर जायेगी तू। तेरे साथ हवस का खेल खेलूंगा। मेरे मुकाबले में तेरा वजूद कुछ भी नहीं है। बर्दाश्त नहीं कर पायेगी तू और एड़ियां रगड़-रगड़कर दम तोड़ देगी। अगर बलात्कार के बाद भी जिन्दा रह गई तो तेरी गर्दन को गीले कपड़े की तरह उमेठकर तेरी सांसें इस खूबसूरत जिस्म से निकाल फेंकूंगा! चल, बिस्तर पर चलकर तेरे साथ मुंह काला करते हैं...।"

चंगेज खां ने चींखती-चिल्लाती शबाना को किसी हल्की-फुल्की गुड़िया की मानिन्द ही बांहों में उठा लिया और एक कमरे में प्रवेश कर गया।

□□□
□□□

मेज पर लेटा और डोरियों से कसकर बन्धा विलियम अवाक् था, स्तब्ध था, सकपकाया-सा, हड़बड़ाया-सा और लुटा-पिटा-सा।

सोचा था पुनः शहजादी के खूबसूरत जिस्म से खेलकर उसे टॉर्चर करेगा और फिर उसे सी०आई०ए० के हैडक्वार्टर में पेश कर देगा–लेकिन...।

लेकिन घर में प्रविष्ट होते ही उसके ख्यालों के शीशे पर वास्तविकता का ऐसा पत्थर गिरा कि वो चकनाचूर हो गया।

गुलाबी होंठों के मध्य सुलगती सिगरेट दबाये हुये शहजादी से सामना हुआ, जिसके हाथ में थमी उसकी ही पिस्टल की बैरल का रुख उसकी तरफ था।

शहजादी ने उसे भीतर आने को विवश किया तो रहमान की लाश ने उसके होश ही उड़ा दिये थे। इससे पूर्व कि अपने होशो-हवास कायम रख पाता, शहजादी ने खून से सने पीतल के गुलदान का भरपूर वार उसके सिर पर करके उसको बेहोशी की खाई में धकेल दिया था।

होश आया तो मेज पर बन्धा पड़ा था...बेबस, लाचार-सा! मेज के करीब आकर शहजादी ने सिगरेट में कश लगाकर होंठों को गोलाकार करके सफेद व चमकीले दांतों को थोड़ा खोलकर धुंएं का गुबार लुटे-पिटे से विलियम के चेहरे पर छोड़ा, फिर उसके चेहरे के करीब चेहरा करके उसकी आंखों में आंखें झोंककर व्यंगपूर्ण भाव से बोली–"क्यों...होश उड़े हुये हैं ना तेरे? दिमाग हेलीकॉप्टर बना हुआ है ना हरामजादे? सोच नहीं पा रहा है कि हालात कैसे बदल गये? तू ये तो जान गया था कि मैं आई०एस०आई० से वाबस्ता हूं–लेकिन

ये नहीं जानता था कि आई०एस०आई० ज्वाइन करने वालों को मिलिट्री वालों से भी बड़ी ट्रेनिंग दी जाती हैं। मुझे तो आई०एस०आई० की बड़ी ओहदेदार बनना था—इसलिये कई तरह की ट्रेनिंग ली मैंने—जिसमें हिप्नोटिज्म की ट्रेनिंग भी थी। मैंने हिप्नोटिज्म की तालीम में काफी मेहनत की थी और उस आर्ट में बहुत ही माहिर हो गई हूं। तेरा नौकर रहमान वाकई में तेरा वफादार था—। पाकिस्तानी मुसलमान होने पर भी वो मेरी मदद करने को तैयार नहीं था। लेकिन वो साला नहीं जानता था कि उसका पाला किससे पड़ा है। जैसे ही उसने मुझसे आंखें मिलाईं—मैंने उसे हिप्नोटाइज कर दिया। वो मेरे हुक्म का गुलाम बन गया। मैंने उसे हुक्म दिया तो उसने मुझे खोल दिया। मेरे वास्ते कॉफी और आमलेट बनाकर लाया वो। आगे उससे कोई काम नहीं लेना था मुझे—सो उसे हलाक कर दिया। अब तेरी बारी है। फिरंगी कुत्ते...।"

"टू जो कर रही हाय...वो टेरे वास्टे ठीक नहीं होगा। टू अपनी सलामटी चाहटी हाय टो...मुझे खोल डे...आह...आह।"

शहजादी ने विलियम के कान पकड़कर बुरी तरह उमेठ दिये और फिर किसी चोटिल नागिन की मानिन्द ही फुंफकारकर बोली, "साले...मादर जात! खोखली धमकी देकर डराता है मुझे? अपने अन्जाम की परवाह की होती तो मैं आई०एस०आई० ज्वाइन ही नहीं करती! बचपन से ही मेरे मन में अपने मुल्क, अपनी कौम और अपने मजहब के वास्ते कुछ करने की तमन्ना रही है—इसी वास्ते मैंने आई०एस०आई० ज्वाइन की थी। यहां मैं अपने मुल्क, अपनी कौम और मजहब की बेहतरी के वास्ते ही काम कर रही हूं। तूने मेरे मिशन में बहुत बड़ा रोड़ा अटका दिया। मार्कोनी को मार दिया तूने—जिसके जरिये मैं बहुत कुछ कर सकती थी। मेरा भान्डा फोड़कर मुझे कानून के हवाले करना चाहता था। तू अपने मकसद में कामयाब हो जाता तो...आई०एस०आई० को बहुत बड़ा नुकसान हो जाता! मैं भी बेकार हो जाती। शायद मुझे फांसी की सजा ही हो जाती। लेकिन मैं अपनी काबिलियत के दम पर खुद को बचा गई। लेकिन तू खुद को कैसे बचायेगा बे? मैं नहीं समझती कि तू कुछ भी करके खुद को मेरे कहर से बचा पायेगा। तुझे अब मेरे गुस्से, मेरी नफरत और मेरे इन्तकाम का शिकार होना ही पड़ेगा। बहुत टॉर्चर किया तूने मुझे। मेरी उंगलियां जला डालीं और सारे नाखून उखाड़ डाले। इससे बढ़कर मेरे साथ रेप किया तूने। अब देख कि मैं तेरे साथ क्या-क्या करती हूं कुत्ते के बच्चे—!"



विलियम की पीड़ा-भरी चींख से सिर्फ कमरा ही नहीं, बल्कि पूरा फ्लैट ही गूंज रहा था—लेकिन शहजादी ने जरा-सी भी चिन्ता नहीं की—

कारण?

कारण ये कि वो फ्लैट साउन्ड-प्रूफ था—भीतर की तेज आवाज भी बाहर नहीं जाने वाली थी।

विलियम के बीसों नाखून खून से सने हुये मेज के नीचे फर्श पर पड़े हुये थे—जिन्हें शहजादी ने नोज प्लायर से उखाड़कर नीचे डाल दिया था।

शहजादी के हाथ में एक बोतल थी, जिसके मुंह पर ड्रॉपर लगा हुआ था। वो बोतल को टेढ़ी करके उसमें भरे पीले रंग के तरल पदार्थ की बूंदें विलियम के निःवस्त्र जिस्म पर टपका रही थी।

बूंद के पड़ते ही धुआं-सा उठता और वो हिस्सा झुलस उठता।

जाहिर था कि बोतल में तीखा तेजाब भरा हुआ था, जिसके जिस्म पर टपकते ही विलियम बिलबिला उठता।

"रहम...रहम करो शहजादी...।" वह रोते-कराहते हुये बोला, "टरस खाओ मुझ पर...आह...मुझ पर नहीं टो मेरी बीवी प्रिगनेंट हाय...वो मेरे पहले बच्चे को पैडा करने वाली हाय...।"

शहजादी ने बोतल के ड्रॉपर से विलियम के चौड़े सीने पर तेजाब की तीखी बूंद टपकाकर खुरदुरे-से लहजे में कहा, "तूने मुझ पर कौन-सा तरस खाया था ओये अंग्रेजी कुत्ते? मारे पीड़ा के बुरा हाल है मेरा। वैसे भी अपने पेशे में रहम की कोई गुंजाइश नहीं होती। हमें रहम को ताक पर रखना पड़ता है—तभी तो गोली-बारी और बम ब्लास्ट करके लोगों के चीथड़े उड़ा पाते हैं। हममें और जानवरों को हलाल करने वाले कसाई में कोई खास फर्क नहीं होता—वो जानवरों को...तो हम इन्सानों को हलाल करते हैं। तुझ जैसे दुश्मन पर रहम करना तो गुनाह के बराबर ही है। अगर मैं इस तेजाब की बूंदें तेरी इन नीली-नीली आंखों में टपकाऊं तो...?"

"न...नहीं...।" सिहर उठा फिरंगी।

उसने घबराकर आंखों को कसकर मूंद लिया।

बर्फ-से भी शीत और किंग कोबरा के जहर से भी घातक हंसी हंसकर बोली शहजादी—"तुझे देख उस कबूतर की याद आ गई—जो बिल्ली को देखकर ये सोचकर आंखें मूंद लेता है कि बिल्ली भी उसे देख नहीं पायेगी। तू ऐसा करके भी अपनी आंखों को नहीं बचा

सकेगा। आंखों पर पड़े खाल के ये पतले पर्दे तेजाब का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। इन्हें गलाते हुये तेजाब आंखों तक पहुंच ही जायेगा। लेकिन...ये तेजाब तेरा है। पता नहीं कि ये खतरनाक है भी कि नहीं? चलो, इसको आजमा कर देख लेते हैं। मालूम कर लेते हैं कि ये तेरी आंखों तक पहुंच पाता है कि नहीं—।"

"न...नहीं...ऐसा मट करो शहजाडी...मुझे माफ कर डो। मुझे छोड़ डो...बडले में मैं टुम्हें पांच लाख डॉलर डूंगा...अभी डूंगा...मेरे पास हाय...।"

"हट...साले। मुझे नहीं चाहिये तेरे डॉलर। आई०एस०आई० की खिदमत करके मुझे मोटी रकम मिल जाती है। वैसे भी तू कंगाल हो चुका है। दूसरे कमरे में दीवार में तिजौरी फिट है—उसमें से सारी रकम निकाल ली है मैंने। उस रकम से हथियार और बम खरीदे जायेंगे—जो तुम अंग्रेजों को मारने के काम आयेंगे। अभी मैं तेरे तेजाब की आजमाईश करती हूं...।"

"न...नहीं...ऐसा मट करो शहजादी...टरस खाओ मुझ पर...मुझे अन्डा मट करो...।"

"क्या करेगा ये आंखें बचाकर? तेरी जिन्दगी तो खत्म होने वाली है। अन्धा हो जायेगा तो...मौत को देखने से बच जायेगा तू!"

"मुझे माफ कर डो शहजादी...।"

"तू मेरे साथ रेप करे...मैं तुझे माफ कर दूं...ये तो बहुत ही गलत होगा प्यारे! नहीं, तुझे माफी तो नहीं मिलेगी—किसी कीमत पर नहीं मिलेगी! लोगों को रुलाने और सताने में मुझे बहुत मजा आता है। तुझे सताने में तो बहुत ही मजा मिल रहा है। अपने इस मजे को कतई भी खराब नहीं करूंगी मैं...।"

इतना बोलने पर शहजादी ने बोतल टेढ़ी की और विलियम की कसकर बन्द हुई आंख के ऊपर तेजाब की बूंदें टपकने लगी...टप...टप...।

बूंदों से धुआं-सा उठा—तीखी गन्ध फैलाने लगी।

मारे पीड़ा के चींखते-चिल्लाते हुये विलियम सिर को इधर-उधर पटकने लगा तो शहजादी ने उसके माथे पर हथेली रखकर इतना दबाव बढ़ाया कि उसके जबड़े भिंच चले और चेहरा भी सुर्ख पड़ने लगा।

हथेली के दबाव के कारण विलियम अपने सिर को हिला-डुला नहीं पा रहा था, लेकिन चींखना तो उसके वश में था—सो वह चींखें जा रहा था...चिल्लाये जा रहा था।

तब तो उसकी चींखें पहाड़ से आसमान पर जा चढ़ीं, जब तेजाब

की बूंदें त्वचा के कपाट को भेदकर आंख तक पहुंच गईं और आंख का वध कर डाला।

एक आंख का नाश करने पर शहजादी ने तेजाब की बूंदों को दूसरी बन्द आंख पर टपकाना शुरू कर दिया।

जाहिर था कि दूसरे वाली आंख का भी पहले वाली के जैसा ही हस्र होना था...सो हुआ भी।

अन्धा हुआ विलियम छिपकली की कटी दुम की मानिन्द ही छटपटा और तड़फड़ा रहा था।

लेकिन शहजादी के चेहरे पर सूई की नोक बराबर भी शिकन ना थी—बल्कि वो विलियम की बुरी दशा का भरपूर मजा ले रही थी—

मानो वो बच्ची थी और विलियम उसका अति प्रिय खिलौना बन गया था—जिससे खेलते हुये उसका अभी जी नहीं भरा था!

फिर शहजादी ने रूई का बड़ा टुकड़ा लिया और उस पर बोतल से ढेर सारी व्हिस्की डालकर तर-ब-तर कर दिया।

भीगी रूई को विलियम के पेट के निचले विशेष अंग पर लपेट दिया उसने और फिर माचिस की तीली सुलगाकर रूई को आग लगा दी।

भक...की आवाज के साथ रूई ने आग पकड़ ली और गुप्तांग के जलने से विलियम बुरी तरह मचलते हुये चींखने-चिल्लाने लगा, बुरी तरह तड़फने लगा वो।

जबकि शहजादी 'हो-हो' करके भद्दी व बेहूदा हंसी हंसने लगी।

कमरे में जलते हुये गोश्त की बुरी गन्ध तीव्रता के साथ फैल रही थी।

एक कुर्सी पर बैठकर शहजादी ने व्हिस्की की आधी बोतल गटकी—वो भी नीट...पानी की एक बूंद मिलाये बिना।

इस दौरान दो सिगरेट भी पी उसने।

तरोताजा होने पर उठी वह और तेजाब से अधभरी सफेद रंग की जरीकेन उठा ली, जिसका मुंह पहले से ही खुला हुआ था।

"अब मैं तुझे गुसल करवाती हूं ओये अन्धे। गुसल नहीं समझता क्या? तुझे नहलाती हूं। बहुत ही खास गुसल है ये। पानी से तो हर कोई नहाता है। लेकिन मैं तुझे तेरे ही तेजाब से नहलाती हूं हरामी...कुत्ते...।"

"न...नहीं...ऐसा मट करो...आह...रहम की भीख डे डो मुझे...आह...गॉड के वास्टें...मुझे छोड़ डो...आह...आहऽऽऽ।"

लेकिन शहजादी ने उसे तेजाब से नहला दिया—

सिर से लेकर पैरों तक—कर दिया तर-ब-तर!

चींखने-चिल्लाने तथा तड़पने के पश्चात् होश खो बैठा विलियम—बेहोश हो गया वो।

शहजादी को मानो कोई जल्दी ही नहीं थी।

किचन में जाकर चार अण्डों का आमलेट बना लाई और लार्ज पेग तैयार करके व्हिस्की की एक-एक घूंट का मजा लेने लगी—तब तक लेती रही, जब तक कि विलियम होश में आकर कराहने नहीं लगा।

❑❑❑
❑❑❑

शबाना नाम की उस बदनसीब युवती ने चंगेज खां की हवस का, पाशविक कृत्य का शिकार होने पर तड़प-तड़पकर, सिसक-सिसककर और एड़ियां रगड़-रगड़कर ही दम तोड़ा।

कपड़े पहनने पर चंगेज खां ने हवाना का सिगार सुलगाया और कमरे से बाहर निकलकर उस खुले स्थान पर पहुंचा, जहां आग के ऊपर लोहे के सरिये पर एक बकरे को उल्टा करके बांधा गया था।

काली धोती, भूरे रंग की चमड़े की खुली जैकेट तथा सिर पर काली कफनी पहने हुये एक अधेड़ हैन्डल की मदद से उस सरिये तथा उसके साथ बन्धे बकरे को घुमाकर आग पर सेंक रहा था।

चंगेज खां को अपनी तरफ आते देखकर उसने हैन्डल छोड़ दिया और किसी जर-खरीद गुलाम की मानिन्द ही सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"बदरु कसाई—।"

"जी जनाब? हुक्म—।"

"अपनी जिन्दगी में तूने कितने मुर्गे, बकरे, भैंसे वगैरह हलाल किये होंगे...?"

"याद नहीं, जनाब! तेरह साल की उम्र से ही अपने पुश्तैनी धन्धे को सम्भाल लिया था। हलाल किये जानवरों की तादाद लाखों में तो होगी ही...।"

"इंसान कितने हलाल किये—?"

"जी...?" वह सकपकाकर चंगेज खां को देखने लगा।

मोटे होंठों पर रहस्यमयी किस्म की मुस्कान उभारकर चंगेज खां ने उसकी आंखों में झांककर देखा और फिर बोला—

"दो-चार भी नहीं लुढ़काये तूने बदरु कसाई—?"

"नहीं—कभी नहीं...जनाब—।"

"किसी मुर्दे को इस बकरे की जगह भूनकर और बढ़िया मसाला लगाकर परोस तो सकता है ना—?"

"ये...ये बकरा आपके वास्ते ही तो तैयार कर...।"

"नहीं! बकरा खाने का मूड नहीं है बदरु कसाई—।"

"तो फिर...जनाब—?"

"किसी इन्सान का गोश्त खाने की तबियत हो रही है...।"

"ज...जी...?" बदरु कसाई की आंखें फैलने लगीं।

"यूं क्या घूर रहा है तू हमें? कोई अनोखी बात तो नहीं बोल दी हमने भई! गोश्त तो गोश्त ही होता है—जानवर का हो...चाहे इन्सान का! हां, इन्सान का गोश्त ज्यादा लजीज होता है। कई मर्तबा चख चुके हैं हम तो। वो लड़की देखी थी तूने, जिसे हम कमरे में लेकर गये थे—?"

"जी, जनाब—।"

"कैसी थी—?"

"खूबसूरत थी! क्या वो बेहोश है—?"

"बेहोश...।" लघु हंसी हंसकर बोला चंगेज खां, "वजूद नहीं देखा था उसका? हमारे मुकाबले में थी ही क्या वो! जैसे जंगली भैंसे के मुकाबले में कोई बकरी की बच्ची। हम उस पर कहर बनकर टूटे तो...घबराकर उसकी रूह जिस्म छोड़कर भाग खड़ी हुई। मन नहीं भरा तो...उसकी लाश के साथ ही मुंह काला करना पड़ा! बहुत ही नाजुक थी वो...खरगोशनी के जैसी! उसका गोश्त...बहुत ही गुदाज...मखमली...मक्खन जैसा मुलायम होगा! अपना छुरा लेकर कमरे में जा...अभी जा! उसके बाल...उसकी खाल...सब साफ करके ला और उसके जिस्म को इस बकरे की जगह बान्धकर सेंक दे। उसे चटपटी और लजीज बनाकर हमारे सामने परोस! खाने में जायका आ गया तो खुश होकर तुझे इनाम देंगे। जा...देर ना कर...भूख लगने लगी है। देखते हैं कि इन हिन्दुस्तानी कश्मीरियों का गोश्त खाने में कितना लजीज होता है—!"

❑❑❑
❑❑❑

होश में आने पर विलियम बुरी तरह तड़प और कराह रहा था।

पहले के जैसा दिखलाई नहीं पड़ रहा था वो—जिस्म की त्वचा झुलसकर स्याह व भद्दी हो गई थी। कई छोटे-बड़े फफोले उभर आये थे—कुछ बेर के, कुछ क्रिकेट बॉल के तो कुछ खरबूजे के साइज के फफोले थे।

"होश आ गया तुझे अन्धे फिरंगी...।" शहजादी होंठों को

उसके कान के करीब ले जाकर बोली, "होश में आने में काफी वक्त लिया तूने। खैर...इस दरमियान मैंने एक बोतल व्हिस्की पेट में आमलेट के साथ उतार ली। अब खाने के साथ शराब और सिगरेट का कोटा खत्म हो चुका है—इसलिये अब मैं यहां से निकल जाना चाहती हूं...।"

"हां—टुम चली जाओ...बहुट मेहरबानी...आह...होगी... लेकिन जाने से पहले मुझ पर एक अहसान करटी जाओ...मुझे कटल कर दो...जान से मार डो मुझे...मैं अब जिन्डा नहीं रहना चाहटा...आह...।"

"नहीं...तुझे अपने हाथों से नहीं मारूंगी मैं। तुझे यूं ही छोड़ जाऊंगी। मरेगा तू...अपनी मौत मरेगा। तड़प-तड़पकर, सिसक-सिसककर...एड़ियां रगड़-रगड़कर दम तोड़ेगा। लेकिन अभी मेरा दिल नहीं भरा—कतई नहीं भरा है। तेरे साथ आखिरी खेल खेलना चाहती हूं मैं—लेकिन वो खेल हो क्या? हां—ये ठीक रहेगा। इस खेल में बहुत मजा आयेगा...।"

"क...कौन-सा खेल खेलना चाहटी हो टुम...आह...।"

"मेरा मन तेरे इन फफोलो को फोड़ने का कर रहा है। मैं इनमें उंगली के नाखून को गड़ाऊंगी तो...फूट जायेंगे और इनमें भरे पानी की पिचकारी-सी छूटेगी...।"

"न—नहीं...।"

"तेरे नहीं बोलने से क्या होता है? मेरा मूड बन गया है तो ये काम तो करूंगी ही...।"

और फिर शहजादी ने विलियम के पेट पर उभरे गुब्बारे के साइज के फफोले पर तर्जनी उंगली फिराई, फिर उसके बीचों-बीच नाखून, फिर पूरी उंगली ही पेवस्त कर दी।

फच...की आवाज के साथ फफोला फूटा और उसमें भरा तरल थोड़ा-सा उछलकर इधर-उधर बिखर गया।

मारे पीड़ा के विलियम कराहा तो शहजादी को मजा आ गया और वो बाकी के छोटे-बड़े फफोले फोड़ने लगी।

विलियम कराहने लगा तो शहजादी हंसने लगी।

फिर जो शहजादी ने किया, वो इतना हौलनाक और वीभत्स था कि बड़े-से-बड़े कलेजे वाला भी देखकर सिहर उठता—उंगलियों के बड़े नाखूनों से वो विलियम के समूचे जिस्म की झुलसी हुई खाल को नोच-नोचकर, उधेड़-उधेड़कर नीचे फर्श पर गिराने लगी—मानो विलियम को नहीं, किसी उबले हुये आलू को छील रही हो।

विलियम की कराहटों व चीखों-पुकार को नजरअन्दाज करके

शहजादी ने उसको पूरा-का-पूरा छीलकर रख दिया और फिर किचन से नमक व मिर्च ले आई।

खाल विहीन विलियम पर उसने एक किलो नमक तथा आधा किलो पिसी हुई मिर्च बुरक दी और उसकी तड़प का मजा लेते हुये बोली—"अब मेरा इन्तकाम पूरा हुआ। अब मैं तुझे इस हालत में छोड़कर जा रही हूं। तड़पते हुये अपनी मौत का इन्तजार कर...दो-चार घन्टे में आ ही जायेगी। वैसे नमक और मिर्च के साथ थोड़ी व्हिस्की हो तो...मजा दूना हो जाता है। एक बोतल में थोड़ी व्हिस्की बची है—उसके छींटें तुझ पर मार देती हूं...।"

बोतल में बची व्हिस्की को चुल्लू में लेकर विलियम के खाल विहीन, लेकिन नमक-मिर्च छिड़के जिस्म पर छींटें मारती चली गई वो।

विलियम की पीड़ा-भरी चीखें उसके बुलन्द ठहाकों के तले दबी जा रही थीं।

फिर फ्लैट के मेन गेट को बाहर से लॉक्ड करके वो वहां से चल दी।

□□□
□□□

तब रात्रि के आठ बज रहे थे और ठण्ड काफी बढ़ चुकी थी।

ठण्ड ने शहजादी के नशे को हिरण कर दिया और उसके जख्म ताजा होकर सुबकने लगे।

विलियम ने नोज प्लायर से उसके हाथों व पैरों के सभी नाखून उखाड़ दिये थे और पैरों की उंगलियों के बीच व्हिस्की से भीगे फाहे फंसाकर उनमें आग लगा दी थी—

व्हिस्की का प्रभाव समाप्त होते ही जख्म परेशान करने लगे।

वह कराहते और लंगड़ाते हुये धीरे-धीरे आगे बढ़ तो रही थी लेकिन हिम्मत जवाब दिये जा रही थी।

वो ठिठकी और टैक्सी की खोज में नजरों को इधर-उधर थिरकाने लगी।

कुछ टैक्सियां उसके आगे से गुजरी भी लेकिन उनमें सवारियां होने के कारण ड्राइवरों ने रोका नहीं।

बहुत देर हो जाने पर सफेद रंग की बड़े साइज की एक कार उसके सामने रुकी और ड्राइविंग सीट पर बैठे युवक ने खिड़की से बाहर सिर निकालकर टूटी-फूटी हिन्दी में कहा—"टुम्हें कहीं जाना हो टो बोलो। टुम जख्मी भी डिखलाई पड़ रही हो और परेशान भी।

लगटा हाय कि टुम्हें किसी ने सटाया है। क्या पुलिस स्टेशन जाना चाहटी हो–?"

"नहीं–पुलिस स्टेशन नहीं। मुझे विक्टोरिया मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल में जाना है–लेकिन कोई टैक्सी नहीं मिल पा रही है...।"

"विक्टोरिया मेडिकल कॉलेज? उठर ही टो मेरा घर हाय...सेन्ट जोनसन स्ट्रीट में। मेरे डोनों डोस्ट रोनी और ज्वैल भी जोनसन स्ट्रीट में ही रहटे हाय...जो पीछे की सीट पर बैठा हाय।"

पीछे की सीट पर बैठे बीस-बाईस वर्षीय दो युवकों ने सिरों को जुम्बिश देकर शहजादी का अभिवादन किया और फिर बोतल मुंह से लगाकर बीयर पीने लगे।

"मेरा नाम टोनी हाय...मैं टुम्हें टुम्हारे हॉस्टल पर ड्रॉप कर डूंगा...बैठो। लेकिन अगली वाली सीट फुल हाय। घर का जरूरी सामान खरीडकर लाया हूं। टुम्हें पीछे की सीट पर रोनी और ज्वैल के साठ ही बैठना होगा। ज्याडा डूर का रास्ता नहीं हाय...टुम्हें कोई टकलीफ नहीं होगी।"

"थैंक्यू...।" बोलने पर शहजादी दरवाजा खोलकर कार में प्रविष्ट हुई तो दोनों युवकों ने पीछे की तरफ खिसककर उसे बैठने के लिये स्थान प्रदान किया।

टोनी ने कार को दौड़ा दिया–और शहजादी से पूछा–

"टुमने अपना परिचय नहीं डिया मिस?"

"शहजादी...मेरा नाम शहजादी खां...।"

"इन्डियन हो–?"

"नहीं। पाकिस्तानी–।"

पाकिस्तानी शब्द पर तीनों के ही हाव-भाव परिवर्तित हुये।

"शहजादी जख्मी हाय रोनी...। इसे बीयर पीने को डो...टबियट सुढर जायेगी–।"

ज्वैल ने सीट के नीचे से बीयर की बोतल निकाली और दांतों से उसका ढक्कन खोलकर बोतल शहजादी को दी।

शहजादी को तकलीफ दूर करने के लिये 'डोज' की सख्त आवश्यकता थी, सो वह बोतल का मुंह होंठों से सटाकर बीयर की घूंट भरने लगी, लेकिन...ये क्या?

उसका दिमाग घूमने लगा।

बीयर में इतना नशा तो नहीं होता।

तो फिर?

क्या बीयर में कुछ गड़बड़ की गई थी?

"ऐ...गाड़ी रोको...स्टॉप दि कार...।" वह हथेलियों से सिर

को थामकर तथा झूमते हुये बोली, "मुझे गलत बीयर पिला दी है...नशा हो रहा है...लगता है कि तुम लोगों के इरादे ठीक नहीं हैं...कार रोको...वरना मैं शोर मचाऊंगी...।"

"टेरे शोर मचाने से क्या होटा हाय...?" ड्राइविंग कर रहा टोनी हंसकर बोला, "गाड़ी के शीशे बन्ड हाय...टेरी आवाज बाहर नहीं जाने वाली जानेमन। हम टीनों मौज-मस्टी के वास्टे ही निकले ठे। किसी कॉलगर्ल को हायर करने की सोच रहे ठे। लेकिन टू दिखलाई पड़ गई। टेरी खूबसूरटी पर टीनों ही फिडा हो गये ठे–टभी टो टुझे लिफ्ट डी और वो बीयर पिलाई–जिसमें एक्स्ट्रा एल्कोहल मिलाया हुआ ठा। हाठ और पैर पटकने की कोई जरूरट नहीं हाय...कोई फायडा नहीं होगा। हम तीनों चलटी कार में ही टेरे साथ मौज-मस्टी करेंगे और फिर टुझे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल के गेट पर ड्रॉप करके चले जायेंगे। ज्वैल...रोनी...शुरू हो जाओ...।"

रोनी तथा ज्वैल शुरू हो गये।

शहजादी ने विरोध किया, लेकिन बीयर में मिली एल्कोहल के प्रभाव के कारण उसका दिमाग उसका साथ नहीं दे रहा था और जिस्म की ताकत भी ना जाने कहां काफूर हो गई थी।

चलती कार के भीतर ही ज्वैल और रोनी ने शहजादी के साथ रेप किया–फिर ज्वैल अगली सीट पर ड्राइविंग करने चला गया और टोनी पीछे आकर शहजादी के साथ हवस का खेल खेलने लगा।

एक बार नहीं, कई-कई बार।

सुबह पांच बजे के करीब कार मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल के मेन गेट के सामने रुकी।

दरवाजा खुला और शहजादी को बाहर फेंका गया।

बेहोशी की दशा में थी शहजादी।

कार 'ये जा...वो जा...' हो गई।

□□□

□□□

चार हथियारबन्द दढ़ियल युवकों से घिरा हुआ था वो–जबकि दो दढ़ियल युवकों ने उसके हाथ पकड़े हुये थे और उसे बतला रहे थे कि दायें मुड़ना है कि बायें। ऊपर की तरफ चलना है कि नीचे की तरफ।

चूंकि उसकी आंखों पर काली पट्टी बन्धी हुई थी, इसलिये उसे अन्धे की तरह ही चलना पड़ रहा था और ऐसा करते उसे तीन घन्टे से ज्यादा हो चुके थे।

आंखों पर पट्टी बन्धी होने के बावजूद भी वो इतना अनुमान

तो लगा पा रहा था कि वो घने जंगल से गुजर रहा था और जंगल भी किसी पहाड़ी इलाके में स्थित था।

एक पुराने किले में पहुंचकर सफर समाप्त हुआ और उसकी आंखों से पट्टी खोल दी गई।

कई बार आंखें मिचमिचाने पर वो देखने के योग्य हुआ।

सुबह हो चुकी थी—सूर्य देवता ने उदय होने पर सुनहरी किरणों का जाल धरती पर बिछाना आरम्भ कर दिया था।

विशालकाय किले के चप्पे-चप्पे पर हथियारबन्द लोग तैनात थे, जो कि शक्ल-सूरत तथा हाव-भाव से ही काफी खतरनाक मालूम पड़ रहे थे।

"आगे बढ़ें, जनाब...?" एक ए०के० सैंतालीसधारी युवक अदब के साथ बोला, "खां साहब आपका इन्तजार कर रहे होंगे। आपको यहां तक आंखों पर पट्टी बांधकर लाना हमारी मजबूरी थी जनाब—खां साहब का ऐसा ही हुक्म था—।"

"किधर हैं चंगेज खां—।"

"चलिये। इस वक्त वो अपने ख्वाबगाह में आराम फरमा रहे होंगे। उनका हुक्म था कि आपको सीधे उनके पास पहुंचा दिया जाये—।"

वह उन छह युवकों के साथ आगे बढ़ा।

एक गलियारा पार करके वो लोग एक आंगन में पहुंचे, जहां पानी की हौज में चार संगमरमर के हाथी एक-दूसरे की तरफ मुंह किये खड़े थे, और अपनी सूंडों से पानी की बौछार छोड़ रहे थे।

वहीं कुछ सीढ़ियां चढ़ने पर एक शानदार नक्काशी वाला चन्दन की लकड़ी का दरवाजा था, जो कि बन्द था।

"वो ही है खां साहब की ख्वाबगाह, जनाब। हम लोग भीतर नहीं जा सकेंगे। आप तशरीफ ले जाइये...।"

सात सीढ़ियां चढ़ने पर उसने दरवाजे को ठेला तो दोनों पल्लों के मध्य दूरी बढ़ती चली गई।

"क्या मैं भीतर आ सकता हूं खां साहब—?"

"तशरीफ लाओ मियां। हम तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे—।"

वो भीतर प्रविष्ट हुआ।

बहुत ही शानदार शयन-कक्ष था वो—हल्के पीले रंग के संगमरमर से निर्मित!

छत पर ही नहीं, दीवारों पर भी बड़ी ही कुशल कारीगरी के साथ महिलाओं, घोड़ों, हिरणों, राजहंस, कमल के फूलों, अंगूर के

गुच्छों इत्यादि के ऐसे नजारे पेश किये गये थे कि मानो वो सचमुच के ही हों।

दीवारों पर चार बड़े आकार की ऑयल पेन्टिंग्स भी टंगी थीं, जिनमें पहाड़ों, नदियों, झीलों व वृक्षों के खूबसूरत तथा मनमोहक चित्र उकेरे गये थे।

शानदार सोफा सैट के करीब रखी बड़ी मेज पर सोने-चांदी के नक्काशीदार बर्तन रखे हुये थे और सोने के थाल में ताजा फल भी रखे गये थे।

फर्श पर बिछा कालीन भी खूबसूरत था।

गोलाकार बेड पर पहाड़-सा लेटा चंगेज खां उठ बैठा और गोल तकिये से पीठ सटाकर बोला—"तशरीफ रखें मियां—।"

"अस्सलामु अलैकुम, खां साहब—।"

"व अलैकुमस्सलामु...तशरीफ रखो मियां—।"

वह सोफे पर बैठ गया।

चंगेज खां ने पैर बेड से नीचे लटकाये और मेज की साइड में लगे एक स्विच को दबाया तो बाहर कोई चिड़िया-सी चहचहाई।

मेज पर रखे लकड़ी के बॉक्स से हवाना का एक सिगार निकालकर लाइटर से सुलगाया चंगेज खां ने और फिर बॉक्स व लाइटर उसकी तरफ बढ़ाकर पूछा, "रास्ते में कोई तकलीफ या दिक्कत तो नहीं हुई मियां बाबर—?"

"बाबर...?" वह चौंका।

"आई०एस०आई० के हिन्दुस्तानी मुखिया का नया ताअरुफ यानि इन्ट्रोडक्शन यही होगा। आई०एस०आई० से वाबस्ता तमाम लोग तुम्हें बाबर के नाम से ही जानेंगे—पहचानेंगे, मियां। क्यों...बाबर नाम पसन्द नहीं है तुम्हें—?"

"पसन्द है...बेहद पसन्द है खां साहब—।"

"तो फिर ठीक है—आज से...बल्कि अभी से तुम बाबर हुये। अपना पुराना नाम भूल जाओ। अब तुम बाबर...सिर्फ बाबर हो। आई०एस०आई० के हिन्दुस्तानी मुखिया का ओहदा मुबारक हो बाबर—।"

"शुक्रिया...शुक्रिया, जनाब! मैं तहे दिल से आपका शुक्र गुजार हूं कि आपने मुझे इस काबिल समझा! पूरी कोशिश करूंगा कि आपकी कसौटी पर खरा साबित हो सकूं...।"

"इन्शा अल्लाह...! हमें तुमसे ऐसी ही उम्मीद है बाबर। बहुत सोच-समझकर तुम्हें चुना है मियां। तुममें काबिलियत है। तुम्हारे दिलो-दिमाग में वो आग है, जिसकी हमें, आई०एस०आई० और

हमारे हुक्मरानों को सख्त जरूरत थी। केशव पण्डित को तो जानते हो तुम–?"

"बहुत अच्छी तरह से...।"

"रुस्तम-शोहराब का किस्सा भी सुना होगा तुमने–?"

"हां–सुना है। लेकिन उस किस्से का जिक्र क्यों खां साहब–?"

"रुस्तम-शोहराब एक-दूसरे को जानते नहीं थे। क्योंकि शोहराब अपने जन्म के वक्त ही अपने बाप रुस्तम से जुदा हो गया था। दोनों अलग-अलग मुल्कों की सेना में भर्ती हुये और एक-दूसरे के खिलाफ लड़े। क्योंकि खून के रिश्ते से भी बढ़कर वो रिश्ता होता है, जो अपने आका, अपने मेहरबान, अपनी कौम और मजहब के साथ होता है। तुम्हें जिहाद लड़नी है और सभी बाकी रिश्तों को ताक पर रखना पड़ेगा। हमारा इशारा केशव पण्डित की जानिब है...। उसके साथ तो तुम्हारा खून का रिश्ता भी नहीं है...।"

"मैं आपकी बात समझ रहा हूं खां साहब–।"

"सिर्फ समझने से ही बात ना बनेगी बाबर–।"

"तो फिर...?"

"तुम्हें केशव पण्डित को अपने जानी दुश्मन की फेहरिस्त में डालना होगा...अभी...फौरन से पेश्तर। क्या तुम ऐसा कर सकते हो बाबर? केशव पण्डित को अपना जानी दुश्मन मान सकोगे तुम–?"

□□□
□□□

नौकर की पोशाक वाला भीतर आया तो चंगेज खां रौबीले लहजे में बोला, "हमारे खास मेहमान पधारे हैं बशीर। इनकी खातिरदारी नहीं करनी है क्या? बढ़िया नाश्ते का बन्दोबस्त करो...फौरन से पेश्तर–।"

नौकर सिर को झुकाकर बाहर चला गया।

थाली से सेब उठाकर चंगेज खां ने हवा में उछालकर कैच किया, वापिस थाली में रखा, फिर सामने बैठे कथित बाबर के चेहरे पर नजरें गड़ाकर बोला, "हम तुम्हारा जवाब सुनने को बेताब हैं बाबर मियां। क्या तुम केशव पण्डित को अपना जानी दुश्मन मानने को तैयार हो–?"

"तैयार क्या...वो मेरा जानी दुश्मन ही है खां साहब...।" वह कठोर मुख-मुद्रा के साथ तपते रेगिस्तान की रेत-सी भभकी हुई और

खुरदुरी-सी आवाज में बोला, "मेरे मिशन के रास्ते में जो भी कोई भी रोड़ा बनने की कोशिश करेगा...वो मेरा जानी दुश्मन होगा...।"

"और केशव पण्डित तो रोड़े अटकायेगा ही–उसकी बहुत पुरानी आदत है ये। वो मिलिट्री में नहीं, पुलिस में नहीं है–किसी सरकारी नौकरी में नहीं है। सरकार में शामिल नहीं है–कोई मिनिस्टर भी नहीं है वो। लेकिन वो ये समझता है कि सारे मुल्क की जिम्मेदारी उसके ही कन्धों पर है–हिन्दुस्तान को वो ही चला रहा है। हिन्दुस्तान जरा-सी मुश्किल में भी पड़ता है तो वो सिर पर कफन लपेटकर और जान हथेली पर लेकर मैदान-ए-जंग में उतर पड़ता है। कोई बड़ी मुसीबत या दिक्कत खड़ी होने पर इस मुल्क की सरकार, हुक्मरान और लोग भी केशव पण्डित की जानिब उम्मीद की नजरों से देखने लगते हैं। हमारी राह में हर बार वो कम्बख्त ही रोड़ा बना है। हमें तो उसने इतने जख्म दिये हैं कि वो नासूर बनकर हमें खून के आंसू रुला रहे हैं। हिन्दुस्तान के खिलाफ कुछ भी करने की सोचते हैं तो केशव पण्डित के बारे में पहले सोचना पड़ता है कि उससे कैसे निबटा जाये? लेकिन जो सोचा वही बेकार ही गया–केशव पण्डित से हर मर्तबा शिकस्त ही खाने को मिली। इसका खामियाजा हमारे साथ-साथ हिन्दुस्तानी मुसलमानों को भी भुगतना पड़ा है–।"

"वो कैसे खां साहब–?"

"पाकिस्तान के दिमाग में कोई कीड़ा नहीं रेंगता है कि हिन्दुस्तान के खिलाफ कार्रवाई करके अपना नुकसान करता रहता है। हमारा इकलौता मकसद ये है कि यहां के सभी मुसलमानों को उनका वाजिब हक मिले। यहां के लोग तुम लोगों के साथ इन्साफ नहीं कर रहे हैं। सभी तुम्हें बोझ समझते हैं, रात-दिन तुम्हारे नेस्तनाबूद हो जाने की दुआ करते हैं। कोई सियासी पार्टी, कोई हुक्मरान, कोई लीडर तुम्हारा हमदर्द या खैरख्वाह नहीं है। कुछ लीडर अगर मुसलमानों का फेवर लेते हैं तो वो महज दिखावा ही करते हैं। क्योंकि उनकी सियासत मुसलमानों की वोटों के दम पर ही तो चलती है। मुसलमान उन्हें अपना समझकर इलेक्शन में एक तरफा उन्हीं को वोट देते हैं। सियासत करके वो करोड़ों कमाते हैं और लाखों की भीख डालकर मुसलमानों को बेवकूफ बनाते रहते हैं। तुम लोगों ने दिमाग पर जोर डालकर कभी भी नहीं सोचा कि हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा गरीब, अनपढ़ और बेरोजगार मुसलमान ही क्यों हैं? कोई भी पार्टी हुकूमत में क्यों ना रही हो–उसने मुसलमानों के वास्ते कुछ नहीं किया–ना ही आगे करेगी। पाकिस्तान को कुछ करने नहीं दिया गया। उल्टी-सीधी और झूठी तोहमतें लगाकर बदनाम किया गया।

हिन्दुस्तान के इस मिशन में केशव पण्डित भी एक बड़ा सिपाही है। उसने जितनी बार भी आई०एस०आई० और पाकिस्तान पर हमले किये—हिन्दुस्तानी मुसलमानों को भी नुकसान पहुंचाया। अगर वो कभी तुम जैसे किसी मुसलमान की मदद कर देता है तो सिर्फ हीरो बनने के वास्ते...वाह-वाही लूटने के वास्ते ही। क्या ख्याल है तुम्हारा बाबर—?"

"मैं आपकी बात से एकदम सहमत हूं खां साहब! केशव पण्डित आने वाले वक्त में मेरा भी...मेरा मतलब कि बाबर का दुश्मन बनने वाला है। लेकिन मैं पौधे का पेड़ बनने का इन्तजार कतई नहीं करूंगा। पेड़ को काटने के वास्ते बड़े आरे की जरूरत पड़ती है—जबकि पौधे को जूते से ही कुचलकर खत्म किया जा सकता है। मेरा सबसे पहला मकसद केशव पण्डित का खात्मा करना ही होगा—ताकि बाद में वो मेरे वास्ते मुसीबतें खड़ी ना कर सके। आप भी तो ऐसा ही चाहते होंगे कि केशव पण्डित का खात्मा हो और जल्द-से-जल्द हो—?"

"केशव पण्डित हमारा ही नहीं...बल्कि पूरे पाकिस्तान का ही जानी दुश्मन है बाबर। हमारे बहुत से मिशन नाकाम कर चुका है वो। हमारी...यहां तक कि पाकिस्तान की भी तौहीन कर चुका है। लेकिन हम ये नहीं चाहते कि अभी उसका खात्मा हो—।"

"ये...ये आप क्या कह रहे हैं? आप केशव पण्डित का खात्मा नहीं चाहते—?"

"खात्मा तो चाहते हैं बाबर, लेकिन इतनी जल्दी नहीं चाहते। जानते हो क्यों—?"

"क्यों...खां साहब—?"

"क्योंकि केशव पण्डित को जीते-जी मार डालने का ख्वाब हमारे दिल में है बाबर...।"

"मैं कुछ समझा नहीं...खां साहब—!"

बेड से उठकर सुर्ख रंग के खूबसूरत कालीन पर चहलकदमी करने लगा चंगेज खां और सिगार का धुआं मुंह व नथुनों के रास्ते कमरे में फैलाने लगा। फिर वो ठिठका और कथित बाबर की तरफ पलटकर बोला—

"केशव पण्डित कोई करिश्माई किरदार नहीं है—उसे हमेशा के वास्ते जिन्दा रहने का कोई वरदान नहीं मिला हुआ है। कोशिश की जाये तो वो मर सकता है...उसका कत्ल किया जा सकता है। उसे जल्द-से-जल्द हलाक किया भी जायेगा। लेकिन उसे यूं ही मार देने से हमारे इन्तकाम की आग ठण्डी ना होगी। उसको मौत का

निवाला बनाने से पहले हम उसको तड़पते हुये देखने के ख्वाहिशमन्द हैं। वो तड़प उसके जिस्म के जख्मों की नहीं, उसके दिमाग का चैन-ओ-सकून छिन जाने की वजह से ही होगी। तुम हिन्दुस्तान में जबरदस्त गड़बड़ी करोगे। चारों तरफ गोलीबारी होगी, बम फटेंगे। चारों तरफ तबाही का मन्जर होगा। हिन्दुस्तानियों के दिलो-दिमाग में खौफ भरा होगा। हिन्दुस्तान की तरक्की रुक जायेगी। चारों तरफ अफरा-तफरी का माहौल होगा। कोई तड़फे...चाहे ना तड़फे...लेकिन वो साला केशव पण्डित जरूर तड़पेगा। उसके सीने पर सांप लोटेंगे। जब वो पूरे हाथ-पैर फेंकने पर भी कुछ नहीं कर पायेगा तो...उसकी हालत देखने के काबिल होगी। बहुत ही बेबस और लाचार होगा वो। हम चाहते हैं कि पहले वो हिन्दुस्तान की तबाही देखे—उसके बाद वो बुरी मौत मरे! क्या ऐसा कर पाओगे तुम बाबर—?"

"इन्शा अल्लाह! मैं ऐसा ही करूंगा खां साहब—।"

"तबियत खुश कर दी तुम्हारे जवाब ने! कमर कसकर मैदान में कूद पड़ो—वो भी पूरी तैयारियों के साथ। तुम्हें किसी भी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी जायेगी। दौलत के साथ-साथ जो भी चीज मांगोगे...मुहैया करा दी जायेगी। पूरे मुल्क में आई०एस०आई० को मजबूत करो। ज्यादा-से-ज्यादा लोगों की भर्ती करो। उन्हें पहले जंग लड़ने के काबिल बनाओ और फिर उनसे भरपूर काम लो। कैसे करना है...ये तुम जानो। तुम प्लान बनाओ और उस पर अमल करो! लेकिन तीन महीने के भीतर हमें बढ़िया रिजल्ट चाहिये। हम अपने सिर पर कामयाबी का सेहरा बांधकर ही अपने वतन को वापिस लौटना चाहेंगे।"

"आपकी ये ख्वाहिश जरूर पूरी होगी खां साहब।" पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला बाबर, "विदाई के रूप में आपको बहुत ही नायाब तोहफा पेश करूंगा। वो तोहफा होगा...केशव पण्डित की लाश...।"

❑❑❑
❑❑❑

"अनुष्का ट्वायज की मालकिन अनुष्का ने तुम्हारे खिलाफ पुलिस में कम्पलेन्ट की है बालू भाई।"

"क्या उसने अपुन के खिलाफ पुलिस स्टेशन जाके एफ०आई०आर० दर्ज कराई है डी०सी०पी०?"

"नहीं। घण्टाभर पहले वो अपने पालक पिता मिर्जा बेग के साथ कमिश्नर साहब से मिलने आई थी और तुम्हारे खिलाफ शिकायत की—।"

"क्या...क्या शिकायत की है उसने डी०सी०पी०?"

"बोली कि तुमने उससे हर महीने दस लाख रुपये की रंगदारी मांगी है और रंगदारी ना देने पर धमकी दी है कि उसे किडनेप करके उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया जायेगा और बलात्कार की ब्लू फिल्म बनाकर देशभर में बांटी जायेगी—ये भी धमकी दी कि उसे किसी कोठे पर बेचकर धन्धा कराया जायेगा—क्या तुमने वाकई में अनुष्का को ऐसी धमकियां दी थीं बालू भाई—?"

"हां, दी—बरोबर दी डी०सी०पी०। आज की तारीख में मुम्बई अण्डरवर्ल्ड का सबसे बड़ा भाई कौन...अपुन ना? अण्डरवर्ल्ड में टिकने के वास्ते...लम्बी रेस का घोड़ा बनने के वास्ते खर्चा करना पड़ता है कि नेई? मिनिस्टर्स से लेकर हवलदार तक की जेब गर्म करनी पड़ती है कि नेई? इतना खर्चा होयेगा तो उसकी उगाही बी तो करनी पड़ेगी कि नेई? पैइसा पेड़ पे थोड़े इच लग रेला है बाप! बड़े लोगों से लेना इच पड़ता है। खोखा कमाने वाले से पेटी लेना तो बनता इच है। बदले में उनकू प्रोटेक्शन बी देता है अपुन। हफ्ता या रंगदारी देने वाला अपुन का कस्टमर बन जायेगा तो अपुन उसकी अक्खा जिम्मेदारी बी तो उठाता है। कोई माई का लाल अपुन के कस्टमर को आंख उठाके बी देखने की बी हिम्मत नेई करने कू सकता...क्या?"

"वो सब तो ठीक है बालू भाई...।" जॉनी वॉकर की बोतल से अपने गिलास में वाइन डालते हुये बोला अधेड़ व अधगंजा डी०सी०पी० विलास अठावले, "लेकिन हमें भी तो सरकार की नौकरी बजानी पड़ती है। अनुष्का और मिर्जा बेग के सामने ही कमिश्नर ने बुला लिया—सख्त लहजे में हुक्म दिया कि इस मामले की छानबीन करके रिपोर्ट पेश करूं। तुम्हें अरेस्ट करके तुम्हारे खिलाफ सबूत इकट्ठे करूं और चार्जशीट के साथ कोर्ट में पेश करूं! अच्छा हुआ कि कमिश्नर ने ये काम मुझे सौंपा। अपनी तो पहले से ही अण्डरस्टैण्डिंग है—सैटिंग चल रही है। लेकिन कमिश्नर को रिपोर्ट तो देनी ही पड़ेगी। तुम ही बोलो बालू भाई कि क्या रिपोर्ट बनाऊं—?"

उस चालीस वर्षीय गोरे-चिट्टे, हट्टे-कट्टे युवक ने नीले रंग के सूट के साथ सफेद शर्ट पर लाल, नीले व सफेद रंग की नेक टाई बांधी हुई थी। कोट की जेब पर डायमंड वाला सोने का ब्रोच लगाया हुआ था और नेकटाई पर भी डायमंड-पिन लगाया हुआ था।

पैरों में सफेद जुर्राबों के ऊपर लिबर्टी के काले लैदर वाले चमकते हुये जूते पहने थे।

बांयी कलाई पर जहां रॉडो की रिस्टवॉच थी तो दांयी कलाई

पर नौ रत्नों से जड़ित सोने का ब्रेसलेट धारण किया हुआ था—इसी के साथ हाथों की आठों उंगलियों में बेशकीमती पत्थरों वाली अंगूठियां शोभायमान थी।

कुल मिलाकर वो कोई बड़ा बिजनेसमैन मालूम पड़ता था—ना कि अन्डरवर्ल्ड से जुड़ा एक खतरनाक गुन्डा। बिल्लौरी आंखों से विलास अठावले को देखते हुये बोला वह, "अपुन तुम्हेरे कू क्या बतलाने कू सकता है डी०सी०पी०? पैले बी तुम अपुन का बचाव कर चुका है कि नेई? बोलने का कि तुम्हेरी जांच में अपुन के खिलाफ कुछ बी गलत नेई निकला है। अपुन एक छोटा-सा बिजनेसमैन है और टॉयज की फैक्ट्री चला रेला है...क्या? अपुन का अण्डरवर्ल्ड या क्राइम से कुछ लेना-देना नेई है। अपुन ने अनुष्का कू उसकी फैक्ट्री के बाहर धमकी दियेला था। जानता था कि उसके ऑफिस में सी०सी०टी०वी० वाले कैमरे लगेले हैं—अपुन की फोटू छप जायेगी। उसके पास अपुन के खिलाफ कोई सबूत है इच नेई। रिपोर्ट में लिख देने का कि अपुन दोनों की टॉयज फैक्ट्री हैं। कम्पीटीशन चलता रहता है। अपुन ने अनुष्का के कारीगर तोड़ लिये थे तो किलसकर उसने अपुन के खिलाफ झूठी रिपोर्ट कर दी है...क्या?"

"फिलहाल तो मैं मामले को सम्भाल लूंगा बालू भाई...।" बालू की डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर बोला डी०सी०पी० विलास अठावले—"लेकिन तुम मामले को ठण्डे बस्ते में डालने वाले नहीं हो। तुम अनुष्का को बख्शने वाले तो नहीं हो। तुम उससे वसूली करके ही मानोगे...क्यों—?"

"बरोबर बोले तुम डी०सी०पी०।" मुस्कुराकर बोला बालू भाई, "अपुन की जिसपे नजर गड़ जाती है—उसकू भगवान बी नेई बचाने कू सकता! अनुष्का ने अपुन की पुल्लिस में कम्पलेन्ट की है तो इसका खामियाजा बी उसकू भुगतना इच पड़ेगा...क्या? अब उसकू बीस पेटी महीने में अपुन कू देनी इच पड़ेगी...।"

"लेकिन वो फिर पुलिस की शरण में जायेगी—कमिश्नर साहब से मिलेगी। अगर उसे लगा कि पुलिस कुछ नहीं कर रही है तो वो अदालत में जा सकती है या मीडिया वालों को भी बुलवा सकती है। तब तुम तो परेशानी में पड़ोगे ही पड़ोगे...मेरी नौकरी की भी वाट लग जायेगी।"

"नेई लगेगी डी०सी०पी०।" होंठों पर कुत्सित किस्म की मुस्कान घसीटकर बोला बालू—"बड़े-बड़ों का इलाज कर दिया अपुन ने—फिर ये साली अनुष्का भला क्या चीज है? उसका ऐइसा इलाज बान्धेगा अपुन कि...दिन में इच तारे दिखलाई पड़ेंगे उसकू। उसके

बाप कू आज इच अपुन के आदमी उठाके लायेंगे तो वो अपुन कू साल भर की रंगदारी देने कू आयेगी। सालभर की रंगदारी बोले तो...बीस पेटी गुणा बारह महीना कितने हुये डी०सी०पी०?"

"दो करोड़ चालीस लाख—।"

"बरोबर बोला तुम डी०सी०पी०! दो खोखा और चालीस पेटी। इतनी इच रकम लेके आयेगी वो और अपनी चोंच बी बन्द रखेगी...अपुन की फुल गारन्टी है। उसकू हमेशा के वास्ते भीगी बिल्ली बना डालेगा अपुन...क्या—? देखने का डी०सी०पी० अपुन क्या करता है—!"

□□□

□□□

शानदार कोठी का बड़ा व शानदार हॉल रूम था वो, जिसमें उन्नीस से तीस वर्ष उम्र के युवक-युवतियां इकट्ठा थीं, जिनकी संख्या चालीस थी—इकतालीसवीं थी शहजादी।

वो उद्योगपति अली हसन की कोठी थी, जो कि मूल रूप से पाकिस्तानी था और अमेरिका में बड़े पैमाने पर टमाटर व मिर्च की चटनी का कारोबार करता था।

अली हसन की बेटी पाकीज़ा आई०एस०आई० की ओहदेदार थी और शहजादी के वास्ते कुछ भी करने को सहर्ष तैयार रहती थी। वह वाशिंगटन में आई०एस०आई० की कमाण्डर थी।

शहजादी के हुक्म पर उसने अपनी कोठी में आई०एस०आई० की आपातकालीन मीटिंग ऑर्गेनाइज की थी और इलाके के सभी ओहदेदारों को बुलाया था।

शहजादी बतला रही थी कि सी०आई०ए० के ऑफिसर विलियम ने अपने सीनियर मार्कोनी की हत्या करने पर उसको किडनेप किया था और उस पर क्या-क्या ज्यादतियां की थीं! और फिर उसे टोनी नामक युवक ने अपनी कार में लिफ्ट देने पर अपने दोस्तों ज्वैल व रोनी के साथ मिलकर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया, उसे बेहोशी की अवस्था में हॉस्टल के गेट पर फेंक दिया था—सब कुछ सविस्तार बतलाया उसने।

उसके सभी मातहत रोष व आक्रोश में आ गये।

सभी के चेहरे तमतमा उठे और सुर्ख हो चली आंखों से चिंगारियां-सी छूटने लगीं।

"बहुत ही बुरा हुआ आपके साथ मोहतरमा...।" मुट्ठियों को कसकर भींचे हुये आक्रोश भरे भाव में बोली पाकीजा, "सुनकर ही

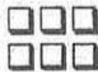
मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। उफ...कितनी तकलीफ बर्दाश्त की होगी आपने। मेरा खून खौल रहा है...।"

"हम जिस नेक मकसद से आई०एस०आई० से जुड़े हैं ना पाकीजा—उसमें ऐसी कुर्बानियां देनी ही पड़ती हैं। सभी को...खासतौर पर औरतों को ये कसम दिलवाई जाती है कि अगर उसे अपनी जान के साथ अस्मत भी दांव पर लगानी पड़े तो वो हिचकिचायेगी नहीं—बल्कि वो जरूरत पड़ने पर अपने जिस्म को इस्तेमाल भी करेगी। मैंने अपने खूबसूरत जिस्म का इस्तेमाल किया भी है—लेकिन इसका मतलब ये भी नहीं कि कोई हमारे साथ रेप कर दे और हम चुपचाप बर्दाश्त कर जायें। उस हरामी विलियम को मैंने सजा दी भी। ऐसी सजा कि...साले की रूह अभी भी खौफजदा होगी। लेकिन टोनी, रोनी और ज्वैल को सजा नहीं दे सकी मैं—क्योंकि कम्बख्तों ने बीयर में कोई ड्रग मिलाकर पिला दी थी मुझे और मैं होश में ना रही थी—अपने जिस्म...दिमाग पर मेरा कोई इख्तियार नहीं रहा था। लेकिन होश में आने पर मेरा खून खौलने लगा था—दिमाग में बारूद-सा फटने लगा था। उन तीनों कुत्तों के वास्ते ही मैंने ये मीटिंग कॉल की है। टोनी ने झूठ बोला था कि वो, रोनी और ज्वैल जोनसन स्ट्रीट के रहने वाले हैं। मैंने तस्दीक की तो पता चला कि तीनों वहां के नहीं रहने वाले हैं। लेकिन टोनी की कार का नम्बर इसी शहर का है तो जाहिर है कि तीनों वाशिंगटन के ही रहने वाले होने चाहिए। टोनी तो डेफिनेटली वाशिंगटन का ही रहने वाला है। हो सकता है कि तीनों के एड्रेस की तरह नाम भी गलत हों। तीनों के मन में बदनीयती थी—सो अपने नाम भी गलत बतलाये हों। तुम सब लोगों को उन तीनों की पूरी सरगर्मी के साथ तलाश करनी है और फौरन से पेश्तर उनका नाम-पता ढूंढ निकालना है। मैमोरी के दम पर मैंने तीनों के स्केचस् बनाये हैं—वो तुम्हें दिखलाती हूं—।"

शहजादी ने तीन रोल की हुई ड्राइंग शीट खोलकर मेज पर अलग-अलग रख दीं, जिन पर काली पेन्सिल से टोनी, रोनी व ज्वैल की मुखाकृतियां बनी हुई थीं।

"मुझे इन तीनों के बारे में पूरी जानकारियां चाहियें...।" शहजादी की आवाज मानो किसी बायलर से ही निकलकर आ रही थी, "ये कौन हैं, कहां रहते हैं और क्या करते हैं? फिर मैं बतलाऊंगी इन हरामजादों को कि...शहजादी से दुश्मनी मोल लेने का कितना बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ता है—!"

तब...उस घड़ी शहजादी का चेहरा ज्वालामुखी के मुहाने की मानिन्द ही दहका हुआ था।



डरी-सहमी सी अनुष्का काले रंग के रेक्सीन के बड़े बैग का हैन्डल पकड़े हुये हॉल में प्रविष्ट हुई।

बैग फुल भरा हुआ था और काफी वजनी भी मालूम पड़ रहा था—लेकिन बैग ट्रॉली वाला था, इसलिये अनुष्का को उसे खींचने में कोई खास दिक्कत नहीं हो रही थी।

ब्राउन कलर का सूट पहने हुये बालू लकड़ी व लोहे की जंजीरों से बने झूले पर बैठा हुआ था। कोट के भीतर उसने गुलाबी रंग की शर्ट पहनी थी, जिस पर रंग-बिरंगी टाई बांधी हुई थी।

सिर पर भी ब्राउन कलर का फैल्ट था और आंखों पर काला चश्मा चढ़ाया हुआ था, जिसका फ्रेम सोने का था।

पैरों में सफेद रंग की जुर्राबों के साथ काले चमड़े के चमचमाते हुये जूते थे।

झूले के दायें-बायें ब्लैक कमाण्डोज जैसी पोशाक वाले दो युवक अटेंशन की पोजीशन में खड़े थे, जिनके पास ए०के० छप्पन थी।

गुलाबी रंग की साड़ी वाली अनुष्का को ऊपर से नीचे तक घूरने पर मुस्कुराया बालू और व्यंगपूर्ण भाव से बोला, "वेलकम अनुष्का रानी...वेलकम! अपुन तुम्हेरे कू वार्निंग दियेला था कि अपुन के बीच में किसी कू बी नेई लाने का...खास करके पुल्लिस कू। पन तुम मानी इच नेई। पहोंची...सीधे पुल्लिस कमिश्नर के पास पहोंची। पन हुआ क्या? हुआ क्या कुछ? अपुन अण्डरवर्ल्ड का बहोत बड़ा खिलाड़ी है। अक्खा मुम्बई पे तो नेई...पन पिचहत्तर फीसदी मुम्बई पे तो राज कर इच रेला है...क्या? ऐसे इच गुन्डागर्दी थोड़े इच होती है। चपरासी से लेके मिनिस्टर तक...हवलदार से लेकर आई०जी० तक सैटिंग करनी पड़ती है। रोकड़ा खर्च करना पड़ता है...बल्कि पानी की माफिक इच पैइसा बहाना पड़ता है क्या? पन तूने स्यानपत्ती झाड़ी...कमिश्नर से मिलने पहोंच गयेली। क्या रिजल्ट निकला...बोल? दस पेटी महीने की देनी थी—दस पेटी बोले तो...दस लाख। तूने स्यानपत्ती दिखलाई तो अब बीस पेटी महीने में देगी। सालभर का टैक्स इक इच बार में देना पड़ रेला है कि नेई?"

"मैं पूरे दो करोड़ चालीस लाख ले आई हूं। रकम गिन सकते हो। मेरे पापाजी को मेरे हवाले कर दो तुम—।"

"कर देंगे—इतनी बी क्या जल्दी है...?" वह झूले से उठकर अनुष्का के पास पहुंचा और उसकी परिक्रमा करते हुये बोला, "पन इतनी बी क्या जल्दी है? रोकड़ा तो ले आई है—मगर सूद...सूद बोले तो ब्याज बी तो देना होयेंगा—।"

"ब्याज...?" वह बालू की तरफ घूमकर बोली, "ब्याज से क्या मतलब है तुम्हारा—?"

वह एक कदम आगे खिसककर अनुष्का की आंखों में झांकते हुये बोला, "भूखे शेर की मांद में शिकार आये और बचके चला जाये...ये तो मुमकिन नेई है ना? तेरे कू बतलाने की जरूरत नेई है कि अक्खा दुनिया की दस हसीन लड़कियों में से एक है तू। अपुन कू खुश तो करना इच पड़ेगा...इतना तो बनता है कि नेई—?"

"ओह...ये बात है...।" अनुष्का उसे कड़वी निगाहों से घूरते हुये बोली, "बात रकम की हुई थी—लेकिन तू गिरगिट की तरह रंग चेंज कर रहा है। तेरा कोई दीन-ईमान है कि नहीं?"

"सरदारों के मौहल्ले में नाई की दुकान ढूंढ रेली है तू? एक मुजरिम से दीन-ईमान, करेक्टर की उम्मीद कर रेली है? नाग कू दूध पिलाने जा रेली थी तो ये बी सोचने का था कि नाग दूध पिलाने वाले का अहसान कब्बी नेई मानता—उसकी फितरत सामने वाले कू डसने की होती है। अपुन बी तो दो पैर वाला नाग इच है। अपुन के दांतों में इच नेई...बल्कि दिमाग में बी जहर भरेला है...क्या—? ये क्या कर रेली है तू...फोन का बटन क्यूं दबाया? पुलिस कू फोन कर रेली है क्या...हा...हा...हा...कुछ नेई होने कू सकता। अपुन पैले इच बोला कि सब के साथ सैटिंग की हुई है। इदर पुलिस का कोई अफसर आये...वो अपुन की इच बोली बोलेगा। वो इच करेगा...जो अपुन बोलेगा...क्या—?"

"पण्डितजी ने ठीक ही कहा था कि तुझ जैसे गुण्डे का कोई दीन-ईमान नहीं होता। मुझे यहां नहीं आना चाहिये। लेकिन मैं पापाजी के लिये चिन्तित थी—सो बोली थी कि अगर रकम देने पर तू पापाजी को छोड़ देगा तो मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी—वर्ना वो मेरी मदद कर दें। उनका नम्बर पहले ही लगाया था—उसी नम्बर को रि-डायल किया है मैंने।"

"कौन पण्डित...?" बालू चश्मे के पीछे छिपी आंखों को सिकोड़कर बोला, "ये कोई नया पुलिस वाला आयेला है क्या?"

"नहीं—वो पुलिस वालों की तरह बिकाऊ नहीं है...।" कड़वाहट भरे भाव से बोली अनुष्का, "ना ही तुझ जैसे गुण्डे उनके साथ सैटिंग ही कर सकते हैं। वो दिमाग के जादूगर हैं...कानून के पण्डित! तुझ जैसे गुन्डों को सबक सिखाने में माहिर हैं वो! मेरे यहां आने की उन्हें जानकारी है। मैंने उनको मिस-कॉल देकर ये इशारा दे दिया कि यहां पर गड़बड़ी है। वो क्या करेंगे, मैं नहीं जानती—लेकिन तेरे साथ बहुत बुरा होने वाला है। तेरे ग्रह खराब हो गये हैं और तेरी

कुण्डली में शनि देवता का प्रवेश होने वाला है। तू सोच भी नहीं सकता कि तेरे साथ क्या होने वाला है–!"

"ओ...तो तू उस केशव पण्डित की बात कर रेली है, जो कि नामी-गिरामी वकील, जासूस और उपन्यासकार है? पन तू उसके पास क्यों गयेली–?"

"क्योंकि तूने मेरे पापाजी को किडनेप करवा लिया था। मुझे लगा कि पुलिस से ज्यादा पण्डितजी मेरी मदद कर सकते हैं। वो पहले भी मेरी मदद कर चुके हैं। अगर तू अपनी खैरियत चाहता है तो...।"

"तो?" बालू का चेहरा ठोडी से लेकर माथे और कनपटियों तक सुर्ख पड़ता चला गया, वो मुट्ठियों को भींचकर फुंफकारा-सा, "तो क्या?"

"मेरे पापाजी को मेरे हवाले कर दे और हमें जाने दे। मैं पण्डितजी को बोल दूंगी कि मेरा काम हो गया है, उन्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। अगर तूने ऐसा ना किया...।"

"तो? तो?" गुर्राया-सा बालू।

"तो फिर तुझे पण्डितजी के कोप का भाजन बनना होगा...।"

"कोप बोले तो–?"

"कहर...क्रोध...आफत...मुसीबत...।" निर्भीकता के साथ ही बोल रही थी अनुष्का–वो कतई भी भयभीत नहीं थी।

चश्मा उतारकर करीब की मेज पर फेंक दिया बालू ने और आंखों से कहर-सा बरसाते हुये हिंसक भाव से बोला–"गलतफहमी के कुएं में छप्पक-छप्पक करने वाली मेंढकी...उछलके मुंडेर पे आने का! तेरे कू मालूम नेई कि तू किदर खड़ेली है? बालू सोसाइटी में, बालू पैलेस में। अक्खा इलाका अपुन का है। पुल्लिस तो पुल्लिस...मिलिट्री बी इदर नेई आने कू सकती। कदम-कदम पे अपुन के आदमी तैनात रहते हैं...वो बी हथियारों के साथ। केशव पण्डित कू लोगों ने ऐसे इच हीरो बना रखेला है। होगा वो कुछ बी पन अपुन के सामने कुछ बी नेई है वो। इदर नेई आने कू सकता वो। आयेगा तो...खेल खतम और पैइसा हजम...।"

"छोड़-छाड़के अपने सलीम की गली–अनारकली डिस्को चली...।"

गाना बजने पर बालू ने मेज पर से मोबाइल उठाया और आंखें सिकोड़े हुये बोला–"ऐ किसका नम्बर है बाप? अपुन की जान-पहचान का तो नेई है...?"

"पण्डितजी का होगा। बात कर–।"

"पण्डित! पन उसके पास अपुन का नम्बर कैइसे पहुंच गयेला?"

"बात कर और पूछ ले ना–।"

बालू ने अनुष्का को घूरा, फिर फोन कान से सटाकर बोला–"अपुन बालू भाई बोल रेला है। बालू बोले तो तीन-चौथाई मुम्बई अण्डरवर्ल्ड का किंग...।"

"चूहे जैसी औकात है तेरी। अगर कोई बिल्ली भी म्याऊं-म्याऊं करती हुई सामने आ गई तो पूंछ दबाकर बिल में जा घुसेगा...।"

"ऐ...बालू भाई से इस लहजे में बात नेई करने का...क्या? अपुन कू चूहा बोलने वाला जयास्ती टैम इस दुनिया में जिन्दा नेई रहन कू सकता। ठोक डालेगा तेरे कू...नाम तो बोल अपना–?"

"नाम में क्या रखा है मोटे चूहे? आवाज से अन्दाजा नहीं लग रहा कि...शेर दहाड़ रहा है...?"

"शेर तो एक इच है बीडू...बालू भाई। बाकी सब तो गीदड़, मेमने, बिल्ली और चूहे की माफिक इच हैं अपुन के सामने।"

"गलतफहमी के अण्डे को फोड़कर बाहर निकल और दिमाग की आंखें खोलकर हकीकत की दुनिया का सामना कर। क्या है कि तू हमेशा से ही अपने बिल में ही घुसा रहा है और उसी को सारी दुनिया समझता रहा है। बाहर निकलेगा तो मालूम पड़ेगा कि दुनिया कितनी बड़ी है और उस दुनिया में तुझ जैसे चूहे की कितनी औकात होती है...।"

"अपुन का भेजा नेई घुमाने का बीडू...।"

"अभी तो सिर्फ फोन पर ही बात हो रही है और मैंने अपना परिचय भी नहीं दिया है–तब तेरा दिमाग घूमने लगा है। जब मुझसे सामना होगा तो तेरा ना जाने क्या-क्या घूमने लगेगा।"

"तू फोन पे बोल रेला है...तब बी तेरी जुबान कैंची की माफिक चल रेली है बीडू। अक्खा दुनिया में ऐसा कोई माई का लाल नेई है, जो अपुन की मर्जी के बिना अपुन तक पहोंचने की हिम्मत कर सके। हवा कू बी अपुन से परमिशन लेनी पड़ती है...क्या–?"

"चल बे–बड़ा आया हवा को परमिशन देने वाला। हवा का कोई तेज झोंका आ गया तो सूखे पत्ते की तरह चारों तरफ उड़ता फिरेगा। अगर फोन पर भी फूंक मार दूं तो उड़ते हुये मुम्बई से बाहर किसी जंगल में जाकर गिरेगा...।"

"तू...तू कौन है...बोल...अपुन कू अपना नाम बोल...अब्बी-के-अब्बी बोल...।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोला बालू, "कौन बोल रेला है तू–?"

"अक्ल के अन्धे...शेर को उसकी आवाज से भी नहीं पहचान पा रहा है तू! वैसे मां-बाप ने मेरा नाम केशव पण्डित रखा था। अनुष्का

के साथ कोई ऐसी-वैसी हरकत मत करना—वरना वहीं आकर तेरी वो धुलाई करूंगा कि बिना वाशिंग मशीन के ही रिन जैसी चमकार मारेगा। अपनी भलाई चाहता है तो अनुष्का के साथ इज्जत के साथ पेश आना और उसके पापा मिर्जा बेग को छोड़ दे। जवाब दे...तू मिर्जा बेग को छोड़ रहा है कि नहीं—?"

❑❑❑

❑❑❑

"हुक्म तो यूं दे रेला है कि अपुन पूरा कर इच देगा। होयेंगा तू कुछ बी...कानून का पण्डित...दिमाग का जादूगर...वकील, जासूस या नोवलकार...उपन्यास लिखने वाला। तू जितनी बड़ी कलम से लिखता होयेंगा—अपुन उससे बी बड़ी-बड़ी गोलियां हथियारों में डाल के चलाता है। तूने अपनी अक्खा जिन्दगी में उतने दिन नेई देखे होयेंगे, जितने कि अपुन ने हथियार चला रखेले हैं...क्या? मिर्जा बेग कू नेई छोड़ेगा अपुन। अनुष्का कू बी नेई छोड़ेगा। अपुन की मर्जी होयेंगी तो कब्बी छोड़ देगा—मर्जी नेई हुई तो नेई छोड़ेगा। बोलने का...क्या...करेंगा तू—?"

"फोन पर बोलकर थोड़े इच करूंगा बालू! तेरे पास आऊंगा और फिर तुझे मालूम हो जायेगा कि मैंने क्या किया—!"

"तू आयेगा—?"

"हां—आऊंगा—।"

"अपुन के पास आयेंगा तू—?"

"बिल्कुल—।"

"कब आयेगा—?"

"अपनी रिस्टवॉच में टाइम देखकर बतला कि कितने बजे हैं—?"

"ग्यारह बजकर चालीस मिनट...।"

"ठीक बारह बजे मैं तेरे सामने खड़ा नजर आऊंगा। अगर तूने अपनी मां का दूध पीया है तो...तो मुझे रोककर दिखला दे—।"

"चैलेंज कर रेला है अपुन कू—?"

"हां—चैलेंज ही है—।"

"तो फिर तू बारह बजे तक तो क्या...अपनी अक्खा जिन्दगी में बी अपुन तक नेई पहोंचने कू सकता—।"

"तुझमें इतनी ताकत है कि मुझे रोक सके—?"

"बिल्कुल है। ये अपुन का इलाका है बीड़ू। इदर अपुन की मर्जी के बिना पंछी पंख नेई फड़फड़ाने कू सकते—एक पत्ता बी हिलने कू नेई सकता—।"

"तू पत्ते की बात कर रहा है—मैं तेरा पूरा पेड़ ही हिलाकर रख दूंगा।"

"फोन पे बोलने में क्या जाता है पण्डित—तू अपुन के पास पहोंचकर दिखला ना—।"

"अगर मैं बारह बजे तेरे सामने आ गया तो—?"

"मुमकिन इच नेई...।"

"अगर आ गया तो...तो—?"

"तो अपुन अनुष्का और मिर्जा बेग कू छोड़ देगा—बदले में एक फूटी कौड़ी बी नेई लेगा...।"

"इसमें कौन-सी बड़ी बात है। जब मैं वहां पहुंच जाऊंगा तो तुझे मिर्जा बेग, अनुष्का को छोड़ना ही पड़ेगा और बदले में एक चवन्नी भी नहीं ले पायेगा। कान पकड़कर सौ उठक-बैठक लगानी पड़ेंगी। चौपाया बनकर अपने इलाके में म्याऊं-म्याऊं बोलते हुये चलना पड़ेगा। बोल...मन्जूर है कि नहीं—?"

"जब तू अपुन तक पहोंच इच नेई सकेगा तो...सो तेरी ये शर्त अपुन मन्जूर कर रेला है। पन...तू इदर बारह बजे तक नेई पहोंचा तो...? तो फिर क्या होयेगा?"

"चल...तू ही बोल दे।"

"तुझे अपने इलाके में कुत्ता बनके चलना पड़ेगा और भौंकना बी पड़ेगा। बोल...मन्जूर है कि नेई—?"

"बिल्कुल...मन्जूर है। तू मेरी जुबान पर भरोसा कर सकता है—।"

"ये...ये हुई ना बात।" बालू की बांछें खिल उठीं और वो प्रफुल्लित भाव से बोला, "अब आयेगा ऊंट पहाड़ के नीचे। जो काम बड़े से बड़ा सूरमा नेई कर सका...वो अपुन करके बतलायेगा। दिमाग के जादूगर कू कुत्ता बनाके अपुन उसके इच इलाके में घुमायेगा—वो अपुन के इशारे पे 'भौं-भौं' करेगा...भौं...भौं...भौं...भौं...भौं...।"

"फिलहाल तो तू भौंककर अपनी जात दिखला रहा है बालू! टाइम वेस्ट मत कर। सिर्फ अठारह मिनट ही रह गई हैं। अगर मैं बारह बजे तुझ तक पहुंच गया तो बिल्ली बनकर अपने इलाके में घूमना पड़ेगा और तेरी नाक कट जायेगी। फोन बन्द कर और मुझे रोकने की तैयारी कर। समझ कि मैं तेरे इलाके में दाखिल हो चुका हूं...।"

इतना बोलकर केशव ने फोन काट दिया।

"ओये शेरूऽऽऽऽ!" गला फाड़कर चिल्लाया बालू, "शेरू! किदर

मर गया तू हरामी? फौरन इच अपुन के सामने पेश नेई हुआ तो...ठोक डालूंगा तेरे कू...शेरूऽऽऽ।"

"भाई...भाई जी1" काली जालीदार बनियान और चैक की लुंगी पहने हुये एक अधेड़ गिरता-पड़ता आया, जो कि जंगली भैंसे जैसा काला-कलूटा भी था और लम्बा व तन्दुरुस्त भी था।

वो शेरू था—बालू का राइट हैन्ड...कमाण्डर।

"दिमाग के जादूगर केशव पण्डित का फोन आयेला था अब्बी-अब्बी। वो अपुन कू चैलेन्ज दियेला कि बारह बजे तक अपुन के सामने पेश होयेंगा। नेई पेश हो सकता तो वो अपने इलाके में कुत्ते की माफिक घूमेगा...भौं-भौं करते हुये। लेकिन वो पेश हो गयेला तो अपुन कू बिल्ली बनके अपने इलाके में घूमना पड़ेगा। वाट लग जायेगी अपनी। इज्जत की भजिया बनने कू सकती है बीड़ू! केशव पण्डित किसी बी कीमत पे अपुन तक नेई पहोंचना चाइयें। अक्खा इलाके में अपने हथियारबन्द लोग तैनात कर देने का। तू अपने खास लोगों के साथ अपुन की कोठी के बाहर तैनात हो जा। कुछ बी हो जाये...केशव पण्डित बारह बजे तक इदर नेई आना चाइये। अगर आया तो फिर तेरी खैर नेई होयेंगी...क्या—?"

"आप बेफिक्र रहिये भाई जी। केशव पण्डित किसी बी कीमत पे आप तक नेई पहोंच सकेगा। अपुन अब्बी जाके अक्खा इलाके को सील कर देता है। अपुन भी देखता है कि केशव पण्डित आप तक कैसे पहोंच पाता है...!"

❑❑❑
❑❑❑

शेरू ने अपने कमरे में पहुंचकर लाउड स्पीकर वाला सिस्टम शुरू किया और माइक हाथ में लेकर बोलने लगा—मौहल्ले में लगे विभिन्न लाउड स्पीकर्स तथा कोलम के माध्यम से उसकी आवाज गूंजने लगी—

"अपुन शेरू बोल रेला है। अपुन के इलाके में केशव पण्डित आ रेला है। वो इच...जो दिमाग का जादूगर कहलाता है। खूब गोरा-चिट्टा...गुलाबी होंठों और नीली आंखों वाला...सिर के बाल हल्के सुनहरे और अर्ध घुंघराले। उसकी भाई जी के साथ ठन गयेली है। शर्त लगेली है। भाई जी ने चैलेंज कर दियेला है कि केशव पण्डित बारह बजे तक उन तक नेई पहोंचने कू सकता। पन केशव पण्डित दावा कियेला है कि वो बारह बजे तक भाई जी तक पहोंचकर दिखलायेगा। वो भाईजी तक पहोंचा तो...ये भाई जी की तौहीन होयेंगी और हम सबके वास्ते डूब मरने वाली बात हायेंगी। सभी लोग

हथियारों के साथ पोजीशन ले लेने का...क्या? भाई जी की कोठी तक एक इच गली जा रेली है। इस गली पे तैनात हो जाने का...ऊपर छतों पे बी तैनात होने का। कुछ बी हो जाये—पन केशव पण्डित कू भाई जी के पास नेई पहोंचने देने का। वो कामयाब होयेंगा तो तुम लोगों की खैर नेई होयेंगी। अपुन सबकू लाइन में खड़ा करके बम से उड़ा डालेगा। जल्दी करने का...फौरन से पेश्तर पोजीशन ले लेने का...बारह बजने में अब्बी पन्द्रह मिनट इच बाकी रह गयेली है। केशव पण्डित अपुन के मौहल्ले में दाखिल होने इच वाला होयेंगा। उसकू पकड़ने की कोशिश करने का और भाई जी की हाजरी में पेश करने का। अगर वो आसानी से काबू में नेई आये तो लात-घूंसों से मारने का...डन्डों, हॉकी से एक-दो हड्डी तोड़ डालने का। अगर मामला ज्यादा इच खतरनाक हो तो उसकू गोली मारने का...कोशिश करना कि उसकू जिन्दा इच पकड़ा जाये...क्या?"

शेरू का आदेश सुनते ही बालू के गुन्डे बौखला गये और अपने-अपने काम छोड़कर हथियार, अस्त्र-शस्त्र उठाकर 'मैदान-ए-जंग' की तरफ दौड़ पड़े।

विभिन्न मोड़ों वाली वह गली बीस फुट चौड़ी थी, जिसके मुहाने पर दस हथियारबन्द गुन्डे तैनात हो गये। इसके पश्चात् बाकी मोड़ों पर भी चार-पांच गुन्डे खड़े हो गये।

इमारतों की छतों पर भी पहुंच गये गुन्डे।

दर्जनभर गुन्डों के साथ शेरू बालू की कोठी के बाहर हाथों में ए०के० छप्पन लेकर खड़ा हो गया—बाकी लोगों के पास भी रिवॉल्वर, पिस्टल, राइफल, बन्दूक, देशी तमन्चे जैसे आग उगलने वाले हथियार थे।

शेरू फोन के माध्यम से गली के मुहाने पर तैनात मुरली नामक गुन्डे से बातें किये जा रहा था, उसे हिदायतें दिये जा रहा था। फिर वो बाकी लोगों को मुस्तैदी के साथ तैनात रहने की हिदायत देकर कोठी के भीतर पहुंचा, जहां अनुष्का बैग के ऊपर हाथ रखे खड़ी थी और झूले पर बैठा बालू सिगरेट में कश मारकर धुएं के छल्ले छोड़े जा रहा था।

उसने शेरू को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

"पूरा बन्दोबस्त कर दियेला अपुन ने भाई जी। कुछ बी करके केशव पण्डित आप तक नेई पहोंचने कू सकता। अपुन के आदमी उसकू पकड़के आपके कदमों में ला पटकेंगे। उसने फाइटिंग की तो उसकी हड्डी-पसली तोड़ दी जायेंगी। हथियार का इस्तेमाल कियेला तो उसकू ठोक दिया जायेगा और उसकी लाश इच इदर लाई जायेगी।

पन अपुन कू नेई लगरेला कि वो इदर आयेगा। अपुन के आदमियों कू देखके वो भाग जायेगा।"

"वो इदर नेई आयेंगा तो उसकी बहोत इन्सल्ट होयेंगी रे शेरू। उसकू कुत्ते की माफिक अपनें इलाके में घूमना पड़ेंगा। शायद वो अपनी बेइज्जती से बचने कू इदर आये। अब टाइम इच कितना बचेला है। देख लेते हैं कि वो आता है कि नेई!"

□□□

□□□

गली के मुहाने पर लगभग चालीस वर्षीय, लम्बा व तन्दुरुस्त युवक दिखलाई पड़ा।

सिगरेट में कश लगाते हुये वो आगे बढ़ा।

नौ गुन्डों के साथ मौजूद मुरली नामक गुन्डा पहले से ही कान से सटे फोन पर बोला, "कमाण्डर साहब! एक आदमी इदर इच आ रेला है। गोरा-चिट्टा है...।"

"क्या वो केशव पण्डित है—?" दूसरी तरफ से शेरू ने पूछा।

"नेई मालूम। अपुन ने कब्बी केशव पण्डित कू नेई देखा है बाप—।"

"क्या उसकी आंखें नीली हैं मुरली—?"

"मालूम नेई। आंखों पे काला चश्मा लगायेला है वो—।"

"उसके बाल घुंघराले और सुनहरे...?"

"सिर पे कैप लगायेला है—अपुन कू उसके बाल नजर नेई आ रेले हैं बाप—। पन वो अजनबी है। इस इलाके में पैली बार इच देख रेला है अपुन—।"

"रोकने का। जबरदस्ती करे तो ठोक-पीट डालो। वो हथियार का इस्तेमाल करे तो गोली मार देने का क्या? फोन कू चालू इच रखने का...ताकि अपुन बातें सुनता रहे...क्या?"

"बराबर, कमाण्डर! अपुन फोन कू चालू इच रखेगा। वो करीब आ रेला है। अपुन उसकू रोक के पूछताछ करता है...।"

फिर फोन कान से लगाये हुये मुरली अजनबी का रास्ता रोककर और ऐंठकर बोला—"ऐ...रुकने का...किदर जाने का?"

"ओये चिड़िया की बीट वाले हाथी—रेगिस्तान में नग्न रेगिस्तान...।" वह मुरली के चेहरे पर सिगरेट का धुआं दागने पर बोला, "तेरे उस झन्डू मच्छर बालू से मिलना है मुझे।"

"मच्छर नेई बोलने का भाई जी कू...।" मुरली आंखें तरेरकर बोला, "वो इस इलाके के शेर हैं...शेर...।"

"चल बे! लगता है कि तूने अपनी जिन्दगी में शेर नहीं

देखा—शेर की फोटो ही देखी होगी—तभी उस सून्ड वाले मच्छर को तू शेर बोल रहा है। दुनिया के जंगल में तो सिर्फ एक ही शेर है और वो तेरे सामने खड़ा है...।"

"शेर...हो...हो...शेर...हो...हो...।"

मुरली उपहास वाले भाव से हंसने लगा तो बाकी गुन्डे भी हंसने लगे।

'तड़ाक...।'

"आहऽऽऽ।"

मुरली घुटी-घुटी-सी चींख के साथ पीछे की तरफ कटी पतंग की मानिन्द ही चकराते हुये जमीन पर गिरा और बेहोश हो गया।

उसकी नाक यूं पिचक गई थी कि मानो गीली मिट्टी पर हथौड़ा मार दिया गया हो।

खून से सने होंठों के बाहर दो दांत निकलकर चिपक गये थे।

बाकी गुन्डे भौंचक्का-सा रह गये—फिर वो मुख से किलकारियां निकलते हुये लाल कोट वाले पर झपट पड़े।

वह कुम्हार की चाक की मानिन्द ही घूमा और तड़ाक...तड़ाक की आवाज उभरने पर पहले हथियार हवा में उड़ने पर जमीन पर गिरे—फिर सभी नौ गुन्डे जमीन पर गिरकर 'हाय-हाय' करने लगे।

ऐसा कोई नहीं था, जिसकी हड्डी ना टूटी हो।

ऊपर छत पर मौजूद गुन्डों ने लाल कोट वाले पर हथियार ताने और फायरिंग करने लगे।

लेकिन उसे एक भी गोली ना स्पर्श कर पाई।

स्पर्श तो तब करती, जब वो वहां पर होता।

ना जाने कब, कैसे वो एक मकान की छत पर था और वहां मौजूद गुन्डे की रिवॉल्वर उसके पास थी—वो गुन्डा बेहोशी की हालत में नीचे सड़क पर औंधा लेटा हुआ था।

दूसरी छतों पर मौजूद गुन्डे कुछ सोच-समझ पाते, कुछ कर पाते—लाल कोट वाले ने एक-एक गोली चलाकर उन सभी को टपका दिया।

मृत गुण्डों के हथियार बटोरकर वो छतों से होते हुये और फायरिंग करते हुये आगे बढ़ने लगा। वो बड़ी ही कुशलता के साथ अपना बचाव भी कर रहा था और छतों पर मौजूद गुन्डों का वध भी कर रहा था। खाली होते हथियारों को फेंककर मृत गुन्डों के भरे हुये हथियार उठाकर फायरिंग किये जा रहा था—इसी के साथ वो नीचे गली में मौजूद गुन्डों को भी अपना शिकार बना रहा था। तबाही

का खेल खेलते हुये वो निर्विघ्न रूप से आगे बढ़े चले जा रहा था और कोई भी गोली उसको स्पर्श नहीं कर पा रही थी।

वो छतों के रास्ते आगे बढ़ते हुये बालू की कोठी के नजदीक पहुंच रहा था।

□□□
□□□

बारह बजने में पांच मिनट पर बालू ने फायरिंग की आवाज सुनने पर मोबाइल फोन पर सम्पर्क करके शेरू को भीतर बुलाया और पूछा, "ये गोलियों का शोर कैइसे हो रेला है बीड़ू?"

"कोई अपुन के इलाके में घुसेला है बाप। अपुन कू फोन पे मुरली ने बतलाया कि कोई लाल कोट, काली जींस और काले चश्मे वाला आ रेला है—उसके सिर पे टोपी है। फिर उसने मुरली और बाकी लोगों कू शायद मार दियेला—या बेहोश कर दिया होयेंगा। मुरली से बात नेई हो पाई। बिरजू से कॉन्टेक्ट हुआ तो उसने गोली लगने से पैले बतलाया कि वो लाल कोट वाला छतों पर होते हुये सब्वी कू गोली मारते हुये आगे बढ़ रेला है—उसने अपुन के कई लोग खल्लास कर डाले हैं पन उसकू एक बी गोली नेई लगेली है। लग रेला है कि वो अपुन के आदमियों कू मारते हुये इदर इच आ रेला है...भाई जी। पन आप फिक्र नेई करने का। अपुन बाहर इच मौजूद है। उसकू देखते इच ठोक डालेगा। पन आप मेनगेट कू भीतर से बन्द कर लेने का...।"

"बरोबर...बरोबर बोला तू। अपुन ऐसा इच करता है। तू पूरी होशियारी के साथ तैनात हो जा। वो अपुन के आदमियों कू मार रेला है तो उसेकू जिन्दा नेई छोड़ने का...जान से मार देना उसकू। अपुन भीतर से गेट बन्द कर रेला है। अपुन के पास जय-वीरू हैं इच! मेन गेट कू बम से इच तोड़ा जा सकता है। केशव पण्डित भीतर नेई आने कू सकता। अगर वो भीतर आ भी गयेला तो जय-वीरू अपनी ए०के० छप्पन राइफलों से उसकू छलनी-छलनी कर डालेंगे...।"

फिर शेरू बाहर चला गया और बालू के इशारे पर दो में से एक ए०के० छप्पनधारी ने मेनगेट को भीतर से बन्द कर लिया तो बाहर से गोलियों की आवाजें आनी बन्द हो गईं—क्योंकि हॉल अब साउन्ड-प्रूफ हो गया था।

बालू अनुष्का के पास पहुंचकर बोला, "भाग गयेला है तेरा वो केशव पण्डित। भले इच वो कितनी बी गोलियां चला ले—लेकिन अपुन तक नेई पहोंचने कू सकता। अपुन के आदमी उसकू उड़ा देंगे। वो बच बी गयेला तो बारह बजे तक इदर नेई पहोंचने कू

सकता...क्या? बारह बजने इच वाले हैं...सिर्फ पन्द्रह सेकिन्ड इच तो रह गयेली हैं। चौदह...तेरह...बारह...किदर है तेरा वो पण्डित...?"

"इधर है केशव पण्डित...।"

पीछे से उभरने वाली आवाज ने बालू को सकते की सी अवस्था में पहुंचा दिया।

वो बौखलाकर, हड़बड़ाकर पलटा तो दर्शन हुये एक सुदर्शन व्यक्तित्व वाले व्यक्ति के—जो कि केशव पण्डित ही तो था।

□□□
□□□

बेचारा बालू!

मुम्बई अण्डरवर्ल्ड के सेवन्टी फाइव परसेन्ट हिस्से का बेताज बादशाह होने का दम भरने वाला।

उसकी दशा ऐसी कि आरे से भी काटो तो खून की एक भी बूंद ना निकले।

मानो जिस्म का समूचा खून सूखकर लकड़ी हो गया था, तभी तो उसे काठ-सा मार गया था।

सिर मानो फ्रिज बन गया और उसमें फंसा दिमाग जमकर बर्फ हो गया था—तभी तो काम नहीं कर पा रहा था बेचारा।

केशव ने बुत बनकर खड़े बालू की एक परिक्रमा ली और फिर चुटकी बजाकर बोला, "ओये अण्डरवर्ल्ड के शेखचिल्ली। ख्यालों की दुनिया से बाहर निकल। फोन पर तो सौ किलोमीटर लम्बी-लम्बी फेंक रहा था—अब एक-दो इंच हिलकर दिखला। या फिर सिर्फ जुबान चलाने के अलावा तुझे कुछ करना आता ही नहीं? चल, जुबान ही, हिला।"

बालू ने स्वयं को नियन्त्रित किया और आश्चर्य की गहरी खाई से बाहर निकलने की चेष्टा करते हुये बोला, "तु...तुम इदर कैसे? मेन गेट तो बन्द है। अपुन की कोठी के बाकी दरवाजे और खिड़कियां मजबूती के साथ बन्द रहती हैं। फिर तुम इदर कैइसे...?"

"मैं तो यहीं पर था–।"

"यहीं पे...क्या मतलब–?"

"उधर देख...उस बैग की तरफ...जिसे अनुष्का अपने साथ लेकर आई थी...।"

बालू ने उस बैग की तरफ देखा, जो कि अब खुला हुआ था और एकदम खाली था।

एक बारगी को तो बालू के दिमाग की चक्करघिन्नी ही बन

गई—फिर हड़बड़ाकर बोला, "...तु...तुम...इस बैग में छिपकर आयेला इदर—?"

"हां—ठीक समझा तू—।"

"पन...पन तुम इदर है तो...वो कौन है—?"

"वो? वो कौन—?"

"वो इच। जो बाहर अपुन के आदमियों कू मार रेला है—?"

"मुझे क्या मालूम कि वो कौन है? मैं तुझ जैसे गुन्डे की फितरत जानता हूं...तुम लोगों का कोई दीन-ईमान नहीं होता है। इसलिये तेरे रंगदारी मांगने पर ही अनुष्का ने मुझसे सम्पर्क कर लिया होता तो...तू मिर्जा बेग का किडनेप करके अनुष्का को फिरौती की रकम के साथ यहां नहीं बुलाता। उससे पहले ही मैं तेरा इलाज बांध देता। अनुष्का यहां पहुंची तो तूने अपनी औकात दिखलाई भी—लेकिन अनुष्का घबराई नहीं—क्योंकि ये जानती थी कि मैं यहीं पर हूं। खैर, तूने जो चैलेन्ज किया था, तू उसमें नाकाम रहा है। क्योंकि मैं बारह बजे से पहले ही यहां पर मौजूद था...।"

"ये...ये तो बेईमानी है...।" बालू हड़बड़ाकर बोला, "अपुन कू मालूम होता कि तुम इदरीच है तो...वो शर्त नेई लगाता...।"

"तो इसमें गलती किसकी है बे? मेरी या तेरी? अपने दिमाग का इस्तेमाल करके—बैग को खोलता। मैं बैग के भीतर से फोन पर तुझसे बातें कर रहा था, लेकिन तू इस बात को पकड़ नहीं सका। अक्ल का कोल्हू कौन हुआ बे—?"

पहले तो झेंपा बालू—लेकिन फिर उसकी दृष्टि अपने दो ए०के० छप्पन लिये खड़े अंगरक्षकों पर पड़ी तो वह भीगी बिल्ली से खूनी भेड़िया बनकर गुर्रा उठा, "अपुन के साथ ज्यास्ती स्यानपत्ती नेई करने का केशव पण्डित। अगर तू समझ रेला है कि अपुन अपनी हार मानके अपने इलाके में बिल्ली बनके म्याऊं-म्याऊं करेगा तो...।"

"मुझे कोई गलतफहमी नहीं है...।" केशव उसकी बात को काटकर बोला, "बल्कि मुझे पूरा आत्मविश्वास है कि तू बिल्ली बनकर अपने इलाके में 'म्यांऊ-म्याऊं' बोलेगा।"

"तू बनायेगा अपुन कू बिल्ली—?"

"हां—मैं ही—।"

"ऊपर देखने का...अपुन के दो चेलों ने तेरे पे ए०के० छप्पन तान रखेली हैं। अपुन का इशारा होते इच दोनों ट्रिगर दबा के तेरे जिस्म को छलनी-छलनी कर डालेंगे। तू खल्लास हो जायेगा तो किसी कू बी अपने बीच लगी शर्त के बारे में मालूम नेई पड़ेगा। अनुष्का

और मिर्जा बेग कू बी खल्लास कर डालेगा अपुन। वड़ा स्याना बनके तू बैग में बन्द होके इदर आ तो गयेला—पन इदर से जिन्दा कैइसे जायेंगा...बोलनें का—?"

यूं ही मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला कि मानो किसी वच्चे ने बोल दिया हो कि वो सूरज को फुटबॉल बनाकर खेलेगा और फिर उसे अपने स्कूल बैग में रख लेगा।

बालू की आंखों में झांकते हुये बोला केशव, "समझदार आदमी तो वो ही होता है, जो दुश्मन को कोई मौका दिये बिना ही उसको खत्म कर दे। समझ में नहीं आ रहा है कि तू इतनी देर क्यों लगा रहा है? अपने गुन्डों को बोल ना कि ये मुझे मार दें—?"

"देख क्या रेले हो जय-वीरू—खल्लास कर देने का इसकू—।"

'तड़...तड़...तड़।'

'तड़...तड़...तड़।'

अनुष्का ने घबराकर आंखें बन्द कर लीं।

❑❑❑

❑❑❑

लेकिन फायरिंग के जवाब में केशव की चींख ना उभरने पर उसे थोड़ा अचरज हुआ—

क्या केशव बिना चींखें ही 'टें' बोल गया?

अचरज तो बालू को भी हुआ और उसकी आंखें फैलती चली गईं—जब उसने केशव के जिस्म को हवा में उड़कर जय-वीरू की तरफ बढ़ते हुये देखा।

'तड़ाक...तड़ाक।'

केशव के पैर जूतों समेत एक साथ जय-वीरू के सिरों से यूं ही टकराये कि मानो दो नारियल आपस में टकराये हों।

पहले दोनों ए०के० छप्पन हवा में उछलकर फर्श पर गिरीं और फिर गिरे जय-वीरू—वो भी बिना चींख मारे।

दोनों ही बेहोश थे।

पहले तो बौखलाया बालू—फिर फर्श पर गिरी एक ए०के० छप्पन पर भूखे गिद्ध की मानिन्द ही झपट पड़ा।

लेकिन ये क्या?

फर्श पर बैठे केशव ने किसी मेंढक की मानिन्द ही उछाल भरी और सिर की जोरदार टक्कर बालू के चेहरे पर जड़ दी।

'भड़ाकऽऽऽ।'

"आ...आहऽऽऽ।" चींख मारकर फर्श पर गिरे बालू ने खून के साथ चार दांत भी उगल दिये।

मुंह के साथ-साथ नाक से भी खून रिस रहा था। मुट्ठी में बालों को जकड़कर केशव ने उसे खड़ा किया और वॉल क्लॉक के पेन्डुलम की मानिन्द ही इधर-उधर हिलाते हुये बोला, "बालू भाई! मुम्बई का मशहूर गुन्डा और इस इलाके का बेताज बादशाह। मैंने फोन पर तुझे चूहा बोलकर गलती नहीं की थी। अपने बिल के भीतर ही तू धमा-चौकड़ी मचाता होगा। जबकि असली खिलाड़ी वो ही होता है, जो दुश्मन को उसके घर में घुसकर मारे। अकेला और निहत्था आया मैं तेरे घर में। फिरौती की एक इकन्नी दिये बिना ही मिर्जा बेग को यहां से ले जाऊंगा—अनुष्का साथ में होगी ही। हां, तुझे तेरे इलाके में बिल्ली बनाकर भी तो घुमाना है...।"

"नेई...ऐसा नेई होने कू सकता...आह...ये अपुन का इलाका...।"

"कुत्ता है कि ताली पीटने वाला...?" केशव उसके सिर के बालों को झटके देते हुये बोला, "इलाके तो उन्हीं के होते हैं। अपने ही घर में पिट रहा है और बात कर रहा है इलाके की। अभी तक तूने चूहों पर ही हुकूमत की है और स्वयं को बहुत बड़ा शिकारी मानकर चल रहा है तू। अब तेरा पाला शेर से पड़ा है तो अपनी औकात मालूम हो जायेगी। चल, कुछ तो कर। मुकाबला कर ना मुझसे। मैं भी निहत्था और तू भी निहत्था—चल मुकाबला कर। चल, तू भी क्या याद करेगा। फर्श पर दो ए०के० छप्पन पड़ी हैं। कोई सी भी उठा ले—मैं नहीं उठाऊंगा। समझ कि ये तुझे लास्ट चांस मिल रहा है। अगर मुझे नहीं मार सका तो तेरी ठुकाई करके तेरे इलाके में बिल्ली बना दूंगा और फिर कानून के हवाले कर दूंगा...। यूं चूहे की तरह टुकुर-टुकुर क्या देखता है बे? जब तक तू ए०के० छप्पन नहीं उठा लेगा। मैं कुछ भी नहीं करूंगा। चल, उठा ना...चूहे।"

झिझकते हुये बालू आगे बढ़ा और ए०के० छप्पन उठाने पर उसने गिरगिट की मानिन्द ही रंग बदल दिया—

केशव पर ए०के० छप्पन तानकर मक्कारी भरी मुस्कान के साथ बोला—"अब आयेंगा मजा खेल का मजा। मानता हूं कि तू दिमाग का जादूगर है। बहोत चालाक है तू—पन जरूरत से ज्यादा होशियारी नुकसान इच देती है। तेरे कू बी तेरी ये हीरोपन्ती बहोत नुकसान पहोंचाने वाली है बीड़ू। तूने सोचा हायेंगो कि अपुन डरा हुयेला है—इसी वास्ते ए०के० छप्पन उठाने कू नेई सकता। पन अपुन ने उठाके तेरी गलतफहमी कू दूर कर दियेला। गया...अब तू गया रे केशव पण्डित। अपने भगवान कू याद कर लेने का। अब्बी...अपुन की उंगली ट्रिगर दबायेंगी तो तड़...तड़ करके गोलियां चलेंगी।

है...सत बोलो गत है। मालूम नेई कि तूने कितने सूरमाओं की पुंगी बजाई होयेंगी—पन तेरा खात्मा तो अपुन के हाथों इच होना था। डरेगा नेई—अपुन से रहम की भीख नेई मांगेगा—?"

मुस्कुराकर बोला केशव, "तुझसे भला क्या मांगूंगा मैं—तू तो खुद भिखारी है...।"

"ऐ...भिखारी नेई बोलने का अपुन कू—नेई तो तेरे कू भीख में दस-बीस गोलियां दे डालूंगा...।"

"चल बे। हाथों में क्रिकेट का बैट थाम लेने से कोई सचिन तेन्दुलकर नहीं बन जाता है।"

"पन ये बैट नेई...ए०के० छप्पन है। इससे रन नेई निकलते—गोलियां निकलती हैं...।"

"निकलती होंगी—मुझे कोई परवाह नहीं...।" केशव कन्धों को उचकाकर बोला, "परवाह तब होती—जब लगता कि एक-आध गोली मुझे लग सकती है।"

"तेरे कू एक-आध बी गोली नेई लगेगी? लगता है कि मौत कू सामने देखके तेरा भेजा खिसक गयेला है बीड़ू।"

"भेजा तो तेरा खिसकने वाला है। इस खिलौने का ट्रिगर तो दबाकर देख और इससे मटर के दाने चलाकर देख...।"

"मटर के दाने? तू ए०के० छप्पन की गोलियों कू मटर के दाने बोल रेला है—?"

"जो गोलियां मुझ पर जरा-सा भी असर नहीं करेंगी, वो तो मेरे लिये मटर के दाने के बराबर ही हुई ना—?"

"तो फिर तू मटर के दाने खा और बतला कि स्वाद कैइसा है...?" कहने पर बालू ने ट्रिगर दबा दिया।

"तड़...तड़...तड़।"

"तड़...तड़...तड़।"

□□□

□□□

ए०के० छप्पन की बैरल से शोर मचाती हुई गोलियां निकलकर केशव को छूने का प्रयास करने लगीं, लेकिन चाहकर भी छू नहीं पा रही थीं।

बला की फुर्ती का प्रदर्शन करते हुये केशव कभी दायें से बायें, कभी बायें से दायें गिर रहा था तो कभी हवा में उछाल भरकर गोलियों का मखौल उड़ा रहा था।

बौखलाये बालू ने खाली हो चुकी राइफल को फेंककर दूसरी

राइफल उठा ली और तमतमाये चेहरे के साथ केशव पर निशाना लगाने की चेष्टा करने लगा—लेकिन एक भी गोली केशव से 'हाय-हैलो' नहीं कर पाई।

झुंझलाकर, तैश में आकर बालू ने खाली हुई ए०के० छप्पन केशव पर खींच मारी—लेकिन केशव ने कुशल फील्डर की मानिन्द ही उसे हवा में लपक लिया और वापिस 'थ्रो' किया तो तड़ाक की आवाज के साथ बालू के मुंह से पीड़ा-भरी चींख निकली—वो दोनों हथेलियों से सिर को पकड़कर नशे में धुत्त शराबी की मानिन्द ही झूमने-सा लगा।

उसका सिर सेंककर ए०के० छप्पन फर्श पर जा गिरी थी।

केशव ने उसके हाथों को नीचे गिराकर पुनः मुट्ठी में उसके बालों को जकड़ लिया और उसके पेट पर घूंसे व घुटने के ताबड़तोड़ प्रहार करता चला गया।

हाय...आह...करता बालू मुकाबला तो क्या करता, उसे बचाव करने का भी अवसर नहीं मिल पा रहा था।

उसके पेट का बढ़िया तरह से बैन्ड बजाकर पूछा केशव ने—"मिर्जा बेग कहां हैं—?"

"ऊ...ऊपर है...हाय...मर गयेला...ऊपर कमरे में...आह...।"

"ऊपर जाकर देखो अनुष्का...।"

"जी, पण्डितजी...।" कहने पर अनुष्का सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर चली गई।

बालू को फर्श पर पटककर केशव उसकी ठुकाई करने लगा। अनुष्का वापिस लौटी तो उसके साथ ना सिर्फ मिर्जा बेग था, बल्कि तीस वर्षीय सांवली, लेकिन बला के खूबसूरत नैन-नक्श वाली युवती भी थी—जो कि हरे रंग की बनारसी साड़ी में थी तथा काफी घबराई हुई भी थी।

"पण्डितजी...।" नीचे आने पर मिर्जा बेग 'हाय-हाय' करते बालू को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरने पर केशव से कृतज्ञता-भरे भाव से बोला, "आपको फरिश्ता कहूं कि करिश्मा करने वाला इन्सान? मैं तो हताश हो चला था। ये कम्बख्त बालू बोल रहा था कि फिरौती लेने पर भी मुझे नहीं छोड़ेगा। अनुष्का को मजबूर करके फैक्ट्री और सारी प्रोपर्टी बिकवाकर सारी दौलत अपने कब्जे में कर लेगा और फिर अनुष्का को भी अपने पास रख लेगा—मेरी जान की खातिर अनुष्का इसे खुश करने को मजबूर होगी...।"

"आ...आहऽऽऽ!"

बालू की पसलियों पर ठोकर जड़कर केशव मिर्जा बेग से बोला, "गिद्ध के कोसने पर अगर सभी मरने लगते तो ये दुनिया खाली हो जाती और गिद्ध का ही राज होता। ख्वाब देखने पर कोई टैक्स नहीं लगता है ना? ये भी ख्याली पुलाव पका रहा था...।"

"लेकिन आप यहां कैसे—?"

"अनुष्का ने मेरे पास आकर सारी बातें बतलाई थीं बेग साहब! अरे...।" उस युवती पर दृष्टि पड़ने पर केशव चौंककर बोला, "ये मोहतरमा कौन हैं—?"

"मालूम नहीं, पण्डितजी। इसे भी बालू ने मेरे साथ कमरे में बांधकर रखा हुआ था और मुंह पर टेप भी चिपकाई हुई थी...।"

"अपुन का नाम साक्षी है पण्डितजी...।" वह युवती हाथ जोड़कर बोली, "अपुन सोनी दादा की बीवी है। काफी दिनों से इस कमीने बालू की मुझ पर गन्दी नजरें थीं। एक पार्टी में इसने एक लाख रुपये का लालच देकर अपुन कू एक रात की रानी बनने कू कहा था तो अपुन ने इसकू दो थप्पड़ जड़ दियेले थे। अपुन नेई जानती थी कि ये बालू भाई है। सोनी कू ये बात मालूम पड़ी तो डर गयेला था। वो इसी कमीने के वास्ते काम करता था। वो इससे मिला और पैर पकड़ के अपुन के थप्पड़ों के वास्ते माफी मांगी। ये कमीना बोला था कि तेरी बीवी पे दिल आ गयेला है—वो अपुन कू इसके बिस्तर पे लेके नेई आयेला तो उठवा लेगा। तब हम दोनों औरंगाबाद भाग गयेले थे। पन इसकू खबर लग गयेली और शेरू कू भेज के अपुन कू कल रात उठवा लिया था। अपुन का पीरियड चल रेला था—इसी वास्ते रात अपुन लुटने से बच गयेली थी। शेरू ने सोनी कू मार-मार के बेहोश कर दियेला था। ना जाने वो कैइसा होयेंगा। अपुन की मदद करने का पण्डितजी...।"

"तुम अब चिन्ता मत करो साक्षी! इसका बुरा वक्त आ गया है। मैं इसे पुलिस के हवाले करूंगा। इसकी कोई सोर्स या सिफारिश काम नहीं आयेगी। इसके तमाम जुर्मों का खुलासा होगा और ये कम-से-कम उम्र कैद की सजा तो भुगतेगा ही। अब हम बाहर चलते हैं। तुम देखना कि इसका क्या अन्जाम होता है—!"

□□□

□□□

केशव ने बालू की 'तशरीफ' पर ठोकर मारी तो वह कटी पतंग की मानिन्द चकराते हुये 'भड़ाक...से' मेन गेट से टकराया।

गिरा—कराहते हुये उठा और सिटकनी खोलकर गेट खोला। बाहर का नजारा देखकर उसके दिल पर बर्छियां, भाले, तीर,

तलवार...और भी ना जाने क्या-क्या चलने लगे।

बाहर लॉन में शेरू और नौ बाकी गुन्डे लाल कोट तथा काली पैन्ट वाले से बुरी तरह पिट रहे थे।

मानो वह बिजली का बेटा बन गया था।

उसके हाथ-पैर तो क्या दिखलाई पड़ते—उसका जिस्म भी ठीक से दिखलाई नहीं पड़ रहा था। कभी जमीन पर तो कभी हवा में उड़ान-सी भरकर शेरू और बाकी गुन्डों पर सिर, पैर और हाथों से तावड़-तोड़ हमले किये जा रहा था।

शेरू और बाकी गुन्डे चीखने-चिल्लाने के सिवाय, गिरकर तड़पने के सिवाय कुछ भी नहीं कर पा रहे थे।

देखते-ही-देखते वो सभी बेहोश हो गये।

"तुम यहां क्या कर रहे हो अ...।" अलफांसे कहते-कहते रुक गया केशव और सम्भलकर बोला, "अर्जुन—?"

"हाय...बीन वाले कन्हैया जी...डमरू वाले विष्णु जी...हारमोनियम वाले नारद जी...इस रावणलोक में रामराज्य स्थापित करने...।"

"उस्ताद जी...।" तभी साक्षी ने आगे बढ़कर अलफांसे के चरण स्पर्श कर लिये।

"जीती रहो, सौ साल तक जीओ—कोका-कोला में अपने मियां का खून मिलाकर पीओ...।" अलफांसे उसके सिर पर आशीर्वाद की मुद्रा में हथेली रखकर बोला, "कर ली खेती और बो लिया धान—हाथी पैदा हुआ मच्छर ने ले ली जान। सोनी ने हमसे मदद मांगी थी तो यहां आये थे—तुमको यहां से ले जाने को हमने लंका के राक्षस ढाये थे। लेकिन अपनी सारी मेहनत मिल गई पानी में—बूट कर गया कोई हमें भरी जवानी में। मालूम होता कि यहां पहले से मौजूद है अपना पण्डित—तो फिर क्यों हम करते बालू की सेना को दण्डित?"

"ज्यादा ड्रामा करने की जरूरत नहीं है ओये जोकर...।" केशव हंसकर बोला, "...तुम यहां साक्षी को मुक्त कराने आये और ये मुक्त हो चुकी है। तुम्हारा खेल पूरा हुआ। साक्षी को लेकर निकल ले यहां से।"

"और तुम मियां—?"

"मुझे इस बालू को इसके इलाके में बिल्ली बनाकर घुमाना है प्यारे।"

"अरे वाह! यानि तमाशा होने वाला है और हमको यहां से टरकाने की फिराक में हो। इस देश में रहने का टैक्स तो हम

भरते हैं नाली आंखों वाले भाई साहब—फिर हमें मनोरंजन करने से क्यों वंचित करने के जुगाड़ में हो? इस दो टांग वाले गधे को बिल्ली बनते हुये हम भी देखेंगे।"

"जरूर देखो—रोका किसने है?"

"रोक भी तो नहीं सकते आशीर्वाद के बापूजान। अपनी उल्लू जैसी छोटी-छोटी आंखों का रजिस्ट्रेशन करवाया हुआ है। हम कहीं पर भी इनका सदुपयोग करने के लिये स्वतन्त्र हैं। चलो, तमाशा शुरू करो।"

चटाक...चटाक!

केशव ने बेमतलब ही बालू के दोनों गाल सेक दिये और बोला, "चौपाया बन और बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं बोलता हुआ चल। अगर जरा-सी भी आनाकानी की तो मार-मारकर खाल में भुस भर दूंगा...।"

पहले तो हिचकिचाया बालू—लेकिन केशव से दो थप्पड़ और खाते ही चौपाया बन गया और 'म्याऊं-म्याऊं' बोलने लगा।

उसके इलाके वाले मुंह बाये हुये आंखों को आश्चर्य व अविश्वास से फैलाकर यूं ही देख रहे थे कि मानो किसी किंग कोबरा को केंचुआ बनते देख रहे हों।

लेकिन कुछ लोग, जो केशव को जानते-पहचानते थे, उन्हें आश्चर्य नहीं हो रहा था—क्योंकि वो जानते थे कि केशव क्या चीज है।

बालू को उसके सारे इलाके में घुमाने पर केशव ने पुलिस को बुलाकर उसे गिरफ्तार करा दिया—फिर उसने मिर्जा बेग तथा अनुष्का को उनके घर तक छोड़ा।

साक्षी को उसके पति के हवाले करने की जिम्मेदारी अलफांसे की थी।

❑❑❑
❑❑❑

टोनी, ज्वैल और रोनी।

तीनें परममित्र एक बार में मदिरा के साथ उत्तेजक डांस का आनन्द उठाकर बाहर निकले और झूमते हुये पार्किंग में खड़ी कार की तरफ बढ़ने लगे कि अचानक ही भरभराकर गिर पड़े।

बेहोश!

तीनों ने जब छककर पी ली थी तो एक खूबसूरत युवती ने अपने साथ ड्रिंक का ऑफर रखा था, जिसे तीनों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था।

तीनों इस बात से अनभिज्ञ रहे कि वो युवती आई०एस०आई० से वाबस्ता थी और उसने बड़ी चालाकी के साथ तीनों की शराब में ऐसी नशीली दवा मिला दी थी कि कुछ देर पश्चात् उन्हें बेहोश हो जाना था।

बेहोश हुये भी।

फिर नकाबपोशों ने उन्हें उठाकर टोनी की ही कार में ठूंस दिया और वहां से चलते बने—उन नकाबपोशों की संख्या चार थी।

जब तीनों को होश आया तो स्वयं को बड़ी ही विचित्र हालत में पाया—धरती ऊपर और नीचे आसमान।

तीनों को एक ही पेड़ की एक ही मोटी डाल से उलटा लटकाया गया था।

उनके पैरों में बंधी नाइलोन की मजबूत डोरियों को डाल के साथ बांधा गया था।

चारों तरफ दूर-दूर तक जंगल-ही-जंगल दिखलाई पड़ रहा था।

हां—थोड़ी दूरी पर ही रेलवे ट्रेक भी दिखलाई पड़ रहा था, जिसके इधर एक गोलाकार झील भी थी।

तीनों के नीचे एक बड़े खड्डे में सूखी लकड़ियां डाली गई थीं।

"हम लोगों के साथ ये क्या हुआ टोनी...?" रोनी पीठ पीछे बन्धे हाथों को खोलने की असफल चेष्टा करते हुये बोला, "हम लोग तो बार में ड्रिंक करके बाहर निकले थे। फिर अचानक ही आंखों के सामने अन्धेरा छाया और होश नहीं रहा। मुझे लगा था कि ज्यादा पी ली है—इसलिये शराब ने असर कर दिया है। लेकिन हम लोग तो जंगल में हैं। हमें यूं बांधकर उल्टा लटकाया गया है। किसी दोस्त ने मजाक की हो—ऐसा नहीं लगता! किसने किया ऐसा? उसका मकसद क्या है—?"

"वो कौन है और उसका मकसद क्या है...ये तो नहीं कहा जा सकता...।" उल्टा लटका टोनी चिन्तित भाव से बोला, "लेकिन वो कोई दोस्त तो हो ही नहीं सकता। वो दुश्मन ही है और उसका मकसद खतरनाक है।"

"ऐ...कौन लाया हमें यहां...?" ज्वैल घबराकर चींखने-चिल्लाने लगा, "क्यों वान्धकर हमें उल्टा लटकाया गया है? सामने आओ और हमें खोलो। फिरौती वसूलने का भला ये भी कोई तरीका हुआ? किडनेप करके हमें किसी कमरे में बन्द करके रखते और हमारे घरवालों से फिरौती की रकम वसूलते। खोलो, भगवान के लिये हमें खोलो। मुझे बहुत घबराहट हो रही है। नीचे सिर झुकाने में ही चक्कर आते हैं। मुझे तो उल्टा ही लटका दिया। मारे घबराहट के मेरी जान

निकली जा रही है। ब...बचाओ...अरे, कोई तो हमारी मदद करो। हमें खोल दो...कृपया करके खोल दो।"

मदद की उम्मीद से टोनी और रोनी भी चिल्लाने लगे।

स्पष्ट था कि वो तीनों अंग्रेज थे, इसलिये उपरोक्त बातें उन्होंने इंग्लिश में ही बोली थीं, लेकिन उन्हें हिन्दी में लिखा गया है। फिर वहां पर हिन्दी व उर्दू के शब्द उभरे—वो भी तेज व बुलन्द आवाज में—

"चींखो कुत्तों...गला फाड़कर चींखो—इतना जोर लगाकर चींखो कि आसमान में छेद हो जाये और धरती में दरारें पड़ जायें—लेकिन कुछ फायदा नहीं होगा। तुम्हारे बुरे अन्जाम से तुम्हारा भगवान भी नहीं बचा पायेगा।"

"टुम...?"

"टुम...?"

"टुम...?"

तीनों शहजादी को देखकर चौंके—बुरी तरह चौंके।

अकेली नहीं थी शहजादी—सात युवक साथ में थे।

सभी दाढ़ी वाले थे, सभी पाकिस्तानी थे और आई०एस०आई० से वाबस्ता थे।

सभी के हाथों में रिवॉल्वर और पिस्टल थीं।

टोनी, रोनी व ज्वैल पहले तो आश्चर्यचकित रह गये—क्योंकि उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि जिस खूबसूरत, लेकिन लाचार व बेचारी-सी दिखलाई पड़ने वाली युवती के साथ कार में बलात्कार किया था, वो ही किडनेपर निकलेगी।

फिर शहजादी के सुलगे हुये चेहरे तथा दहकती आंखों ने साफ-साफ चुगली कर दी कि उसके इरादे बेहद ही खतरनाक हैं तो तीनों की जान सूख चली।

तिरपन्न कांप उठे—खून बर्फ की मानिन्द जमने लगा।

होश फाख्ता होने लगे।

जिस्मों के समूचे रोम छिद्र मानो आपस में शर्त लगाकर ही बर्फ-सा शीतल पसीना उगलने लगे।

जिह्वायें ऐंठने लगीं—हलक सूखने लगा।

दिल नगाड़े से बजाने लगे—दिमाग में कांच के टुकड़े से पिसने लगे।

ये तो मालूम नहीं था कि शहजादी के इरादे क्या थे लेकिन तीनों को भली-भांति आभास हो चला कि वो जबरदस्त खतरे में थे और उनके साथ बुरा-ही-बुरा होने वाला है।

सोफिया के दूध का चमत्कार
अपनी जादुई लेखनी से बिखेरने वाले

आशीर्वाद पण्डित

के दिमागरूपी धनुष से निकल रहा है

चौंतीसवां **नया** उपन्यास

मेरा लाल दुश्मनों का काल

नया उपन्यास

जी हां, केशव का लाड़ला, सोफिया के जिगर का टुकड़ा, राजन शुक्ला की आंखों का तारा, चांदनी का प्यारा, करतार सिंह का दुलारा, अलफांसे के दिल का सुकून और आप सभी का चहेता।

रहस्य, रोमांच व तेजाबी संवादों से भरपूर वो तेज रफ्तार वाला रोचक उपन्यास, जिसे या तो 'केशव पण्डित' लिख सकता है, या फिर उसका बेटा—

आशीर्वाद पण्डित

पहली-पहली मुहब्बत-सा वो कथानक, जिसे जिन्दगीभर नहीं भुलाया जा सकेगा—

धीरज पॉकेट बुक्स में

- शब्दों के कारीगर
- ◆◆ वाक्यों के बाजीगर
- ◆◆◆ कथानक के जादूगर

आशीर्वाद पण्डित

के दिमागरूपी धनुष से निकल रहा है

चौंतीसवां **नया** उपन्यास

मेरा लाल दुश्मनों का काल

नक्कालों ...

सावधान रहिये। दिमाग के चैम्पियन ***आशीर्वाद पण्डित*** के नये उपन्यास आप सभी को आगाह करते हैं कि नकलचियों से ... दो फर्म **धीरज पॉकेट बुक्स** एवं **तुलसी ... पब्लिकेशन्स** से प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।
केशव पण्डित के पूर्व प्रकाशित 135 उपन्यास तथा सभी नये और 135 उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर ... से प्रकाशित हो रहे हैं—अन्य कहीं से नहीं।

संकट की घड़ी में अच्छों-अच्छों को भगवान याद आने लगता है—वो भी ईश्वर का स्मरण करने लगे।

दिमागों के पटल पर बार-बार एक ही प्रश्न नियॉन साइन की मानिन्द चमचमा रहा था—अब क्या होगा?

□□□

□□□

टोनी के बालों को मुट्ठी में जकड़कर और सफेद चिट्टे दांतों को भींचकर शहजादी उसके बालों को तेज-तेज झटके देते हुये बोली, "फिरंगी कुत्ते! उम्मीद करती हूं कि तूने मुझे पहचान लिया होगा। पहचानेगा भी क्यों नहीं—अपने दोनों पिल्लों के साथ तूने चलती कार में मेरे साथ रेप किया था। अगर बीयर में ड्रग ना मिली होती तो बुरी तरह जख्मी होने के बावजूद भी तुम तीनों का कीमा बना डालती। लेकिन रेप होते वक्त ही पक्का इरादा कर लिया था कि तुम तीनों को बहुत बुरी मौत मारूंगी। तुम सालों जानते नहीं थे कि मैं कौन हूं। मैं आई०एस०आई० की कमाण्डर हूं। अपने मातहतों को हुक्म दे दिया था कि तुम तीनों को किसी भी तरीके से ढूंढ निकालें। तुम तीनों के नाम तो वो ही थे लेकिन तूने पता गलत बतलाया था। सही पता मालूम होने पर तुम्हें वॉच किया गया और फॉलो करके बार में मेरी एक मातहत ने ड्रिंक में बेहोशी की दवा मिलाकर बेहोश कर दिया और दूसरे लोग उठाकर यहां...जंगल में ले आये।"

"माफ...आह...माफ कर डो...आह...।"

"माफ नहीं, साफ करूंगी हरामजादे। तीनों को बहुत बुरी मौत मरना है। अब नीचे खड्डे में डाली गई लकड़ियां जलाई जायेंगी। आग लगा रे हफीज...।"

हफीज नामक युवक ने बिना नम्बर वाली कार की डिक्की से पैट्रोल से भरी जरीकेन निकालकर खड्डे में पड़ी लकड़ियों पर छिड़क दिया—छिड़क क्या दिया—लकड़ियों को पूरी तरह भिगो दिया।

फिर टोनी के बालों को छोड़कर शहजादी ने एक युवक से माचिस ली और तीली को जलाकर खड्डे में डाल दी।

भक्क...की आवाज के साथ लकड़ियां जल उठीं और आग की लपटें ऊंची-ऊंची उठने लगीं। वो लपटें हालांकि टोनी, ज्यैल व रोनी तक तो नहीं पहुंच पा रही थीं—लेकिन उसकी तपिश तीनों को बुरी तरह परेशान करने लगी।

उठता हुआ तीखा धुआं अपनी जलन से तीनों की आंखों में भीषण दर्द उत्पन्न करने लगा।

तीनों चींखने-चिल्लाने लगे और आग की तपिश से बचने के

लिये सिरों को ऊपर उठाने लगे, जिस्मों को झटके देने लगे।

एक वहशी किस्म का ठहाकर लगाने पर बुलन्द आवाज में बोली शहजादी—"चींखों सूअरों...गला फाड़ डालो अपना—लेकिन कोई फायदा नहीं होने वाला। अपने जिस्मों को खूब तेज-तेज झटके मारो। तुम तीनों की डोरियों को पहले से ही आधी-आधी ब्लेड से काट दिया गया है। डोरियों के बल खुलते जा रहे हैं। जल्द ही डोरी टूट जायेंगी और तुम पके फल की तरह आग में गिरोगे...हा...हा...हा...नहीं...तुम तीनों को आग में गिरकर राख नहीं होना है...बिल्कुल नहीं होना है। जिसकी डोरी सबसे पहले टूटेगी—वो ही इस दहकती आग में गिरेगा—बाकी दो को नीचे उतार लिया जायेगा और दूसरी सजा दी जायेगी। अब देखना है कि किसकी डोरी पहले टूटती है और कौन इस आग के हवाले होता है—!"

□□□

□□□

ये जानकर कि डोरी कटी हुई है और टूटती जा रही है, तीनों की सिट्टी-पिट्टी गुल हो गई। इस डर से कि डोरी झटके से टूट ना जाये, तीनों ने जिस्मों को झटके देने बन्द कर दिये और नीचे सुलगती आग की तपिश को बर्दाश्त करने लगे।

लेकिन लपटें थीं कि निरन्तर ऊंची, और ऊंची उठती जा रही थीं—और तीनों की बढ़िया सिकाई कर रही थी। जलन से बचने के लिए तीनों जिस्म को झटका दिये बिना ही सिर को ऊपर उठाने लगे—लेकिन तपिश भी उनका पीछा कर रही थी। पशो-पेश में पड़ गये तीनों कि क्या करें?

आग की तपिश उन्हें ऊपर उठने को विवश कर रही थी तो डोरी के टूटने का भय उन्हें जिस्म को झटके देने की इजाजत नहीं दे रहा था।

तीनों के दिमाग में इस पशोपेश या दुविधा के साथ बार-बार ये प्रश्न भी खड़ा हो रहा था कि उनमें से वो कौन अभागा होगा, जिसकी डोरी टूटेगी और वो आग में गिरकर जल-भुनकर राख हो जायेगा?

गुजर रही वक्त की घड़ी उनके कानों के पर्दों को भेदकर दिमाग के पर्दों पर भी तेज-तेज दस्तक दिये जा रही थी।

फिर एक डोरी टूटी—तीनों में से एक भयवश चींखता हुआ आग उगलते खड्डे में जाकर गिरा और तेजी से झुलसने के कारण बुलन्द आवाज में चींखें मारने लगा—खड्डे से बाहर निकलने को हाथ-पैर फेंकने लगा। वो ज्यैल था, जिसके वस्त्रों में आग लग चुकी

था। वैसे वो शत-प्रतिशत आग से झुलस रहा था और मारे पीड़ा के चीख-चिल्ला रहा था।

वो नम्हें भी आये, जब वातावरण में इन्सानी मांस के जलने की तीखी गन्ध फैलने लगी।

हवा में उल्टे लटके टोनी व रोनी की भी जान सूखी जा रही थी—उन्होंने कभी कल्पना भी ना की थी कि उन्हें अपने परम मित्र का ऐसा अन्जाम होते हुये देखना पड़ेगा।

शहजादी ने सिगरेट सुलगा ली थी, जिसका धुआं नथुनों से उगलकर वो सातों युवकों से आदेश भरे लहजे में बोली, "इससे पहले कि उन दोनों की डोरियां टूट जायें और वो आग में जा गिरें—उन्हें सावधानी के साथ नीचे उतार लो। दोनों पेड़ों के साथ बांध दो इन कुत्तों-कमीनों को—।"

बोलने पर शहजादी सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये आग वाले खड्डे के किनारे पहुंची और बायां हाथ बढ़ाकर ज्वैल से बोली, "आजा...बाहर आजा। आग बर्दाश्त नहीं हो रही है मेरे राजा—दर्द हो रहा है? कोशिश कर--बाहर निकल आ। चल, मैं तेरी मदद करती हूं।"

शहजादी ने एक लम्बी लकड़ी उठाकर उसके एक सिरे को चीखते-चिल्लाते, शोर मचाते ज्वैल तक पहुंचाया और बोली, "पकड़ ना कम्बख्त! अगर ये लकड़ी पकड़कर बाहर नहीं आयेगा तो जल-भुनकर कबाब हो जायेगा। जल्दी कर...पकड़ ले ये लकड़ी—मैं तुझे बाहर खींच लूंगी...प्रॉमिस—।"

ज्वैल ने झुलस चुके हाथों से लकड़ी को पकड़ लिया और शहजादी लकड़ी के साथ उसे भी अपनी तरफ खींचने लगी।

उसने ज्वैल को खड्डे से बाहर निकाल ही लिया।

आग की लपटों से मुक्ति पाने की ललक में ज्वैल गिरता-पड़ता झील की तरफ बढ़ने लगा—लेकिन फिर वो गिर पड़ा।

आग की पीड़ा से मुक्त होने को वो जमीन पर इधर-से-उधर और उधर-से-इधर पलटियां खाने लगा।

पता नहीं कि उसके प्रयास से या स्वयं ही आग बुझ गई।

उसके गोरे से स्याह हो चुके जिस्म से धुआं अभी भी उठ रहा था।

"हाय...क्या हाल हो गया मेरे एक रात के दूल्हे का...।" उसके करीब पहुंचकर शहजादी ने ठोकर मारकर उसे पलट दिया और जहरीले से लहजे में बोली, "नहीं, मैं तुझे इस रूप में नहीं देख सकती। फिरंगी तो गोरा-चिट्टा ही बढ़िया लगता है। ये काला रंग अफ्रीकियों को ही सूट करता है। तो फिर क्या किया जाये—तुझे काले से गोरा बनाने के वास्ते मुझे क्या करना चाहिये? मेरे पास एक सॉलिड तरीका है—मैं इस काली खाल को खींचकर तेरे जिस्म से अलग कर दूं तो...तो?"

□□□

आगे जो हुआ, उसे देखकर पेड़ों के साथ बंधे खड़े टोनी व रोनी के कलेजे मुंह को आ गये।

क्या कहा—वो दोनों तो उल्टे लटके हुये थे?

हां, पहले लटके हुये थे—लेकिन शहजादी का आदेश होने पर उसके मातहतों ने दोनों को सावधानी के साथ नीचे उतारकर दो पेड़ों के साथ खड़ा करके बांध दिया था और दोनों ज्वैल की पीड़ा-भरी चीखें व कराहटों को सुनते हुये शहजादी का वो कृत्य देख रहे थे, जिसे देखकर बड़े कलेजे वाले को भी घबराहट हो सकती थी।

जैसे कोई उबले हुये आलू का छिलका उतार देता है—वैसे ही शहजादी ज्वैल की झुलसी हुई काली पड़ चुकी खाल को नाखूनों की मदद से गोश्त से अलग करके झटके से मारकर जिस्म से अलग कर रही थी तथा जमीन पर डाले जा रही थी।

आधा घण्टा लगा उसे पूरी खाल को उधेड़कर जिस्म से अलग करने में।

खाल विहीन जिस्म बड़ा ही अजीब लग रहा था—कहीं पर सफेद मांस दिखलाई पड़ रहा था तो कहीं पर खून छलक उठा था—कहीं पर फुहार-सी रिस रही थी।

"कबाब तैयार है दोस्तों।" शहजादी रुमाल से खून सनी हथेलियों को पोंछते हुये अपने मातहतों से बोली, "लेकिन बिना नमक और मिर्च के वो मजा नहीं देगा। नमक-मिर्च तो लाये हो ना? दो जरा...।"

एक युवक ने नमक व पिसी मिर्च की थैलियां लाकर दीं।

शहजादी ने पहले नमक की थैली फाड़ी तथा एक किलो नमक को खाल विहीन जिस्म पर छिड़कने लगी।

जल बिन मछली की मानिन्द ही तड़पने लगा ज्वैल।

नमक के पश्चात् मिर्च का छिड़काव।

चीखता रहा ज्वैल और शहजादी के मुख से वहशी किस्म के बुलन्द ठहाके गूंजते रहे।

टोनी व रोनी की हालत मारे खौफ व दहशत के बद से बदतर हुई जा रही थी।

ज्वैल की चीखें शनैः-शनैः कराहटों में परिवर्तन हो गई तथा उसके जिस्म की तड़प भी कम होती जा रही थी।

एक समय वो भी आया, जब कराहटें भी शान्त हो गई तथा जिस्म की हलचल भी।

प्राण त्याग चुका था वो।

"न...नहीं...!" शहजादी को अपनी तरफ बढ़ते देख रोनी वन्धनमुक्त होने की भरसक चेष्टा करते हुये घिघिया उठा, "मु...मुझे माफ कर डो...मैंने जो भी किया ठा...टोनी के कहने पर...टुम्हें रेप करने का प्लान इसी कुट्टे ने बनाया ठा...।"

"मैं...मैं शराब के नशे में ठा...।" पसीने-पसीने हुये जा रहा टोनी जार-जार रोते हुये वो गिड़गिड़ाया, "डिमाग खराब हो गया ठा मेरा...।"

"लेकिन अब मेरा दिमाग खराब हो गया है...।" दोनों के करीव पहुंचने पर ठिठकी शहजादी और गुलाबी होंठों पर घातक किस्म की मुस्कान रेंगने पर सर्द लहजे में बोली, "जहर से लबालब भरी नागिन हूं ना—चोटिल करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्श नहीं सकती। जब तक इन्तकाम का सारा जहर तुम दोनों की जिन्दगी में उतारकर मौत का कफन नहीं ओढ़ा देती—चैन की सांस नसीब ना होगी मुझे। हाय...कार में तो बहुत खुश थे। अपनी हवस का जहर मुझमें उतारते वक्त बहुत इतरा रहे थे—फूले नहीं समा रहे थे। उन खुशनुमा लम्हों को याद करो ना सालो। तब तुम मेरी बेबसी और तड़प का लुत्फ उठा रहे थे—अब बारी मेरी है। चलो, तुम भी क्या याद करोगे। मैं तुम दोनों में से एक की जान बख्श सकती हूं...।"

"मे...मेरी जान बख्श डो...प्लीज...।"

"न...नहीं...इस कुट्टे की नहीं...इसी के कहने पर मैंने और ज्वैल ने भी तुम्हारी इज्जट लूटी ठी। टुम मेरी जान बख्श डो—।"

"नहीं, मुझे छोड़ डो...टुम्हें टुम्हारे खुडा की कसम हाय...।"

"टुम्हें उसकी कसम हाय...जिसे टुम डुनिया में सबसे ज्याडा मुहब्बट करटी हो...।"

"दोनों अपनी चोंच बन्द करो। ऐसी बातें करके तुम मेरे रहम के काबिल नहीं बन सकते हो। तुम दोनों के बीच एक मुकाबला होगा। जो भी मुकाबला जीतेगा...उसकी जान बख्शी जायेगी।"

"कैसा मुकाबला—?"

"कौन-सा मुकाबला—?"

"तुम दोनों को खोला जायेगा। तुम दोनों एक-दूसरे की जान लेने की कोशिश करोगे। यानि तुम दोनों के दरमियान आर-पार वाली

जंग होगी। ये जंग तब तक चलेगी, जब तक कि दोनों में से एक अपनी जान नहीं गंवा देगा। जो जिन्दा बचेगा, वो यहां से अपने घर जा सकेगा। यानि अपनी जान बचाने के वास्ते तुम्हें दूसरे की जान लेनी होगी। मेरे मातहतों के हाथों में थमे हथियार तो देख ही रहे हो। अगर दोनों ने...या दोनों में से किसी एक ने भागने की जुर्रत की तो...गोलियों से भून दिया जायेगा। क्या तुम दोनों इस जानलेवा मुकाबले के वास्ते हांमी भरते हो? मुकाबला करना चाहते हो? या मैं तुम दोनों को ही कुत्ते की मौत मार डालूं—?"

❑❑❑

❑❑❑

रोनी की लाश झील के किनारे पड़ी थी और करीव ही जख्मी हालत में पड़ा टोनी कराहे जा रहा था और उस कुत्ते की मानिन्द हांफे जा रहा था, जिसे लाठी-डन्डों से मार-मारकर खूब दौड़ाया गया हो!

दरअसल दोनों के बीच जबरदस्त फाइट हुई थी।

अपनी जान बचाने के लिये दूसरे की जान लेनी ही थी—सो दोस्ती और भाईचारा ताक पर रखकर दोनों एक-दूसरे पर प्राण-घातक हमले करते चले गये थे।

एक पल तो वो भी आया, जब रोनी ने टोनी का गला दबोच लिया था और चाहकर भी टोनी अपना गला नहीं छुड़ा पाया था। उसका चेहरा सुर्ख पड़ गया था और आंखें कटोरियों से बाहर निकलने लगी थीं। मुंह से 'घों...घों...घों...घों' की जैसी घुटी-घुटी आवाज ही निकल पा रही थी।

सांसों की डोरी टूटना ही चाहती थी कि अचानक ही रोनी को बड़े जोरों की लगातार तीन छींक आई और टोनी के गले पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई थी—इसी अवसर का लाभ उठाकर टोनी ने उसकी कलाइयां पकड़कर उसकी हथेलियां गले पर से अलग कीं और सिर उठाकर माथे से उसके चेहरे पर ऐसी टक्कर मारी कि उसकी नाक फूट गई और खून बहने लगा था।

फिर टोनी ने रोनी को अपने ऊपर से धकेला और उठकर एक पत्थर उठाकर उसके सिर पर पटक दिया।

फिर उसने रोनी को कोई मौका दिये बिना उस पर उसी खून से सने पत्थर से ताबड़-तोड़ हमले किये और उसके जिस्म से प्राण निकलने पर ही रुका था।

वह उखड़ी सांसें समेटने पर उठा तथा धुत्त शराबी की मानिन्द ही झूमते हुये शहजादी से बोला, "मैंने रोनी को मार डिया हाय अब

ये फाइट जीत ली हाय। क्या मैं अपनी कार में बैठकर अपने घर जा सकट...अ...आ...आहऽऽऽ।"

शहजादी ने आगे बढ़कर घुटने का जबरदस्त प्रहार टोनी के गुप्तांग पर कर दिया।

हथेलियों को पेट के नीचे सटाकर झुका टोनी।

जिस्म का समूचा खून मानो चेहरे पर सिमट आया।

सुर्ख तथा आंसुओं से भीगी आंखें कटोरियों से बाहर कूद पड़ने को तत्पर थीं।

मुंह तो सुरसा के मुंह की मानिन्द ही खुला हुआ था, लेकिन आवाज रास्ते में ही कहीं ट्रेफिक जाम में फंसी गाड़ी की मानिन्द ही फंसी रह गई थी।

उसकी कनपटी पर भीषण किस्म का घूंसा जड़कर गिरा दिया शहजादी ने और उसके चेहरे पर जूते समेत दायां पैर रखकर हिंसक लहजे में फुफकारी-सी, "कुतिया के पिल्ले! मेरे साथ रेप करके तूने ये कैसे सोच लिया कि मैं तुझ पर रहम कर दूंगी? झूठा वादा था मेरा कि दोनों में से जो भी जंग जीतेगा, उसकी जान बख्श दी जायेगी। एक मर्तबा इच्छाधारी नागिन अपने दुश्मन को बख्श सकती है लेकिन शहजादी नहीं। चेन-सॉ लाना रे कबीर...।"

कबीर नाम का युवक चेन-सॉ ले आया, जो कि बैट्री से चलती थी तथा एक मिनट से पहले ही पेड़ के मोटे तने को काट सकती थी।

इधर शहजादी ने चेन-सॉ पकड़ी और उधर टोनी गिरते-पड़ते भागा।

"नहींऽऽऽ!" चीखकर बोली शहजादी, "कोई भी उसे जान से नहीं मारेगा। अभी उसके साथ खेलना है मुझे। पैर पर ही गोली चलाई जाये।"

एक युवक ने रिवॉल्वर से गोली चलाई जो कि भाग रहे टोनी के बायें पैर की पिंडली में पेवस्त हो गई।

वह त्योराकर औंधे मुंह गिरा और बुरी तरह छटपटाते हुये चीखने-चिल्लाने लगा।

शहजादी बड़े आराम से चलते हुये उसके करीब पहुंची और चेन-सॉ का बटन दबा दिया।

घूं...घूं की तेज आवाज के साथ उपकरण में लगी आरी चेन के साथ घूमने लगी।

"न...नहीं...।" भयाक्रान्त टोनी पीछे की तरफ खिसकते हुये रोने व गिड़गिड़ाने लगा, "मु...मुझे माफ कर दो...माफ कर दो...।"

लेकिन शहजादी के इरादे माफ करने वाले भला कहां थे—उसने टोनी के गोली लगे पैर पर तेजी के साथ घूमती आरी का ब्लेड रख दिया—

जैसे पैनी धार वाले चाकू से कोई मूली कट जाती है—ऐसे ही टोनी का पैर घुटने से कटकर जमीन पर जा गिरा।

टोनी की चीखें मानो बेताबी के साथ आसमान तक पहुंचने का प्रयास कर रही थीं।

चेन-सॉ एक युवक को पकड़ाकर शहजादी ने कटे हुये पैर को निःसंकोच उठा लिया और उसे तलवार की मानिन्द भांजते हुये खून की छींटें इधर-उधर उड़ाते हुये हंसने लगी।

मानो अमावस की रात में कोई डायन श्मशान घाट में पहुंची हो और किसी मुर्दे का लहू पीने पर अट्टहास करने लगी हो।

फिर कटे पैर को फेंककर उसने रोते-तड़पते टोनी की पसलियों पर ठोकर मारने पर कहा—"दर्द हो रहा है सूअर के बच्चे? मुझे भी दर्द हुआ था, जब तूने मुझे रेप किया था। चल, एक गेम खेलते हैं। मैं अपना बांया पैर बांधकर तेरे जैसी हो जाती हूं। तू मुझसे बीस कदम आगे होगा। फिर हम दोनों के बीच रेस होगी। वो सामने रेलवे ट्रेक दिखलाई पड़ रही है ना? अगर तू उस रेलवे ट्रेक तक पहुंचने में कामयाब हो गया तो तेरी छुट्टी। इस मर्तबा कोई वादा खिलाफी नहीं। वास्तव में ही तुझे बख्श दूंगी। लेकिन...लेकिन मैंने तुझे रेलवे ट्रेक से पहले ही पकड़ लिया तो फिर चेन-सॉ से तेरी बोटी-बोटी कर डालूंगी। चल, तैयार हो जा...पांच मिनट में अपनी रेस शुरू होगी। देखते हैं कि ये रेस कौन जीतता है—!"



उभरे पेट वाली रीटा अपने पति विलियम की लाश से लिपटकर रोने लगी और इंग्लिश में विलाप भी करने लगी।

तब वहां पुलिसवालों के साथ-साथ सी०आई०ए० का एक बड़ा अफसर सांडर्स भी उपस्थित था, जो कि रीटा का पिता भी था।

अपने दामाद की हत्या से सांडर्स काफी दुःखी व परेशान था। उसने ही आगे बढ़कर अपनी बेटी रीटा को विलियम की लाश से अलग किया और उसके आंसू पोंछकर सांत्वना देने लगा।

"विलियम को शहजादी ने ही मारा है डैड...।" इंग्लिश में बोली रीटा।

"शहजादी...?" चौंककर बोला सांडर्स, "कौन शहजादी—?"

"वो पाकिस्तानी है डैडी। वाशिंगटन में मेडिकल कॉलेज में

पढ़ती है और हॉस्टल में रहती है। लेकिन पढ़ाई तो सिर्फ बहाना है। वो आई०एस०आई० से जुड़ी हुई है और किसी खतरनाक मिशन पर काम कर रही है। उसने मार्कोनी साहब को अपने जाल में फंसा लिया था और उनके जरिये व्हाइट हाउस में गड़बड़ी करने के चक्कर में थी...।"

"ले...लेकिन...तुम ये सब कैसे जानती हो रीटा—?"

"रात मेरी तबियत खराब हो गई थी। मैंने फोन करके विलियम को अपने पास बुला लिया था। विलियम ने ही सारी बातें बतलाई थीं...।"

"ओह...लेकिन मार्कोनी की भी तो हत्या हो चुकी थी...।"

"वो हत्या विलियम ने ही की थी डैडी—।"

"लेकिन क्यों?"

"वो मार्कोनी को शहजादी के चंगुल से निकालना चाहते थे—लेकिन मार्कोनी पर तो शहजादी का पूरा रंग चढ़ा हुआ था। वो विलियम की बात मानने को तैयार ही नहीं थे। व्हाइट हाउस, राष्ट्रपति, सी०आई०ए० और देश की भलाई के लिये विलियम ने मार्कोनी को मार दिया था। फिर वो शहजादी को किडनेप करके यहां ले आया था। उसका मकसद शहजादी को टॉर्चर करके उससे उसकी हकीकत मालूम करना था—उसके इरादे मालूम करना था। मेरा फोन आने पर विलियम शहजादी को रहमान के हवाले करके मेरे पास आया था। लगता है कि शहजादी किसी तरह मुक्त हो गई थी। उसने रहमान की हत्या कर दी और फिर विलियम को भी बुरी मौत मार दिया...।"

सांडर्स का पहले से ही लाल चेहरा मारे क्रोध के चुकन्दर के रंग जैसा हो गया और कत्थई रंग की आंखों में खून के कतरे-से भरते चले गये।

रीटा को अपने सीने से लगाकर और उसके सिर पर स्नेह से हथेली फिराते हुये गुर्रा-सा उठा वह, "विलियम की हत्या का बदला लिया जायेगा मेरी बेटी। शहजादी को गिरफ्तार करके उसके सारे गुनाह कबूलवाये जायेंगे और उसको मौत की सजा दिलवाई जायेगी। लेकिन इन्टेरोगेशन रूम में पूछताछ के बहाने मैं उसे ऐसी-ऐसी यातनायें दूंगा कि उसकी आत्मा भी बिलबिला उठेगी। तुम देखना कि मैं उसका क्या हस्र करता हूं—!"

❑❑❑

❑❑❑

'मरता क्या नहीं करता' वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी टोनी पर।

संशय था कि शहजादी अपना वादा पूरा करते हुये उसे बख्श देगी—लेकिन फिर भी 'चेन-सॉ' की भीषण मार से बचने हेतु वो रेस के लिये तैयार हो गया।

किसी बगुले की मानिन्द ही वो एक टांग पर फुदकते हुये रेलवे ट्रेक की तरफ बढ़ने की चेष्टा कर रहा था और पीड़ा को हजम करने की चेष्टा कर रहा था।

कटे पैर से खून की धार जमीन पर गिरी जा रही थी।

शहजादी ने भी अपने बायें पैर को घुटने पर से पीछे की तरफ मोड़कर मफलर से बांधा हुआ था और वो दायें पैर से ही दौड़ रही थी—

"चल मेरे घोड़े टिक-टिक...चल मेरे घोड़े टिक-टिक। रेल की पटरी तक जाना है—खुद को चेन-सॉ से बचाना है। मगर तू ये रेस हार जायेगा—तेरा जिस्म चेन-सॉ से कट जायेगा। एक-एक हिस्से को काटूंगी ऐसे—सब्जी काट दी जाती है जैसे। दम लगाकर दौड़ तू—मुझको पीछे छोड़ तू...।"

कटे हुये पैर की भीषण पीड़ा को नजरअन्दाज करने की चेष्टा के साथ एक पैर पर तेज दौड़ने की चेष्टा कर रहा था टोनी और इस प्रयास में पसीने-पसीने हुये जा रहा था।

शहजादी टोनी से थोड़ा पीछे ही थी। उसके साथ सातों युवक भी दौड़ रहे थे। उनमें से एक के हाथों में चेन-सॉ थी—बाकी के हाथों में हथियार थे।

टोनी झील के किनारे-किनारे फुदकते हुये आगे बढ़ा जा रहा था और दमे के मरीज की मानिन्द हांफे भी जा रहा था—जान का लालच ही था, जो उसे दौड़ने या फुदकने पर विवश किये जा रहा था।

जैसे-तैसे करके वो रेलवे ट्रेक के करीब पहुंचा ही था कि तड़ाक...से एक पत्थर उसके सिर के पृष्ठ भाग से आकर टकराया और वो घुटी-घुटी सी चींख के साथ जमीन पर औंधे मुंह जा गिरा—इस पर भी सीने, पट व एक पैर के बल वो किसी सांप की मानिन्द रेंगा और रेलवे ट्रेक पर हथेली रखकर चींख-चींखकर बोला, "मैं...मैं जीत गया...मैं रेस जीत गया। मैंने रेलवे ट्रेक को पहले छुआ हाय...टुमने मुझे पट्ठर से मारा...फिर भी मुझसे हार गई...अब मुझे छोड़ डो...मुझे मेरे घर जाने डो...मेरा एक पैर काटकर टुम मुझे सजा डे चुकी हो...ओ...आह...आह...।"

"एक पैर के कटने से भला क्या होता है...?" उसके पेट पर ठोकर जड़कर बोली शहजादी, "जब तक तुझे तड़पा-तड़पाकर कुत्ते

को मौत नहीं मार दूंगी...मेरे दिल को ठण्डक नहीं पहुंचेगी।"

फिर शहजादी ने अपने बन्धे पैर को खोला और चेन-सॉ लेकर टोनी पर झपट पड़ी।

देखते-ही-देखते उसने टोनी का दूसरा पैर भी काट दिया।

सिर्फ पैर ही क्या...उसके दोनों हाथों को भी काट दिया और उसे खींच-घसीटकर रेलवे ट्रेक के बीचो-बीच पटक दिया।

फिर वो रोते-तड़पते टोनी के सीने पर आलथी-पालथी मारकर बैठ गई और सिगरेट में कश लगाने पर बोली, "तेरे दोनों पैर भी गये और हाथ भी नहीं रहे। जीकर क्या करेगा बे? किसी काम का नहीं रहा तू...।"

"मु...मुझे माफ कर डो...गॉड के वास्टे मुझे मट मारो... आह...आह...।"

"नहीं—मैं तुझे नहीं मारूंगी पगले। क्योंकि तुझे मारने वाली ट्रेन आ रही है...सीटी बजाते हुये...वो देख...।"

एक दिशा से व्हिसल बजाती ट्रेन दौड़ी चली आ रही थी।

"न...नहींऽऽऽऽ!"

शहजादी उसके सीने से उठकर रेलवे ट्रेक से दूर जा खड़ी हुई।

ट्रेन करीब आती जा रही थी और टोनी पूरे जोर लगाने पर भी कटे हाथों-पैरों के कारण ट्रेक से हट नहीं पा रहा था।

शोर मचाती ट्रेन आई और धड़धड़ाते हुये गुजरने लगी—उसके शोर में टोनी की चीखें भी दबकर रह गई।

❑❑❑

❑❑❑

शहजादी अपने मातहतों के साथ वापिस लौटी और बोली—"तीनों लाशों को छूना भी नहीं है हमें। लेकिन अपने खिलाफ कोई सबूत नहीं छोड़ना है। गौर से देख लो कि अपने खिलाफ कोई सबूत तो नहीं छूट रहा है। टोनी की कार को झील में डुबो दो और अपने सामान समेटकर गाड़ियों में डाल लो—।"

सातों युवकों ने मिलकर टोनी की कार की तलाशी ली और फिर उस पर से सभी फिंगर प्रिंट्स साफ करने पर झील के भीतर पहुंचा दिया।

चेन-सॉ समेत सारा सामान दोनों कारों में पहुंचा दिया और वहां से चलने की तैयारी होने लगी—तभी शहजादी का फोन गुनगुना उठा।

कॉल करने वाली उसके साथ मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाली मुमताज थी, जो कि हॉस्टल में उसकी ही रूम पार्टनर थी—साथ ही वो आई०एस०आई० से भी वाबस्ता थी—

"हैलो, मैडम! कहां हो आप—?"

"जंगल में ही हूं मुमताज। बस, चलने की तैयारी हो रही है। तीनों कुत्तों का काम तमाम कर दिया है। लेकिन तुम घबराई हुई मालूम पड़ रही हो। क्या बात है—?"

"बहुत बड़ी गड़बड़ी हो गई है, मैडम। पुलिस फोर्स के साथ सी०आई०ए० का बड़ा अफसर सांडर्स आया था, जो कि विलियम का ससुर भी है। उसे आपकी तलाश थी। कॉलेज के साथ हॉस्टल की भी तलाशी ली गई। मुझसे भी पूछताछ की गई—लेकिन मैंने बोल दिया कि मुझे नहीं मालूम कि आप कहां हैं—हम दोनों के बीच किसी बात पर तकरार हो गई थी तो हमारे बीच बोलचाल बन्द है। सांडर्स ने कॉलेज और हॉस्टल में पुलिसवाले तैनात कर दिये हैं और कॉलेज के रिकॉर्ड से आपकी फोटो भी ले गया है...।"

"लेकिन उसे मेरी तलाश क्यों है मुमताज—?"

"विलियम के कत्ल के वास्ते...।"

"व्हाटऽऽऽ?" चिहुंककर बोली शहजादी, "लेकिन उसे ये बात कैसे मालूम हुई—?"

"ये तो मालूम नहीं मैडम।"

"लेकिन मैं समझ गई...।" आंखें सिकोड़कर बोली शहजादी, "विलियम मुझे अपने नौकर के हवाले करके अपनी बीवी से मिलने गया था। मुझे उम्मीद नहीं थी, लेकिन लगता है कि विलियम ने अपनी बीवी को मेरे बारे में बतला दिया होगा। विलियम के कत्ल की जानकारी मिलने पर उसकी बीवी ने मेरे बारे में बतला दिया होगा। चूंकि सांडर्स विलियम का ससुर है तो उसका बिलबिलाना तो बनता है। वो पागलों की तरह ही मुझे तलाश कर रहा होगा...।"

"अब क्या होगा मैडम—?"

"डोन्ट वरी...।" निश्चिन्त भाव से बोली शहजादी, "मैं इतनी आसानी से किसी के हाथ आने वाली नहीं हूं। हां, अब मुझे अण्डरग्राउन्ड होना पड़ेगा। तू अपने फोन से तो बात नहीं कर रही है ना—?"

"नहीं। डुप्लीकेट आई०डी० वाले सिम का इस्तेमाल कर रही हूं मैं मैडम।"

"गुड! ऐसी होशियारी बेहद जरूरी है। वैसे तुम मेरी रूममैट हो और पाकिस्तानी भी हो। इसलिये पुलिस या सांडर्स मेरे हाथ ना लगने पर तुम्हें हिरासत में ले सकता है। बेहतर होगा कि तुम किसी तरह वहां से निकल लो और दस नम्बर वाले अड्डे पर पहुंच जाओ।"

इतना बोलने पर शहजादी ने फोन बन्द कर दिया और सातों

युवकों से बोली, "अपनी पोल खुल गई। पुलिस और सी०आई०ए० को मालूम पड़ गया कि विलियम को मैंने कत्ल किया था। सी०आई०ए० का बड़ा अफसर सांडर्स विलियम का ससुर है। वो पुलिस के साथ कॉलेज और हॉस्टल पहुंचा था...।"

"ओह...ये तो बहुत बुरा हुआ मैडम जी...।"

"कुछ बुरा नहीं हुआ रे जमशेद। डॉक्टरी की पढ़ाई मेरा मकसद है ही नहीं, जो मुझ पर फर्क पड़ेगा। मेडिकल कॉलेज को तो मैं ढाल के रूप में ही इस्तेमाल कर रही थी। अब मुझे अन्डरग्राउन्ड रहकर अपने काम करने हैं। अब मैं खुलकर खेल सकूंगी। अब अपनी जंग खतरनाक रूप में आ जायेगी। अब मैं अपने प्लान चेंज करूंगी और बड़ी-बड़ी वारदातों को अंजाम दूंगी। अमेरिकियों को बतलाऊंगी कि शहजादी किस बला का नाम है—।"

शहजादी का चेहरा ज्वालामुखी के मुहाने सरीखा ही हो चला था।



अनुष्का के जन्मदिन को शानदार तरीके से सेलीब्रेट कर रहा था मिर्जा बेग—जिसके लिये उसने फाइव स्टार होटल के बड़े हॉल में पार्टी रखी थी।

सुसज्जित हॉल में वर्दीधारी वेटर्स मेहमानों को कॉफी व कोल्ड ड्रिंक के साथ मेवों वाले छोटे समोसे, छोटे रसगुल्ले, काजू की बर्फी, पनीर के पकौड़े सर्व कर रहे थे।

हॉल के एक तरफ खाने-पीने की स्वादिष्ट वस्तुओं के स्टॉल्स सजाये गये थे तो एक गोलाकार स्टेज पर फिल्म इन्डस्ट्रीज के उभरते हुये कलाकार मौहम्मद रफी, किशोर कुमार, लता मंगेशकर तथा आशा भौंसले के सुपर हिट गाने गाकर मेहमानों का मनोरंजन कर रहे थे।

हॉल के बीचो-बीच एक बड़ी मेज पर जापानी गुड़िया के जैसा खूबसूरत केक सजाया गया था, जिस पर रंग-बिरंगी मोमबत्तियां लगी थीं।

मिर्जा बेग और अनुष्का, दोनों ही केशव के घर पर पार्टी के लिये आमन्त्रित करने गये थे और कई-कई बार निवेदन किया था कि वो सपरिवार ही पधारें।

सो केशव के साथ सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह, श्वेता और नौकर मुंशी होशियारचन्द भी पधारा था।

मिर्जा बेग तथा अनुष्का ने आगे बढ़कर सभी का हार्दिक

स्वागत किया तो उन लोगों ने भी अनुष्का को गिफ्ट पैक देकर उसे जन्मदिन की बधाइयां दीं।

पार्टी में मुश्ताक भी आया हुआ था—उसने नजदीक आकर केशब, सोफिया, राजन, करतार सिंह, चांदनी व श्वेत के हाथ जोड़कर नमस्कार की।

"तुम कश्मीर से कब आये मुश्ताक—?" पूछा केशव ने।

"कल शाम ही आया था भाईजान...।" वह उत्साहित भाव से बोला, "मेरा टूर बहुत सक्सेज रहा। हमने कश्मीर के उन इलाकों में जाकर नुक्कड़ नाटक किये, जहां पर कभी आतंकियों की घुसपैठ रहती थी। नाटकों के जरिये हमने उन लोगों को ये मैसेज दिया कि पाकिस्तान आई०एस०आई० आतंकी संगठनों और कुछ धार्मिक नेताओं के जरिये उन्हें उकसाकर अपने फायदे के लिये ही हिन्दुस्तान के खिलाफ मुहिम चलाता रहता है—जिसका खामियाजा उन्हीं लोगों को भुगतना पड़ रहा है। उनके फायदे की बात इसी में है कि वो हिन्दुस्तान के वफादार बने रहकर मादरे वतन और वतन-परस्ती को कायम रखें। अगर हिन्दुस्तान खुशहाल है तो वो भी खुशहाल रहेंगे और तरक्की करेंगे—वरना हिन्दुस्तान का कम, उनका ज्यादा नुकसान होगा...।"

"बहुत बढ़िया काम कर रहे हो तुम मुश्ताक...।" केशव उसकी पीठ थपथपाकर बोला, "हिन्दुस्तान को तुम जैसे लोगों की सख्त आवश्यकता है। तुम्हारा ट्रेनिंग सैन्टर कैसा चल रहा है मुश्ताक—?"

"खुदा की मेहरबानी से बहुत बढ़िया। मेरे असिस्टेन्ट जावेद ने परसो फोन पर बतलाया था कि कुछ गुन्डों ने एक लड़की के साथ बदतमीजी की तो मेरे यहां ट्रेनिंग लेने वाली चार लड़कियों ने गुन्डों को मार-मारकर भुर्ता बना दिया और फिर पुलिस के हवाले कर दिया। यही तो चाहता हूं मैं कि अपने देश की लड़कियां, औरतें अपनी हिफाजत खुद करें और इतनी ताकतवर बन जायें कि कोई भी गुण्डा, बदमाश उनके साथ बदतमीजी करने की जुर्रत नहीं कर सके। अस्सलामु अलैकुम मिर्जा साहब...।"

"व अलै कुमुस्सलामु मुश्ताक मियां...।" करीब आकर मिर्जा बेग मुश्ताक के कन्धे पर हथेली रखकर बोला, "अनुष्का ने तुम्हारे ट्रेनिंग सैन्टर पर जाना शुरू कर दिया है मियां। उसे मार्शल आर्ट में इतनी माहिर कर देना कि वो मुसीबत पड़ने पर अपनी हिफाजत कर सके...।"

"वो ना सिर्फ अपनी हिफाजत करेगी मिर्जा साहब—बल्कि

दूसरे मजलूमों की भी हिफाजत करेगी। मेरा तो मकसद ही यही है कि हमारी मां, बहनें, बेटियां एक फौजी की तरह बहादुर और फाइटर हों...।"

"इन्शा अल्लाह तुम इस नेक मकसद में जरूर कामयाब होंगे मुश्ताक मियां। मैं हर साल की तरह इस बार भी एक बस अजमेर वाले ख्वाजा जी की जियारत के वास्ते ले जा रहा हूं। खाने-पीने और रास्ते में ठहरने की सारी व्यवस्था होगी। परसों दोपहर को रवानगी होगी। तुम भी चलो—।"

"मैं तो कई दिनों का टूर करके कश्मीर से वापिस लौटा हूं मिर्जा साहब! अब अपने ट्रेनिंग सैन्टर पर तवज्जो देनी चाहूंगा...।"

"सैन्टर को सम्भालने के वास्ते तो तुमने कई असिस्टेन्ट रखे हुये हैं मियां। मैं भी जा रहा हूं। संग-साथ हो जायेगा। चलो भी...अजमेर वाले ख्वाजा जी की जियारत हो जायेगी। चलो भी मियां—क्यों नखरे करते हो—?"

"जब मिर्जा साहब इतने अपनेपन से बोल रहे हैं तो तुम्हें अजमेर हो आना चाहिए मुश्ताक...।" बोलने वाला केशव था।

"आपका हुक्म सिर माथे पर भाईजान...।" सीने पर हथेली रखकर और सिर को झुकाकर बोला मुश्ताक, "सालों से अजमेर जाने की तमन्ना थी लेकिन कभी ये ख्वाहिश पूरी ना हो सकी। मिर्जा साहब के साथ वहां हो आता हूं। ख्वाजा जी के दरबार में अपने मुल्क की तरक्की और चैनो-अमन की दुआ करूंगा—।"

"चलिये, केक कटवा देते हैं।" मिर्जा बेग सभी से बोला, "अनुष्का केक वाली मेज के करीब पहुंच चुकी है। खुदा मेरी बच्ची को लम्बी उम्र दे...आइये, केक कटवाते हैं...।"

सभी केक वाली मेज की तरफ बढ़ गये।




पचास वर्षीय उस लाल बालों व लाल दाढ़ी वाले का नाम बशीर था, जो कि कश्मीर का रहने वाला था। उसने पाकिस्तान में जाकर ट्रेनिंग सैन्टर में आतंकवाद की बाकायदा ट्रेनिंग ली थी और वो टाइम-बम तैयार करने में माहिर था।

एक आतंकी के रूप में उसने कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में कई बड़ी वारदातों को अन्जाम दिया था। बशीर सुरंगें लगाकर तो मिलिट्री के कई वाहनों को जवानों के साथ उड़ा चुका था।

पांच लाख का इनाम घोषित होने तथा मिलिट्री का दबाव बढ़ जाने पर वो पाकिस्तान भाग गया था और तीन वर्षों से वहीं रह रहा था।

वो छह महीने पहले ही वापिस लौटा था और मौलवी बनकर भीतर-खाने वहां के युवाओं को हथियार उठाने को उकसा रहा था—कई युवकों को ट्रेनिंग के वास्ते पाकिस्तान भेज चुका था।

कश्मीर में आने पर चंगेज खां ने उसे अपने अड्डे पर बुलवाया था, लेकिन सावधानी के तौर पर जंगल में ही चंगेज खां के आदमियों ने उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी थी और पट्टी बांधकर ही जंगल में छुड़वाया था।

चंगेज खां ने उसे बाबर से मिलवाया था और बतलाया था कि बाबर को हिन्दुस्तान में आई०एस०आई० का कमाण्डर बना दिया है और उसे बाबर के अधीन होकर काम करने हैं।

दाढ़ी-मूंछ वाले फेसमासक में अपने चेहरे को छिपाये हुये बाबर ने आवाज बदलकर ही उससे बात की थी और उसे एक पता देकर मुम्बई पहुंचने को कहा था, जहां उसे आतंकियों के एक ग्रुप का कमाण्डर बनकर काम करना था।

बाबर ने अपनी हथेली की सभी उंगलियों व अंगूठे को रबर की मानिन्द ही उल्टी तरफ मोड़कर कहा था कि जरूरत पड़ने पर वो जब भी उसके सामने आयेगा तो उसने हुलिया बदला हुआ होगा, लेकिन वो हाथ की उंगलियों को विपरीत दिशा में मोड़कर अपनी पहचान देगा और ट्रांसमीटर पर वो 'बाबर हूं हिन्दुस्तान का' बोलकर कोड वर्ड इस्तेमाल करेगा, ताकि ये गारन्टी रहे कि सम्पर्क करने वाला बाबर ही है।

बशीर मुम्बई चला गया था, जहां उसे पचास आतंकियों का कमाण्डर बना दिया गया था और जल्दी ही कोई बड़ी वारदात करने को तैयार रहने को बोल दिया गया था।

ट्रांसमीटर पर 'बाबर हूं हिन्दुस्तान का' बोलकर बाबर ने अपना परिचय दिया था और जरूरी काम से मुलाकात करने के वास्ते एक पुराने किले के खण्डहर में बुलाया था—वो भी रात के बारह बजे।

बारह बजने में पांच मिनट शेष थी, जब चोरी की कार को ड्राइव करके बशीर किले के खण्डहर में पहुंचा।

अन्धेरी रात होने के कारण उसे मोबाइल की टॉर्च रोशन करनी पड़ी—जिसकी मद्धिम रोशनी में वो चढ़ाई वाले रास्ते को पार करके खण्डहर के भीतर पहुंचा और बाबर की तलाश में नजरों में इधर-उधर थिरकाने लगा।

"उस टूटे हुये दरवाजे से भीतर चले आओ बशीर...।" आवाज काफी भारी-भरकम थी।

बशीर टूटे हुये दरवाजे से दूसरे हिस्से में पहुंचा तो ऊपर को जाती सीढ़ियों पर एक आदमी बैठा हुआ दिखलाई पड़ा।

मोबाइल की माद्धिम रोशनी में दिखलाई पड़ा कि हरे रंग का चोला पहने उस लम्बी दाढ़ी वाले फकीर जैसे आदमी ने सिर पर सफेद कफनी बांधी हुई थी। कन्धे पर एक झोली लटकाई हुई थी। उसके एक हाथ में चिमटा भी था।

वह सीढ़ियों से उतरकर बशीर के सामने आ खड़ा हुआ।

उसका चेहरा फेसमास्क, नकली दाढ़ी के पीछे छिपा हुआ था और आंखों पर भी कॉन्टेक्ट लैंसेज लगे हुये थे।

चिमटे को जमीन पर गिराकर उसने बायें हाथ से दायीं हथेली की उंगलियों व अंगूठे को उल्टी तरफ बहुत ही आसानी के साथ मोड़ दिया तथा साथ ही बोला, "बाबर हूं हिन्दुस्तान का।"

"अस्सलामु अलैकुम व रहम तुल्लाह! बाबर साहब–।"

"व अलै कुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि!"

"आपके हुक्म पर मैं हाजिर हो गया हूं जनाब! किसी खतरनाक मिशन को अन्जाम देने का बेताबी से इन्कार कर रहा हूं मैं।"

"खाली पड़े-पड़े मशीन में जंग लग रही है...।"

"अब तुम्हारे एक्टिव होने का वक्त आ गया है बशीर! कसाब को जानते हो–?"

"अजमल कसाब? उसे भला कौन नहीं जानता जनाब! पाकिस्तान का तो हीरो बन गया है वो। मुम्बई में उसने पूरा तहलका मचा दिया था। पुलिस के दो बड़े अफसर भी ढेर कर दिये थे...।"

"उसी को आजाद करवाना है। हालांकि उसके जैसे कई बन्दे हैं अपने पास लेकिन उसके पकड़े जाने से पाकिस्तान की बहुत ही तौहीन हुई है। उसे पकड़कर हिन्दुस्तान की हुकूमत बहुत इतरा रही है। कसाब के आजाद होने पर पूरे हिन्दुस्तान में तहलका मच जायेगा। कसाब को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। हर कोई यही मानकर चल रहा है कि उसे फांसी हो जायेगी। हम कसाब को आजाद कराने में कामयाब हो गये तो...ये हमारी बहुत बड़ी फतह होगी–।"

"लेकिन जनाब...।" झिझकते हुये ही बोला बशीर, "सुना है कि कसाब की सिक्योरिटी के बहुत ही पुख्ता इन्तजाम किये गये हैं। उसकी सिक्योरिटी पर करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। क्या उसे जेल से निकाल पाना मुमकिन होगा–?"

"नहीं–जेल पर हमला बोलकर कसाब को निकाल पाना तो मुमकिन ना होगा बशीर...।"

"तो फिर, जनाब–?"

"दूसरे तरीके भी तो हैं बशीर। मेरे दिमाग में एक जबरदस्त आइडिया आया है। मैंने एक प्लान तैयार किया है। तुम्हें उस प्लान पर अमल करना है। अगर तुम उसे कामयाबी के साथ अन्जाम दे गये तो गारन्टिड कसाब आजाद हो जायेगा...।"

"मैं अपनी तरफ से कोई कसर बाकी ना छोड़ूंगा जनाब। जान लगा दूंगा। आप फरमाइये तो सही कि आपका प्लान क्या है–?"

बाबर बशीर को अपने प्लान के बारे में बतलाने लगा, जिसे बशीर पूरे मनोयोग से सुने जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

शाम ढल चुकी थी और सकुचाती-लजाती निशा चांद-सितारों वाली चुनरिया ओढ़कर धरती पर कदम रख चुकी थी।

दोपहर को मुम्बई से रवाना हुई बस अभी भी महाराष्ट्र राज्य के भीतर ही थी और हिन्डन के जंगल के करीब से गुजर रही थी।

शाम चार बजे मिर्जा बेग ने एक रेस्टोरेन्ट पर बस को रुकवाकर सभी को चाय के साथ नाश्ता करवाया था और स्टील के बड़े बर्तन में गरमा-गरम चाय भरवा ली थी, जिसमें एक टोंटी भी लगी हुई थी।

चूंकि रात हो चली थी और रात के खाने के लिये अभी कोई ढंग का होटल पचास किलोमीटर के सफर के पश्चात् ही आना था, सो मिर्जा बेग अपने घर के चारों नौकरों को बुलाकर बोला–"हमें चाय-नाश्ता किये तीन घण्टे के लगभग हो चुके हैं। सभी को थोड़ी-बहुत भूख लगने लगी होगी। सभी को चाय के साथ बेसन के लड्डू और मट्ठी दो–।"

चारों नौकरों ने डिस्पोजल गिलासों में सभी को गरमा-गरम चाय के साथ डिस्पोजल प्लेटों में बेसन के लड्डू व मट्ठियां रखकर सर्व कीं।

"भई ड्राइवर साहब...।" तेज आवाज में बोला मुश्ताक, "आप भी चाय-नाश्ता ले लो। थोड़ी देर के लिये बस रोक लो...।"

"हम हिन्डन के इलाके से गुजर रहे हैं जनाब। जंगल काफी खतरनाक माना जाता है। यहां बस रोकना ठीक नहीं होगा। इस इलाके से निकलने के बाद मैं चाय ले लूंगा। अभी मुझे ड्राइविंग करने दीजिये...।" बोलने पर ड्राइवर ने बस की स्पीड थोड़ा और बढ़ा दी।

अचानक ही तेज झटका लगा और धचके के साथ बस रुकी तो कुछ सवारियों के माथे अगली सीट की पुश्त से जा लगे। हाथों से चाय के गिलास छूट गये या चाय छलक गई–नाश्ते की प्लेटों का भी यही हाल हुआ।

बहुत से लोगों के कपड़ों पर गरम चाय गिरी तो मुख से सिसकारी निकल गई।

"ये क्या हिमाकत है हमीद भाई...?" मिर्जा बेग की बगल में बैठा मुश्ताक क्रोध चिल्ला पड़ा, "अचानक ही ब्रेक क्यों मार दिये?"

"माफी चाहूंगा हिन्दुस्तानी जी। अचानक ही पुलिस की जीप ने पीछे से बस को ओवर टेक करके बस के आगे रुककर रास्ता रोक लिया तो...मुझे ब्रेक लगानी पड़ी...।"

तभी एक थ्री स्टार वाला इन्सपैक्टर, एक टू स्टार वाला सब-इन्सपैक्टर और छः हवलदार धड़धड़ाते हुये बस में चढ़ आये—सभी के हाथों में ए०के० सैंतालीस थी। इन्सपैक्टर ने वो हरकत की कि सभी के होश फाख्ता हो गये।

'तड़...तड़...तड़...तड़।'

ए०के० सैंतालीस की गोलियों से उसने पीछे से ड्राइवर को भून डाला और चींखकर बोला, "बस, को अगवा किया जाता है। खबरदार! कोई भी अपनी जगह से ना हिले। कोई गलत हरकत नहीं—वर्ना गोलियों से भून दिया जायेगा...।"

बाकी पुलिसवालों ने भी मुसाफिरों पर ए०के० सैंतालीस तान दी। उनके हाव-भाव इस बात की चुगली खा रहे थे कि वो किसी भी क्षण फायरिंग कर सकते थे।

चार महिलायें मारे भय के चींखीं और बेहोश हो गईं—बाकी लोगों का भी बुरा हाल हो चला।

दिल थे कि धाड़-धाड़ करके बज रहे थे।

कुछ दिल तो थैली में बन्द कर दिये गये बन्दर के बच्चे की मानिन्द ही उछल-कूद मचाने लगे।

पसीने छूट चले।

□□□
□□□

"क्या बदतमीजी है ये...?" मुश्ताक सीट से उठकर चिल्लाया, "कैसे पुलिस वाले हो तुम...ड्राइवर की जान ले ली और बस के अगवा होने की बात कर रहे हो। क्या सरकार ने तुम्हें ये वर्दी जुर्म करने के वास्ते दी है? ये गुनाह है और तुम लोग इस गुनाह की सजा से बच नहीं सकते। तुम्हारी ये वर्दी भी बचा नहीं पायेगी तुम्हें। हम लोग जायरीन हैं। अजमेर जा रहे हैं...।"

"नहीं जा सकेगा कोई अजमेर...।" इन्सपैक्टर मुश्ताक पर ए०के० सैंतालीस की नाल तानकर बोला, "तुम लोग हिन्डन के जंगल में चल रहे हो। अगर हमारी मांग पूरी नहीं हुई तो...तो तुम सभी

ऊपर जाओगे। सभी को खत्म कर दिया जायेगा। मरने के बाद अजमेर क्या...मक्का-मदीना जाकर हज करना।"

"तुम पुलिसवाले होकर...।"

"पुलिसवाले नहीं हैं हम...।" सब-इन्सपैक्टर की वर्दी वाला मुश्ताक की बात काटकर बोला, "हम जिहादी हैं—जिन्हें दुनिया आतंकवादी कहती है।"

आतंकवादी शब्द सुनकर ही कई मुसाफिरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

बस के भीतर आतंक का वातावरण उत्पन्न हो गया।

"हां—हम आतंकवादी हैं...।" इन्सपैक्टर बुलन्द आवाज में बोला, "पुलिस को धोखा देने को ही वर्दियां पहनी हैं। तुम लोगों को किडनेप करके हम जंगल में ले जा रहे हैं। सभी चुपचाप बैठे रहें। कोई शोर नहीं—कोई चालाकी नहीं। किसी ने भी हीरो बनने की कोशिश की तो...गोलियों से भून दिया जायेगा।"

"तू हमें किडनेप नहीं कर सकेगा...।" मुश्ताक सीट से उठकर इन्सपैक्टर के सामने पहुंचकर बेधड़क बोला, "आतंकवाद या दहशतगर्दी की बात करना तो फिजूल ही है—क्योंकि तुम लोगों को आतंकी बनाने वाले जिहाद के कफन में तुम्हारा दिमाग लपेटकर कब्र में डाल देते हैं और उस पर इन्सानियत की मिट्टी डालकर दफन कर देते हैं। तुम लोगों को लगता है कि आतंकवाद जिहाद है—काफिरों के खिलाफ लड़ी जाने वाली जंग है। जबकि तुम लोग ही काफिर हो। बेगुनाहों का खून बहाने वाला मुसलमान नहीं हो सकता। खैर, नाम के ही सही...तुम मुसलमान हो और बस में सवार सभी लोग भी मुसलमान हैं। इस वास्ते हमें किडनेप मत करो और हमें जियारत के वास्ते जाने दो...।"

"तुम लोग मुसलमान हो, इसी वास्ते तो तुम लोगों को किडनेप किया जा रहा है।" इन्सपैक्टर की वर्दी वाला, जो कि आतंकियों का कमाण्डर बशीर था, कुत्सित किस्म के संग ही बोला, "क्योंकि जो पार्टी हुकूमत में है उसे अगले इलैक्शन में फिर से कुर्सी हासिल करने की फिक्र है और मुसलमानों को पटाने में लगी हुई है। मुसलमानों के वास्ते कई योजनायें चला रही हैं। वो नहीं चाहेगी कि मुसलमानों का किडनेप हो और उनका कत्ल हो जाये। वो हमारी मांग को फौरन ही मंजूर कर लेगी। इसी वास्ते तुम लोगों को किडनेप किया जा रहा है। ओये हमीद...ड्राइवर की लाश को बाहर फेंककर बस चला। नीचे अपने आदमी हैं—वो पुलिस की जीप को हमारे पीछे-पीछे ले आयेंगे...।"

"नहीं...तुम लोग हमारा किडनेप नहीं कर सकोगे...।" मुश्ताक ने साहस का परिचय देते हुये बशीर की ए०के० सैंतालीस पकड़ ली तथा छीनने का प्रयास करते हुये बोला, "एक-एक को भूनकर रख दूंगा...आ...आह...।"

सब-इन्सपैक्टर की वर्दी वाले आतंकी ने पीछे से ए०के० सैंतालीस का भरपूर वार मुश्ताक के सिर पर कर दिया।

बशीर की ए०के० सैंतालीस छोड़कर मुश्ताक ने हथेलियों से जख्मी सिर दबोच लिया और धुत्त शराबी की मानिन्द ही झूमने-सा लगा।

उसकी हथेलियां खून से सनती चली गईं और फिर वो भरभराकर गिर पड़ा।

बशीर ने मुश्ताक को भून डालने की मंशा से ए०के० सैंतालीस की नाल उसके सीने पर रखी ही थी कि मिर्जा बेग हाथों को जोड़कर गिड़गिड़ाया, "न...नहीं, खुदा के वास्ते इसकी जान मत लेना। ये बेचारा तो ऐसे ही दुखियारा है। कुछ रोज पहले इसकी बीवी और बेटे को मार दिया गया था। खुदा के वास्ते इसकी जान बख्श दो। तुम्हें तुम्हारे रब का वास्ता। उसकी कसम है...जिसे तुम सबसे ज्यादा चाहते हो...।"

बशीर ने ए०के० सैंतालीस हटाकर मुश्ताक के पेट पर जोरदार ठोकर जड़ने पर कहा, "ये होश में आये तो समझा देना इसे कि हमसे भिड़ने या उलझने की जुर्रत ना करे—नहीं तो कुत्ते की मौत मार दिया जायेगा—।"

उसी वक्त हमीद नामक आतंकी ने ड्राइवर की खून से सनी लाश को बस से बाहर फेंक दिया और ड्राइविंग सीट पर बैठकर बस को स्टार्ट किया।

बस हाई-वे छोड़कर उस कच्ची सड़क वाले रास्ते पर चल दी, जो कि हिन्डन के घने जंगल में जाता था।

बस के पीछे-पीछे पुलिस की जीप भी चल रही थी, जिस पर पुलिस की वर्दी वाले दो आतंकी सवार थे।

कुल मिलाकर पचास मुस्लिमों को किडनेप कर लिया गया, जो कि जायरीन थे—अपने घर से अजमेर की यात्रा के लिये चले थे।

हंगामा तो होना ही था—तहलका तो मचना ही था।

□□□
□□□

"मुम्बई से अजमेर की यात्रा पर गये पचास मुस्लिमों के बस समेत गायब हो जाने से ना सिर्फ मुम्बई में, बल्कि पूरे देश में हड़कम्प

मच गया है...।" टी०वी० स्क्रीन पर 'आज तक' की न्यूज रीडर पूरे जोश के साथ बोले जा रही थी, "दिल्ली में प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री ने इस घटना पर चिन्ता जाहिर की है और महाराष्ट्र सरकार को सख्त निर्देश दिये हैं कि सभी पचास लोगों का पता लगाया जाये और उन्हें सही-सलामत वापिस लाया जाये। महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री ने अपने मन्त्रिमण्डल की आपातकालीन बैठक बुलवाई है। हमारे रिपोर्टर आलोक सेठी हिन्डन जंगल के करीब हाई-वे पर पहुंच चुके हैं। आइये, आलोक सेठी से बात करके जानकारी लेते हैं। आलोक सेठी...बतलाइये कि आपके पास क्या जानकारी है—?"

टी०वी० स्क्रीन पर हाई-वे का दृश्य उभरा और 'आज तक' के लोगो वाला माइक हाथ में लिये हुये चश्माधारी आलोक सेठी दिखलाई पड़ा—पार्श्व में कुछ पुलिसवाले भी दिखलाई पड़ रहे थे—

"यहां पर एक अधेड़ की लाश पड़ी है रिचा, जो कि उस बस के ड्राइवर की है, जो गायब हुई बस का ड्राइवर था। ये देखिये, उसकी लाश को...खून से लथपथ लाश...जिसे पच्चीस के लगभग गोलियां मारी गई हैं। मेरी इस इलाके के पुलिस इन्सपेक्टर से बात हुई है। उनका कहना है कि मृतक को ए०के० सैंतालीस से गोलियां मारी गई हैं और शायद पचास मुस्लिमों से भरी बस का किडनेप कर लिया गया है। पुलिस उस बस की खोज में लगी हुई है लेकिन अभी तक कोई जानकारी नहीं मिल सकी है।"

"किडनेपर कौन हो सकता है आलोक सेठी—?"

"चूंकि इस वारदात में ए०के० सैंतालीस की गोलियों का इस्तेमाल हुआ है—इसलिये कहा जा सकता है कि किसी बड़े और खतरनाक मुजरिम गैंग का काम हो सकता है...।"

"या फिर किसी आतंकी संगठन का भी काम हो सकता है—?"

"हां, ये काम किसी आतंकी संगठन का भी हो सकता है।"

"क्या ये लूटपाट का मामला हो सकता है आलोक सेठी—?"

"अगर लूटपाट का मामला होता तो...लुटेरे लूटपाट के बाद बस और यात्रियों को छोड़ देते। लेकिन यात्रियों समेत बस गायब है। इसका यही मतलब निकाला जाना चाहिए कि सभी लोगों को किडनेप कर लिया गया है।"

"किडनेप के पीछे मकसद क्या हो सकता है—?"

"शायद फिरौती वसूलना ही हो। मुझे बाकी लोगों के बारे में तो जानकारी नहीं है—लेकिन उस बस को मुम्बई के मशहूर उद्योगपति और समाजसेवी मिर्जा बेग अपने खर्चे पर अजमेर ले जा रहे थे—वो अनुष्का टॉय कम्पनी के मालिक हैं। वो करोड़पति हैं। बाकी लोग भी पैसे वाले हो सकते हैं।"

"तो ये थे हमारे रिपोर्टर आलोक सेठी—जो कि घटनास्थल पर से जानकारी दे रहे थे। आपको बतला दें कि सबसे पहले आज तक की टीम ही घटनास्थल पर पहुंची है। जल्दी ही हमारे चैनल की टीम किडनेप हुये सभी लोगों के परिवार वालों के पास पहुंचने वाली है। हमारे रिपोर्टर विनोद दीवान मिर्जा बेग की धर्मपुत्री अनुष्का के पास मौजूद हैं। आइये, आपको भी वहां लेकर चलते हैं...।"

टी०वी० स्क्रीन पर रोती-सुबकती अनुष्का के साथ रिपोर्टर विनोद भी दिखलाई पड़ा—

"क्या आपका मिर्जा बेग जी से सम्पर्क हुआ था अनुष्का जी—?"

"सात बजे के करीब पापाजी से फोन पर बातें हुई थी...।" आंसू पोंछकर भर्राये कण्ठ से बोली अनुष्का, "तब बस हिन्डन जंगल के इलाके में थी। उसके बाद मैं जरूरी फाइलें देखने लगी थी। फाइलें देखने पर मैंने पापाजी से सम्पर्क करना चाहा, लेकिन सम्पर्क नहीं हो पाया। काफी देर तक ट्राई करती रही मैं। फिर मैंने मुश्ताक हिन्दुस्तानी का नम्बर मिलाया—वो भी उस बस में सवार हैं। मुश्ताक हिन्दुस्तानी जी वो ही हैं, जिन्हें पाकिस्तान की जेल में रखा गया था और केशव पण्डितजी अपनी जान पर खेलकर उन्हें हिन्दुस्तान लाये थे...मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी से भी सम्पर्क ना होने पर मैं घबरा गई थी। कुछ देर बाद ही उन लोगों के फोन आने लगे, जो कि पापाजी के साथ अजमेर की यात्रा के लिये गये थे। उन लोगों का भी अपने परिजनों से सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। काफी लोग मेरे पास चले आये। हम सभी घबराये हुये हैं। हम पुलिस और सरकार से रिक्वेस्ट करते हैं कि सभी लोगों का पता लगाकर उन्हें सही-सलामत वापिस लाया जाये।"

"किडनेपर्स ने आपसे कोई सम्पर्क नहीं किया अनुष्का जी—?"

"नहीं। अगर किडनेपर्स की कॉल आती और वो कोई डिमांड रखते तो मैं अपने पापाजी और बाकी लोगों के लिये कोई भी रकम देने के लिये तैयार हो जाती। मैं केशव पण्डित जी को फोन करने जा रही हूं। मुझे उम्मीद है कि संकट की ऐसी घड़ी में पण्डितजी ही मददगार साबित हो सकते हैं...।"

और फिर अनुष्का फोन पर केशव पण्डित का नम्बर लगाने लगी।

❑❑❑
❑❑❑

सौ किलोमीटर का सफर तय करने पर वो बस और पीछे चल रही पुलिस की जीप एक पहाड़ी झरने के करीब छोटे-से मैदान में

पहुंची, जहां कपड़े के छोटे-छोटे चार तम्बू लगे हुये थे और इकतालीस हथियारबन्द आतंकी मौजूद थे।

सभी मुसाफिरों को डरा-धमकाकर बस से बाहर निकालकर एक लम्बी कतार में खड़ा कर दिया गया।

मुश्ताक को भी होश आ गया था तथा उसके जख्मी सिर पर मिर्जा बेग ने अपना मफलर बांध दिया था।

सभी के मोबाइल पहले ही ले लिये गये थे और उनके सिम निकालकर तोड़ दिये गये थे।

"बशीर नाम है मेरा...बशीर...।" इन्सपैक्टर की वर्दी वाला आतंकी मानसूनी बादलों की मानिन्द गरज-बरसकर दहाड़ा, "डाइनामाइट के नाम से कश्मीर इलाके में मेरी पूरी दहशत रही है। सरकार ने मुझे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर पांच लाख रुपये इनाम का ऐलान आज से साढ़े तीन साल पहले किया था। तीन साल तक पाकिस्तान में दहशत फैलाई—फिर छह महीने पहले यहां आ गया था। इससे पहले कि खाली पड़े-पड़े जंग लग जाती...मुझे इस जिहादी ग्रुप का कमाण्डर बना दिया गया। बहुत बड़ी तबाही मचानी है मुझे। खून के दरिये बहाने हैं—लाशों के ढेर लगाने हैं। लेकिन तुम लोग मुसलमान हो और जियारत के वास्ते जा रहे थे। नहीं चाहता कि मुझे तुम लोगों के खून से हाथ रंगने पड़ें। लेकिन ऐसा तभी होगा, जब तुम लोग शराफत के साथ मेरे हुक्म को मानोगे और कोई चालाकी नहीं करोगे। उस बस के नीचे रिमोट बम रखा जाये...।"

दो आतंकी दौड़कर एक तम्बू में गये और एक अटैची उठाकर लाये। अटैची को जमीन पर रखकर खोला तथा उसमें से दो बम निकालकर जमीन पर रख दिये।

बशीर ने आगे बढ़कर अटैची में से रिमोट निकाल लिया और बोला—"दोनों में से एक बम उस नीम के दरख्त के साथ बांध आओ—।"

एक आतंकी बम उठाकर गया और उसे डोरी से नीम के मोटे तने के साथ बांधने लगा।

गिरगिट की मानिन्द ही भाव परिवर्तित किये बशीर ने और होंठों पर जहरीली किस्म की मुस्कान घसीटकर रिमोट में लगा लाल रंग का बटन पुश कर दिया।

'धड़ामऽऽऽऽ।'

कर्णभेदी धमाके के साथ उस आतंकी का जिस्म नीम के विशालकाय पेड़ के साथ आग की लपटों में नहाया हुआ ऊपर की तरफ उड़ा और फिर हवा में ही उसके तथा नीम के परखच्चे-से उड़ गये।

नीचे जमीन पर इन्सानी खून, गोश्त के लोथड़े व हड्डियों के टुकड़ों के साथ लकड़ी व असंख्य पत्ते यहां-वहां बिखर गये।

कई मुखों से आतंक भरी चींखें उबल पड़ीं।

मिर्जा बेग तथा बाकी के अड़तालीस लोगों के चेहरे यूं फक्क पड़ गये कि मानो जिस्म में खून की एक बूंद भी ना बची हो—लेकिन मुश्ताक के साथ ऐसा नहीं हुआ—

उसका चेहरा तमतमा उठा था और मुट्ठियां इस कदर भिंच चली थीं कि यदि उनमें पत्थर की कंकरें होतीं तो उनका चूरन बन गया होता।

"खुदा के वास्ते खुद को सम्भालो मुश्ताक हिन्दुस्तानी...।" बगल में खड़ा मिर्जा बेग पसीने-पसीने हुआ फुसफुसाया, "माना कि रिटायर्ड फौजी हो और बहादुर हो—लेकिन इतने हथियारबन्द दहशतगर्दों के बीच बहादुरी दिखलाना खुदकुशी ही होगी। ऐसा ना हो कि तुम्हारी कोई गलत हरकत हम सभी के वास्ते जी का जंजाल बन जाये।"

"देखा उस रिमोट बम का कमाल...!" बशीर चिल्ला-चिल्लाकर बोला, "उस बेचारे कबीर की तो हैसियत ही क्या थी, नीम का दरख्त भी बुरी तरह उजड़ गया। आसपास की जमीन में कितना बड़ा खड्डा हो गया है। दूसरा बम उस बस के नीचे रखवा रहा हूं मैं...।"

एक आतंकी दूसरे बम को बस के नीचे रख आया।

"अब वो बम बस के नीचे रख दिया गया है—जिसे इस रिमोट से कई किलोमीटर की दूरी से भी उड़ाया जा सकता है। तुम लोगों को बस के भीतर ही रहना है—बस के भीतर ही सोना और जागना है। तुम लोगों के साथ बस में चार आदमी भी रहेंगे। तुम लोगों को बस के भीतर ही पानी, चाय, नाश्ता और खाना मुहैया कराया जायेगा। किसी को पेशाब वगैरा के वास्ते जाना हुआ तो हमारे आदमी से कहोगे। एक बार में सिर्फ एक ही आदमी जायेगा और उसके साथ नीचे मौजूद हमारे चार हथियारबन्द लोग जायेंगे। किसी ने भागने की हिमाकत की तो उसको गोलियों से भून दिया जायेगा।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि हम लोगों को किडनेप करके यहां क्यों लाया गया है? तुम लोगों का मकसद क्या है—?"

"तू कुछ ज्यादा ही फुदक रहा है—तुझ पर खास नजर रखी जायेगी...।" मुश्ताक को आग्नेय दृष्टि से घूरते हुये बोला बशीर, "तूने पूछ ही लिया है तो बतला देता हूं। मुम्बई पर हमला बोलने वाला अजमल कसाब जेल में बन्द है और उसे जल्दी ही फांसी पर चढ़ाया जाने वाला है। लेकिन हम उस शेर के बच्चे को यूं शहीद नहीं

होने देंगे। उसको आजाद कराना ही हमारा मकसद है। हम तुम लोगों के बदले तुम्हारे हुक्मरानों से कसाब की मांग करने जा रहे हैं। कसाब को छोड़ दिया गया तो ठीक...तुम लोगों को भी रिहा कर दिया जायेगा—वरना तुम लोगों को बम से उड़ा दिया जायेगा। अब तुम लोग एक-एक करके बाथरूम के वास्ते जाओगे। और लौटकर बस में सवार होते रहोगे। तुम लोगों के वास्ते मिल्क पाउडर वाली चाय तैयार की जा रही है। यहां पर दूध तो मुहैया हो नहीं सकता। साथ में कुछ बिस्कुट भी दिये जायेंगे। फिर खाना तैयार करके दिया जायेगा। चलो, एक-एक करके उन पेड़ों के पीछे जाते रहो और पेशाब वगैरह करके वापिस लौटकर बस में बैठते रहो।"

फिर एक-एक करके सभी यात्री पेड़ों के पीछे गये—सभी के साथ चार ए०के० सैंतालीसधारी भी गये और सख्त लहजे में चेतावनी देते रहे कि कोई भी भागने की जुर्रत ना करे—वरना गोलियों से भून दिये जाओगे।

वहां से लौटने पर सभी को बस में भेजा जा रहा था।

सभी पचास बन्धकों के साथ चार ए०के० सैंतालीसधारी आतंकी भी बस में सवार हो गये।

दो दर्जन हथियारबन्द आतंकी बस के चारों तरफ घेरा-सा बनाकर तैनात हो गये।

बशीर रिमोट के साथ एक तम्बू के भीतर चला गया।

तम्बूओं के करीब पत्थरों से बनाई भट्टी में जंगल की सूखी लकड़ियां जलाकर बड़े से बर्तन में चाय बनाई जा रही थी।

बस में सवार सभी यात्री बहुत चिन्तित थे और बार-बार उनके मुंह पर एक ही प्रश्न आ रहा था कि अगर सरकार ने कसाब को नहीं छोड़ा तो...तो उनका क्या होगा?

❑❑❑
❑❑❑

चाय के दो प्याले लेकर माधवी अपने पिता रमाकान्त चोपड़ा के बेडरूम में पहुंची और चिड़िया की मानिन्द ही चहककर बोली, "गुड मॉर्निंग, पापाजी! सुबह के सात बज रइये—तुसी हुणे जागे नहीं—। की मॉर्निंग वॉक नू नहीं जाना है—?"

"गुड मॉर्निंग...माई पुत्तर...।" कम्बल हटाकर रमाकान्त उठ बैठा तथा जम्हाई लेकर बोला, "रब तुहान्नु बड्डी उमर ला दे। तो तुस्सी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करों। ओये रब्बा...आज मैनू की हो गया—जो मैं इन्नी देर तो सोता रहवा। ला, मैनू चाय दे। बेड टी—तो फेर फ्रेश होकर मॉर्निंग वाक दे लेई जावांगा।"

माधवी ने उसे चाय की प्याली थमा दी तथा बिस्तर के किनारे बैठकर एक चुस्की ही ली थी कि बाहर कोयल कूकने लगी—

दरअसल कालबैल बज रही थी।

"इन्नी सुबह कौन सकदा है पुत्तर—?"

"मैनू की पता पापा? न्यूज पेपर वाला वाल बैल बजाये बिना ही न्यूज पेपर डाल जाता है। दूध वाला बी ऐसे हीं दूध दे पैकेट रख जाता है। मैं हुणे जाकर वेखती हां...कौन है—?"

माधवी चाय की प्याली मेज पर रखकर बाहर पहुंची और मेन गेट खोलकर पाया कि कोई भी नहीं था।

तो फिर घन्टी किसनें बजाई थी?

क्या किसी ने मजाक किया था?

वो दरवाजा बन्द करने ही जा रही थी कि नजरें नीचे फर्श पर रखे गुलाबी रंग के एक चौकोर लिफाफे पर पड़ीं।

कौतूहलता में पंड़े हुये उसने वो लिफाफा उठा लिया और वहीं पर खोल डाला—भीतर एक डी०वी०डी० के साथ तह किया गया पर्चा भी था।

उसने पर्चा खोलकर पढ़ा—

माधवी चोपड़ा! तुम इन्डिया टी०वी० न्यूज चैनल की रिपोर्टर हो। मैं तुम्हारे माध्यम से अपना मैसेज सरकार तक पहुंचाना चाहता हूं। डी०वी०डी० में मेरा मैसेज है। इसे अपने न्यूज चैनल पर चलवा दो। तुम्हारे चैनल के साथ-साथ तुम्हारा भी नाम हो जायेगा...।

बस, इतना ही लिखा था उस पत्र में—वो भी पेन की बजाय कम्प्यूटर द्वारा प्रिन्ट किया गया था।

सस्पैंस के जाल में उलझी हुई माधवी मेन गेट बन्द करके भीतर पहुंची तो रमाकान्त ने पूछा, "कौन था माधवी—?"

"ना मालूम कौन सी...पापा जी। मैनू नजर नी आया। ये इक लिफाफा मैनू मिला। इसमें एक लैटर ते इक डी०वी०डी० है। तुस्सी इस पत्र नूं पढ़ो...मैं प्लेयर विच ऐह डी०वी०डी० चलाकर वेखती हूं...।"

उसी कमरे में मौजूद डी०वी०डी० प्लेयर में डी०वी०डी० डालकर माधवी ने टी०वी० भी ऑन कर दिया और रिमोट से ऑडियो-वीडियो वाला चैनल लगा दिया।

लगभग सांस रोककर उसने वो वीडियो फिल्म देखी और उस मैसेज को सुना—।

ना सिर्फ वह, वरन रमाकान्त भी भौंचक्का था।

"ओये रब्बा! ऐ डी०वी०डी० तो बहुत खतरनाक है...।"

बोला रमाकान्त, "साढ़ी सलाह मानकर इक काम कर। इस डी०वी०डी० नूं अपने चैनल तो पहुंचाने तो पहिला तू केशव को गल कर। उसनूं इस डी०वी०डी० दे बारे में दस। फेर वो ही कर...जो केशव कहे...। केशव नूं मैं फोन करूं—?"

"नहीं पापाजी...मैं कर रइयां...।" कहने पर उसने रमाकान्त का मोबाइल फोन उठाया और व्यग्रता के साथ केशव के फोन के नम्बर वाले बटन पुश करने लगी।

□□□

□□□

करतार सिंह ने लाल रंग की टाटा सफारी को हैलीकॉप्टर ही वना दिया और केशव, राजन व श्वेता के साथ आधा घन्टे में ही माधवी के घर पहुंच गया।

केशव ने श्रद्धापूर्वक रमाकान्त के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया—राजन, करतार सिंह व श्वेता ने भी उसका अनुसरण करते हुये रमाकान्त के चरण स्पर्श किये।

केशव ने माधवी से पहले पत्र लिया और पढ़ा, फिर बोला—"वो डी०वी०डी० चलाकर दिखलाना माधवी।"

"जी, भाई...।" कहने पर माधवी ने रिमोट से डी०वी०डी० प्लेयर तथा टी०वी० ऑन कर दिया।

केशव, राजन, करतार सिंह व श्वेता सोफा चेयर्स पर बैठ गये।

"घर से काफी जल्दी यहां पहुंच गये तुम केशव—?" बोला रमाकान्त।

"नहीं, गुरुजी। मिर्जा बेग की धर्मपुत्री अनुष्का के यहां थे हम लोग। मिर्जा बेग पचास लोगों के साथ एक बस में अजमेर की यात्रा पर गये थे और वो बस गायब हो गई—उसमें मुश्ताक हिन्दुस्तानी भी है। अनुष्का ने मुझे फोन किया तो उसके पास पहुंचा था। वहीं माधवी का फोन गया और हम लोग वहां से यहां आ गये...।"

तभी टी०वी० स्क्रीन पर एक छुपे रुस्तम का चेहरा उभरा।

छुपा रुस्तम इसलिये कि उसने अपने सिर समेत चेहरे को काली ऊन की टोपी-नुमा नकाब के भीतर छिपाया हुआ था और आंखों को छिपाने के लिये काले शीशे वाला चश्मा लगाया हुआ था।

बाकी जिस्म भी हाई नेंक वाली काली जर्सी व काली पैन्ट तथा काले स्पोटर्स शूज में छिपाया हुआ था।

वो कुर्सी पर बैठा हुआ था—हाथों पर काले दस्ताने चढ़ाये हुये—पार्श्व में हल्के रंग की दीवार थी।

बलगमी-सी आवाज में बोला वह—"बाबर! बाबर नाम है मेरा!

आई०एस०आई० का इन्डियन चीफ...मुखिया...। किसी को इस चक्कर में पड़ने की कतई जरूरत नहीं है कि मेरा असली नाम क्या है और इस नकाब के पीछे किसका चेहरा छिपा हुआ है। इस देश की सरकार और हुक्मरान मेरी मांग पर तवज्जो दें और उसे पूरा करें। सबसे पहले तो मैं बतला दूं कि मुम्बई से अजमेर जा रही उस बस को मेरे ही हुक्म पर मेरे ही आदमियों ने किडनेप किया है, जिसमें मिर्जा बेग...मुम्बई का मशहूर बिजनेसमैन और सोशल वर्कर भी सवार हैं। उस बस में पचास लोग सवार हैं। तीस मर्द, पन्द्रह औरतें और पांच बच्चे। उस बस के नीचे बहुत ही खतरनाक रिमोट बम लगा दिया गया है। पूरे पचास हथियारबन्द जिहादियों ने बस को अपने कब्जे में लिया हुआ है। अगर मेरी मांग पूरी ना की गई तो...उन सभी पचास मुस्लिमों को हलाक कर दिया जायेगा, जो अजमेर वाले ख्वाजा की जियारत के वास्ते जा रहे थे—उनकी मौत या कत्लों की जिम्मेदार इस देश की हुकूमत और हुक्मरान होंगे...मैं या मेरे आदमी नहीं...।"

अपनी वाणी को विराम देकर बाबर काले दस्तानों में छिपी उंगलियों को तोड़ने-मरोड़ने लगा। फिर उसने बायें हाथ की उंगलियों की मदद से दायें हाथ की उंगलियों व अंगूठे को एक-एक करके विपरीत दिशा में यूं ही मोड़ दिया कि मानो उनमें हड्डियां ना होकर रबड़ भरी हुई हों।

शायद वो जानबूझकर ही उंगलियों को मोड़-मोड़कर दिखला रहा था—या फिर वो अपनी आदत से मजबूर था।

खैर वो आगे बोला—"अब मैं अपनी मांग रख रहा हूं। मुम्बई हमले का एक शेर तुम लोगों ने पकड़कर जेल में बन्द कर दिया था और उसे फांसी पर लटकाने की तैयारी चल रही है। मेरा मतलब अजमल कसाब से है। कसाब को छोड़ दिया जाये—फौरन से पेशतर छोड़ दिया जाये। कल सुबह सात बजे तक कसाब अफगानिस्तान के काबुल एयरपोर्ट पर पहुंच जाना चाहिये। याद रखो...कल सुबह सात बजे तक। सात बजकर एक मिनट भी नहीं होनी चाहिये। अगर हुई तो उन पचास मुस्लिम बन्धकों को बस समेत बम से उड़ा दिया जायेगा। कोई चालाकी नहीं, कोई होशियारी नहीं। पुलिस या मिलिट्री वाले हालांकि बस तक पहुंच सकते हैं लेकिन उन पचास मुस्लिमों को नहीं बचा पायेंगे। मेरे आदमी दूर-दूर तक तैनात हैं और उनके पास दूरबीनें भी हैं। किसी आम आदमी को भी बस की जानिब बढ़ते देखा गया तो बिना किसी वार्निंग के बन्धकों को कत्ल कर दिया जायेगा। ये मेरा पहला और आखिरी मैसेज है। इस मुद्दे पर कोई बात

नहीं होगी। अगर कल सुबह तक कसाब काबुल एयरपोर्ट पर पहुंच गया तो बन्धक रिहा कर दिये जायेंगे—वरना कत्ल कर दिये जायेंगे... आदाब...सलाम...आजाद कश्मीर लेकर रहेंगे—आजाद कश्मीर लेकर रहेंगे—आजाद कश्मीर जिन्दाबाद...गुलाम कश्मीर मुर्दाबाद...।"

बस, इतना ही बोलने पर बाबर गायब हो गया।

कक्ष में कुछ क्षणों के लिये सन्नाटा व्याप्त हो गया।

"मामला काफी गम्भीर है केशव...।" रमाकान्त की आवाज ने कैंची बनकर सन्नाटे की चादर को चीरा, "इसीलिये मैंने माधवी को सलाह दी थी कि इस डी०वी०डी० को अपने चैनल तक पहुंचने से पहले तुमसे बात कर लें। क्योंकि इस डी०वी०डी० के प्रसारित होने पर मुम्बई ही नहीं, पूरे मुल्क में दहशत का वातावरण उत्पन्न हो जायेगा।"

"कह तो आप ठीक रहे हैं गुरुजी—लेकिन मैं नहीं समझता कि इस रहस्यमयी किरदार ने सिर्फ माधवी के पास ही डी०वी०डी० भेजी होगी। उसने दूसरे न्यूज चैनल वालों तक भी डी०वी०डी० पहुंचाई होगी। जरा टी०वी० को न्यूज चैनल्स पर तो लगाना श्वेता...।"

"जी, गुरुजी...।"

श्वेता ने मेज से रिमोट उठाकर डी०वी०डी० बन्द कर दिया तथा टी०वी० के चैनल बदलने लगी। एक न्यूज चैल पर बाबर वाली डी०वी०डी० चल रही थी।

"अब तो कोई फायदा ही नहीं रहा...।" केशव कन्धे को उचकाकर माधवी से बोला, "मेरा अन्दाजा ठीक ही था कि बाबर ने दूसरे चैनल्स को भी डी०वी०डी० भेजी होगी। फिर तुम्हारा चैनल ही क्यों पीछे रहे? इस डी०वी०डी० को लेकर अपने चैनल के स्टूडियो में पहुंचो।"

"नहीं भाई। पहले हम चाय-नाश्ता...।"

"डोन्ट वरी। श्वेता है ना। ये हम लोगों के वास्ते चाय-नाश्ता बना लेगी। तुम चलती बनो।"

"उन बस यात्रियों का क्या होगा भाई—? क्या सरकार कसाब को छोड़ देगी?"

"ये तो आने वाला वक्त ही बतलायेगा कि क्या होने वाला है...!"

□□□
□□□

"हमने आपको बाबर नाम के आई०एस०आई० मुखिया बाबर के सन्देश वाली वीडियो क्लिप दिखलाई...। अब आपको अपनी

रिपोर्टर माधवी चोपड़ा के पास लिये चलते हैं। माधवी इस समय पाकिस्तान के राजदूत वजाहत अली के पास हैं और उनसे पूछताछ कर रही हैं...।"

टी०वी० चैनल से इन्डिया टी०वी० की न्यूज रीडर का चेहरा विलुप्त हुआ और पाकिस्तान के राजदूत वजाहत अली के सामने बैठी माधवी चोपड़ा दिखलाई पड़ी—

"वजाहत साहब! अभी आपने वो वीडियो क्लिप देखी है। कुछ दिन पहले मैंने आपका साक्षात्कार लिया था कि तो मेरे एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा था कि पाकिस्तान भारत के साथ मित्रता चाहता है। क्या पाकिस्तान बाबर जैसे लोगों का इस्तेमाल करके मित्रता का धर्म निभा रहा है—?"

"वीडियो फिल्म में एक नकाबपोश स्वयं को आई०एस०आई० का मुखिया बतलाकर कबूल कर रहा है कि उसी ने बस का किडनेप करवाया है। इसी से साफ जाहिर हो रहा है कि ये कोई साजिश है। भला आई०एस०आई० का कोई ओहदेदार अपने मुंह से ऐसी बात बोलकर आई०एस०आई० और पाकिस्तान को बदनाम क्यों करेगा? वो तो खुफिया तरीके से ही अपनी कारगुजारियों को अन्जाम देगा।"

"यानि आप ये कहना चाह रहे हैं कि आपके देश को बदनाम करने के लिये भारत की तरफ से साजिश की जा रही...?"

"मुझे इस बारे में कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है माधवी जी। भारत सरकार को चाहिए कि इस मामले की हकीकत को सामने लाये—दूध-का-दूध और पानी-का-पानी करे। ये वीडियो फिल्म कोई सबूत नहीं है। चेहरे पर नकाब डालकर कोई खुद को आई०एस०आई० का मुखिया...या फिर कुछ भी कहे—तो मान थोड़े ही लिया जायेगा।"

"यानि आप स्वीकार नहीं करेंगे कि ये बाबर आई०एस०आई० का मुखिया...या पाकिस्तान का मोहरा है—?"

"नहीं—कोई सवाल ही नहीं उठता—।"

"मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी पाकिस्तान की जेल में ही बन्द थे—लेकिन पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने ये कहा कि वो वहां की किसी जेल में नहीं है। हिन्दुस्तान के लाड़ले बेटे केशव पण्डित जी ने पाकिस्तान जाकर मेजर मुश्ताक हिन्दुस्तानी को छुड़वाया और भारत लेकर आये। पाकिस्तान की तो आदत है कि भारत के खिलाफ कुछ-ना-कुछ करता रहता है और पोल खुलने पर बेशर्मी के साथ मुकर जाता है...।"

वजाहत अली का चेहरा कनपटियों तक सुर्ख होता चला गया,

लेकिन वह स्वयं को संयत करके बोला, "पाकिस्तान की जानिब से कई मर्तबा बयान आ चुका है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ था। ना तो मेजर मुश्ताक वहां की जेल में था और ना ही केशव पण्डित उसे वहां से निकालकर लाया था। मेजर मुश्ताक वहां था और उसने केशव पण्डित के सुर-में-सुर मिलाकर पाकिस्तान के खिलाफ बयान क्यों दिया—ये वो ही जाने। पाकिस्तान पूरी ईमानदारी के साथ दोस्ती निभा रहा है और भारत के खिलाफ कोई साजिश नहीं कर रहा है। मेरी भारत सरकार से मांग है कि जल्द-से-जल्द उन पचास बेगुनाह जायरीनों को छुड़वाये और उस नकाबपोश को पकड़कर उसकी हकीकत सामने लाये, जो खुद को बाबर बतला रहा है—आई०एस०आई० का मुखिया बतलाकर पाकिस्तान को बदनाम करने की जुर्रत कर रहा है...।"

"तो ये थे पाकिस्तान के राजदूत वजाहत अली—जो हमारी रिपोर्टर माधवी चोपड़ा के प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। ये बाबर वाली वीडियो क्लिप को साजिश करार दे रहे थे। अब वक्त हो चला है कमर्शियल ब्रेक का। खबरों का सिलसिला बना रहेगा। जल्द ही वापिस लौटते हैं...।"



प्रधानमन्त्री ने केशव से फोन पर बात करने पर अपने सभी प्रोग्राम कैंसिल कर दिये और अपने निवास पर केशव की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रधानमन्त्री के निर्देश पर मुम्बई एयरपोर्ट पर केशव के लिये इमरजेंसी प्लेन की व्यवस्था की गई और वो प्लेन सिर्फ केशव, राजन, करतार सिंह व श्वेता को लेकर ही दिल्ली के लिये उड़ान भर गया।

अपने आवास पर प्रधानमन्त्री ने उन चारों का स्वागत किया और विशेष कक्ष में ले गये, जो कि साउन्ड प्रूफ था और मीटिंग के चलने तक किसी को भी उसमें प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी। चाय व नाश्ता पहले से ही मेज पर सजा हुआ था।

केशव के संकेत पर श्वेता ने गर्म केतली से प्याले में चाय उंडेल कर सभी को सर्व की।

"मामला काफी सीरियस है पण्डितजी...।" चाय की चुसकी लेकर कहा प्रधानमन्त्री ने, "पचास लोगों को किडनेप किया गया है और कसाब को छोड़ने की मांग की गई है। मुश्किल वाली बात ये है कि कल सुबह सात बजे तक का ही वक्त दिया गया है और हम इस मुद्दे पर किडनेपर्स से बात भी नहीं कर सकते। सोच-विचार

के लिये कुछ समय भी नहीं मांग सकते। किडनेपर्स ने किसी को मीडियेटर नहीं बनाया है और वो सरकार से किसी तरह का सम्पर्क बनाये हुये नहीं है। उसने बस मीडिया वालों को अपने मैसेज वाली डी०वी०डी० भेजी और फाइनल डिसीजन दे दिया। उन पचास लोगों की जान का जोखिम भी नहीं लिया जा सकता और कई निर्दोषों की जान लेने वाले कसाब को भी नहीं छोड़ा जा सकता। सरकार की हालत सांप-छछूंदर जैसी ही हो गई है...।"

"मैं आपकी परेशानी को समझ सकता हूं सर...।"

"दूसरा कोई विकल्प ना सुझाई दिया तो मुझे आपकी ही याद आई पण्डितजी। इससे पहले भी आप देशहित में बड़े-बड़े कारनामे कर चुके हैं। प्लीज, आप ही इस समस्या का कोई समाधान करें। कसाब को नहीं छोड़ा जा सकता। उसे छोड़ने पर आतंकियों के हौंसले बुलन्द हो जायेंगे। उधर उन पचास लोगों को कुछ हो गया तो पूरी दुनिया में हमारे देश की साख गिर जायेगी। पड़ोसी मुल्क को ये प्रचार करने का मौका मिल जायेगा कि हिन्दुस्तान में मुस्लिम सुरक्षित नहीं हैं। आपसे ही उम्मीदें हैं पण्डितजी—।"

"आप निश्चिन्त हो जायें सर। ईश्वर ने चाहा तो मैं सब ठीक कर दूंगा। कुछ भी अनहोनी ना होगी...।"

"लेकिन समय बहुत ही कम रह गया है...।" रिस्ट वॉच पर दृष्टिपात करके बोले प्रधानमन्त्री, "सात बजने वाले हैं। यानि किडनेपर द्वारा दिये गये समय में सिर्फ बारह घन्टे ही शेष बचे हैं। अभी आपको मुम्बई वापिस लौटना है। लगभग आधी रात हो जायेगी। आपको पहले ये पता लगाना है कि उन पचास लोगों को बन्धक बनाकर कहां रखा गया है। फिर उन्हें सुरक्षित निकालने के लिये प्लान तैयार करना होगा और उस प्लान पर अमल करना होगा। समझ में नहीं आता कि ये सब कैसे हो पायेगा?"

"सब ठीक ही होगा सर! आप चिन्ता मत करें। उन पचास लोगों को सुरक्षित निकालकर लाना मेरी जिम्मेदारी है। बस, सरकार को तो एक काम करना है...।"

"हां—बोलिये—।"

प्लेट से एक बिस्कुट उठाकर दांतों से कुतरा केशव ने और फिर कहा—"बस, ऐसा ड्रामा करना है कि मानो कसाब को छोड़ा जा रहा है। उस जेल में पुलिस के साथ कुछ बड़े अधिकारी जायेंगे। वहां किसी पुलिस वाले को कम्बल में छिपाकर बाहर लाया जायेगा और एयरपोर्ट पर ले जाया जायेगा। वहां एक स्पेशल विमान तैयार होगा, जो कि उस कम्बल में छिपे पुलिसवाले को लेकर काबुल

एयरपोर्ट तक जायेगा। प्लेन पौने सात बजे काबुल एयरपोर्ट पर पहुंचे और उस पुलिसवाले की कद-काठी कसाब जैसी ही हो। कुल मिलाकर यही लगना चाहिये कि कसाब को छोड़ा जा रहा है। प्रभु की कृपा से मैं उन पचास बन्धकों को समय से पहले ही उन किडनेपर्स के चंगुल से छुड़ा लूंगा और किडनेपर्स भी अपने कब्जे में होंगे। काबुल गया वो प्लेन काबुल एयरपोर्ट पर एक मिनट रुकने पर वापिस भारत के लिये उड़ान भर जायेगा।"

"क्या वो रहस्यमयी बाबर भी पकड़ा जायेगा पण्डितजी—जिसने स्वयं को आई०एस०आई० का मुखिया बतलाया है—?"

"अगर वो उन पचास बन्धकों के साथ ही हुआ तो अवश्य ही पकड़ा जायेगा और मालूम पड़ जायेगा कि...वो कौन है...।"

❑❑❑
❑❑❑

जो प्लेन लेकर आया था, वो ही उन लोगों को वापिस मुम्बई ले जा रहा था।

परिचारिका द्वारा लाई गई कॉफी पीने पर केशव ने चारमीनार मार्का वाली सिगरेट सुलगा ली तथा राजन, श्वेता व करतार सिंह से सम्बोधित होकर बोला, "पी०एम० साहब को वचन तो दे आया हूं कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। अब हमें कमर कस लेनी चाहिये। समय बहुत कम है...।"

"लेकिन ये कम कैसे होगा प्राहवा जी...?" चिन्तित भाव से बोला करतार सिंह, "हुणे तॉ असी लोकी नूं पता बी नहीं है कि वो किडनेपर...बाबर कौन है ते उसने उन बन्धकों नूं किथे रख्या है—?"

"ये तो एक जमा एक बराबर दो जैसी ही बात है करतार सिंह कि बस यात्रियों का किडनेप हिन्डन के इलाके में हुआ है तो उन्हें हिन्डन के जंगल में ले ही जाया गया होगा। भरी बस या पचास लोगों को हिन्डन जैसे विशाल जंगल में ही छिपाया जा सकता है। सैकड़ों किलोमीटर का क्षेत्रफल है हिन्डन का...हजारों किलोमीटर में भी हो सकता है। चूंकि जंगल बहुत बड़ा है, इसलिये हम उस जंगल में घुसकर शायद ही बन्धकों को खोज पायें। खोजा जा सकता है, बशर्ते कि पर्याप्त समय हो। लेकिन अपने पास समय नहीं है। मुम्बई पहुंचते-पहुंचते आधी रात हो जायेगी। हमारे पास चन्द घण्टों का ही समय होगा। उस जगह का पता भी लगाना है और आतंकियों से निपटकर बन्धकों को मुक्त भी कराना है। सीधा गेम खेलने से तो कोई पोजेटिव रिजल्ट निकलने वाला कतई नहीं है। कोई शॉर्ट- कट अपनाना पड़ेगा—कोई तरकीब भिड़ानी होगी—।"

"क्यों ना हम हैलीकॉप्टर से बन्धकों की खोज करें गुरुजी—?"

"हैलीकॉप्टर पर साइलेंसर नहीं लग सकता श्वेता! उसकी आवाज किडनेपर्स के कान खड़े कर देगी। वे सतर्क हो जायेंगे और बन्धकों को नुकसान पहुंचा सकते हैं...।"

"कार या जीप से तो बात बनेगी ही नहीं...।" निराश भाव से बोली श्वेता, "बहुत बड़ा जंगल है—समय बहुत कम बचेगा। हेलीकॉप्टर नहीं ले सकते। छोटा विमान लेने पर भी वो ही प्रॉब्लम रहेगी। बन्धकों को खोजना भी है और किडनेपर्स को भनक भी नहीं लगने देनी है। तो फिर ये काम भला कैसे होगा गुरुजी—?"



बस के भीतर उपस्थित चारों ए०के० सैंतालीसधारी आतंकियों पर 'गिद्ध-दृष्टि' जमाये हुये मुश्ताक बगल में बैठे मिर्जा बेग से फुसफुसाकर बोला—

"मैं यूं हाथों पर हाथ रखकर बैठा नहीं रह सकता मिर्जा साहब! ये तो सरासर बुजदिली है। जुल्म करने वाले की तरह जुलम का विरोध ना करने वाला भी गुनाहगार ही हुआ ना—?"

"लेकिन किया ही क्या जा सकता है मियां—?" बहुत धीमी आवाज में ही फुसफुसाया मिर्जा बेग—"चार हथियारबन्द दहशतगर्द तो बस के भीतर ही हैं। जबकि बाहर तो पचास के करीब दहशतगर्द होंगे। इतने खतरनाक लोगों का कैसे मुकाबला कर सकोगे तुम—?"

"मैं बाथरूम के वास्ते जाऊंगा—।"

"कम-से-कम चार दहशतगर्द तुम्हारे साथ जायेंगे।"

"जाते रहें। मैं चारों को जान से मार डालूंगा। उन्हें काबू में करके हथियार छीन लेना मेरे वास्ते कोई बड़ी बात ना होगी।"

"लेकिन हथियारों का इस्तेमाल होगा तो धमाकों की आवाज होगी और बाकी दहशतगर्द खतरे को भांप जायेंगे...। माना कि तुम अपनी जान बचाकर भाग सकते हो—लेकिन हम लोगों का...बाकी लोगों का क्या होगा? हम सभी को मार दिया जायेगा...।"

"मुझे इतना मतलबी समझा है क्या मिर्जा साहब? अपनी जान की कोई परवाह नहीं मुझे। मैं हथियारों का इस्तेमाल कतई नहीं करूंगा। मिलिट्री में रहा हूं। खास किस्म की ट्रेनिंग ली थी मैंने। मार्शल आर्ट का इस्तेमाल करके चारों को मार डालूंगा और एक भी गोली ना चलेगी—।"

"लेकिन बाकी के दहशतगर्द से कैसे निपटोगे तुम—?"

"मेरे पास चार ए०के० सैंतालीस होंगी। उनमें सौ से ज्यादा गोलियां होंगी। सभी को भून डालूंगा...।"

"तो क्या बस में मौजूद दहशतगर्द चुपचाप तमाशा देखते रहेंगे? वो बौखलाकर हम लोगों को जान से मार सकते हैं। या बशीर रिमोट बटन दबाकर बस के नीचे रखे बम को फोड़ सकता है। एक धमाका होगा और हम सभी के चीथड़े उड़ जायेंगे। नहीं, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे मियां। तुम्हारी जाबांजी और बहादुरी का कायल हूं मैं। मिलिट्री की वर्दी पहनकर तुमने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये थे। लेकिन अब जोश में होश खोना हम सबकी मौत का कारण बन सकता है। खुदा के वास्ते ऐसी कोई हिमाकत मत करना...।"

कसमसाया मुश्ताक और मानो छटपटाकर बोला, "आप कहते हैं तो मैं कुछ नहीं करूंगा—हाथों में चूड़ियां पहनकर यूं ही बैठा रहूंगा। लेकिन हम लोगों का क्या होगा? क्या हमारे मुल्क की सरकार कसाब को छोड़ेगी? नहीं, कतई नहीं। मैं नहीं मानता कि कसाब को छोड़ा जायेगा। अगर कसाब को नहीं छोड़ा तो क्या हम लोग बच पायेंगे?"

"सरकार हम लोगों को बचाने की पूरी कोशिश करेगी। कोई-ना-कोई रास्ता तो निकाला ही जायेगा...।"

"देखते हैं...क्या रास्ता निकाला जाता है—!"



चंगेज खान की ट्रांसमीटर पर पाकिस्तानी मिलिट्री के जनरल परवेज खान से बात चल रही थी—

"तुमने पहला पड़ाव तो कामयाबी के साथ पार कर लिया है चंगेज खां। तुमने बाबर को आई०एस०आई० का इन्डियन चीफ मुकर्रर कर दिया है। अगला कदम भी बढ़िया उठाया है। लेकिन क्या कसाब को हिन्दुस्तान के हुक्मरान छोड़ देंगे—?"

"कसाब को छोड़ना ही होगा जनाब! क्योंकि हिन्दुस्तान के हुक्मरान नहीं चाहेंगे कि उनके मुल्क के पचास मुसलमानों को हलाक कर दिया जाये। उन्हें झक मारकर कसाब को छोड़ना ही पड़ेगा—।"

"क्या कसाब को छोड़ने की तैयारियां चल रही हैं—?"

"अभी तक तो कोई जानकारी नहीं मिली है जनाब!"

"क्या बाबर से कॉन्टेक्ट नहीं हो पा रहा है—?"

"नहीं, जनाब! आपको ये जानकर हैरानी होगी कि बाबर भी उस बस में सवार है, जिसे किडनेप किया गया है...।"

"व्हाट...?" दूसरी तरफ से परवेज खान बुरी तरह चौंककर बोला, "ये...ये क्या बोल रहे हो तुम चंगेज खां—?"

"ठीक बोल रहा हूं जनाब। उन पचास बन्धकों में एक अपना बाबर भी है–।"

"लेकिन ऐसी गलती क्यों कर हुई भला? क्या बशीर को ये बात मालूम है कि बस में बाबर भी है–?"

"नहीं, जनाब! पर्दे में रहने की वजह से बाबर बशीर को अपने बारे में भला कैसे बतला सकता है...?"

"लाहोल विला कुव्वत मियां। ये क्या हिमाकत है? अगर हालात ऐसे बन गये कि बशीर को उस बस को बम से उड़ाना पड़ गया तो...तो बाबर भी हलाक हो जायेगा–।"

"बाबर को पूरा यकीन है कि उसे कुछ नहीं होगा। यहां की हुकूमत कसाब को छोड़कर सभी बन्धकों को आजाद करा लेगी।" पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला चंगेज खां, "मुझे भी पक्का भरोसा है कि कसाब को काबुल के हवाई अड्डे पर पहुंच दिया जायेगा और बशीर सभी बन्धकों को रिहा कर देगा।"

"बाई दा वे...ऐसा नहीं हुआ तो? तो चंगेज खां, क्या बाबर की कुर्बानी दे दी जायेगी–?"

"नहीं, जनाब! उस सूरते हाल में मजबूरन मुझे बशीर को ट्रांसमीटर पर हुक्म देना पड़ेगा कि वो बस में सवार बाबर को ना मारे। नहीं, मैं उसको ये नहीं बोलूंगा कि बस में बाबर भी है। मैं बाबर का असली नाम बतलाकर कहूंगा कि वो अपना खास आदमी है। उसको मत मारे–लेकिन गोली से जख्मी कर दे–ताकि उस पर किसी को शक ना हो। आप बेफिक्र रहें जनाब–बाबर को मरने नहीं दूंगा मैं।"

"ठीक है चंगेज खां! किसी तरीके से मालूम करो कि इन्डियन गवर्नमेंट कसाब को छोड़ रही है कि नहीं–।"



हिन्डन के जंगल की शुरूआत ही थी वो–हाई-वे से करीब आधा किलोमीटर की दूरी पर।

लाल रंग की टाटा सफारी की छत पर एक छोटा-सा रडार लगा था, जिसका एन्टीना धीरे से दायें-से-बायें और बायें-से-दायें घूम रहा था।

बोनट पर विभिन्न यांत्रिक उपकरणों के साथ एक मॉनीटर भी लगा था, जिस पर हिन्डन जंगल का पूरा दृश्य सामने था, जो कि सैटेलाइट सिस्टम के कारण ही सम्भव हो पा रहा था।

सारा सिस्टम केशव की निजी मिल्कियत था, जो कि उसने ऐसे

ही समय तथा आवश्यकता के लिये कलेक्ट किया हुआ था।

एक सूटकेस से केशव ने बाज निकाला और उसके पंखों को खोलकर बोला, "ये ड्रोन विमान ही हमारी प्रॉब्लम को सोल्व करेगा। इसका आकार और डिजाइन बाज के जैसा है। ये जब उड़ान भरेगा तो देखने वालों को यही कन्फ्यूज होगा कि कोई बाज हवा में उड़ान भर रहा है। ये ड्रोन बाज की आवाज भी निकालता है। मैं इसे रिमोट की मदद से हवा में उड़ाऊंगा। इसके साथ शक्तिशाली कैमरा भी जोड़ दिया गया है, जो कि अन्धेरे में भी बढ़िया दृश्य दिखलाता है। इस कैमरे को सैटेलाइट से जोड़ दिया है। ये बाज हवा में उड़ान भरते वक्त उस मॉनिटर पर एक लाल बिन्दु के रूप में दिखलाई पड़ता रहेगा और पता चलता रहेगा कि ये किस स्थान पर है? दो बज रहे हैं–हमारे पास अब समय नहीं बचा है। मैं इस ड्रोन को उड़ा रहा हूं।"

और फिर केशव ने बाज के आकार वाले उस ड्रोन को गाड़ी की छत पर रख दिया तथा रिमोट उठाकर उसमें लगे नन्हें-से हैन्डल तथा बटनों से खेलने लगा।

वो ड्रोन हवा में उठा और उड़ान भरने लगा।

वह लाल बिन्दु के रूप में स्क्रीन पर दिखलाई पड़ रहा था–साथ ही स्क्रीन पर जंगल के वो हिस्से दिखलाई पड़ने लगे, जिनकी तस्वीरें ड्रोन में लगा कैमरा सूट कर रहा था।

केशव की नजरें तो मॉनीटर की स्क्रीन पर थीं, लेकिन हाथों की उंगलियां रिमोट के हैन्डल तथा बटनों पर कुशलता के साथ चल रही थीं।

वह बाजनुमा ड्रोन को जंगल के उस बाहरी हिस्से में उड़ा रहा था, जो कि हाई-वे के करीब पड़ता था।

उसे किसी चीज की खोज थी।

जल्द ही वो खोज पूर्ण हुई तो झील-सी नीली आंखें चमक उठी थीं।

"ऐ तो बस दे टायर दे निशान मलूम पड़ते हन...प्राहवा जी...।" करतार सिंह मॉनीटर पर नजरें जमाये हुये बोला।

"मुझे इन्हीं टायरों के निशान की तलाश थी करतार सिंह। किडनेपर्स सभी जायरीनों को बस समेत जंगल में ले गये थे। अब मालूम पड़ गया कि वो बस को किधर से ले गये थे। बिना ड्रोन के इन टायरों के निशानों को ढूंढ पाना मुश्किल हो जाता–। वैसे भी समय की बहुत कमी है। अब मैं ड्रोन को इन निशानों के ऊपर से उड़ा रहा हूं। ड्रोन की ऊंचाई कम ही रख रहा हूं ताकि उसमें लगा कैमरा इन निशानों की स्पष्ट तस्वीरें दिखलाता रहे। अगर ये निशान

यूं ही दिखलाई पड़ते रहे तो हमें मन्जिल मिलने में अधिक समय नहीं लगना चाहिए। क्योंकि इतने घने जंगल में बस को अधिक दूर तक नहीं ले जाया जा सकता।"

करतार सिंह, राजन तथा श्वेता की नजरें भी स्क्रीन पर यूं चिपकी हुई थीं मानो फेवीकोल का जोड़ लगा हो।

जंगल का कच्चा रास्ता एक जगह पर पहुंचकर खत्म हो गया—लेकिन बस के निशान आगे ही बढ़े चले जा रहे थे।

बस ने ऊंचे-नीचे रास्ते के साथ एक पहाड़ी नाले को भी पार किया था, जिसकी चौड़ाई अधिक और पानी की गहराई थोड़ा कम थी।

दो घन्टे की यात्रा पूरी कर ली ड्रोन ने और मन्जिल दिखलाई पड़ी।

वांछित बस ड्रोन में लगे कैमरे की आंखों से बच नहीं सकी।

ना सिर्फ बस दिखलाई पड़ी, बल्कि उसको घेरे खड़े कई आतंकी और करीब ही बने तम्बू भी दिखलाई पड़े।

"ये बस तो मिल गई प्राहवा जी...।" पूछा करतार सिंह ने, "हुण की—?"

"अब आगे का काम भी अपना ये ड्रोन ही करेगा सरदार जी।" ड्रोन को बस से थोड़ा दूर ले जाते हुये बोला केशव, "लेकिन उससे पहले हमारा बस के करीब पहुंचना जरूरी है। क्योंकि बन्धकों की सुरक्षा भी करनी है और आतंकियों को भी काबू में भी करना है हमें। ये बस यहां से लगभग पचास किलोमीटर दूर होगी। इस सिस्टम को अब गाड़ी के भीतर सैट करो—रडार ऊपर छत पर ही लगा रहने दो। हम बस की तरफ चल रहे हैं। बस के करीब पहुंचने पर हमारा एक्शन शुरू होगा—।"



करतार सिंह गाड़ी ड्राइव कर रहा था और बस के टायरों के निशानों का पीछा करते हुये आगे बढ़ रहा था।

उसकी बगल वाली सीट पर सारे उपकरण सैट करके मॉनीटर को पीछे वाली सीट पर बैठे राजन ने अपनी गोद में रखा हुआ था—श्वेता और केशव उसकी बगल में बैठे हुये थे। केशव ने ही करतार सिंह को निर्देश देते हुये टायरों के निशानों तक पहुंचाया था और अब वो ड्रोन को बस के आसपास ही हवा में उड़ा रहा था।

लगभग उन्चास किलोमीटर का रास्ता तय करने पर केशव बोला, "बस, गाड़ी को यहीं पर रोक दो करतार सिंह। हम उस बस

के करीब पहुंच चुके हैं। वो बस मुश्किल से एक ही किलोमीटर की दूरी पर होगी। पहले मैं अपना काम कर लूं—फिर हम उस स्थान की तरफ बढ़ेंगे।"

करतार सिंह ने गाड़ी को रोक दिया।

"अब हम क्या करेंगे गुरुजी...?" केशव से पूछा श्वेता ने, "बस में सवार पचास बन्धकों को ढेर सारे आतंकियों ने घेरा हुआ है, जिनके हाथों में ए०के० सैंतालीस जैसे हथियार हैं। बस के भीतर भी आतंकी होंगे। हमारे पास तो रिवॉल्वरें ही हैं। हम इतने आतंकियों का मुकाबला भला कैसे करेंगे गुरुजी—?"

"ये मिशन हथियारों से कम्पलीट नहीं होगा श्वेता...।"

"तो गुरुजी—?"

"इससे...।" केशव कनपटी और सिर के बीच के हिस्से को तर्जनी उंगली से तीन बार ठकठकाकर बोला—"दिमाग से कम्पलीट होगा ये मिशन। जब सभी आतंकी अपने नियन्त्रण में आ जायेंगे तो फिर हथियारों का इस्तेमाल होगा।"

"दिमाग से...।" श्वेता सिर खुजलाते हुये बोली, "इतने सारे आतंकी और हम चार लोग...क्या ऐसी कोई तरकीब हो सकती है कि सारे आतंकियों को बेबस करके उन पचास बन्धकों को मुक्त कराया जा सकता है? बाबर के मुताबिक तो बस के नीचे रिमोट बम भी है। कैसे...?"

"तुम्हें गुरुवर के सान्निध्य में आये अधिक समय नहीं हुआ है श्वेता—इसलिये तुम ऐसा प्रश्न कर रही हो...।" राजन ने मुस्कुराते हुये कहा, "अपने गुरुवर का दिमाग तुम्हारी...हमारी सोच से भी कहीं अधिक तेज चलता है। अब देखो कि ये क्या चमत्कार करते हैं—।"

श्वेता केशव को यूं देखने लगी कि मानो कोई बच्चा जादू का खेल दिखलाने जा रहे जादूगर को टकटकी लगाकर देखने लगा हो।

केशव ने रिमोट का इस्तेमाल कर बाज जैसे ड्रोन को बस के आसपास उड़ाना शुरू कर दिया और फिर रिमोट में लगे नीले रंग के बटन को जल्दी-जल्दी बारह बार दबाया।

हवा में उड़ान भरते ड्रोन के निचले हिस्से से बारह गोलियां निकलकर बस के इर्द-गिर्द गिरीं—

गिरते ही फटीं और उनमें से हल्के पीले रंग का गाढ़ा-गाढ़ा धुआं तेजी के साथ हर तरफ फैलने लगा।

आश्चर्य की बात ये थी कि उस धुऐं अथवा गैस में कोई तीखी गन्ध ना होकर गुलाब के फूलों जैसी भीनी-भीनी गन्ध ही थी—लेकिन उसका प्रभाव बहुत ही तीखा था।

इससे पूर्व कि कोई कुछ सोच-समझ पाता, कुछ कर पाता...सभी के दिमाग घूमने लगे—आंखों के सामने तेजी के साथ अन्धकार फैलने लगा।

किसी को कुछ भी करने का अवसर नहीं मिला—सभी आतंकी धड़ा-धड़ करके बेहोश होकर गिर पड़े।

उनका कमाण्डर बशीर भी बेहोश हो गया, जो कि तम्बू के भीतर कम्बल ओढ़े सो रहा था।

बस के भीतर मौजूद चार आतंकी और सभी यात्री भी बेहोश हो चुके थे।

कोई कुछ भी नहीं समझ पाया।

"गाड़ी दौड़ा दो करतार सिंह...।" केशव बोला, "हालांकि गैस का प्रभाव काफी देर तक रहने वाला है। लेकिन मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता। सभी बन्धकों को सुरक्षित निकालना है हमें। हमें जल्दी से बस के करीब पहुंचा दो। वहीं पहुंचकर बतलाऊंगा कि हमें आगे क्या करना है—!"

❑❑❑
❑❑❑

उस स्थान पर पहुंचकर केशव ने कहा, "राजन, करतार सिंह, श्वेता—सबसे पहले चैक करो कि कोई आतंकी गैस की चपेट में आने से बच तो नहीं गया। या उस पर गैस का पूरा प्रभाव ना हुआ हो और वो पूरी तरह बेहोश ना हुआ हो—।"

करतार सिंह व राजन ने इधर-उधर जाकर देखा, जबकि श्वेता ने केशव के साथ वहां पड़े सभी आतंकियों को सूई चुभो-चुभोकर चैक किया।

राजन और करतार सिंह एक तम्बू में बेहोश बशीर को उठाकर बस के पास ले आये—

"ये तम्बू में बेहोश पड़ा सी प्राहवा जी। ये बाकी लोकी दी तरहा ड्यूटी पर तो नहीं सी—इसने पुलिस की थ्री स्टार वाली वर्दी पाई है—मैंनू लगदा है कि ये इन आतंकियों दा लीडर है...।"

केशव ने करतार सिंह की बात पर सिर को हौले-हौले जुम्बिश देकर सहमति प्रदान की।

"ओह, सॉरी...गुरुवर...।" राजन शर्मिन्दगी के साथ बोला, "हम डोरियां तो लाये ही नहीं। इन लोगों को बांधेंगे कैसे—?"

"डोरियों की जरूरत नहीं है राजन। मैंने तुम दोनों को किसी को भी अपाहिज कर देने वाली विद्या सिखलाई तो थी। इन सभी की कनपटियों पर अंगूठे का दबाव डालकर उस खास नस को दबाना

है—जिसका सम्बन्ध दिमाग के उस हिस्से से है, जो कि इन्सान के हाथों-पैरों को संचालित करता है। चलो, जल्दी करो। तुम सिर्फ देखो श्वेता और इस विशेष विद्या को सीखने की चेष्टा करो—कभी भी तुम्हें इस विद्या की जरूरत पड़ सकती है—।"

केशव के साथ राजन और करतार सिंह बेहोश पड़े आतंकियों की कनपटियों के खास हिस्से पर अंगूठे के शीर्ष भाग को रखकर उसके दबाव से एक खास नस को दबाने लगे—जबकि श्वेता ध्यानपूर्वक केशव को देखकर उस विद्या को समझने की चेष्टा करने लगी।

राजन और करतार सिंह बस के भीतर गये और वहां मौजूद चारों आतंकियों को बेहोशी की अवस्था में ही अपाहिज बनाकर नीचे उतार लाये।

दोनों ने मिलकर सभी आतंकियों को उनके पैरों को पकड़कर और खींच-खींचकर एक कतार में लिटा दिया।

जबकि केशव ने उस स्थान का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया और एक तम्बू से रिमोट उठाकर वापिस लौटा—

"ये रिमोट बम का है राजन। जरा चैक करो कि बस के नीचे बम होगा। उसे सावधानी के साथ उठाकर बाहर निकालकर ले आओ—।"

"जी, गुरुवर...।"

राजन गया और बस के नीचे से बम को निकाल लाया।

केशव ने बम का निरीक्षण किया और सावधानी के साथ उसकी कुछ तारों को बाहर निकालकर उसे निष्क्रिय कर दिया।

"हुणे प्राहवा जी—?" पूछा करतार सिंह ने।

"इन सभी के गलों में काले धागे वाले ताबीज बन्धे हैं। अगर मेरा अन्दाजा गलत नहीं है तो इन ताबीजों के भीतर कैप्सूल होने चाहिये—।"

"कैप्सूल—?" चौंककर बोली श्वेता, "कैसे कैप्सूल गुरुजी?"

"पोटेशियम सायनाइड नामक दुनिया के उस सबसे घातक जहर के—जिसे जुबान पर रखते ही...या जिस्म में सूई की मदद से पहुंचाते ही मौत हो जाती है। इस तरह के आतंकी पोटेशियम सायनाइड को अपने पास रखते हैं—ताकि पकड़े जाने का खतरा होने पर सुसाइड कर सकें।"

कहने पर केशव ने एक आतंकी के गले से काला धागा खोल लिया और उसमें बन्धे लॉकेट को खोला तो उसमें से लाल व सफेद रंग का कैप्सूल निकला।

"मेरा अन्दाजा ठीक ही था। ये पोटेशियम सायनाइड का ही कैप्सूल है। इन सभी के गलों से ताबीज खोल लो—।"

राजन, करतार सिंह तथा श्वेता ने सभी आतंकियों के गलों से धागे खोल लिये और केशव को दे दिये--केशव ने उन्हे कोट की जेब में रख लिया।

फिर उसने चारमीनार की डिब्बी व गोल्डन कलर का लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली। कश लगाकर मुंह व नथुनों से धुआं उगलते हुये नीली आंखों को सिकोड़ लिया।

स्पष्ट था कि वो कुछ सोच रहा था।

क्या सोच रहा था वो?

❑❑❑

❑❑❑

"राजन...करतार सिंह...!"

"जी गुरुवर...।"

"प्राहवा जी—।"

"इन आतंकियों में जरूरी नहीं कि इनका मुखिया भी हो। वो व्यक्ति...जिसने बाबर के नाम से मीडिया वालों के माध्यम से मैसेज दिया था। ये लोग तो पकड़े गये—इनका तो खेल ही खत्म समझो। लेकिन इनके आका का पकड़े जाना भी जरूरी है। क्योंकि वो बचा रहेगा तो इनके जैसे दूसरे प्यादे तैयार कर लेगा। उसको पकड़ने के वास्ते कोई खेल तो खेलना ही होगा। वो खेल गुप्त रूप से ही खेला जायेगा। मैं नहीं चाहता कि उस खेल की जानकारी बस में सवार पचास बन्धकों को हो।"

"आप ठीक बोल रहे हैं गुरुवर। बतलाइये कि क्या करना है—?"

"उन्हें आतंकियों से डेढ़-दो घण्टे बाद ही होश आना चाहिये—ताकि किसी को अपने खेल की भनक भी ना लगने पाये। उन सभी पर 'अंगूठा कम्पन' वाली विधि आजमानी होगी। तुम दोनों ये काम कर सकते हो—?"

"कर लेंगे गुरुवर। आपने ये ट्रिक हम दोनों को सिखला दी है।" बोला राजन, "हम दोनों सभी पचास बन्धकों की बेहोशी को अंगूठा-कम्पन वाली विधि से डेढ़-दो घण्टे के लिये बढ़ा देते हैं।"

"तुम भी राजन और करतार सिंह के साथ बस में जाओ श्वेता और उस विद्या को सीखो। तब तक मैं पी०एम० साहब से फोन पर बात करता हूं। वो बहुत चिन्तित होंगे और मेरे फोन की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

श्वेता राजन और करतार सिंह के साथ बस के भीतर चली गई। जबकि केशव ने सेल फोन निकालकर प्रधानमन्त्री से सम्पर्क स्थापित किया—

"नमस्कार, सर!"

"मुझे आपके फोन की ही प्रतीक्षा थी पण्डितजी। कहिये, क्या रिपोर्ट है—?"

"मिशन इज सक्सेज...सर। मैंने सभी बन्धकों को मुक्त करा लिया है...।"

"गुड...वैरी गुड! मुझे पूरी उम्मीद थी कि आप नामुमकिन काम को भी मुमकिन कर दिखलायेंगे। मुझे...सारे देश को आप पर गर्व है पण्डितजी...बधाई। धन्यवाद...।"

"इसमें धन्यवाद जैसी कोई बात नहीं सर! मैंने तो अपना कर्त्तव्य का निर्वाह ही किया है। इस देश का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते मेरा दायित्व बनता था कि संकट की घड़ी में कुछ करूं।"

"लेकिन आपने इतनी जल्दी नामुमकिन को मुमकिन कैसे कर दिखलाया पण्डितजी? क्या किडनेपर्स कम संख्या में हैं—?"

"नहीं, सर! उनकी संख्या पचास के करीब थी। सभी के पास ए०के० सैंतालीस और ए०के० छप्पन जैसे हथियार थे। उन्होंने बस के नीचे रिमोट बम भी लगाया हुआ था।"

"कमाल की बात है। आपने फिर भी उन पर काबू कर लिया। इतनी जल्दी आपने उन्हें कैसे ढूंढ निकाला और उनके कब्जे से बन्धकों को कैसे निकाल लिया—?"

"मैंने एक ड्रोन का इस्तेमाल किया सर, जो कि सैटेलाइट सिस्टम से जुड़ा था। उसमें लगे कैमरे की मदद से उनके ठिकाने को खोज निकाला—जो कि जंगल में हाई-वे से पचास किलोमीटर भीतर था। ड्रोन से मैंने नशीली गैस की गोलियां छोड़कर सभी को बेहोश कर दिया था। आतंकियों के साथ बन्धक भी बेहोश हो गये थे—लेकिन एक गड़बड़ी हो गई सर।"

"वो क्या पण्डितजी—?"

झूठ बोला केशव ने—"नशीली गैस के प्रभाव में आते ही सभी आतंकियों को खतरे का आभास हो गया था। उनके पास पोटेशियम सायनाइड जहर के कैप्सूल थे। सभी ने पोटेशियम सायनाइड खा लिया था। जब तक मैं अपनी टीम के साथ यहां पहुंचा तो...सभी मौत की आगोश में समा चुके थे...।"

"ओह...सभी मारे गये...?"

"यस, सर! ये भी मालूम नहीं हो सका कि वो कौन थे और

किसके वास्ते काम कर रहे थे। लेकिन मैं अपने तरीके से उनके आका को ढूंढ लूंगा और पकड़कर कानून के हवाले कर दूंगा—या फिर हो सकता है कि वो आसानी से पकड़ाई में ना आये और मारा जाये। आमतौर पर इस किस्म के लोग गिरफ्तार होने के बदले जान देना ही ठीक समझते हैं। बाबर पकड़ा जायेगा—या फिर मारा जायेगा।"

"मैं आपकी जितनी भी प्रशंसा करूं...कम ही होगी पण्डितजी। आपने अपनी जान पर खेलकर सभी बन्धकों को आजाद करा लिया है और अब उनके आका को भी पकड़ने की चिन्ता में लग गये हैं।"

"क्या स्पेशल विमान ने काबुल की तरफ उड़ान भरी है सर—?"

"आपके प्लान के मुताबिक ही जेल से एक पुलिसवाले को कम्बल में छिपाकर मुम्बई एयरपोर्ट ले जाया गया। उसकी कद-काठी कसाब के जैसी ही थी। ऐसा जाहिर किया गया कि मानो कसाब को काबुल एयरपोर्ट पर भेजा जा रहा है। वो प्लेन इस वक्त दिल्ली एयरपोर्ट पर है और काबुल की उड़ान के लिये तैयारी चल रही है...।"

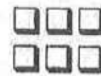
"अब कोई आवश्यकता नहीं है सर! सभी बन्धक छुड़ा लिये गये हैं और सुरक्षित हैं। लेकिन वो सभी सुबह आठ-नौ बजे तक ही मुम्बई पहुंच पायेंगे। आप मीडिया के माध्यम से उनके मुक्त होने और सुरक्षित होने की घोषणा करवा दीजिये—ताकि उनके सगे-सम्बन्धी और देश के सभी लोग निश्चिन्त हो सकें।"

"ठीक है। मैं सभी बन्धकों के मुक्त होने की घोषणा करवा देता हूं पण्डितजी! इस मिशन का श्रेय आपको ही जाता है। एक बार फिर बहुत-बहुत धन्यवाद पण्डितजी...।"

"प्लीज, शर्मिन्दा ना कीजिये सर! मैं सभी आतंकियों की लाशों को पुलिस को सौंप दूंगा और सभी बन्धकों को मुम्बई ले जाने की व्यवस्था करता हूं। लेकिन अभी वो नशीली गैस के प्रभाव में हैं और बेहोश हैं। उन्हें होश आने में दो-ढाई घन्टे लग जायेंगे। उनके होश में आने पर ही यहां से चलना हो पायेगा। अच्छा, मैं फोन बन्द कर रहा हूं...नमस्कार! जयहिन्द, सर।"

कहने पर फोन बन्द कर दिया केशव ने और जेब के हवाले करके चारमीनारी ब्रान्ड वाली सिगरेट की डिब्बी तथा गोल्डन कलर का लाइटर निकाल लिया।

श्वेता उसके पीछे ही खड़ी थी और ये जानने के लिये दिमाग के घोड़े दौड़ा रही थी कि केशव ने प्रधानमन्त्री से झूठ क्यों बोला कि आतंकियों ने पोटेशियम सायनाइड खाकर आत्महत्या कर ली है?



धीरे-धीरे करके सभी आतंकियों को होश आ गया।

खतरे को भांपकर उन्होंने उठकर अपने हथियार उठा लेने चाहे—लेकिन वो हिल भी नहीं सके।

"क्या हो रहा है ये...?" हाथ-पैर और कमर में कोई हरकत ना कर पाने पर बशीर झुंझलाकर, कसमसाकर तेज स्वर में बोला, "पहले धुआं-सा उड़ा और हम लोग अपने होशो-हवास कायम नहीं रख सके। शायद बेहोश हो गये थे हम! अब हम हाथ-पैर नहीं हिला पा रहे हैं—पूरी कोशिश करके भी उठ नहीं पा रहे हैं। लगता है कि हमारे साथ कोई गड़बड़ी हुई है—किसी दुश्मन ने हम पर हमला बोल दिया है। कोई तो उठो। हथियारों को कब्जे में करो...बस में जाकर देखो कि वो जायरीन हैं कि नहीं—?"

"वो लोग बस के भीतर ही हैं। लेकिन अब वो लोग तुम्हारे बन्धक नहीं हैं—वो तुम्हारी कैद से आजाद हो चुके हैं...।"

"कौन—?" बशीर सिर को इधर-उधर घुमाकर चारों तरफ देखने की चेष्टा करते हुये चिल्लाया, "कौन बोला? कौन है यहां पर—?"

"तेरे प्यो हैं...तेरे पिताजी...।" करतार सिंह बशीर के सिर की तरफ से उसके चेहरे पर झुककर बोला, "वो साढे तो प्राहवा जी हैं—लेकिन तेरे प्यो ही हैं। उनका नां केशव पण्डित है—लोकी उन्हानूं दिमाग दा जादूगर कहन्दे हैं—।"

"ओये सरदार...तू कौन है—?"

"मैं करतार सिंह...पटियाले वाला। पण्डितजी दा इक निक्का-सा...छोटा-सा चेला।"

"केशव पण्डित...।" बशीर आंखों को सिकोड़कर बोला, "लेकिन वो यहां कैसे? उसे कैसे मालूम पड़ा कि हम लोग यहां पर हैं?"

"अपने गुरुवर तो अन्तर्यामी हैं प्यारे...।" बशीर के पैरों की तरफ उभरकर बोला राजन, "उनके पास एक जादू से भरा दिमाग है। वो अपने उस जादुई दिमाग के बल पर तुम जैसे राक्षसों तक पहुंच ही जाते हैं। देख ले—उन्होंने कुछ ही घण्टों में पता भी लगा लिया कि तुम लोग कहां पर हो और तुम तक पहुंच भी गये। जहरीली गैस से पहले तुम लोगों को बेहोश कर दिया और फिर खास किस्म की विद्या के माध्यम से तुम लोगों को कुछ समय के लिये अपाहिज भी

कर दिया है। तुम लोग जिन्दा तो हो—लेकिन मुर्दों के जैसे ही हो। देखने और बोलने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकते हो...।"

"कहां है वो केशव पण्डित? मैं उसे छोड़ूंगा नहीं...आह...।"

श्वेता ने बशीर के बायें पैर पर स्पोर्टस शूज समेत जोर की ठोकर जड़ दी तथा व्यंगपूर्ण भाव के साथ ही बोली, "बड़ा आया गुरुजी को ना छोड़ने वाला। हिलने की सामर्थ्य तो है नहीं—बस जुबान ही हिला पा रहा है तू कमीने! पण्डितजी के सामने बड़े-बड़े योद्धा भी कुछ नहीं कर सकते—फिर तेरी तो औकात ही क्या है! तुम लोग पचास लोगों को किडनेप करके इस जंगल में लाये और बस के नीचे रिमोट बम लगा दिया था। घातक हथियारों के साथ तुमने बस को चारों तरफ से घेरा हुआ था। लेकिन गुरुजी के चमत्कार के सामने तुम लोग फेल हो गये। एक भी बन्धक को खरोंच ना पहुंची और उन्हें तुम लोगों के चंगुल से मुक्त करा लिया गया है। तुम लोगों को बांधा नहीं गया है—लेकिन फिर भी इतना विवश कर दिया गया है कि चाह कर भी कुछ नहीं कर सकते हो। अगर छोटे-छोटे बच्चों के हाथों में भी पत्थर दे दिये जायें तो वो भी तुम्हें जान से मार डालेंगे। तुममें और कैंचुओं में कोई खास फर्क नहीं रह गया है। बड़ा आया मेरे गुरुजी को देखने वाला...।"

बशीर ने पहले श्वेता को भस्म कर देने वाली दृष्टि से घूरा, लेकिन फिर अपनी लाचारी के कारण सिर्फ कसमसाकर, छटपटाकर रह गया। फिर वो बोला, "कहां है केशव पण्डित? उसने ये सब क्यों किया? क्या चाहता है वो—?"

□□□

□□□

"मैं यहीं पर हूं...।" केशव बशीर के सामने आकर बोला, "मैंने ये सब क्यों किया? उन पचास निर्दोष लोगों को बचाने के लिये—जिनको बन्धक बनाकर तुम लोग कसाब को छुड़वाना चाहते थे। मैं जो चाहता था, उसका आधा हिस्सा तो कम्पलीट हो चुका है। सभी बन्धक मुक्त हैं और तुम लोग हमारे कब्जे में हो। बाकी मैं जो चाहता हूं, वो करूंगा भी और वो होगा भी। मैं फिलहाल ये जानना चाहूंगा कि तुम लोगों का कमाण्डर कौन है—यहां मौजूद लोगों को कौन लीड कर रहा है?"

"मैं इनका कमाण्डर हूं—मेरा नाम बशीर है। डाइनामाइट के नाम से मशहूर रहा हूं। मुझ पर जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर पांच लाख रुपये का इनाम घोषित था। कुछ दिनों के वास्ते पाकिस्तान चला गया था। अब वापिस लौटा हूं...।"

"और पाकिस्तान ने आई०एस०आई० के जरिये तुझे दहशत फैलाने की जिम्मेदारी सौंप दी है—?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं बोलूंगा...।"

"मत बोल! मुझे कोई जल्दी भी नहीं है। बहुत वक्त पड़ा है। आराम से...फुर्सत में बैठकर बातें करेंगे। तेरा परिचय मिल गया तो बाकी लोगों का भी परिचय मिल गया। सभी आतंकी हैं और आई०एस०आई० से सम्बन्धित हैं।"

"तुम इससे ज्यादा कुछ नहीं जान पाओगे केशव पण्डित! हम लोग बहुत ही सख्त जान हैं। सिर पर कफन लपेटकर और जान को हथेली पर रखकर ही मिशन पर निकलते हैं। हम लोग अपने साथ पोटेशियम सायनाइड रखते हैं। अगर हम लोग हाथ-पैर हिलाने के काबिल होते तो पहले बिगड़े हालात को अपने काबू में करने की कोशिश करते। अगर ऐसा नहीं होता और खतरा जान पड़ता तो जहर खाकर खुदकुशी कर लेते हम लोग।"

"हां, मालूम है मुझे।" केशव हथेलियों को पैन्ट की जेबों में पहुंचाकर बोला, "तुम लोगों के गलों में जो ताबीज पड़े थे—उनमें पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल थे। रहा प्रश्न खुदकुशी का...तो प्रधानमन्त्री जी को मालूम है—मीडिया के माध्यम से जल्दी ही देश को भी मालूम हो चुका होगा, या मालूम हो जायेगा कि तुम सभी ने वो कैप्सूल खाकर खुदकुशी कर ली है...।"

"क...क्या...?" बशीर बुरी तरह चौंककर बोला, "क्या मतलब? हम लोग तो जिन्दा हैं। फिर प्रधानमन्त्री या मीडिया वालों तक ये खबर कैसे हो सकती है कि हम लोगों ने खुदकुशी कर ली है—?"

"मैंने प्रधानमन्त्री को थोड़ी देर पहले ही फोन पर ये बात बतलाई थी। वो मीडिया तक ये खबर पहुंचा चुके होंगे कि सभी बन्धकों को छुड़ा लिया गया है और किडनेप करने वाले तुम आतंकवादियों ने पोटेशियम सायनाइड खाकर खुदकुशी कर ली है...।"

"तु...तुमने इतना बड़ा झूठ...।" आश्चर्य से भौंहें फैलाकर बोला बशीर, "इतना बड़ा झूठ क्यों बोला—?"

"झूठ कहां बोला मैंने...?" मुस्कुराकर बोला केशव, "बस, समय में ही परिवर्तन होगा—वरना सबकी मौत पोटेशियम सायनाइड के सेवन से होगी।"

"क...क्या मतलब—?"

"तुम लोग पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल इसीलिये अपने

पास रखते हो कि खतरा होने पर खुदकुशी कर सको। तो खतरे में तो हो ही तुम। तुम्हारी ये ख्वाहिश पूरी कर रहा हूं मैं। राजन...करतार सिंह...श्वेता...।" पैन्ट की जेबों से हथेलियां निकालकर केशव ने कोट की जेब से कैप्सूल निकाले और तीनों से बोला, "बशीर मियां को छोड़कर बाकी सभी आतंकियों के मुंह में एक-एक कैप्सूल डाल दो। बेचारे आत्महत्या के लिये फड़फड़ा रहे होंगे। हमें इन लोगों की इच्छा पूरी कर देनी चाहिए। हमें दुआ देंगे। खुशनसीबों को ही दुआ मिला करती है। जल्दी से इनसे दुआयें हासिल कर लो। वैसे भी ये जीकर करेंगे ही क्या? मुल्क में दहशत का वातावरण क्रियेट करेंगे—निर्दोष लोगों का खून बहायेंगे। बिना त्योहारों के ही गोलियों और बमों से धमाके करते फिरेंगे। इनके मरने से देश में कुछ तो शान्ति होगी ही। चलो, जल्दी से इन लोगों के मुंह में एक-एक कैप्सूल ठूंस दो—।"

❑❑❑
❑❑❑

केशव द्वारा फोन किये जाने पर मुम्बई पुलिस कमिश्नर अमित देशवाल पुलिस फोर्स के साथ वहां आ पहुंचा—जहां पर उन्चास आतंकियों की लाशें पड़ी हुई थीं।

माधवी चोपड़ा ने केशव को सुबह छह बजे फोन किया तो केशव ने उसे सारी बातें बतला दी थीं—सो माधवी भी अपनी पूरी टीम के साथ आ पहुंची और कैमरा ऑन करवाकर हाथ में पकड़े माइक पर अपने स्टूडियो तक खबरें पहुंचाने लगी।

कमिश्नर ने सभी आतंकियों की लाशें देखीं, फिर बस में जाकर सभी पचास लोगों को भी देखा, जो कि अभी तक बेहोश पड़े हुये थे।

"आपने तो कमाल ही कर दिया पण्डितजी...।" कमिश्नर केशव के हाथ पकड़कर गद्-गद् भाव से बोला, "चमत्कार ही कर दिखलाया। आप नहीं जानते कि मुम्बई पुलिस पर पचास बन्धकों को मुक्त कराने का कितना दबाव था। सरकार ने तो आंख में डन्डा किया हुआ था ही—साथ ही लोग भी सड़कों पर उतर आये थे। पुलिस मुख्यालय के सामने हजारों की संख्या में लोग धरने पर बैठे हुये थे। टी०वी० पर जब बन्धकों के मुक्त होने की खबर प्रसारित हुई...तब बात बनी—जान-में-जान आई। अब तो मुम्बई में जश्न का माहौल है। चारों तरफ आपकी ही जय-जयकार हो रही है।"

"मेरी जय-जयकार...लेकिन मीडिया वालों को ये कैसे पता चला कि इस काम को मैंने किया है—?"

"प्रधानमन्त्री जी के हवाले से ही ये बतलाया गया कि सभी बन्धकों को आपने ही मुक्त करवाया है...।"

"ओह...!"

कमिश्नर ने इधर-उधर देखा और फिर पूछा—"श्वेता जी तो यहां पर हैं—लेकिन सरदार जी और शुक्ला जी दिखलाई नहीं पड़ रहे हैं। क्या वो दोनों आपके साथ नहीं थे—?"

"नहीं, मेरे साथ ही थे देशवाल साहब! किसी जरूरी काम से वो मुम्बई चले गये। यहां उनकी जरूरत भी नहीं रह गई थी। आप इन आतंकियों की लाशों को पोस्टमार्टम के लिये भिजवाने की व्यवस्था करें कमिश्नर साहब! बन्धकों को थोड़ी-बहुत देर में होश आ जायेगा तो उन्हें भी मुम्बई लेकर चलेंगे...।"

कमिश्नर ने अपने मातहतों को आदेश दिया कि पंचनामे की कार्रवाई पूरी करके सभी लाशों को पोस्टमार्टम हाउस पहुंचा दिया जाये।

तभी माधवी आ गई और केशव का इन्टरव्यू लेने लगी।

केशव बतलाने लगा कि उसने इस मिशन को कैसे कम्पलीट किया। उसने दो झूठ भी बोले—

पहला ये कि उसके वहां पहुंचने से पहले ही आतंकियों ने आत्महत्या कर ली थी।

दूसरा ये कि वहां उन्चास आतंकियों की लाशें मिलीं—उसने बशीर के बारे में कुछ नहीं बतलाया।

कहां था बशीर?

❑❑❑
❑❑❑

सभी पचास बन्धन-मुक्त हुये लोग उसी बस से मुम्बई पहुंचे, जिसमें उनका किडनेप हुआ था।

बस की ड्राइविंग केशव ही कर रहा था—जबकि उसकी टाटा सफारी गाड़ी श्वेता चला रही थी।

चूंकि सभी के बयान होने थे, इसीलिये सभी को पुलिस हैडक्वार्टर पर ले जाया गया।

मीडियावाले पहले से ही उपस्थित थे। जबकि माधवी तो अपनी टीम के साथ चैनल की गाड़ी से बस के पीछे-पीछे ही पुलिस हैडक्वार्टर पहुंची।

सभी किडनेप हुये लोगों के परिजन तथा रिश्तेदार भी वहां उपस्थित थे।

हजारों की संख्या में आम नागरिक भी थे, जिन्हें पुलिस वाले बड़ी कठिनता से उन्हें नियन्त्रण कर पा रहे थे।

बस से सबसे पहले मिर्जा बेग बाहर निकला तो अनुष्का दौड़कर उसके सीने से जा लगी और मारे खुशी के फफक-फफककर रोने लगी।

बाकी लोगों के परिजन व रिश्तेदार भी उनसे मिलते समय रोने लगे।

बड़ा ही भाव-भीना दृश्य था वो।

और जब केशव बस से बाहर निकला तो बन्धन-मुक्त हुये लोगों के परिजनों व रिश्तेदारों ने उसे घेर लिया और उसका धन्यवाद अदा करने के साथ-साथ आशीर्वाद भी देने लगे।

बाकी लोगों के मुख पर भी प्रशंसा के बोल थे।

फिर बन्धन-मुक्त हुये लोगों को मीडियावालों ने घेर लिया तथा तरह-तरह के प्रश्न करने लगे।

"सभी लोगों की जैसे सांसें थम गई थीं...।" मुश्ताक के गले में हाथ डाले हुये बोला मिर्जा बेग, "हम तो यही समझे थे कि पुलिस वाले हैं। लेकिन जब उन्होंने बतलाया कि वो आतंकी हैं तो हमारी हालत खराब हो गई थी। उनके लीडर ने बतलाया कि उन्हें कसाव को छुड़वाना है। अगर सरकार ने कसाब को नहीं छोड़ा तो हम लोगों को बम से उड़ा दिया जायेगा। हमारी बस के नीचे रिमोट बम लगा दिया गया था। वैसे भी दहशतगर्दों की तादाद पचास के करीब थी और उनके पास खतरनाक हथियार थे। हमें लग रहा था कि सरकार कसाब को नहीं छोड़ेगी और हम सभी को बम से उड़ा दिया जायेगा। लेकिन करिश्मा ही हो गया। पण्डितजी ने ना जाने क्या किया--कैसे किया। हम लोग धुएं की चपेट में आकर बेहोश हो गये थे। होश आया तो दहशतगर्दों की लाशें सामने थीं और हम पण्डितजी की सुपुर्दगी में थे...पनाह में थे। खुदा से यही दुआ करूंगा कि वो पण्डितजी को उम्रदराज करे और उनकी शोहरत को बुलन्दियों के आसमान तक पहुंचा दें--।"

"मुश्ताक हिन्दुस्तानी जी...।" जी न्यूज के रिपोर्टर ने पूछा, "आपकी बहादुरी के कई किस्से सुने हैं मैंने। आपने उन आतंकियों के मुकाबला करने की चेष्टा नहीं की थी--?"

मुश्ताक ने कुछ कहने को होंठ हिलाये ही थे कि उससे पहले मिर्जा बेग बोल उठा--"हिन्दुस्तानी जी ने तो अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी। ये तो दहशतगर्दों के लीडर बशीर से बस में भी भिड़ गये थे--इनके सिर पर ए०के० सैंतालीस से जोरदार हमला किया

गया। इनके सिर पर बंधा मफलर देख रहे हैं आप जनाब? अगर मैंने हाथ जोड़कर रहम की भीख ना मांगी होती तो इन्हें जान से ही मार दिया जाता--ये बेहोश हो गये थे। बाद में भी ये दहशतगर्दों से मुकाबला करने का इरादा बनाये हुये थे। मैंने ही सबकी जान का वास्ता देकर रोक दिया था। जो हुआ ठीक ही हुआ था। खुदा ने उस नेक काम के वास्ते पण्डितजी को चुना था। ये इनकी काबिलियत का ही सबूत है कि हममें से किसी की भी जान नहीं गई। लेकिन मेरी समझ में एक बात नहीं आ रही है कि दहशतगर्दों का लीडर बशीर कहां गया? मैंने सभी दहशतगर्दों की लाशें देखीं--लेकिन उनमें बशीर की लाश नहीं थी।"

"शायद इसके बारे में पण्डितजी कुछ बतला सकें--?" बोलने पर ए०बी०पी० न्यूज के रिपोर्टर ने माइक को केशव के मुंह के करीब कर दिया।

मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला तथा फिर बोला--"मेरे, राजन, करतार सिंह और श्वेता के वहां पहुंचने तक सभी आतंकी पोटेशियम सायनाइड खाकर खुदकुशी कर चुके थे और उनकी संख्या उनचास थी। मेरा अनुमान ये है कि जब मैंने ड्रोन से नशीली गैस की गोलियां गिराई थीं तो बशीर वहां नहीं था। किसी कारण से वो उस स्थान से काफी दूर था--तभी वो गैस की चपेट में आने से बच गया। खतरे को भांपकर वो भाग गया होगा। अब ये तो बशीर ही जाने कि वो कहां और क्या कर रहा होगा--!"



सात फुटा व खूब तगड़ा जिस्म क्रोध की आन्धी की चपेट में आकर थर-थर कांप रहा था।

बुरी तरह बौखलाया हुआ था चंगेज खां और ट्रांसमीटर पर बाबर से कॉन्टेक्ट करने की चेष्टा कर रहा था।

"सलाम, खां साहब...बाबर स्पीकिंग...।"

"कहां मर गये थे तुम बाबर? दो घण्टे से कॉन्टेक्ट करने की कोशिश कर रहा हूं मैं...।" मिनी ट्रांसमीटर को मुंह के करीब करके बोल रहे चंगेज खां के मुंह से मानो शब्द नहीं, दहकते अंगारे ही निकले थे।

"माफी चाहूंगा जनाब...।" ट्रांसमीटर के स्पीकर से बाबर की आवाज निकली, "आपको तो मालूम है ही कि किडनेप होने वाली बस में ही था मैं। उस बस में जाना मजबूरी हो गई थी मेरी। वैसे चाहता तो...जाने से बच भी सकता था। मुझे बीमारी का बहाना

बनाकर नर्सिंग होम में एडमिट ही तो होना था—लेकिन मैंने बस में सफर करने में एक फायदा देखा था...।"

"वो भला क्या—?"

"मैंने आपकी सलाह पर खुद को बाबर के नाम के पर्दे में छिपाया हुआ था। बस के किडनेप हो जाने के बाद ही टी०वी० पर मेरे मैसेज वाली डी०वी०डी० चलाई गई। जिसे मैंने पहले ही रिकॉर्ड करवाकर मीडिया वालों तक पहुंचाने का इन्तजाम कर दिया था। मुझे मालूम था कि केशव पण्डित इस मामले में अपनी टांग अड़ायेगा—उसने अड़ाई भी। चूंकि मेरा भी किडनेप हुआ था, इस वास्ते वो ख्वाबों में भी गुमान नहीं कर सकेगा कि मैं बाबर हो सकता हूं। खैर, हम सभी को पुलिस हैडक्वार्टर ले जाया गया था। वहां पर सभी के बयान हुये। मीडियावालों से भी गुफ्तगू हुई। सो घर पहुंचने में देरी हो गई। पहुंचते ही ट्रांसमीटर उठाया तो पाया कि आप कॉन्टेक्ट कर रहे हैं। फिर भी मैं देरी के वास्ते मुआफी चाहूंगा...।"

"छोड़ो इस बात को...।" चंगेज खां क्रोध का लबादा उतारकर चिन्ता व जिज्ञासा के खोल में प्रविष्ट होते हुये बोला, "ये बशीर कहां है? केशव पण्डित ने उनचास लाशें ही पुलिस को सौंपी हैं—उनमें बशीर नहीं है।"

"मैं भी बशीर के वास्ते ही फिक्रमन्द हूं खां साहब! होश आया तो सभी की लाशें थीं लेकिन बशीर गायब था। पण्डित का अनुमान है कि...।"

"वो मैंने टी०वी० पर देखा और सुना बाबर! हो सकता है कि ये साला केशव पण्डित कोई गेम खेल गया हो। बहुत ही सुर्ता है वो। उसके दिमाग पर बम फोड़ने का इरादा था हमारा—लेकिन उस कम्बख्त ने हमारे पहले ही मिशन में ही अड़ंगा अड़ा दिया। हमारे मन्सूबों पर पानी फेर दिया कम्बख्त ने। जी तो चाहता है कि उसकी बोटी-बोटी करके और मिक्सी में डालकर उसका जूस निकाल दूं। खैर, इस पण्डित से भी निपटा जायेगा...जल्दी ही निपटा जायेगा। लेकिन पहले बशीर के बारे में जानकारी होना जरूरी है। अगर उसकी कोई जानकारी नहीं मिलती तो...फिर ये सोचना पड़ेगा कि उसके गायब होने में केशव पण्डित का हाथ तो नहीं है? मालूम करो। ट्रांसमीटर पर कॉन्टेक्ट करो बशीर से। फौरन ही मुझे बतलाओ कि उससे कॉन्टेक्ट हुआ कि नहीं। अगर कॉन्टेक्ट हो जाये तो उस हरामजादे से पूछना कि वो बस के करीब क्यों नहीं था? कहां था और क्या कर रहा था—?"

□□□
□□□

"पापाजी...।"

कॉफी का मग लिये हुये अनुष्का अचानक ही कमरे में प्रविष्ट हुई तो हाथ में पॉकेट साइज का ट्रांसमीटर लिये हुये मिर्जा बेग घबरा गया।

बला की फुर्ती के साथ उसने ट्रांसमीटर को अपनी पीठ तथा सोफे के बीच पहुंचा दिया और चेहरे के भावों को सामान्य करने की चेष्टा करने लगा।

"कॉफी लाई हूं...।" दोनों मग मेज पर रखकर अनुष्का बोली, "थैंक्स, गॉड...आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा। वैसे सभी सही-सलामत रहे—सिर्फ मुश्ताक जी को थोड़ी चोट लगी। आप कॉफी पीकर थोड़ा आराम कर लीजिये—।"

"हां—बहुत जोरों की नींद आ रही है बिटिया। हालांकि पण्डितजी ने हम लोगों को बेहोश कर दिया था—लेकिन वो नींद नहीं थी...।" कहने पर मिर्जा बेग ने मग उठा लिया।

अनुष्का भी कॉफी चुसकते हुये बतलाने लगी कि उसके व सभी लोगों के साथ गायब हो जाने, फोन पर कॉन्टेक्ट ना होने पर वो कितनी चिन्तित हो गई थी और टी०वी० पर बाबर का मैसेज प्रसारित होने पर तो वो बुरी तरह नर्वस हो गई थी।

लेकिन मिर्जा बेग का ध्यान उसकी बातों पर भला था ही कहां? जल्दी-जल्दी कॉफी पीकर वो नकली जम्हाइयां लेने लगा।

"आप आराम कीजिये पापाजी...।" अनुष्का मग लिये हुये उठी और बोली, "रातभर मैं भी नहीं सोई। कुछ देर के लिये मैं भी जाकर सो जाती हूं।"

अनुष्का के जाते ही मिर्जा बेग ने दरवाजे को भीतर से बन्द कर लिया और ट्रांसमीटर पर बशीर से सम्पर्क करने की चेष्टा करने लगा—

"हैलो...बाबर कॉलिंग...बाबर कॉलिंग...।"

"......"

"हैलो...बाबर कॉलिंग...बाबर कॉलिंग...।"

"जी, जनाब...बशीर बोल रहा हूं...आह...!" बहुत ही कमजोर तथा पीड़ाभरी आवाज थी वो।

"शुक्र है कि तुमसे कॉन्टेक्ट हो गया...।" बोला मिर्जा बेग, "तुम कहां हो बशीर—?"

"मैं...मैं राजगर के मराठा नर्सिंग होम में एडमिट हूं जनाब...आह...।"

"क्या बात है? तुम तकलीफ में मालूम पड़ रहे हो बशीर?"

"मेरे पेट में बहुत ही भयानक किस्म का दर्द उठा था जनाब। दरअसल मुझे अपेंडिक्स की तकलीफ थी। पिछली मर्तबा भी डॉक्टर ने कहा था कि ऑपरेशन कराना पड़ेगा। लेकिन तब दवाई से आराम हो गया था और मैंने...आह...ऑपरेशन नहीं कराया था। रात दर्द बर्दाश्त ना हुआ तो मैं सभी बन्धकों की जिम्मेदारी दूसरे लोगों को देकर राजनगर चला गया था। वहां मराठा नर्सिंग होम के डॉक्टर ने बतलाया कि अपेंडिक्स किसी भी वक्त फट सकती है—मुझे फौरन से पेश्तर ऑपरेशन करवाना पड़ेगा...आह...रात में ही ऑपरेशन करवाया। तब तो सुन्न करने वाली सूई लगा दी थी। अब सुन्न करने वाली दवा का असर खत्म हो गया तो थोड़ी-थोड़ी तकलीफ हो रही है। कुछ देर पहले ही नर्स ने बतलाया कि जो पचास जायरीन किडनेप हुये थे, उन्हें केशव पण्डित ने आजाद करा लिया है और उनचास दहशतगर्दों ने खुदकुशी कर ली है...आह...सुनकर मेरे होश फाख्ता हो गये...ना जाने उस कम्बख्त केशव पण्डित ने ये सब कैसे कर डाला। जिन्दगी में पहली मर्तबा शिकस्त का मुंह देखा मैंने। अगर मैं वहां होता तो...किसी भी कीमत पर केशव पण्डित को कामयाव ना होने देता—भले ही मुझे सभी बन्धकों को रिमोट बम से उड़ाना पड़ता और अपनी जान देनी पड़ती। बहुत बड़ा झटका दिया है केशव पण्डित ने...आह...छोडूंगा नहीं उसे—मौका मिलते ही जान से मार दूंगा उसे—।"

"फिलहाल तुम केशव पण्डित की तरफ कोई तवज्जो मत दो बशीर! चलने-फिरने के काबिल होते ही अपने वाले ठिकाने पर चले आना। तुम्हें अगले मिशन के बारे में बतला दिया जायेगा। तुम्हारी मदद को कश्मीर से पचास के करीब दहशतगर्द आ जायेंगे।"

"मैं कल तक ही अपने ठिकाने पर पहुंचने की कोशिश करूंगा जनाब...आह...।"

"ठीक है। फिलहाल अपना ख्याल रखना। इलाज में जरा-सी भी कोताही मत करना...।" कहने पर मिर्जा बेग ने ट्रांसमीटर बन्द कर दिया।

फिर उसने चंगेज खां से सम्पर्क करके उसे बशीर के बारे में बतलाया और फौरन से पेशतर पचास आतंकी भेजने के लिये कहा।

चंगेज खां ने उससे कहा कि वो कसाब को आजाद कराने के लिये जल्दी ही कोई प्लान तैयार करे और उस पर अमल करे—।

❑❑❑
❑❑❑

कुर्सी पर बंधा बैठा बशीर आंखें फाड़े हुये केशव को यूं ही देखे

जा रहा था कि मानो उसके कन्धों पर एक साथ कुतुबमीनार और एफिल टॉवर उग आये हों।

केशव ट्रांसमीटर पर बाबर से बात कर रहा था और हू-ब-हू बशीर की ही आवाज में बोल रहा था।

वह एक तहखाना था, जो कि केशव के बंगले के नीचे स्थित था।

कहने को वो तहखाना था, वर्ना यह आधुनिक सुविधाओं वाला बड़ा कमरा था। बढ़िया फर्नीचर, डबल बेड, सोफा सैट, शीशे के टॉप वाली मेज, फ्रिज, टी०वी०, डी०वी०डी०, म्यूजिक सिस्टम, देशी-विदेशी पुस्तकों से भरी शीशे की आलमारी, एक कोने में किचन के सामान के साथ चार बर्नर वाला चूल्हा व गैस सिलेन्डर, खाना व नाश्ता बनाने के लिये बर्तन—अर्थात् वहां पर कोई भी व्यक्ति कुछ दिनों तक रह सकता था—क्योंकि अटैच्ड बाथरूम व ट्रॉयलेट भी थे।

इसी के साथ एक कोने को इन्टेरोगेशन रूम या टॉर्चर रूम का रूप भी दिया गया था। वहां एक बड़ी टेबल पर किसी को लिटाकर बांधने के लिये उसमें स्टील की मजबूत पट्टियां जुड़ी हुई थीं। उसी मेज पर एक छोटी-सी आरा मशीन भी लगी थी, जिसकी आरी गोल चक्र जैसी थी।

ऊपर छत पर कई गोल कुन्डे लगे थे, किसी को भी उल्टा लटकाने के लिये।

एक स्टील की स्पेशल कुर्सी थी, जिसका सम्बन्ध दीवार पर लगे स्विच बोर्ड से था। उस बोर्ड के स्विच दबाने पर कुर्सी के भीतर से स्टील की पट्टियां निकलकर उस पर बैठे व्यक्ति की कलाइयों, कोहनियों, कन्धों, पेट, सीने, गले व माथे के साथ पैरों को भी जकड़कर दूसरी तरफ से कुर्सी के भीतर जा समाती थीं और उन्हें पूरे जोर लगाकर भी ढीला नहीं किया जा सकता था—हिलाया नहीं जा सकता था।

वो कुर्सी फर्श से बाहर निकले एक गोल खम्भे से जुड़ी थी। उस खम्भे को स्विच दबाकर ऊपर उठाया जा सकता था और कुम्हार की चाक की मानिन्द गोल-गोल बम, मध्यम या तेज गति से घुमाया जा सकता था—जाहिर है कि खम्भे के साथ कुर्सी भी ऊपर-नीचे हो सकती थी या घूम सकती थी।

बशीर उसी कुर्सी पर बैठा था। उसके पैरों, पेट, सीने, गले, माथे तथा हत्थों पर टिके हाथों पर स्टील की मजबूत पट्टियां कसी हुई थीं।

एक स्टूल पर खुले रखे ब्रीफकेस में प्लास, नोज प्लायर, स्टील

की चिमटियां, छोटी-बड़ी कीलें, हथौड़ी, हथौड़ा, लोहे के डन्डे इत्यादि ऐसे औजार रखे थे, जिनसे टॉर्चर किया जाता था, या किया जा सकता था।

बशीर कुर्सी पर किसी बुत की मानिन्द ही बैठा था--क्योंकि वो पूरे जोर लगाकर भी हिल नहीं पा रहा था।

"साढ़े प्राहवा जी नूं घूर-घूरकर की वेखता है ओये आतंकी...?" करतार सिंह बशीर के सिर पर चपत लगाकर बोला, "साढ़े प्राहवाजी किसी की बी आवाज दी हू-ब-हू नकल कर सकदे हैं। ये तो और बी कई ऐसे काम कर सकदे हैं कि...कोई आम आदमी नई कर सकदा। तेरी आवाज विच तेरे उस बाबर नूं कैसा बेवकूफ बनाया। ये तो स्टार्टिंग ही है। अगे-अगे वेखना कि साढे प्राहवाजी की करदे हन--।"

"तूने भले ही एक बार बाबर को धोखा दे दिया हो केशव पण्डित--लेकिन तेरी मंशा कभी पूरी ना होगी। बाबर बहुत ही चालाक है। कोई नहीं जानता कि वो कौन है और कहां रहता है। तूने जो करना था...कर लिया--अब तेरी बारी है। बाबर तेरी मौत का सामान जुटा रहा...आह...।"

कमरे में उपस्थित राजन बशीर के चेहरे पर घूंसा जड़कर बोला, "हजार बाबर भी मिलकर मेरे गुरुवर का बाल बांका नहीं कर सकते बशीर। तूने इन्हें देखा है लेकिन इन्हें ठीक से जाना नहीं। जानता तो ऐसी बचकानी बात नहीं करता।"

"बिल्कुल।" श्वेता भी राजन की हां-में-हां मिलाते हुये बोली; "गुरुजी इन्सानियत, कानून और देश के लिये धर्मयुद्ध लड़ते हैं--इसलिये इनके ऊपर ईश्वर का वरद-हस्त है।"

चारमीनार की सिगरेट सुलगाकर केशव बशीर के सामने एक स्टूल पर बैठ गया और उसकी आंखों-में-आंखें डालकर बोला, "तुझे जिन्दा छोड़ दिया था मैंने और चुपचाप यहां ले आया था। क्योंकि मैंने रात ही एक प्लान बना लिया था। मैंने बाबर से तेरी आवाज में बात करके उसे विश्वास दिला दिया कि तू ना सिर्फ जिन्दा है, बल्कि अपेंडिक्स का ऑप्रेशन कराकर राजनगर के मराठा नर्सिंग होम में एडमिट है। अब आगे का प्लान भी बतला देता हूं तुझे--मैं कॉन्टेक्ट लैंसेज, विग...और फेसमास्क की मदद से तेरा रूप धारण करूंगा और बाबर तक पहुंच जाऊंगा...।"

"ऐसा कभी ना होगा पण्डित! तू कभी भी बाबर तक नहीं पहुंच सकेगा। तू मेरा रूप तो बना सकता है लेकिन बाबर तक नहीं पहुंच सकता। क्योंकि बाबर अपने मातहतों के सामने नहीं आता। वो सिर्फ

ट्रांसमीटर पर ही बात करता है। अगर वो किसी मजबूरी में किसी के सामने आता भी है तो पहले इस बात की तसदीक करता है कि वो आदमी असली है भी कि नहीं। उसने अपने सभी आदमियों को एक कोड वर्ड दिया है। तू वो कोड वर्ड बोलेगा नहीं, और बाबर तेरे सामने आयेगा नहीं। कोई करिश्मा हो भी गया तो तेरे पास इस बात की क्या गारन्टी होगी कि आने वाला बाबर ही है या उसने अपनी जगह किसी दूसरे को भेज दिया है? बाबर की भी एक खास पहचान है और तू वो पहचान कभी नहीं जान पायेगा।"

"भला जानूंगा क्यों नहीं...?" केशव लघु हंसी हंसने पर बोला, "तू मुझे बाबर के बारे में सब कुछ बतलायेगा। मुझे सारी जानकारियां देगा तू...।"

"नामुमकिन...।"

"नामुमकिन को मुमकिन बनाने के फन में मैं माहिर हूं बशीर! सुबह तक तू एफ०एम० रेडियो की तरह ही बोलेगा। मैं भी देखता हूं कि तू कितनी देर तक चुप रह पाता है--!"

❑❑❑
❑❑❑

अगर किसी के सामने अचानक ही फुल साइज वाला डायनासोर आ जाये तो? उसकी जो प्रतिक्रिया होगी, बिल्कुल वो ही प्रतिक्रिया बशीर की थी।

वो आंखें फाड़े हुये अपने सामने खड़े बशीर को देख रहा था और उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया था।

"क्यों...विश्वास नहीं हो रहा है अपनी आंखों पर...?" व्यंगपूर्ण मुस्कान के साथ बोला वह, "ये तो नहीं सोच रहा है कि तू किसी दर्पण में अपना ही प्रतिबिम्ब अर्थात् अक्श को तो नहीं देख रहा हूं? या तेरा कोई जुड़वा भाई तेरे सामने तो नहीं आ गया है? मैं बशीर नहीं हूं...केशव पण्डित हूं। ये विग, फेसमास्क, कॉन्टेक्टर लैंसेज और नकली दांतों का ही कमाल है कि मैं तेरा हमशक्ल बन गया हूं। तेरी ही आवाज में और तेरे ही लहजे में बात कर रहा हूं मैं। यानि कुल मिलाकर बाबर को धोखा देने में सफल हो जाऊंगा मैं।"

यूं ही मुस्कुराया बशीर कि मानो केशव ने कोई बचकानी बात बोल दी हो। व्यंगपूर्ण भाव से बोला, "बाबर की अपनी कोई पहचान है और उसने मुझे मेरा भी कोड वर्ड दिया हुआ है। जब तूने उससे ट्रांसमीटर पर बात की थी तो उसने अपना कोड वर्ड नहीं बताया था और तुझसे भी मेरा कोड वर्ड नहीं पूछा था। ये बात तेरे वास्ते ही

नुकसानदाई है। तू पकड़ा जायेगा या बाबर तक नहीं पहुंच पायेगा। यूं क्यों मुस्कुरा रहा है तू–?"

"तेरी नादानी पर...बेवकूफी पर...।" बशीररूपी केशव ने चारमीनार की सिगरेट सुलगाकर कश लगाया और धुअें का गोला-सा वशीर के चेहरे पर दागकर बोला, "मुझे मालूम है कि तेरा कोर्ड वर्ड है...काला भेड़िया...।"

बशीर के मुख से आश्चर्य मिश्रित सिसकारी-सी छूट गई।

"और बाबर का कोर्ड वर्ड है...बाबर हूं हिन्दुस्तान का। इसी के साथ वो अपने हाथ की उंगलियों को विपरीत दिशा में आसानी से मोड़ लेता है और मोड़कर अपनी पहचान बतलाता है...।"

यूं ही लगा कि मानो बशीर मारे आश्चर्य के पागल ही हो जायेगा–वह केशव को यूं ही देखे जा रहा था कि मानो केशव कोई अजूबा ही हो।

"मारे हैरानी के पागल मत हो...।" कुर्सी पर बन्धे बैठे बशीर का गाल थपथपाकर बोला केशव, "मैंने तुझे टॉर्चर नहीं किया था–क्योंकि जब घी ऐसे ही निकल रहा हो तो फिर उंगली को टेढ़ा करने की भला जरूरत ही क्या है? रात मैंने तुझे अपनी आंखों में झांकने के लिये कहा था तो तूने झांककर देखा भी था। तुझे लगा होगा कि उसके बाद तू गहरी नींद सो गया था। लेकिन हकीकत में मैंने तुझे हिप्नोटाइज कर दिया था। तेरा दिमाग मेरे काबू में हो गया था। मैंने जो भी पूछा था, तूने उसका सही-सही जवाब दिया था। अपने मतलब की तमाम जानकारियां हासिल कर ली थीं मैंने। ये भी जान गया हूं कि मुम्बई में तेरा वो ठिकाना कहां पर है। बन्द हो चुकी साबुन की फेक्ट्री के गोदाम को ठिकाने के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है...।"

बशीर के चेहरे पर बारह बजने लगे।

"अब इसका कोई काम नहीं रहा राजन। अब ये इस धरती पर बोझ ही है...।" बहुत ही खुश्क तथा खुरदरे लहजे में कहा केशव ने, "इसके हिस्से का पोटेशियम सायनाइड वाला कैप्सूल बचा हुआ है–उसे इसके हलक में उतार दो और इसे तेजाब के टेंक में डालकर डिसट्रॉय कर दो–।"

□□□
□□□

बशीर के रूप में केशव साबुन के गोदाम में बनाये गये ठिकाने पर पहुंच गया–जहां पहले से ही पचास खूंखार आतंकी मौजूद थे, जो कि कश्मीर से चंगेज खां द्वारा इस आदेश के साथ भेजे गये थे

कि उन्हें बाबर और अपने कमाण्डर बशीर के हरेक हुक्म को मानना है–।

"मेरा नाम बशीर है और मेरा कोड है काला भेड़िया...।" पचासों आतंकियों के सामने चहलकदमी-सी करते हुये बशीर की आवाज में ही बोला केशव, "हम लोगों को बड़े-बड़े काम करने हैं–खून के दरिया बहाने हैं। तुम लोगों के पास पोटेशियम सायनाइड वाले कैप्सूल हैं ना–?"

"हां...हैं...।" सभी एक साथ बोले और गले में पड़े काले धागे वाले ताबीज दिखलाने लगे।

"ठीक है। हमें किसी भी कीमत पर गिरफ्तार नहीं होना है–ऐसी नौबत आने पर खुदकुशी कर लेनी है। हमारे पास हथियारों के साथ बमों का भी पूरा जाखीरा है। हमें एक जरूरी मिशन मिला है, जिस पर कल ही अमल करना है। चूंकि हमें हॉल में ही करारी शिकस्त मिली है–हम कसाब को छुड़ाने में नाकाम रहे हैं। इसलिये हम अगले मिशन की कामयाबी के वास्ते कसम खायेंगे। सभी आंखें वन्द कर लो और मैं जो भी बोलूं–वो दोहराओ...मैं कसम खाता हूं कि...।"

"मैं कसम खाता हूं कि...।" सभी आंखें मूंदकर समवेत् स्वर में बोलने लगे।

"जब तक जान में जान है...।"

"जब तक जान में जान है...।"

"चैन से नहीं बैठेंगे...।"

"चैन से नहीं बैठेंगे...।"

तभी केशव ने कोट की जेब से क्रिकेट की बॉल के साइज का गोला निकालकर फर्श पर पटक दिया और सांसों को रोक लिया।

गोला फर्श से टकराते ही फटा और तेजी के साथ हल्के पीले रंग का धुआं फैलने लगा।

लगभग दो मिनट पश्चात् वो धुआं छंटा तो सभी आतंकी बेहोशी की दशा में लम्बलेट दिखलाई पड़े।

केशव ने पहले फेफड़ों तक ताजी सांस भरी, फिर फोन निकालकर किसी को मिस कॉल मारी।

दो मिनट पश्चात् ही राजन, करतार सिंह व श्वेता वहां आ पहुंचे।

"बस लेकर आये हो ना–?" पूछा केशव ने।

"जी, प्राहवा जी...।"

"हां–गुरुवर...।"

"जी, गुरुजी....।"

"गुड...वेरी गुड! इन बेहोश आतंकियों के गलों में पोटेशियम सायनाइड वाले तावीज हैं। तावीजों से कैप्सूल निकालकर इनके मुंह में पहुंचा दो—ये बेहोशी की दशा में ही यमलोक को प्रस्थान कर जायेंगे। चुपचाप इनकी लाशों को बस में भरकर समुद्र के हवाले कर आना। यहां पर काफी मात्रा में हथियार और बम हैं। गोलियों समेत हथियार मेरे घर पर जायेंगे और बम समुद्र के भीतर पहुंचा देना। इतना काम होने पर मेरे प्लान का अगला चरण शुरू होगा....।"

लब्बो-लुआब ये कि राजन, करतार सिंह व श्वेता ने सभी बेहोश आतंकियों को उनके ही जहर से मारकर उनकी लाशों को चुपचाप बमों समेत समुद्र की गोद में पहुंचा दिया—जबकि गोलियों समेत सारे हथियार केशव के घर पहुंच गये।

प्रश्न ये था कि केशव ने ऐसा क्यों किया था—आखिर उसके दिमाग में कौन-सी खिचड़ी पक रही थी?

❑❑❑
❑❑❑

"बाबर हूं हिन्दुस्तान का...।" केशव ने ट्रांसमीटर पर बाबर से सम्पर्क किया तो बाबर ने सबसे पहले यही बोला, फिर कहा, "अपना कोड वर्ड बोलो—?"

"काला भेड़िया...।" तपाक से बोला केशव, "लेकिन बशीर की आवाज में।"

"ठिकाने पर पहुंच गये...?"

"हां—कभी का—।"

"सभी दहशतगर्दों से मिले—?"

"हां, मिला भी और उन्हें अपने कब्जे में भी कर लिया है...।"

"कब्जे में कर लिया...क्या मतलब—?"

"सारे हथियार और बम भी मेरे कब्जे में हैं...।"

"ये...ये तुम कैसी बात कर रहे हो बशीर? दिमाग तो ठीक है ना तुम्हारा—?"

"मेरा दिमाग तो एकदम दुरुस्त है—लेकिन तेरा दिमाग जरूर चक्करघिन्नी बन जायेगा...।"

"चक्करघिन्नी? क्या बक रहा है तू? तेरी इन उट पटांग बातों का मतलब क्या है बशीर—?"

"मैंने हथियारों और बमों के साथ पचास आतंकियों को अपने कब्जे में कर लिया है। तू अगर साबुन फैक्ट्री के गोदाम में जाकर दूरबीन से भी देखेगा तो कुछ ना मिलेगा। पचासों दहशतगर्दों को

बेहोश करके अपने खुफिया ठिकाने पर ले आया हूं। उनके हाथ-पैर बांध दिये हैं और कमरे में एक रिमोट बम भी रख दिया है...।"

"तेरी इस हरकत का मतलब क्या है बशीर?" दूसरी तरफ से बाबर बौखलाकर चीख-सा रहा था, "क्या तू अपने आकाओं के साथ गद्दारी की जुर्रत कर रहा है?"

"ये गद्दारी थोड़े ही है—ये तो सौदा है बाबर—।"

"सौदा? कैसा सौदा—?"

"मुझे पचास करोड़ रुपये चाहिये। बहुत कर ली दूसरे लोगों की जी-हुजूरी...गुलामी। अब खुद-मुख्तार बनकर ऐश की जिन्दगी जीना चाहता हूं। पचास करोड़ रुपये लेकर दुबई चला जाऊंगा और मस्ती की जिन्दगी जीऊंगा!"

"पागल हो गया है तू...तेरा दिमाग चल गया है। तू आई०एस०आई० से दुश्मनी मोल लेने की जुर्रत कर रहा है। तेरे जिन आकाओं ने तुझे बनाया है, वो तुझे खत्म भी कर सकते हैं। तेरा वजूद ही नेस्तनाबूद कर दिया...।"

"अपनी धमकी अपने ही पास रख बाबर...।" बशीर की आवाज में केशव सर्द लहजे में बोला, "ये कदम उठाने से पहले हजार बार सोच लिया था। तुम लोगों की गुलामी में भी हर वक्त जान जाने का खतरा रहता है। हर वक्त मौत सिर पर मंडराती रहती थी। सोचा कि एक रिस्क लेकर देख लूं। रकम के साथ एक बार दुबई पहुंच गया तो फिर तुम लोग मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकोगे। मुझे पूरे पचास करोड़ रुपये चाहिये—वरना मैं बम से सारे हथियार, बम और सभी दहशतगर्दों को उड़ा दूंगा। ये बोल कि तू मुझे पचास करोड़ रुपये दे रहा है कि नहीं?"

"इतनी बड़ी रकम देना मेरे इख्तियार में नहीं है। मुझे ऊपर बात करनी होगी...।"

"चंगेज खां से—?"

"हां—।"

"तू बात कर...चाहे ना कर—मुझे इससे कोई सरोकार नहीं है। मुझे कल शाम...या रात को आठ बजे पचास करोड़ रुपये चाहिये। अगर रकम ना मिली तो मैं सबको उड़ा दूंगा।"

"लेकिन...।"

"कोई लेकिन—वेकिन नहीं बाबर! कल रात आठ बजे रकम चाहिये तो चाहिये। सात बजे यानि एक घन्टा पहले बतला दूंगा कि रकम कहां पर लानी है। वो रकम लेकर तू आयेगा और अकेला ही आयेगा। तेरी खास पहचान की वजह से मैं तुझे पहचान लूंगा। ६

गोखे का ख्याल भी मत करना—वरना बहुत पछताना पड़ जायेगा। कल शाम सात बजे मैं तुझे बतलाऊंगा कि रकम लेकर कहां पर आना है—!"



जिस तरह ऑन करने पर इलैक्ट्रिक हीटर का एलीमेन्ट धीरे-धीरे गर्म होकर सुर्ख पड़ता चला जाता है और फिर उसकी दहक तथा लाली बढ़ती चली जाती है—ठीक वैसे ही चंगेज खां का तरबूज के जैसा विशाल चेहरा सुर्ख होता जा रहा था और इसी के साथ उसके लम्बे-चौड़े जिस्म का कम्पन बढ़ोत्तरी पर था।

उसके हाथ में ट्रांसमीटर था; जिसके स्पीकर से बाबर की आवाज उभर रही थी—जो कि बशीर के बारे में बतला रहा था।

"उस हरामखाने की इतनी हिम्मत...इतनी जुर्रत...!" दांतों को पीसने पर फुंफकारा-सा चंगेज खां, "था ही क्या वो? कैंचुआ ही था। मैंने उसे जहरीला नाग बनाया। आज वो हमें ही डसने की जुर्रत कर रहा है। लगता है कि उसकी शामत आ गई है। उसके फन को कुचलने का वक्त आ गया है। अपनी औकात भूल गया है वो। हमारा पाला-पोसा हुआ सांप हमें डसने से पहले बुरी मौत मर जायेगा।"

"फिलहाल क्या किया जाये खां साहब?" दूसरी तरफ से पूछा बाबर ने, "उसके कब्जे में हमारे हथियार, बम तो हैं ही—साथ ही पचास लोग भी हैं। लगता नहीं था कि वो कोरी धमकी दे रहा था—रकम नहीं मिलने पर वो सबको उड़ा सकता है। क्यों ना उसे तभी दबोच लिया जाये—जब वो रकम लेने आये—?"

"इतना पागल तो नहीं है वो—जो अपनी हिफाजत का इन्तजाम किये बिना ही वहां आ जायेगा। ये तो उसने भी सोचा होगा कि जब वो रकम लेने जायेगा तो उसको दबोचने की कोशिश हो सकती है। दिक्कत वाली बात ये है कि हम हथियारों और बमों का नुकसान तो बर्दाश्त कर सकते हैं—लेकिन उन पचास दहशतगर्दों का नहीं। सभी को उम्दा किस्म की ट्रेनिंग दी गई है। वो मिलिट्री के कमाण्डोज से भी कहीं ज्यादा खतरनाक हैं और अपनी जान देने से पीछे हटने वाले नहीं हैं। वो हमारे वास्ते यूं भी बेशकीमती हैं कि फिलहाल हमारे पास वो ही लोग हैं। उन्हें कुछ हो गया तो हमारे पास ऐसे जांबाज आदमियों की कमी हो जायेगी और हमारे मिशन को ब्रेक लग जायेगा। हम पहले ही अपने पचास आदमी खो चुके हैं। इतने लोगों को दांव पर लगाने की सोच भी नहीं सकते हैं—।"

"तो फिर जनाब—क्या किया जाये—?"

"मेरा ख्याल तो ये है कि बशीर को रकम दी जाये—लेकिन रकम वाले बैगों में छोटे-छोटे ट्रांसमीटर लगा दिये जायें—ताकि मालूम पड़ सके कि वो कहां गया है। जाहिर है कि वो अपने उस खुफिया ठिकाने पर ही जायेगा—जहां पर उसने हथियारों और बमों के साथ हमारे पचास आदमियों को रखा होगा। वहां पर उसको दबोचा जायेगा। गैस छोड़कर उसको बेहोश किया जाये...।"

"और कुत्ते की मौत मार दिया जाये—।"

"कुत्ते की मौत तो मरेगा ही वो—लेकिन उस गुस्ताख को मैं अपने हाथों से बुरी मौत मारना चाहता हूं। तुम उसे पकड़कर मेरे पास लाओगे बाबर—फिर देखना उसकी मौत का तमाशा। फिलहाल तुम्हें बहुत ही होशियारी और चालाकी से काम लेना है और सब्र भी रखना है। उन पचास दहशतगर्दों को भी आजाद कराना है।"

"लेकिन उसने रकम लेकर मुझी को बुलाया है। मैं अपनी जगह किसी और को भेज दूं तो वो उसे पकड़ लेगा क्योंकि हाथों की उंगलियों को पीछे की तरफ मैं ही आसानी से मोड़ सकता हूं...।"

"तो रकम लेकर तुम ही चले जाना बाबर—। लेकिन पूरी होशियारी के साथ जाना। कहीं ऐसा ना हो कि वो तुम्हें भी अपने कब्जे में कर ले और मुझे दिक्कत में डाल दे। अपने साथ कुछ हथियारबन्द लोग ले जाना और उन्हें दूर ही रखना। अगर तुम्हारे आदमी तुम्हें खतरे में पड़ा देखें तो वो एक्शन में आ जायें—वरना दूर खड़े तमाशा ही देखते रहें।"

"ठीक है जनाब! मैं अपनी हिफाजत के पुख्ता इन्तजाम करके ही जाऊंगा। रकम वाले बैगों में ट्रांसमीटर्स लगा दिये जायेंगे। जब वो अपने ठिकाने पर पहुंच जायेगा तो उसको दबोच लिया जायेगा और हथियारों के साथ उन पचास लोगों को भी आजाद करा लिया जायेगा।"

"फिर तुम्हें किसी भी तरीके से उस हरामजादे बशीर को मेरे पास तक लाना है बाबर! नहीं, ये ठीक नहीं होगा! तुम भला बशीर के साथ इतना लम्बा सफर कैसे कर सकोगे? रास्ते में कोई भी गड़बड़ी हो सकती है। तुम बशीर को पकड़ने पर मुझे खबर कर देना। मैं वहीं चला आऊंगा। मुम्बई में ही बशीर की मौत का खेल खेला जायेगा। फिर...उस साले केशव पण्डित को भी तो देखना है। मुझे नहीं लगता कि केशव पण्डित के जीते-जी हम कोई काम ठीक से कर पायेंगे। वो यूं ही हमारे कामों में अड़ंगे अड़ाता रहेगा। उसको खत्म करना ही पड़ेगा। मुम्बई में ही बैठकर सोचेंगे कि केशव पण्डित का क्या इन्तजाम किया जाये—!"



अगली रात के दस बज रहे थे।

चंगेज खां के आदमी इन्डियन मिलिट्री के भेष में एक गांव से अठारह वर्ष की बला की खूबसूरत युवती को उठाकर ले आये थे और उसके परिवार के सभी लोगों को मार आये थे—ये आरोप लगाकर कि वो लोग पाकिस्तानी आतंकियों की मदद करते हैं।

चंगेज खां ने युवती पर इतना सितम किया कि वो बेचारी बेहोश हो गई और बेहोशी की दशा में भी कराहे जा रही थी—।

दिल नहीं भरा था चंगेज खां का और वो उस बेहोश युवती के साथ ही दोबारा मुंह काला करने लगा।

अचानक ही करीब ही मेज पर रखा ट्रांसमीटर सिग्नल देने लगा तो बहुत बुरा लगा चंगेज खां को—लेकिन इस ख्याल ने उसके क्रोध को शान्त कर दिया कि शायद बाबर ही उससे सम्पर्क करना चाह रहा हो।

युवती को छोड़कर वो उठा और ट्रांसमीटर ऑन करके बोला—"यस, चंगेज खां स्पीकिंग...।"

"बाबर हूं हिन्दुस्तान का...सलाम जनाब...सलाम...।"

"सलाम बाबर मियां! बहुत चहक रहे हो। कोई खुशखबरी है क्या—?"

"जी, जनाब! खुशखबरी ही है। वो हरामी बशीर अपने हाथ लग गया है। उसके कब्जे से हथियारों के साथ पचास-के-पचास दहशतगर्दों को आजाद करा लिया गया है। वो कमीना बेहोशी की हालत में मेरे कदमों में पड़ा है। आपकी ख्वाहिश थी कि उसे अपने हाथों से बुरी मौत मारेंगे। अपनी इस ख्वाहिश को पूरा करने के वास्ते मुम्बई चले आइये! होटल खादिम में आपके वास्ते बढ़िया रूम बुक करा दूंगा...।"

"जरूर। मैं अभी थोड़ी देर बाद ही चल दूंगा मियां। सुबह श्रीनगर तक और फिर प्लेन पकड़कर मुम्बई। तुम ऐसा करना कि होटल में सुलतान अहमद के नाम से रूम बुक करा देना। एड्रेस में लिखवाना...झील वाली गली, नजदीक लाल चौक, श्रीनगर। मेरे पास इस नाम और पते वाला डुप्लीकेट कार्ड भी है। पेशा लिखवाना...जाफरान का बिजनेस! मैं जाफरान के बिजनेसमैन के रूप में आऊंगा। लेकिन ये तो बतलाओ मियां कि तुमने बशीर को कब्जे में कैसे लिया—?"

"आपकी बतलाई हुई तरकीब ही आजमाई खां साहब! सात बजे बशीर ने कॉन्टेक्ट करके कहा कि मुझे पचास करोड़ रुपये लेकर

वसई के पुराने किले में आठ बजे पहुंचना है। मैंने चार शूटर पहले ही रवाना कर दिये थे—इस हिदायत के साथ कि मुझे खतरे में पड़ते देखकर ही वो कार्रवाई करें—वरना चुपचाप तमाशा देखते रहें। बशीर वहां था। उसे रकम सौंपकर मैं वापिस चला आया तो बशीर बेफिक्र होकर अपने ठिकाने पर पहुंच गया। वो नहीं जानता था कि रकम वाले बैगों में ट्रांसमीटर लगे हुये हैं। उन ट्रांसमीटर्स में मालूम पड़ गया कि वो किस जगह पर गया है। मेरे आदमियों ने उस इमारत में नशीली गैस छोड़कर मुझे इत्तला कर दी थी। मैं वहां पहुंचा तो पचास दहशतगर्दों के साथ बशीर भी बेहोश पड़ा मिला। सारे बम और हथियार भी यहीं पर हैं।"

"बहुत बढ़िया...बाबर!" चंगेज खां मेज पर हाथ मारकर बोला, "कल शाम तक पहुंच रहा हूं मुम्बई! तुम देखना कि मैं उस नमक हराम बशीर को कितनी बुरी मौत मारता हूं...।"




वाशिंगटन में हुये सीरियल ब्लास्ट ने पूरे अमेरिका को हिलाकर रख दिया।

सिर्फ एक घण्टे के भीतर ही एक शॉपिंग मॉल में, एक थियेटर, बस स्टैण्ड, हॉस्पिटल और रेलवे स्टेशन पर टाइम बम फटे—जिनमें पचास लोगों की जानें गईं और सौ से अधिक घायल थे।

सरकार बौखलाई।

पुलिस प्रशासन हड़बड़ाया।

सी०आई०ए० तिलमिलाई।

सी०आई०ए० के बड़े अधिकारी और विलियम के ससुर सांडर्स ने दावे के साथ बोल दिया कि ये सीरियल ब्लास्ट आई०एस०आई० ने किये हैं, जिसकी सरगना मोस्ट वान्टेड शहजादी ही है।

यूं तो शहजादी की पूरी सरगर्मी के साथ खोज की ही जा रही थी और उस पर पांच लाख अमेरिकन डॉलर का इनाम भी घोषित था—लेकिन सीरियल ब्लास्ट के पश्चात् उसे जिन्दा या मुर्दा पकड़वाने वाले को दस लाख डॉलर का इनाम देने की घोषणा कर दी गई और पुलिस को आदेश दे दिये गये कि कहीं से भी शहजादी को ढूंढा जाये और देखते ही गोली मार दी जाये।

तब चंगेज खां मुम्बई आ चुका था और सुल्तान अहमद के रूप में होटल खादिम में ठहरा हुआ था—उसे इस्लामाबाद स्थित आई०एस०आई० हैडक्वार्टर से उसके मातहत नसीब पठान ने सैटेलाइट फोन पर सारी जानकारियां दी।

बेटी के लिये चिन्तित बाप ने तुरन्त ही ट्रांसमीटर पर सम्पर्क स्थापित किया–

"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह...अब्बूजान...।"

"व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि। तुम कहां हो बेटी–?"

"मैं वाशिंगटन से रात ही न्यूयार्क आ गई थी अब्बूजान और हुलिया बदलकर खुफिया ठिकाने पर रह रही हूं...।"

"तुमने कुछ ज्यादा ही कर दिया बच्ची। पूरे अमेरिका में तलहका मच गया है...गदर मचा हुआ है...।"

"वो तो मचना ही था अब्बूजान...।" खनकभरी हंसी हंसकर बोली शहजादी, "आपकी बेटी ने डरना और हार मानना तो सीखा ही नहीं है।"

"मुझे अपनी बहादुर और जांबाज बेटी पर नाज है। लेकिन हमें जिन्दा रहकर अपने मिशन को मुसलसल चलाते रहना है। मजबूरी में भले ही खुदकुशी कर ली जाये–वरना खुदकुशी बुजदिली ही है। तुम इस वक्त अपनी जान को दांव पर लगाकर खुदकुशी जैसा ही काम मत करो। तुम्हें ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने पर दस लाख डॉलर के इनाम का ऐलान कर दिया गया है। वहां की पुलिस पागल कुत्ते की तरह ही तुम्हारे पीछे लगी हुई है। वक्त का तकाजा यही है कि तुम किसी भी तरह वहां से फौरन ही निकल लो और पाकिस्तान चली आओ–।"

"अभी तो मैंने कुछ किया भी नहीं अब्बू...।"

"ये तुम्हारे अब्बू का ही नहीं, तुम्हारे चीफ का भी ऑर्डर है शहजादी। फौरन से पेशतर वापिस लौट आओ–।"

"आपका हुक्म सिर-आंखों पर...सर! मैं मामले के ठण्डा पड़ जाने पाकिस्तान लौट रही हूं। आप ये बतलाइये कि हिन्दुस्तान में क्या चल रहा है...?"

चंगेज खां बतलाने लगा कि हिन्दुस्तान में क्या-क्या हो चुका है और फिलहाल क्या चल रहा है। उसने ये बतलाया कि वो घण्टे भर बाद बशीर को सजा देने के लिए होटल से वहां जायेगा, जहां बाबर उर्फ मिर्जा बेग ने बुलवाया है।

□□□

□□□

समुद्र के करीब ही ऊंची-नीची चट्टानें थीं। उन्हीं चट्टानों के बीच एक छोटा-सा रेतीला मैदान–जिस तक पहुंचने के लिए दो चट्टानों के बीच कहीं तीन फुट, कहीं चार तो कहीं पांच फुट चौड़ा व टेढ़ा-मेढ़ा गलियारा था।

उसी गलियारे से होकर चंगेज खां मैदान में पहुंचा। उसके पीछे-पीछे एक दर्जन हथियारबन्द लोग भी थे। वे सभी पाकिस्तान से चंगेज खां के साथ आये थे और कश्मीर से भी चंगेज खां के पीछे-पीछे विभिन्न मार्गों से होकर मुम्बई आकर इधर-उधर ठहरे हुये थे।

दो हट्टे-कट्टे युवकों के हाथों में ए०के० छप्पन राइफलें थीं, जिनका रुख जमीन पर पड़े बशीर की तरफ था।

काली पैन्ट तथा काले ओवर कोट में पैक मिर्जा बेग ओवरकोट की जेबों में हाथ डाले खड़ा था। चंगेज खां को देख वह सिर झुकाकर बड़े ही अदब के साथ बोला, "अस्सलामु अलैकुम...खां साहब–।"

"व अलैकुमुस्सलामु...बाबर मियां। मैं तो सोच रहा था कि तुम हुलिया बदलकर आओगे–सिर्फ बाबर बनकर। लेकिन तुम तो अपने असली रूप में ही हो मियां। तुम्हें पर्दा रखना चाहिये था। ये लापरवाही खतरनाक साबित हो सकती है–।"

"ये दोनों नौजवान मेरे भरोसे के हैं खां साहब! ये पहले से ही मेरे बारे में जानते हैं। रहा सवाल बशीर का...तो इससे पर्दा करने का क्या मतलब? इसको तो आप मौत की सजा देने वाले हैं ही...खैर, ये रहा बशीर! मैंने सारे हथियार, बमों के साथ उन पचास दहशतगर्दों को अपने ठिकाने पर पहुंचा दिया है। रकम को अपने घर ले गया था।"

एक सिगरेट सुलगा लेने पर चंगेज खां बशीर के करीब पहुंचा और उसके पेट पर जूते समेत पैर रखकर बोला–"हरामजादे...कुत्ते! क्या सोचकर गद्दारी कर रहा था तू–पचास करोड़ लेकर दुबई पहुंच जायेगा और मौज की जिन्दगी जीयेगा? हमने ही तुझे बनाया था और हम ही तुझे खत्म कर डालेंगे। क्या बात है...तू मुस्कुरा रहा है कम्बख्त? तेरी आंखों में मौत का खौफ नजर नहीं आ रहा है हमें। लगता है कि मौत के खौफ ने तेरे दिमाग की चूलें हिलाकर रख दी हैं। तब तेरा क्या होगा, जब तुझे मैं बुरी मौत मारूंगा...।"

'तड़...तड़...तड़...तड़!'

"आह...आह...।"

'तड़...तड़...तड़...तड़।'

"आह...आह...आह...।"

अचानक ही अप्रत्याशित रूप से ही मिर्जा बेग के दायें-बायें खड़े युवकों ने पलटकर चंगेज खां के साथ आये दर्जनभर खूंखार आतंकियों पर अन्धाधुन्ध फायरिंग करके उनके साथ खून की होली खेल दी।

सभी चींखें मारकर जमीन पर गिरे और हलाल कर दिये गये मुर्गे की मानिन्द ही तड़फड़ाकर, छटपटाकर हमेशा-हमेशा के लिये शान्त पड़ गये।

❑❑❑
❑❑❑

बुरी तरह बौखलाया हुआ चंगेज खां कभी अपने दर्जनभर मातहतों की लाशों को...तो कभी उन पर गोलियां चलाने वाले दोनों युवकों को देख रहा था—फिर मुट्ठियां भींचकर चुपचाप खड़े मिर्जा बेग की तरफ घूमकर दहाड़ उठा, "ये...ये सब क्या हुआ मिर्जा बेग? तेरे इन पिल्लों ने मेरे आदमियों को मार डाला और तू चुपचाप खड़ा इनकी मौत का तमाशा देखता रहा। कोई विरोध नहीं किया तूने। तेरी इस हरकत का क्या मतलब निकाला जाये हराम के बच्चे? तू खामोश क्यों खड़ा है--कुछ बोलता क्यों नहीं है? आखिर तेरे इरादे क्या हैं—?"

"मिर्जा बेग बेचारा क्या बोलेगा--इसकी तो ऐसे ही बोलती बन्द है चंगेज खां...।" झटके के साथ उठकर बोला बशीर, नहीं—केशव पण्डित, "तेरे सवालों का जवाब मेरे पास है—।"

चकित भाव से बोला चंगेज खां—"ये क्या गड़बड़ घोटाला है मिर्जा बेग? बशीर की हरकत से गड़बड़ी की बू आ रही है मुझे। क्या सैटिंग कर ली है तूने इसके साथ—?"

"ये बेचारा सैटिंग करने की हालत में कहां है...।" हंसकर बोला केशव, "इसके तो ऐसे ही झुनझुने बजे हुये हैं! ये तेरे नहीं, मेरे हुक्म का गुलाम है--क्योंकि इसकी जान मेरी उंगली की जुम्बिश की मोहताज है! जरा ओवरकोट के बटन खोलकर अपने जिस्म से चिपकी मौत के दर्शन तो करा मिर्जा...।"

हुक्म के गुलाम की मानिन्द ही मिर्जा बेग ने कोट के बटन खोल दिये तो चन्द्रमा की पर्याप्त चांदनी में उसके पेट पर बंधा छोटे साइज का, लेकिन शक्तिशाली बम दिखलाई पड़ा—जिसका रिमोट बशीर-रूपी केशव ने कोट की जेब से निकालकर चंगेज खां के चेहरे के सामने वाल क्लॉक के पैन्डुलम की मानिन्द ही इधर-से-उधर और उधर-से-इधर किया।

"ये...ये सब क्या हो रहा है मिर्जा? तू कुछ बोलता क्यों नहीं—?"

"हां, तू ही बोल मिर्जा—मैं तुझे बोलने की इजाजत देता हूं...।"

"खां साहब...।" धीमी और मरी-सी आवाज में ही बोला मिर्जा बेग, "ये बशीर नहीं...बल्कि के...केशव पण्डित है...।"

यूं ही चिहुंका चंगेज खां कि मानो गलती से बिच्छूओं के ढेर पर पैर रखा गया हो—

"क...क्या...केशव पण्डित? ले...लेकिन...ये तो बशीर है...।"

केशव ने मुस्कुराते हुये विग तथा फेसमास्क उतार फेंका और बोला, "आंखों का रंग कॉन्टेक्ट लैंसेज से बदला हुआ है—जिन्हें फिलहाल नहीं उतारूंगा। हाय चंगेज खां...पाकिस्तानी मिलिट्री के लेफ्टीनेन्ट जनरल और आई०एस०आई० के चीफ—क्या हाल हैं तेरे—?"

कुछ क्षणों के लिए तरबूज जैसे सिर में कैद दिमाग की चक्कर-घिन्नी-सी बन गई। फिर चंगेज खां मुट्ठियों को कसकर भींचते हुये बोला, "ओह...तो तू है...केशव पण्डित...।"

"मैं राजन शुक्ला हूं।"

"और मैं करतार सिंह...पटियाला वाला—।"

मिर्जा बेग की अगल-बगल खड़े दोनों आदमी बोले, जो कि बदले हुये भेष में राजन व करतार सिंह ही थे।

"शिकार को निकला भेड़िया फंस गया शिकारी के जाल में...।" सात फुट ऊंचे चंगेज खां की परिक्रमा करते हुये बोला केशव, "तू कश्मीर से अपने पिल्लों के साथ ये सोचकर चला था कि बशीर को भी सजा देगा और मौका लगा तो मुझे भी टांय-टांय फिस कर देगा। लेकिन तू नहीं जानता था कि मैंने पहले से ही तेरे लिए जाल बिछाया हुआ था—जिसमें तू फंस भी गया है। अपने दिमाग के घोड़े मत दौड़ा—कोई फायदा नहीं होने वाला। मैं बतलाऊंगा तो ही समझ में आयेगा कि दरअसल मामला क्या है। तो कानों का मैल निकालकर सुन कि असल मामला क्या है। तेरे उन पचास शूरमाओं को गैस से बेहोश करने पर मैंने उनचास को तो उनके ही जहर से मार डाला था और बशीर को उठाकर अपने घर ले आया था। हिप्नोटाइज करके बशीर से सारी जानकारियां लेकर उसका भी खेल खत्म पैसा हजम कर दिया था। बशीर बनकर ठिकाने पर पहुंचा वहां मौजूद आतंकियों को बेहोश करके फिर जहर से मारकर समुद्र के हवाले कर दिया था। हथियारों को अपने घर पहुंचाया—जबकि बम समुद्र में फिंकवा दिये थे।

फिर बाबर से बात की मैंने और झूठ बोला कि पचास आतंकी मेरे कब्जे में हैं। अगर मुझे पचास करोड़ रुपये ना मिले तो सभी को मार दूंगा। अपनी तरफ से पूरी तैयारी करके मिर्जा बेग वहां आया था--इसके साथ चार हथियारबन्द लोग भी थे, जो कि इधर-उधर

छिप गये थे। लेकिन पहले से ही लगे सी०सी०टी०वी० कैमरों में वो कैद हो गये और राजन, करतार सिंह ने गुपचुप तरीके से उन्हें मौत के घाट उतार दिया था। खतरा भांपकर बेचारे बाबर ने रिवॉल्वर निकाली तो थी—लेकिन उसे चला नहीं सका था। इसको ठोक-पीटकर मैंने इसकी विग और फेसमास्क उतारकर इसके वास्तविक और नूरानी चेहरे के दर्शन किये और बन्धक बनाकर अपने घर के तहखाने में ले गया था। मैंने ही इसकी आवाज में तुझसे बात की थी और झूठी रिपोर्ट दी थी कि बशीर पकड़ाई में आ गया और सभी दहशतगर्द भी अपने कब्जे में आ गये। तुझे यहां आने को और होटल खादिम में ठहराने की बात की थी। तू यहां आया और फंस गया मेरे जाल में! बोल, मजा आया कि नहीं—? बोल...कुछ तो बोल—गूंगी का गुड़ खा लिया है क्या चंगेज खां—?"

❑❑❑

❑❑❑

कुछ लम्हों के लिये तो चंगेज खां ने गूंगी का गुड़ खा ही लिया था—केशव ने उसको जोर का झटका जोर से ही दिया था।

"तूने मिर्जा बेग की आवाज में बात करके मुझे धोखा दिया केशव पण्डित...।" गूंगी का गुड़ थूककर बोला चंगेज खां, "अपनी चालाकी का इस्तेमाल किया तूने—।"

"अगर मैं अपनी आवाज में बोलता और अपना परिचय भी देता तो क्या तू यहां तक चलकर आता? नहीं, तू कश्मीर से ही दुम दबाकर भाग जाता। खूनी भेड़िये का शिकार करने के लिये जाल तो बिछाना ही पड़ता है। क्या करने आया था मेरे वतन में? पर्यटन स्थलों पर घूमने आया था कि अजमेर शरीफ की जियारत करने आया था? दिल में बारूद और दिमाग में साजिश भरकर चोरों की तरह तू मेरे देश में आया। तेरे इरादे बहुत ही खतरनाक थे—जिन्हें अमली जामा पहनाने के लिये तूने इस...इस मिर्जा बेग को बाबर बनाया था। हिन्दुस्तान को आग लगाने के इरादे से आया था तू। मेरे प्यारे...मेरे लाड़ले वतन को कोई टेढ़ी नजरों से भी घूरेगा तो मैं उसकी आंखें निकाल लूंगा...।"

"अपनी जमीन पर शेर बन रहा है तू केशव पण्डित...।"

"क्या अपने दिमाग और उसमें भरी याददाश्त को पाकिस्तान में ही छोड़ आया था तू चंगेज खां? यूं तो मैं कई बार पाकिस्तान में आन्धी की तरह गया और अपना मिशन धड़ल्ले से पूरा करके तूफान की तरह वापिस लौटा। लेकिन तू ये कैसे भूल गया कि मैं कुछ ही दिन पहले तेरे मुल्क में गया था और मुश्ताक हिन्दुस्तानी को डंके

की चोट पर छुड़ाकर लाया था? मैंने जो कुछ भी किया था, वो तेरी मौजूदगी में और तेरी आंखों के सामने ही किया था। तेरा राष्ट्रपति भी वहां था और अन्तिम समय में जनरल परवेज खान भी वहां था। उन दोनों की बात नहीं करता मैं—सिर्फ तेरी ही बात करता हूं। वो तो तेरी ही जमीन थी। तेरी आई०एस०आई० के तमाम लोग वहां थे। तेरी सारी मिलिट्री भी वहीं पर थी। क्या कर लिया था तूने? एक मूंगफली भी छीलकर नहीं दिखलाई थी। हाथों में चूड़ियां पहने चुपचाप खड़ा तमाशा देखता रहा था। अगर दम था तो मुझे पकड़कर या रोककर दिखलाता।"

"तब...तब मैं मजबूर था...।" चंगेज खां मानो अंगारों पर ही लोटता हुआ बोला, "हमारे प्रेसीडेन्ट साहब की जान खतरे में थी। उनकी जान को खतरे में नहीं डाल सकता था—।"

"हर बार ऐसा ही हुआ है और आगे भी ऐसा ही होगा...।" चंगेज खां की परिक्रमा करते हुये बोला केशव, "पाकिस्तान जब भी हिन्दुस्तान के खिलाफ कोई साजिश रचेगा तो मैं वहीं आकर तुम लोगों की औकात बतलाऊंगा। जब मैं इस दुनिया में नहीं होऊंगा तो मां भारती का कोई एक लाड़ला बेटा वहां जायेगा और तुम लोगों की छाती पर मूंग दलकर आयेगा। लेकिन तुम बड़े ही बेशर्म हो। बार-बार पिटते हो—लेकिन अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हो। तुम वो नाग हो, जिसके सारे दांत तोड़कर जहर की थैली भी निकाल ली गई है—लेकिन फुंफकारें मारना नहीं छोड़ोगे। हम भी हिन्दुस्तानी हैं। ऐसे फुंफकारने वाले नागों के फन कुचलते आये हैं और आगे भी कुचलते रहेंगे। फिलहाल तेरी बारी है चंगेज खां...।"

चंगेज खां ने भेष बदले खड़े राजन व करतार सिंह को देखा और उनकी तरफ उंगली उठाकर व्यंगपूर्ण भाव से बोला, "ये दोनों ए०के० सैंतालीस लिये खड़े हैं! इनके दम पर ही तू मेरा फन कुचलने की बात कर रहा है केशव पण्डित! मैं जैसे ही तुझसे मुकाबला करूंगा...ये दोनों मुझे गोलियों से भून डालेंगे। ये दोनों नहीं होते तो...बतलाता कि चंगेज खां किस बला का नाम है—।"

"इसकी तमन्ना पूरी की जाये राजन, करतार सिंह...।" केशव मानो प्रत्येक शब्द को जबड़ों की चक्की में गेहूं के दानों की मानिन्द ही पीस-पीसकर बोला—"तुम दोनों अपनी जगह पर ही ध्रुव तारे की तरह अटल रहोगे। कुछ भी हो जाये...मेरी बोटी-बोटी क्यों ना हो जाये, लेकिन कोई हस्तक्षेप नहीं करोगे—अपने हथियारों का कदापि प्रयोग नहीं करोगे। सौगन्ध है तुम दोनों को मेरी—मुकाबला होगा सिर्फ मेरे और चंगेज खां के बीच। हम दोनों में से कोई एक तो

गलतफहमी का शिकार है ही। उसकी गलतफहमी दूर होनी ही चाहिये। चल, आ मैदान में चंगेज खां! देख लेते हैं कि किसमें कितना है दम! किसने अपनी मां का कितना दूध पीया है—!"

❑❑❑
❑❑❑

अगर कोई टिकिट लेकर उस मुकाबले को देखता तो मुंह बनाकर यही कहता कि...मजा नहीं आया।

एक मिनट भी तो नहीं चला मुकाबला।

चंगेज खां जंगली भैंसे की मानिन्द सिर झुकाकर और हुंकारे-सी भरते हुये केशव पर झपटा—इरादा था केशव के सीने पर सिर से शक्तिशाली प्रहार करने का।

लेकिन ऐन वक्त पर केशव दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही एकदम सीधा हवा में उछला और नीचे आते वक्त उसने चंगेज खां के झुके सिर पर दोनों पैरों से जूतों समेत ऐसा वार किया कि मानो सिर पर एक साथ दो हथौड़े पड़े हों।

रात में सूरज दिखलाई पड़ गया चंगेज खां को। वो औंधे मुंह जमीन पर गिरा ही था कि केशव ने हवा में उछलकर दायें पैर को हाथों की मदद से मोड़ लिया और घुटने का भीषण प्रहार चंगेज खां की कमर पर किया...तड़ाक्।

इतना जोर से चींखा चंगेज खां कि वातावरण भी गूंज उठा—उसकी रीढ़ टूट गई थी और वो उठने के काबिल नहीं रह गया था।

मारे पीड़ा के उसका चेहरा सुर्ख पड़ गया और आंखों में आंसू भर आये।

केशव ने उसे ठोकर मारकर पलट दिया और हवा में उछलकर दोनों घुटनों से उसके सीने पर प्रहार करके सीने की हड्डियों का पिंजरा तोड़ दिया।

चंगेज खां के मुंह से पीड़ाभरी चीख के साथ खून का फौव्वारा भी छूटा।

उसे तड़पता छोड़कर मिर्जा बेग की तरफ बढ़ा तो मिर्जा बेग पसीने-पसीने होकर रोने-सा लगा—"मैं...मैंने आपको बतलाया था कि मुल्क के बंटवारे के वक्त मेरे चचाजान अपनी फैमिली के साथ पाकिस्तान जा रहे थे तो...उन्हें और उनकी फैमली को बुरी मौत मार दिया गया था। तभी से मेरे दिल के कोने में नफरत की चिंगारी सुलग रही थी। हाजी इकबाल सिद्दकी ने उस चिंगारी को हवा देकर शोला बना दिया और मैं बाबर बन गया था...।"

"माना कि तेरे चाचा को परिवार समेत बुरी मौत मार दिया गया था...।" केशव उसकी गर्दन दबोचकर बोला, "लेकिन इसके लिये पूरा देश तो जिम्मेदार नहीं था। तू कैसे भूल गया था कि तू इसी देश की पावन मिट्टी में जन्मा था...खेल-कूदकर बड़ा हुआ और इसी मिट्टी में फना हो जायेगा? यहीं के नमक ने तेरी रगों में जोश भरा तो यहीं की फसल ने तेरी परवरिश की। यहीं की हवाओं ने तेरी तकदीर संवारी। सूरज की धूप और चांद की चांदनी ने कभी तेरे साथ सौतेला व्यवहार नहीं किया। जो सुविधायें, जो अधिकार बाकी लोगों थे, वो तुझे भी मिले—लेकिन तूने अपनी घटिया मानसिकता के कारण अपने जमीर को मारकर गद्दारी का विष पी लिया। दूध पिलाने वाली मां को नाग बनकर डसने जा रहा था तू—तेरे फन को कुचला नहीं गया तो तू यहां की पावन फिजा को जहरीला कर देगा...।"

कहने पर केशव ने मिर्जा बेग को उठाकर चंगेज खां के ऊपर फेंक दिया और पीछे हटकर कोट की जेब से रिमोट निकालकर बटन दबा दिया।

'धड़ामऽऽऽऽ!'

कर्णभेदी धमाका।

शोलों में लिपटे मिर्जा बेग तथा चंगेज खां के जिस्म हवा में गुब्बारों की मानिन्द ही उड़े और खील-खील होकर जमीन पर खून, हड्डियों के टुकड़ों व गोश्त के लोथड़ों के रूप में इधर-उधर बिखर गये।

वो नजारा एक चट्टान पर छिपे एक आदमी ने देखा—जो कि चंगेज खां के साथ ही कश्मीर से आया था, लेकिन पेट में गड़बड़ी होने पर समुद्र की तरफ दौड़ गया था!

फिर वो चुपचाप पीछे हटा और पलटकर भाग निकला।

❑❑❑
❑❑❑

"केशव पण्डितऽऽऽऽ!"

इतने जोर से चींखी शहजादी कि जनरल परवेज खान का ऑफिस हिलकर रह गया।

शहजादी के खूबसूरत चेहरे पर मानो सुर्ख चींटियों का झुन्ड भागा-दौड़ी कर रहा था—आंखों में बिजलियां-सी कौंध रही थीं।

मुट्ठियां भिंची हुई।

क्रोधातिरेक समूचा जिस्म ही थरथरा रहा था।

फूलते-पिचकते नथुनों से फुंफकारें-सी फूट रही थीं।

वह अमेरिका से भागकर पाकिस्तान आई और परवेज खान से मिलने आई ही थी कि चंगेज खां के साथ गये आई०एस०आई० के एक अधिकारी ने परवेज खान को ट्रांसमीटर पर चंगेज खां और मिर्जा बेग के कत्ल की सूचना दी--बताया कि केशव पण्डित ने कैसे दोनों को रिमोट बम से उड़ा दिया था।

परवेज खान ने शहजादी को बतलाया तो वो जैसे बम की मानिन्द ही फट पड़ी।

"केशव पण्डित...केशव पण्डित...।" वह मेज पर हाथ मारते हुये चिंघाड़ी-सी, "मैं पूछती हूं कि आखिर ये केशव पण्डित है क्या बला? वो कई मर्तबा पाकिस्तान में आया—अपनी मर्जी का खेल खेलकर यूं ही चला गया, जैसे मक्खन से बाल निकल जाता है। पाकिस्तान की हुकूमत, हुक्मरान, मिलिट्री, पुलिस और आई०एस०आई० वाले उसका बाल भी बांका नहीं कर पाये। उसकी बोटी-बोटी करके कुत्तों के पेट के निवाले तो क्या बनाते--उसको रोक भी नहीं पाये। एक अकेला आदमी आया और पाकिस्तान की ऐसी की तैसी करके चला गया—अगर एक हिन्दुस्तानी का कुछ ना कर पाये तो फिर सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों का भला क्या कर पायेंगे? नाहक ही हम हिन्दुस्तान से पंगा लेते रहते हैं—उसके खिलाफ एक्शन लेते रहते हैं! एक हिन्दुस्तानी का...केशव पण्डित का इलाज नहीं कर पाये—पूरे हिन्दुस्तान से क्या खाक मुकाबला कर पायेंगे? मेरा वो बाप चंगेज खां बड़े-बड़े दावे करके हिन्दुस्तान गया था। क्या कर लिया उसने? केशव पण्डित ने उसे नेस्तनाबूद कर दिया--उसके वजूद को ही मिटाकर रख दिया। चंगेज खां, मिर्जा बेग और बशीर समेत लगभग सौ शूरमाओं को चींटियों की माफिक ही मसलकर रख दिया उस हरामजादे...केशव पण्डित ने और अभी तक जिन्दा है—मखौल उड़ा रहा है पूरे पाकिस्तान का! उसने बतला दिया कि वो अकेले ही पूरे पाकिस्तान के वास्ते बहुत है।"

परवेज खान काफी देर तक गूंगी का गुड़ खाये बैठा रहा और शहजादी के तमतमाये हुये चेहरे को देखता रहा।

शहजादी के रौद्र रूप ने उसकी बोलती बन्द कर दी थी। शहजादी ने उठकर काली जींस की जेबें टटोलीं, फिर ऊपर पहने लाल कोट की जेब से सिगरेट की डिब्बी व लाइटर निकालकर एक सिगरेट सुलगा ली। वापिस कुर्सी पर बैठकर वो जल्दी-जल्दी कश मारकर धुआं उड़ाने लगी—मानो धुएं के साथ भीतर के आक्रोश को भी बाहर निकाल रही हो।

"चंगेज खां का कत्ल हमारे वास्ते बहुत बड़ा झटका है

शहजादी...।" परवेज खान ने भी सिगरेट सुलगा ली तथा गम्भीर भाव से बोला, "चंगेज खां बहुत ही काबिल और खतरनाक इन्सान था। वो इतनी आसानी से मात खाने वाला बन्दा तो कतई नहीं था। धोखे व गलतफहमी का शिकार हो गया वो। वह तो मिर्जा बेग से ही मिलने गया था। क्या मालूम था कि केशव पण्डित ने अपना जाल बिछाया हुआ है। चंगेज खां अकेला निहत्था पड़ गया था। यूं भी कहा जा सकता है कि केशव पण्डित की तकदीर जोर मार रही थी और चंगेज खां का मुकद्दर उसके खिलाफ था। तुम खातिर जमा रखो...बहुत कुछ किया जायेगा। लेकिन फिलहाल आई०एस०आई० के चीफ की पोस्ट खाली है। हालांकि कायदा तो ये कि लेफ्टिनेंट जनरल ही आई०एस०आई० का चीफ बनता है—लेकिन मैं ये चाहता हूं कि ये ओहदा तुम सम्भाल लो। तुम हर लिहाज से आई०एस०आई० की चीफ बनने के काबिल हो। तुम्हारा प्रमोशन करके तुम्हें लेफ्टीनेंट जनरल भी बना दिया जायेगा। बेहतर होगा कि अभी से तुम ये पोस्ट सम्भल लो शहजादी।"

"नहीं—मुझे ये पोस्ट कतई भी मन्जूर नहीं है–।"

"क्या बोल रही हो तुम? इतनी बड़ी पोस्ट को ठुकरा रही हो तुम–?"

"हां, ठुकरा रही हूं जनाब! मुझे नहीं बनना आई०एस०आई० चीफ। मुझे तो बस हिन्दुस्तान जाना है और केशव पण्डित से इन्तकाम लेना है मुझे। मेहरबानी करके मुझे हिन्दुस्तान के मिशन पर भेज दीजिये और आई०एस०आई० का चीफ किसी और को बना दीजिये।"

"सिर्फ केशव पण्डित से इन्तकाम ही लेना चाहती हो..." परवेज खान शहजादी की आंखों में झांकते हुये बोला, "या चंगेज खां के छोड़े हुये अधूरे मिशन को भी कम्पलीट करना चाहती हो? क्या हिन्दुस्तान को तबाही के ढेर पर बिठाने का कोई इरादा नहीं है तुम्हारा–?"

"हां, बिल्कुल इरादा है जनाब—केशव पण्डित को यूं तो कभी भी मारा जा सकता है—लेकिन उसे ऐसी मौत देने का कोई मजा नहीं। केशव पण्डित हिन्दुस्तान को अपनी जान से भी बढ़कर चाहता है। अगर हिन्दुस्तान में जरा-सी भी गड़बड़ी हो जाये तो केशव पण्डित के सीने पर सांप लोटने लगते हैं। तभी तो वो अपनी जान जोखिम में डालकर कई मर्तबा पाकिस्तान में तबाही का खेल खेलने आ चुका है। आई०एस०आई० के लोगों और दहशतगर्दों से भिड़ जाता है। अगर हिन्दुस्तान में तबाही मचेगी तो सबसे ज्यादा केशव पण्डित ही

बिलबिलायेगा! उसे जीते-जी मार देने का सबसे नायाब तरीका यही है कि हिन्दुस्तान को तबाही की आग में झोंक दिया जाये।"

"गुड...वैर गुड...यानि तुम्हारे भी ख्यालात वो ही हैं, जो तुम्हारे वालिद चंगेज खां के थे। फिर तो दिक्कत वाली कोई बात नहीं है। चंगेज खां भी तो आई०एस०आई० का चीफ होने पर भी हिन्दुस्तान गया था। तुम भी ऐसा कर सकती हो। तुम्हें आई०एस०आई० के चीफ की पोस्ट पर अप्वाइंट किया जा रहा है। आई०एस०आई० की कमाण्ड तुम्हारे हाथों में होगी। हिन्दुस्तान जाकर चाहे जो करो—तुम्हें कुछ भी करने की पूरी छूट होगी। बस अपनी तो एक ही शर्त होगी कि तुम केशव पण्डित का खात्मा करने पर ही वापिस लौटोगी! क्या ये शर्त कबूल है तुम्हें—?"

"बिल्कुल...कबूल है सर! मैं हिन्दुस्तान में तबाही की बेटी बनकर जाऊंगी। मेरा पहला टारगेट होगा...हिन्दुस्तान में गदर मचा देना—दूसरा मकसद होगा...केशव पण्डित की मौत—।"

"गुड...तुम्हारे तेवर देखकर यकीन हो रहा है कि तुम वहां जाकर बहुत कुछ करोगी। हालांकि तुम्हें पूरी छूट है—तुम अपने हिसाब से मिशन को प्लान कर सकती हो। लेकिन मेरी एक सलाह है।"

"वो क्या...जनाब—?"

"जिस तरह चंगेज खां ने मिर्जा बेग को बाबर के रूप में आई०एस०आई० के इन्डियन चीफ के रूप में मुकर्रर किया था—ऐसे ही तुम भी किसी काबिल आदमी को वहां की कमान सौंप देना और उसके जरिये ही सारे काम करना। तुम्हें फ्रन्ट पर रहकर काम करने की जरूरत नहीं है।"

"किसी को तो अपना कमाण्डर बनाना ही होगा सर!"

"तो तुम हाजी इकबाल सिद्दीकी से मिलना। उसका एड्रेस और कॉन्टेक्ट नम्बर दे दिया जायेगा। चाहो तो तुम इकबाल सिद्दीकी को ही कमाण्डर बना सकती हो—वो हर लिहाज से तुम्हारी कसौटी पर खरा उतरने वाला बन्दा है! कब जाना चाहोगी हिन्दुस्तान—?"

"फौरन से पेश्तर...इमीजेट—।"

"ठीक है। कल तुम्हें हिन्दुस्तान पहुंचा दिया जायेगा। जाने की तैयारी करो—।"

"शेरनी शिकार पर जाते वक्त किसी किस्म की तैयारी थोड़े ही करती है सर! मैं तो जाने के वास्ते रेडी हूं—।"

"गुड...वैरी गुड! मेरी फुल सपोर्ट तुम्हारे साथ होगी....।"

शहजादी ने सिगरेट को ऐश-ट्रे में ठूंसकर यूं ही घुमाया कि मानो किसी दुश्मन की गर्दन मरोड़ रही हो—

"मैं आ रही हूं केशव पण्डित—तेरे होश फाख्ता कर दूंगी। मामूली लड़की मत समझना मुझे...मैं बेटी हूं पाकिस्तान की...बेटी हूं चंगेज खां की—।"



राजन ने कोई चुटकुला सुनाया, जिसकी प्रतिक्रिया में केशव, सोफिया, राजन, चांदनी, श्वेता हंसे जा रहे थे।

"सर जी...सर जी...।" हवा के तेज झोंके की मानिन्द ही लाल टी-शर्ट, काली जींस तथा नीली पट्टियों की हवाई चप्पलें पहने हुये मुंशी ड्राइंग रूम में प्रविष्ट होकर केशव से बोला, "मैं मण्डी से सब्जी खरीदकर वापिस लौट रहा था कि एक काले बुर्के वाली ने मेरा रास्ता रोककर एक पैकेट दिया और बोली कि अपने मालिक को बोल देना कि पैकेट फौरन ही खोलकर उसमें रखी डी०वी०डी० को प्लेयर में चलाकर देख लें—।"

"कहां है वो पैकेट—?"

"अभी देता हूं ना।" कहने पर मुंशी ने पहले सब्जियों से भरे झोले को मेज पर रखा और फिर टी-शर्ट के भीतर हाथ डालकर पीले रंग का चौकोर लिफाफा निकालकर केशव को दिया। केशव ने लिफाफा खोला—उसमें डी०वी०डी० ही थी।

"ये कैसी डी०वी०डी० है केशव...?" उत्सुकतावश पूछा सोफिया ने, "उस बुर्के वाली ने तुम्हारे पास क्यों भेजी है—?"

"मैं कोई अन्तर्यामी तो हूं नहीं सोफी। इसे देखने पर ही कुछ मालूम पड़ेगा। जरा इसे चलाना तो श्वेता।"

"जी, गुरुजी...।"

श्वेता ने केशव से डी०वी०डी० ली और उसे डी०वी०डी० प्लेयर में डालकर उसके साथ टी०वी० भी ऑन कर दिया।

टी०वी० स्क्रीन पर कुछ क्षणों तक तो स्नो फॉल सी होती रही, फिर एक महिला का आधा चेहरा दिखलाई पड़ा।

आधा इसलिये कि उसने काले रंग के कपड़े से सिर के साथ-साथ नीचे का आधा चेहरा भी ढांपा हुआ था। उसका आधा माथा और आंखें ही अनावृत थीं।

आंखें थीं तो खूब बड़ी-बड़ी, लेकिन वो अंगारों की मानिन्द सुलगकर दहक रही थीं।

कपड़े में कैद होंठ हिलने लगे तो यूं ही लगा कि मानो कोई

इच्छाधारी नागिन ही फुंफकार-फुंफकार कर इन्सानी जुबान में बोल रही हो–

"हैलो, केशव पण्डित! हालांकि इन्ट्रोडक्शन जरूरी नहीं, लेकिन फिर भी मैं अपने बारे में बतला रही हूं। मेरा नाम शहजादी है...शहजादी खां। मैं पाकिस्तानी हूं और मैंने बहुत कम उम्र में ही मिलिट्री के साथ-साथ आई०एस०आई० भी जवाइन कर ली थी। चाहती तो विदेश में पढ़ाई पूरी करके शाही जिन्दगी जी सकती थी–लेकिन बचपन से ही मेरा अपने वतन, अपनी कौम के वास्ते लगाव था और मैं कुछ करके दिखलाने की ख्वाहिशमन्द थी। दो साल पहले मैं अमेरिका में आई०एस०आई० की कमाण्डर बनकर गई और लोगों को बेवकूफ बनाने को मैंने मेडिकल कॉलेज में एम०बी०बी०एस० की स्टूडेन्ट के रूप में एडमिशन ले लिया था। वहां मैंने क्या-क्या किया...ये बतलाने की बजाय इतना ही बोल देती हूं कि अमेरिका की सरकार ने घबराकर मुझे जिन्दा या मुर्दा पकड़वाने वाले को दस लाख अमेरिकन डॉलर देने का ऐलान कर दिया था। वहां की सरकार, पुलिस और सी०आई०ए० के जासूसों को धोखा देकर पाकिस्तान आई तो अपने अब्बूजान के कत्ल की मनहूस खबर सुनने को मिली। मेरे अब्बू यानि चंगेज खां–जिन्हें मारने का सेहरा तेरे सिर पर बन्धा है।

जिस दिन तूने मेरे वालिद को मौत के घाट उतारा था, उसी दिन तूने अपने वतन हिन्दुस्तान की तकदीर में बदकिस्मती की नुकली कील ठोक दी थी–तबाही को न्योता दे आया था तू! मेरे वालिद ने तेरे मुल्क में थोड़ी-सी तबाही क्या मचाई कि तू बिलबिला उठा, अंगारों पर लोटने लगा था। लेकिन तब क्या होगा, जब मैं तबाही की आंधी बनकर सब कुछ तहस-नहस कर डालूंगी? आ चुकी हूं मैं तेरे लाड़ले हिन्दुस्तान की सरजमीं पर–लेकिन अकेली नहीं आई हूं। अपने सीने में इन्तकाम के अंगारे पाले थे मैंने–उन्हें अपने दामन में भरकर ले आई हूं। पहले हिन्दुस्तान की जमीन पर साजिशों का बारूद बिछाऊंगी और फिर उन पर दहकते हुये अंगारे बिखेर दूंगी। तब होंगे धमाकों पर धमाके...धड़ाम...धड़ाम।

हिन्दुस्तानियों के जिस्म हवा में उड़ेंगे और उनके परखच्चे इधर-उधर बिखर जायेंगे। हड्डियों के पहाड़ बन जायेंगे। गोश्त के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगेंगे। खून के दरिया बहेंगे। आंसुओं का सैलाब तमाम खुशियों को अपने साथ बहा ले जायेगा। चारों तरफ मातम के ढोल बजेंगे। मौत पैरों में गम के घुंघरू बांधकर खुशहाली के सीने पर नाचेगी और गायेगी। डायन बनकर तेरे हिन्दुस्तान के चैन-ओ-अमन को

चबा-चबाकर खा जाऊंगी और फिर तेरी लाश के सीने पर अपने इन्तकाम की वो खूनी दास्तान लिखूंगी कि तेरी रूह कयामत के दिन तक दहशत के समन्दर में हताशा की लहरों के थपेड़े खाती रहेगी। मैं इरादों के पंख लगाकर जिस मकसद की उड़ान भरकर आई हूं–उसे हकीकत में तब्दील करके रहूंगी–क्योंकि मैं बेटी हूं चंगेज खां की...।"

बस, इतना ही मैसेज था उस डी०वी०डी० में।

कमरे में कुछ क्षणों के लिये निस्तब्धता व्याप्त हो गई।

"ये चंगेज खां की बेटी तो काफी खतरनाक मालूम पड़ती है केशव...।" सोफिया चिन्तित भाव से बोली, "उसके तेवर ही नहीं, इरादे भी खतरनाक मालूम पड़ते हैं। ना जाने क्या होने वाला है? मुझे बहुत चिन्ता हो रही है केशव।"

"तुम तो नाहक ही हलकान हो रही हो सोफी...।" मुस्कुराकर बोला केशव, "तुम्हें तो अब तक ऐसी धमकियां और दावे सुनने की आदी हो जाना चाहिये था।"

"वो सचमुच में ही खतरनाक हो सकती है–।"

"चलो, मान लिया कि वो सचमुच में खतरनाक है...तो? क्या इससे पहले खतरनाक किस्म की औरतों से मेरा पाला नहीं पड़ा है? परिणाम क्या हुआ? कोई मेरा कुछ बिगाड़ सकी? ऐसा नहीं कि मैं महाशक्तिमान हूं या मेरे पास कोई चमत्कारी शक्ति हैं लेकिन मैं धर्मयुद्ध की राह पर चल रहा हूं। मैं अपने वतन, कानून, समाज और मानवता की रक्षा के लिये ही मैदाने- जंग में बार-बार उतरता हूं। मेरा कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता–मैं अपने लिये कोई जंग नहीं लड़ता हूं–इसीलिये भगवान की कृपा मुझ पर बनी रहती है। सत्य, धर्म और न्याय के लिये अत्याचारियों या देश के दुश्मनों से लड़ने वाले का साथ भगवान भी देते हैं। आने दो इस शहजादी को मैदान में। देख लेते हैं कि वो क्या करती है! फिर मैं भी उसे बतला दूंगा कि मैं क्या कर सकता हूं...?"

□□□
□□□

मरीन ड्राइव में स्थित फाइव स्टार होटल 'नटराज'।

टैक्सी से उतरकर मुश्ताक ने सावधानीवश इधर-उधर देखा, फिर होटल में प्रविष्ट हो गया।

"वेलकम, मुश्ताक हिन्दुस्तानी...।" रिसेप्शन पर पहले से ही उपस्थित धार्मिक नेता हाजी इकबाल सिद्दीकी ने आगे बढ़कर उसे बांहों में भर लिया और गद्गद भाव से बोला–"खुशामदीद! मुझे पूरा,

भरोसा था कि तुम आओगे। मैंने तो तुम पर ही फैसला छोड़ दिया था मियां। तुमने यहां आकर मेरी उम्मीद को बरकरार रखा है। आओ, चलते हैं...।"

दोनों लिफ्ट की तरफ बढ़ गये।

"क्या वो यहीं पर है हाजी साहब—?"

"हां। थर्ड फ्लोर पर...रूम नम्बर सेवनटी! उसे भी पूरा यकीन था कि तुम आओगे और आई०एस०आई० के वास्ते काम करोगे। समझदारी भी इसी में है। खुदा के बाद दौलत की ही पूछ है। लोग दौलत वाले के कदमों में बिछ जाते हैं। दौलत से भला कौन-सी खुशी नहीं खरीदी जा सकती? ये वतन-परस्ती या देशभक्ति की बातें बेमानी हैं मियां। क्या हिन्दुस्तान पर मर-मिटने के वास्ते हम लोग ही बचे हैं? अंग्रेजों के खिलाफ मुसलमान भी लड़े—खून बहाया, जान की कुर्बानी दी—लेकिन सिला क्या मिला? दूसरे लोग ही हुकूमत पर काबिज हैं और दोनों हाथों से दौलत बटोर रहे हैं। हम लोगों को थोड़ा-बहुत मिल भी रहा है तो महज वोटों के वास्ते। हमारे पास वोटों का हथियार नहीं होता तो...हमें गुलाम बना लिया जाता। हकीकत यही है कि हमारा हमदर्द और खैरख्वाह पाकिस्तान ही है। अगर हमें हिन्दुस्तान का एक बड़ा हिस्सा मिल जाये तो...तो ही हम सकून भरी जिन्दगी जी सकेंगे...।"

दोनों लिफ्ट तक पहुंच गये।

लिफ्टमैन ने उन्हें तीसरी मन्जिल पर पहुंचा दिया।

हाजी इकबाल ने आगे बढ़कर रूम नम्बर सेवनटी के दरवाजे को नॉक किया तो भीतर से मानो कोई कोयल ही कूहकी—

"यस, कम इन। तशरीफ लाइये, दोनों...।"

दोनों कमरे में प्रविष्ट हुये और पलटकर इकबाल ने दरवाजे को बन्द करके सिटकनी लगा दी।

कमरे में मेज पर व्हिस्की की बोतल, सोडा वाटर की दो बोतलें, आइस बॉक्स, एक प्लेट में कबाब, दूसरी में उबले हुये अन्डे रखे थे—साथ ही लक्की स्ट्राइक सिगरेट की डिब्बी, लाइटर व ऐश-ट्रे भी रखी थी।

कमरे में सिगरेट के साथ व्हिस्की की गन्ध भी भरी हुई थी।

मेज के पार बेड के किनारे बैठी शहजादी ने गिलास से व्हिस्की की घूंट भरी तथा फिर सिगरेट का कश लगाकर बोली, "तशरीफ रखो ना हाजी इकबाल! तुम भी बैठो ना मेजर मुश्ताक! वैसे तो पाकिस्तान में तुम्हारी खातिरदारी हो चुकी है—लेकिन वो दुश्मनी वाली खातिरदारी थी। अब दोस्ती वाली खातिरदारी होगी। बैठो और

बतलाओ कि क्या लोगे? हाजी इकबाल तो शराब पीते नहीं। इनके वास्ते तो कॉफी मंगवाई हुई है...स्टूल पर गर्म केतली में रखी है। तुम क्या लोगे—?"

मुश्ताक भौचक्का-सा देखता रह गया था शहजादी को।

उसने सोचा था कि बुर्के में लिपटी हुई खतरनाक-सी शक्ल वाली होगी—लेकिन शहजादी ने तो अपने संगमरमरी जिस्म को हल्के नीले रंग की जींस तथा काली टी-शर्ट में कैद किया था। सिर के बाल भी छह इंच लम्बे ही थे, जिन्हें हेयर ड्रेसर ने बढ़िया स्टाइल दी हुई थी।

जिस्म के साथ चेहरा भी बला का खूबसूरत था। वो कोई फिल्मी हीरोइन या मॉडल ही मालूम पड़ रही थी—कहीं से भी आई०एस०आई० की चीफ और वो खूंखार युवती मालूम नहीं पड़ रही थी, जिसे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर अमेरिका ने दस करोड़ डॉलर का इनाम घोषित कर दिया था।

"तुमने जवाब नहीं दिया मुश्ताक—!"

"मैं...मैं भी कॉफी ही लूंगा मैडम...।" वह स्वयं को सम्भालकर बोला और सोफे पर इकबाल की बगल में बैठ गया।

इकबाल ने स्टूल पर से केतली उठाकर दो खाली मगों में कॉफी उंडेल ली। स्टूल पर एक प्लेट में बिस्कुट तथा दूसरी में मसालेयुक्त तले हुये काजू थे। दोनों कॉफी सिप करने लगे।

"तुम्हारा हाजी इकबाल के साथ आना ही सब कुछ बोल रहा है मुश्ताक...।" खाली हुये गिलास को मेज पर रखकर और सिगरेट में कश लगाकर बोली शहजादी, "फिर भी मैं तुम्हारे मुंह से सुनना चाहती हूं कि क्या तुम बाबर उर्फ मिर्जा बेग की जगह लेने को तैयार हो? खतरों से भरा काम जरूर है लेकिन दौलत की बरसात हो जायेगी—मालामाल हो जाओगे तुम—।"

"मुझे दौलत की दरकार नहीं है मैडम...।" कॉफी का मग स्टूल पर रखकर सुलगी हुई सी आवाज में बोला मुश्ताक, "मैं दूसरी ही वजह से इस जिम्मेदारी को सम्भालने को राजी हूं। क्या नहीं किया हम लोगों ने इस मुल्क की खातिर? मेरे अब्बू हिन्दुओं की तरफदारी करते थे—मुसीबत पड़ने पर उनके काम आते थे। हिन्दुओं की खातिर मुसलमानों से भिड़ जाते थे—क्योंकि कौम से बढ़कर इन्सानियत को अहमियत देते थे। हिन्दुओं की जान बचाते हुये वो बम के धमाके में मारे गये। मैंने भी वतन-परस्ती में कोई कमी नहीं रखी। मिलिट्री की वर्दी पहनकर मैंने इस मुल्क की खिदमत की। अपना खून बहाया और जान की बाजी तक लगाई। लेकिन बदले में मुझे क्या मिला?

हिन्दुओं ने मेरी बीवी सायरा की अस्मत लूटकर उसे मार दिया और जिगर के टुकड़े आमिर को भी मार दिया। जब देखो, हिन्दू हम मुसलमानों पर जुल्मो-सितम करते रहते हैं। क्योंकि हुकूमत की सपोर्ट मिलती है उन्हें। सायरा और आमिर के कत्ल के बाद मेरे ख्यालात बदल गये और मेरे दिल में नफरत और इन्तकाम की आग भड़क उठी थी। हाजी साहब ने मुझसे कहा कि मैं बाबर वाले ओहदे को सम्भाल लूं तो मुझे लगा कि मुझे ये ऑफर कबूल कर लेनी चाहिये। अब मुझे हिन्दुस्तान से कोई लगाव नहीं रहा है, कोई मुहब्बत नहीं रही है। मुसलमानों के हक और भलाई के वास्ते मैं जंग लड़ूंगा और आई०एस०आई० की कमान सम्भालूंगा...।"

"मुझे तुम्हारे जवाब से बेहद खुशी हुई मुश्ताक! तुम्हारे बारे में मुझे काफी जानकारियां हैं। तुम मिलिट्री में रह चुके हो। तुम जांबाज भी हो और बहादुर भी हो...तुम इस पोस्ट को पूरी जिम्मेदारी के साथ सम्भाल लोगे और हिन्दुस्तान में तहलका ही मचा दोगे। तुममें और मिर्जा बेग में जमीन-आसमान का फर्क है। एक्चुअली वो बुड्ढा बाबर बनने के काबिल ही नहीं था। तुम हर लिहाज से इस ओहदे के काबिल हो। लेकिन तुम्हें भी पर्दे में रहना होगा। खुफिया तरीके से ही इस मुहिम को चलाना होगा। तुम मिलिट्री में रहे हो—इस वास्ते भेष भी बदल सकते हो और आवाज बदलकर बात भी कर सकते हो। क्यों ना तुम्हारा नाम तैमूर रख दिया जाये—?"

"मुझे मन्जूर है मैडम! मैं तैमूर के नाम से ही हिन्दुस्तान में आई०एस०आई० को कमाण्ड करूंगा—।"

"लेकिन केशव पण्डित के बारे में तुम्हारा क्या कहना है? उसे तो तुम बड़ा भाई मानते हो। जबकि केशव पण्डित ही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है और तुम्हारे काम में अड़ंगे अड़ायेगा! क्या तुम उसे अपना दुश्मन मानकर जरूरत पड़ने पर उसकी जान ले सकोगे—?"

"केशव पण्डित मेरे वास्ते काफिर है मैडम...काफिर। वो मेरा दुश्मन है। जरूरत पड़ने पर मैं उसकी जान लेने से बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाऊंगा।"

"शाबाश! खुश किया तुम्हारे जवाब ने मुश्ताक...नहीं तैमूर। वैसे मैं तुम्हारा और केशव पण्डित का आमना-सामना नहीं होने दूंगी। वो मेरा शिकार है। मेरे अब्बू का कातिल है वो। उसे मेरे हाथों मरना होगा। लेकिन मैं उसे अभी नहीं मारूंगी। पहले उसे हिन्दुस्तान की तबाही का तमाशा देखना होगा। तुम अभी से तैयारियों में जुट जाओ मुश्ताक...तैमूर। ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को अपने साथ जोड़ो—लेकिन सभी भरोसे और ऐतबार के काबिल होने चाहिये। तुमने ट्रेनिंग स्कूल

तो खोला हुआ है ही—उसे अपने चेलों के हवाले करके दूसरा स्कूल खोलो और वहां फाइटर पैदा करो। तुम्हें असली काम तो एक महीने बाद ही करने होंगे—जब मैं वापस पाकिस्तान चली जाऊंगी। एक महीने तक मैं ही प्लान तैयार करूंगी और अपनी सुपरविजन में तबाही के धमाके कराऊंगी। अपने साथ पाकिस्तान से पचास फिदाइन साथ लेकर आई हूं। वो फिदाइन जान ले भी सकते हैं और जान दे भी सकते हैं। मेरे हुक्म के गुलाम हैं वो। मेरा हुक्म उनके वास्ते खुदा की आवाज है।"

"लेकिन आपको ये सब करने की भला क्या जरूरत है मोहतरमा? मुश्ताक हरेक मिशन को अन्जाम देगा ना—।"

"मुश्ताक की भी हेल्प लूंगी मैं हाजी इकबाल! लेकिन मैं यहां इन्तकाम लेने आई हूं। सो मुझे कुछ ऐसे गदर मचाने हैं कि हिन्दुस्तान में तहलका मच जाये और वो साला केशव पण्डित तिलमिला उठे। मैं चाहती हूं कि वो अपने तमाम हथियार उठाकर मैदाने-जंग में उतरे और मेरे हाथों बुरी मौत मारा जाये। फिर मुश्ताक पर सारी जिम्मेदारियां डालकर मैं पाकिस्तान लौट जाऊंगी। मेरी ज़रा-सी भी फिक्र ना करो तुम दोनों। मैं किसी के भी हाथ नहीं लगने वाली हूं। मुझे आवाज बदलने के साथ-साथ हुलिया बदलने में भी महारथ हासिल है। कल मैं सिख भेष में बहुत बड़ा धमाका करने जा रही हूं—ये धमका मेरे इन्तकाम का आगाज होगा। क्या तुम दोनों जानना चाहोगे कि मैं कल क्या करने वाली हूं—?"



मुम्बई से दो सौ किलोमीटर की दूरी पर राजनगर जंक्शन!

चूंकि राजनगर से एक रेलवे लाइन मुम्बई व दिल्ली को जोड़ती थी तो एक लाइन कोलकाता को जाती थी—इसलिये वो बहुत बड़ा रेलवे स्टेशन था।

शाम के सात बजे कोलकाता को जाने वाली बंगाल एक्सप्रेस प्लेटफार्म नम्बर एक पर साढ़े दस बजे ही आकर खड़ी हो गई और रिजर्वेशन वाले यात्री अपनी-अपनी सीटें ढूंढकर उन पर कब्जा करने लगे।

सिख भेष वाली शहजादी पांच हथियारबन्द फिदाइनों के साथ स्टेशन के कन्ट्रोल रूम में पहुंची और साइलेंसर लगे हथियारों से गोलियां चलाकर वहां मौजूद सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मार दिया गया।

दर्जनभर फिदाइन रेलवे पुलिसफोर्स की इमारत में पहुंचे और

साइलेंसरयुक्त हथियारों से अन्धाधुन्ध फायरिंग करके वहां मौजूद जवानों की जान ले डाली।

कन्ट्रोलरूम में शहजादी एक कुर्सी पर बैठ गई—जिसके सामने मेज पर माइक रखा हुआ था। कुछ देर पहले उस कुर्सी पर खूबसूरत एनाउन्सर बैठी हुई यात्रियों को गाड़ियों के बारे में जानकारी दे रही थी—लेकिन अब उसकी रक्त-रंजित लाश नीचे फर्श पर पड़ी थी।

कन्ट्रोल रूम में क्लोज सर्किट टी०वी० लगे हुये थे, जिन पर सभी प्लेटफार्म का अवलोकन किया जा सकता था।

धड़ाम...।

अचानक ही प्लेटफार्म नम्बर तीन पर रखे कपड़ों के बड़े-बड़े पैकेट गोलों में लिपटे हुये ऊपर टीन शैड से टकराकर प्लेटफार्म पर इधर-उधर फैल गये।

हड़कम्प तो मचना ही था।

चींखते-चिल्लाते लोग गिरते-पड़ते इधर-उधर भागने लगे। कुछ लोग बाहर वाले गेट पर पहुंचे—लेकिन तभी तीनों गेट बन्द कर दिये गये थे और वहां पर ए०के० सैंतालीसधारी फिदाइन तैनात थे—उन्हें देख सभी घबराकर वापिस पलटकर भागे।

"इधर-उधर भागने से कोई फायदा नहीं होगा...।" प्लेटफार्म पर लगे स्पीकर्स से शहजादी की आवाज गूंजने लगी, "हम लोगों ने प्लेटफार्म पर कई रिमोट बम फिट कर दिये हैं। नमूने के तौर पर एक बम को उड़ाया गया है। अब बाकी के बम भी ब्लास्ट कर दिये जायेंगे। जिन लोगों को अपनी जान बचानी है—वो फौरन ही ट्रेन में सवार हो जायें। सिर्फ ट्रेन में चढ़ने वाले ही अपनी जान बचा पायेंगे।"

मौत की घबराहट ने बहुत-से लोगों की बुद्धि का हरण कर लिया और वो ट्रेन में जा चढ़े।

क्लोज सर्किट टी०वी० पर ट्रेन में चढ़ते लोगों को देखकर शहजादी की आंखें चमक उठीं और उसके गुलाबी होंठों पर घातक किस्म की मुस्कान थिरकने लगी।

उसने कोट की जेब से रिमोट निकाला और उसके लाल-रंग के बटन पर तर्जनी उंगली रखकर बोली, "बेचारे! ये क्या जानते हैं कि जब ये ट्रेन यार्ड में खड़ी थी तो मेरे आदमियों ने डिब्बों के नीचे रिमोट बम फिट कर दिये थे। बुड बाय हिन्दुस्तानियों...खुदा हाफिज...।"

उसने बटन दबा दिया।

धड़ाम...धड़ाम ऽऽऽ।

धड़ाम...धड़ाम ऽऽऽ।

लगातार कई धमाके हुये और प्लेटफार्म पर खड़ी ट्रेन के सभी डिब्बे धूं...धूं करके जल उठे।

बहुत-से जलते हुये लोग दरवाजे से बाहर कूदने लगे। प्लेटफार्म की तरफ कूदने वालों को तो कम ही चोट लगी—लेकिन दूसरी तरफ कूदने वाले काफी नीचे जाकर गिरे और उन्हें काफी चोटें लगीं।

कई अभागे तो ट्रेन के भीतर ही मानो चिता के हवाले कर दिये गये थे।

शहजादी पचास फिदाइनों के साथ वहां से चलती बनी—वो अपने पीछे छोड़ गई...तबाही...सिर्फ तबाही!

❑❑❑

❑❑❑

मीडिया वाले तो थे ही—पुलिसफोर्स ने भी स्टेशन की घेराबन्दी करके छावनी का रूप दे दिया था।

स्टेट के चीफ मिनिस्टर के साथ केशव भी वहां पहुंचा।

बड़ा ही हृदयविदारक दृश्य था।

जलकर काली पड़ गई ट्रेन के डिब्बों से सभी अभागों की लाशों को बाहर निकालकर प्लेटफार्म पर एक कतार में रख दिया गया था।

बहुत लम्बी कतार।

सभी लाशें झुलसकर कोयला सरीखी हो गई थीं।

एक महिला की बांहों तथा सीने के बीच फंसा एक बच्चा—मौत के क्रूर हाथ भी मां-बेटे को जुदा नहीं कर पाये थे।

केशव का भी कलेजा हिल गया—नीली आंखों में आंसू भर आये।

कलेजा हा-हाकार कर उठा।

"सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा—हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा—।"

नीले कोट के भीतर सफेद शर्ट की जेब से मधुर गीत के उभरने पर केशव ने बायें हाथ से सेल फोन निकाला और बिना देखे ही हरे रिसीवर वाला बटन दबाने पर फोन कान से लगाकर बोला, "हैलो...कौन—?"

"मैं...बेटी हूं चंगेज खां की...।" दूसरी तरफ से मानो कोई इच्छाधारी नागिन ही बोली।

केशव की झील-सी नीली आंखों में लावा-सा भरता चला गया और गोरे मुखड़े पर सुर्ख रंग की चींटियों का झुन्ड-सा भागा-दौड़ी करने लगा—

मुख से शब्दों के साथ मानो आग की लपटें भी

निकलीं—"तुम्हारे बतलाये बिना ही मैं समझ गया कि राजनगर के स्टेशन पर बम-ब्लास्ट तुमने ही कराये हैं चंगेज खां की बेटी। लेकिन तुम अपने बाप की मौत कैसे भूल गई—?"

"भूली नहीं हूं हरामजादे—तभी तो तबाही बनकर तेरे मुल्क में आई हूं। ये सिर्फ आगाज है—अन्जाम तो बहुत ही बुरा होगा...।"

"जैसा तेरे बाप का हुआ—वैसा ही तेरा होगा—।"

"किसी भी अन्जाम की परवाह नहीं है शहजादी को। सिर पर कफन बांधकर ही आई हूं मैं! जब तक जान में जान है...तबाही मचाती रहूंगी। पहले तेरा हिन्दुस्तान फिर तू! तेरी बुरी से भी बदतर मौत के साथ ही मेरे इन्तकाम की आग ठण्डी होगी।"

"निर्दोषों का खून बहाकर पाप क्यों कमाती है—गुनाह क्यों करती है?" झुलसी लाशों की कतारों के करीब से धीरे-धीरे चलते हुये बोला केशव, "तेरे बाप को मैंने उड़ाया था—उसका वजूद ही मिटा दिया था। मुझसे लड़। जो भी करना है...मेरे साथ कर। तुझे अपनी औकात मालूम हो...।"

"तेरी जान हिन्दुस्तान में...हिन्दुस्तानियों में बसती है। मैं पहले हिन्दुस्तानियों को उड़ाकर तेरा खून जलाऊंगी—फिर तुझे भी जलाकर राख कर दूंगी साले।"

"चल, ठीक है। बोल, कहां आना है मुझे? मां भारती की सौगन्ध, अकेला और निहत्था आऊंगा। जबकि तुझे अपने साथ बमों, हथियारों के साथ फिदाइन और आतंकियों की फौज लाने की पूरी छूट है। जितने भी चाहे...जोर लगा लेना। तेरा मुल्क, मुल्क की हुकूमत, हुक्मरान, पुलिस, मिलिट्री और आई०एस०आई० वाले भी मेरा बाल बांका नहीं कर पाये—तुझे भी अपनी औकात मालूम पड़ जायेगी। बोल, कहां आना है मुझे? चल, एक काम करते हैं—मैं तेरे मुल्क में आ रहा हूं। वहां का कोई भी पता बोल तू। अकेला और निहत्था आ रहा हूं मैं...।"

"मैं जोश में होश खोने वाली नहीं हूं केशव पण्डित। जानती हूं कि तू हथियारों से ज्यादा दिमाग का इस्तेमाल करता है। लेकिन मैं तेरे इसी किस्म वाले दिमाग से ही खेलूंगी। जब मेरी मर्जी होगी, तभी तेरे सामने आऊंगी। अगर तुझे वक्त से पहले मरने का शौक है तो...ढूंढ ले मुझे।"

और इसी के साथ शहजादी ने फोन काट दिया—बल्कि फोन का स्विच ही ऑफ कर चुकी थी वो।

केशव आंखें सिकोड़े हुये कुछ सोचने लगा।



कोई पुराना गोदाम मालूम पड़ता था वो। इधर-उधर खाली पेटियों व बोरियों, टीन के कनस्तरों व प्लास्टिक के डिब्बों के ढेर लगे हुये थे।

चार दर्जन फिदाइन जर खरीद गुलामों की मानिन्द सिर झुकाये, सीने पर हाथ बांधे खड़े थे।

काले रंग के ट्रेक सूट वाली शहजादी उनके सामने चहलकदमी-सी करते हुये रौबदार लहजे में कहे जा रहे थी—"मुम्बई से सुबह सात बजे चलने वाली कुतुब एक्सप्रेस में बीस डिब्बे होते हैं—इक्कीसवें डिब्बे में गार्ड होता है। आगे एक इंजिन, जिसमें ड्राइवर और उसके दो हैल्पर! लगभग नौ बजे ये ट्रेन विजयनगर रेलवे स्टेशन पहुंचेगी—जहां इसका पांच मिनट का स्टॉपेज होता है। तुम लोग विजयनगर के स्टेशन पर हर हाल में साढ़े आठ बजे तक पहुंच जाओगे। तुम लोगों के हुलिये बदले हुये होंगे। कुछ लोग हिन्दू और कुछ लोग सिख बने होंगे। कोई बिजनिसमैन तो कोई मजदूर दिखलाई पड़ेगा। कोई अमीर तो कोई गरीब। सभी को अलग-अलग जाना है और टिकिट खरीदना है। कोई दिल्ली का, कोई रतलाम तो कोई मथुरा की टिकिट खरीदेगा। कल वाली वारदात के बाद हुकूमत और पुलिस होशियार हो गई है। खासतौर से रेलवे स्टेशनों की चौकसी बढ़ा दी गई है। तुम लोगों के पास सूटकेस, ब्रीफकेस, अटैची और बैग वगैरा के रूप में कोई-ना-कोई सामान होगा। कुछ लोग खाली हाथ भी हो सकते हैं—लेकिन वो नजदीकी स्टेशन की टिकिट लेंगे। दूर की टिकिट लेने वाले के पास सामान होना जरूरी है...।"

अपनी वाणी को विश्राम देकर शहजादी ने लक्की स्ट्राइक ब्रान्ड वाली एक सिगरेट सुलगा ली और जल्दी-जल्दी कई कश लगाने पर चहलकदमी शुरू करके बोली, "तुम लोगों के कपड़ों के भीतर पेट पर आर०डी०एक्स० बम वाली बैल्ट बन्धी हुई होगी। वो बम बैट्री से चलते हैं। उसकी प्लेट पर एक लाल रंग का बटन लगा होगा—जिसके दबते ही बम ब्लास्ट हो जायेगा। तीन लोग ट्रेन के इंजिन में चढ़ेंगे और हैल्परों के साथ ड्राइवर को मारकर इंजिन पर अपना कब्जा कर लेंगे और ट्रेन को दौड़ा देंगे। गाड़ी की स्पीड यानि रफ्तार अस्सी किलोमीटर होगी। किसी भी सूरत में ट्रेन की स्पीड साठ से कम तो करनी ही नहीं है और कुछ भी हो जाये...ट्रेन को रोकना नहीं है—ब्रेक नहीं लगानी हैं। इस काम को शाहजहां, बब्बर और सलीम अन्जाम देंगे। जब्बार ट्रेन के पिछले वाले यानि गार्ड वाले

डिब्बे में चढ़ेगा और गार्ड को मार डालेगा। बाईस लोग इंजिन और बाकी इक्कीस डिब्बों की छतों पर होंगे और बीस लोग डिब्बों के भीतर होंगे। डिब्बों के भीतर जाने वाले बीस लोग अपने कोट, शर्ट वगैरह के बटन खोलकर मुसाफिरों को डरायेंगे और धमकी देंगे कि अगर किसी ने भी गड़बड़ी की तो बम ब्लास्ट करके सभी को उड़ा दिया जायेगा। सामानों के भीतर हथियार छिपाकर ले जाने हैं। कुछ मुसाफिर जोशीले होते हैं और मुकाबले पर उतारू हो जाते हैं। ऐसे लोगों को गोली मारकर बाकी मुसाफिरों के दिलो-दिमाग में दहशत भर देनी है।"

शहजादी ने अन्तिम कश लगाकर सिगरेट का टोंटा फर्श पर गिराया और जूते की 'टो' से कुचल दिया।

"तुम लोगों के ट्रांसमीटर्स जूतों के भीतर होंगे—जिनमें वाइब्रेशन सिस्टम है। मुझे कॉन्टेक्ट करना होगा तो ट्रांसमीटर में वाइब्रेशन या कम्पन होगा और तुम्हें ट्रांसमीटर निकालकर मुझसे बात करनी होगी। अगर ट्रेन की रफ्तार कम होती है या रुकने लगती है तो समझ लेना कि कोई गड़बड़ी है। मेरे हुक्म की भी जरूरत नहीं है—लाल बटन दबाकर अपने बम को ब्लास्ट कर देना है। या मेरे हुक्म पर बटन दबाकर बम ब्लास्ट कर देना है। अगर हमारी डिमांड पूरी हो जाती है तो तुम लोग प्लेन से सही-सलामत काबुल पहुंच जाओगे। वहां से पाकिस्तान और फिर पहले वाले तरीके से वापिस हिन्दुस्तान आकर मुझे ज्वाइन कर लोगे। सुबह-सवेरे ही तैयार होकर तुम लोग इसी जगह पर इकट्ठे होंगे। मैं तुम्हें एक बार फिर से अपना प्लान समझा दूंगी—जिस पर तुम लोगों को अमल करना है। इन्शाह अल्लाह कल अपना ये मिशन पूरा होगा और पूरे हिन्दुस्तान में गदर मच जायेगा—हड़कम्प मच जायेगा। अपने इस कारनामे की खबर सारी दुनिया तक फैलेगी। उस साले केशव पण्डित को भी मालूम हो जायेगा कि शहजादी किस बला का नाम है—।"

□□□

□□□

फोन की डिस्प्ले स्क्रीन पर अजनबी नम्बर देखकर केशव की आंखें सिकुड़ चलीं। उसने कमरे में उपस्थित सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह व श्वेता को चुप रहने का इशारा किया और फोन कान से लगाकर बोला, "हां बोल शहजादी—!"

उसके मुंह से शहजादी का नाम सुनकर सोफिया, राजन, चांदनी, करतार सिंह व श्वेता चौंके और केशव की तरफ देखने लगे।

केशव ने स्पीकर वाला बटन दबाकर फोन मेज पर रख दिया, ताकि सभी वार्तालाप सुन सकें।

"ओह...पहले से ही अन्दाजा लगा लिया कि फोन मैंने किया है...।" फोन के स्पीकर से शहजादी की व्यंगपूर्ण आवाज उभरी, "दिमाग तो है तेरे पास। लेकिन सिर्फ दुनिया के कह देने से थोड़े ही मान लूंगी कि तू दिमाग का जादूगर है। तुझे एक इम्तहान पास करना पड़ेगा। हार गया तो अजमल कसाब अपना। जीत गया तो अजमल कसाब हिन्दुस्तान का।"

"अजमल कसाब? क्या मतलब—?"

"मेरे वालिद ने भी कसाब को आजाद कराने की कोशिश की थी—लेकिन वो हार गये थे और तू जीत गया था। एक कोशिश मेरी तरफ से भी। तब तू खामख्वाह ही बीच में कूद पड़ा था—लेकिन मैं इस बार तुझे दावत दे रही हूं।"

"बातों को जलेबियों की तरह घुमा मत। जो भी बोलना है—सीधा बोल। चाहती क्या है तू शहजादी—?"

"मैं ये चाहती हूं कि अजमल कसाब को आजाद कर दिया...।"

"ये मुमकिन नहीं है। कसाब को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। जल्दी ही उसे फांसी पर लटका दिया जायेगा।"

"देखते हैं केशव पण्डित—इस बात का फैसला कुछ ही घन्टों में हो जायेगा। हालांकि मुझे अपनी डिमांड यहां की हुकूमत के सामने रखनी थी लेकिन फिर सोचा कि तुझे ही क्यों ना मीडियेटर बना लिया जाये। तुझसे पंगा लेना ही है तो जरा खुलकर लिया जाये। पहले मेरी मांग सुन ले। मैं जानती हूं कि इस मुल्क में तेरी बहुत अहमियत है। तेरी पहुंच यहां के प्राइम मिनिस्टर और प्रेसीडेन्ट तक है। तू किसी से भी डायरेक्ट बात कर सकता है। सो मैं तुझसे ही बात करूंगी। तू किससे बात करेगा, ये तू जाने। मैं ये चाहती हूं कि अजमल कसाब को जेल से निकालकर स्पेशल प्लेन से पहले दिल्ली और फिर अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के एयरपोर्ट तक पहुंचाना होगा...।"

"जागते हुये ख्वाब देखने बन्द कर दे तू शहजादी। कसाब को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा जायेगा।"

"पांच सौ बेगुनाह हिन्दुस्तानियों की जान की कीमत पर भी नहीं...पण्डित—?"

"पांच सौ हिन्दुस्तानी—क्या मतलब—?"

"एक ट्रेन किसी स्टेशन पर जाकर खड़ी हुई—जिसमें पांच सौ

के लगभग मुसाफिर सवार हैं। मेरे बनाये प्लान के मुताबिक मेरे हुक्म के गुलाम फिदाइन वहां पहुंचे। फिदाइन का मतलब तो जानता है ना तू? जां निसार करने करने वाला...जान की कुर्बानी देने...।"

"फिदाइन का मतलब मालूम है मुझे शहजादी...।" केशव उसकी बात काटकर बोला, "तू आगे बोल! तेरे फिदाइन स्टेशन पर पहुंचे। कौन-से स्टेशन पर?"

"ये भी बतला दूंगी। नहीं बतलाऊंगी तो तेरे दिमाग का इम्तहान कैसे होगा? मेरे तीन फिदाइन ट्रेन के इंजिन में चढ़े और ड्राइवर के साथ उसके दो हेल्परों को भी हलाक कर दिया। चौथा फिदाइन इंजिन की छत पर पहुंच गया है। इक्कीस फिदाइन ट्रेन के सभी इक्कीस डिब्बों की छतों पर पहुंच गये हैं—कुल मिलाकर बाईस फिदाइन ट्रेन की छतों पर हैं और तीन इंजिन में। एक फिदाइन गार्ड के डिब्बे में गया और गार्ड को हलाक कर दिया है। बाकी बीस डिब्बों में भी बीस फिदाइन चढ़े हैं।

कुल मिलाकर छियालीस फिदाइनों ने उस ट्रेन पर कब्जा कर लिया है। सभी फिदाइनों के पेट पर आर०डी०एक्स० बमों वाली बैल्ट बंधी हुई, जिनके बीचों-बीच लगे लाल बटन को दबाकर बम ब्लास्ट किया जा सकता है। डिब्बों में सवार बीसों फिदाइनों को हुक्म दिया था कि वो बम दिखलाकर मुसाफिरों को डरायें-धमकायें। अगर कोई मुसाफिर मुकाबला करने की जुर्रत करे तो उसे गोली मार दें। शुक्र मना कि किसी भी मुसाफिर ने नखरे नहीं दिखलाये और कोई हलाक नहीं हुआ। ट्रेन थोड़ी देर पहले ही स्टेशन से रवाना हुई है। वो ट्रेन अस्सी की रफ्तार से दौड़ रही है। उसकी रफ्तार कम नहीं होगी—रुकने का तो कोई मतलब ही नहीं। मेरे सभी फिदाइनों को सख्त हुक्म है कि अगर ट्रेन की रफ्तार कम भी हो तो...वो सभी बम ब्लास्ट करके अपने साथ-साथ पूरी ट्रेन और सभी मुसाफिरों को भी उड़ा दें। उन लोगों को ऐसी ट्रेनिंग दी गई है कि हुक्म मिलते ही या जरूरत पड़ने पर बेझिझक अपनी जान दे दें। उन लोगों को अपनी जान से जरा-सी भी मुहब्बत नहीं होती। सो वो लोग ट्रेन की स्पीड कम होते ही बम ब्लास्ट कर डालेंगे। बात कुछ समझ में आ रही है कि नहीं?"

"हां—समझ में आ तो रही है चंगेज खां की बेटी...।"

"तो फिर पूरी बात भी समझ ले तू केशव पण्डित...।" मेज पर रखे फोन के स्पीकर से मानो शहजादी की नहीं, किसी इच्छाधारी नागिन की फुंफकारें ही उभर रही थीं, "ये ट्रेन अब किसी भी स्टेशन पर नहीं रुकेगी। इस बात का बन्दोबस्त तुझे करना होगा कि ट्रेन

को सभी स्टेशनों पर लाइन क्लियर मिलती रहे—वरना होने वाले भयानक हादसे की जिम्मेदारी तेरी होगी। उस ट्रेन के सामने कोई ट्रेन आ गई तो...तो क्या होगा, ये तुझे बतलाने की कोई जरूरत नहीं है। ट्रेन पटरियों पर लगातार...बिना रुके दौड़ती रहेगी। ये ट्रेन सिर्फ दिल्ली जाकर ही रुकेगी। वहां तू अजमल कसाब के साथ मौजूद होगा।"

"मैं? वो भी कसाब के साथ—?"

"हां—कसाब के साथ! मेरे सभी छियालीस फिदाइन कसाब के साथ तुझे भी अपने कब्जे में ले लेंगे। फिर तुम लोग वहां से सीधे एयरपोर्ट पहुंचोगे...एक बस के जरिये। एयरपोर्ट पर स्पेशल प्लेन पहले से ही रेडी होना चाहिये। वो प्लेन सभी को काबुल एयरपोर्ट तक ले जायेगा। मेरे फिदाइन कसाब के साथ चले जायेंगे और तू वापिस लौट आयेगा...शिकस्त का कांटों भरा ताज़ सिर पर पहनकर...।"

"और अगर ऐसा ना हो...तो?"

"तो कोई बात नहीं। जब दिल्ली स्टेशन पर फिदाइनों को तेरे साथ कसाब नजर नहीं आयेगा तो वो अपने-अपने बमों को ब्लास्ट कर देंगे। उनके साथ पूरी ट्रेन और ट्रेन में मौजूद तमाम मुसाफिर उड़ जायेंगे। ये तेरा इम्तहान है केशव पण्डित। तू इम्तहान को तभी पास करेगा, जब तू मेरी शर्त पूरी नहीं करेगा और कसाब को लेकर दिल्ली नहीं पहुंचेगा। तू इम्तहान तो पास कर लेगा—लेकिन पांच सौ बेगुनाह लोगों की मौत की कीमत पर। हां, तू दिमाग का जादूगर है। हो सकता है कि तू ऐसी तरकीब निकाल ले कि कसाब को भी छोड़ना ना पड़े और एक भी मुसाफिर की जान ना जाये। अगर तेरे पास ऐसी कोई तरकीब हो तो उसे जरूर आजमा। मैं भी देखना चाहूंगी कि तू कितना बड़ा दिमाग का जादूगर है। लेकिन कोई भी तरकीब आजमाने से पहले ये बात ध्यान में रखना कि ट्रेन की सभी छतों पर और इंजिन समेत सभी डिब्बों में फिदाइन मौजूद हैं। ट्रेन की रफ्तार कम होने पर, ट्रेन की घेराबन्दी होने पर, ट्रेन के करीब किसी प्लेन या हेलीकॉप्टर के देखे जाने पर...या किसी भी किस्म की गड़बड़ी का अहसास होने पर फिदाइन बम ब्लास्ट करने में देर नहीं लगायेंगे। अगर कसाब को छोड़े बिना तू ट्रेन में सवार सभी मुसाफिरों को सही-सलामत बचाने में कामयाब हो जाता है तो मानना पड़ेगा कि तू वाकई में दिमाग का जादूगर है। अब मैं बतलाती हूं कि वो ट्रेन कौन-सी है। वो ट्रेन है...कुतुब एक्सप्रेस जो आज मुम्बई से सवा आठ बजे चली थी और सवा नौ बजे विजयनगर स्टेशन पर पहुंची

थी। पांच मिनट के स्टॉपेज में मेरे फिदाइनों ने ड्राइवर, उसके दो हैल्परों और गार्ड को मारकर पूरी ट्रेन पर कब्जा कर लिया था। नौ बजकर बीस मिनट पर वो ट्रेन विजयनगर के स्टेशन को छोड़कर गई। अब पौने दस बज रहे हैं। रात के आठ बजे तक वो ट्रेन दिल्ली पहुंच जायेगी। अगर तू आठ बजे तक कसाब को लेकर दिल्ली नहीं पहुंचा तो...जोरदार धमाकों के साथ पूरी दिल्ली ही नहीं...बल्कि पूरा हिन्दुस्तान दहल जायेगा।

फिलहाल जो कुछ भी करना है...तुझे ही करना है केशव पण्डित! जल्दी से फैसला कर कि तुझे क्या करना है...बाय।"

❑❑❑
❑❑❑

कुछ क्षणों के लिये तो इतनी निस्तब्धता व्याप्त हो गई कि यदि वहां कोई छींक भी देता तो यूं ही लगता कि मानो परमाणु बम का धमाका हुआ हो।

केशव ने डिब्बी उठाकर एक सिगरेट निकालकर उसका एक सिरा गुलाबी होंठों के मध्य दबाया और दूसरे सिरे का लाइटर की नीली लौ से दाह-संस्कार किया।

फिर उसने फोन उठाकर जल्दी-जल्दी नम्बर वाले बटन दबाकर प्रधानमन्त्री का नम्बर मिलाया और दूसरी तरफ से 'हैलो' की आवाज उभरते ही बोला, "नमस्कार, सर! केशव पण्डित बोल रहा हूं...।"

"नमस्कार, पण्डित जी। कहिये, कैसे हैं आप–?"

"ईश्वर की कृपा है सर! एक गम्भीर मसले पर बात करने के लिये ही आपको फोन लगाया है। आप अविलम्ब...समय गंवाये बिना मुम्बई से दिल्ली को जाने वाली कुतुब एक्सप्रेस की लाइन क्लियर करवाइये। वो ट्रेन मुम्बई से सवा आठ बजे चली थी और इस वक्त मुम्बई से लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी पर होगी...।"

"लेकिन बात क्या है पण्डित जी–?"

"एक्चुअली बात ये है सर कि...।" केशव संक्षिप्त में सारी बातें बतलाने लगा।

"ओह...ये तो बड़ी ही विकट समस्या है पण्डितजी! चंगेज खां की बेटी शहजादी ने बहुत बड़ा खेल, खेल दिया है। मुसाफिरों की जान बचाने के वास्ते क्या कसाब को छोड़ना पड़ेगा–?"

"नहीं, सर! बिल्कुल नहीं...।"

"तो फिर ट्रेन में सवार लोगों का क्या होगा पण्डितजी–?"

"वो सब आप मुझ पर छोड़ दीजिये, सर। मैं कोई-ना-कोई रास्ता निकाल ही लूंगा। आप बस महाराष्ट्र के सी०एम० साहब को

बोल देना कि वो मुझे को-ऑपरेट करें और मुझे जरूरत की हर चीज मुहैया करा दें।"

"ये सब हो जायेगा...पण्डितजी! आप जो भी चाहेंगे, वो हो जायेगा। स्टेट गवर्नमेन्ट से लेकर सैन्ट्रल गवर्नमेन्ट से जुड़े तमाम लोग, अधिकारी और मन्त्री तक आपकी बात मानेंगे। अभी तक ये मैसेज पहुंच जायेगा कि आपकी प्रत्येक बात मानी जाये। बस, आप कुछ भी करके इस मुसीबत को टाल दीजिये–इस समस्या का समाधान कर दीजिये...।"

"ईश्वर की कृपा से सब कुछ ठीक हो जायेगा सर! बस, आप फौरन से पेशतर रेलवे तक ये मैसेज पहुंचा दीजिये कि कुतुब एक्सप्रेस को रोकने की चेष्टा ना की जाये और उसकी लाइन क्लियर होती रहे। प्लेन या हेलीकॉप्टर से ट्रेन को फॉलो या वाच ना किया जाये। जो कुछ भी करना होगा, मैं अपने तरीके से करूंगा। ओ०के०...सर...नमस्कार, जय हिन्द...।"

कहने के साथ ही केशव ने फोन काटकर मेज पर रख दिया और सिगरेट में कश लगाने लगा।

"ये तो बहुत बड़ी प्रॉब्लम क्रियेट कर दी है शहजादी ने...।" चिन्तित भाव से बोली सोफिया, "लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि कसाब को छोड़े बिना ट्रेन में सवार यात्रियों को कैसे बचा लिया जायेगा–?"

"तुस्सी ऐसा सवाल कर रही हो परजाई जी...।" आश्चर्य के साथ ही बोला करतार सिंह, "साढ़े प्राहवाजी मुंह तो कोई गल कढ़ने से पहिला ओहदे बारे में हजार बार सोचते हैं।"

"तो क्या तुम कोई प्लान बना चुके हो केशव–?"

"कैसी बात करती हो तुम सोफी! भला इतनी जल्दी कोई प्लान कैसे बन सकता है? लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि कसाब को छोड़े बिना ही इस समस्या का कोई-ना-कोई हल निकल जायेगा। मुझे सभी लोग पांच मिनट को अकेला छोड़ दो–ताकि मैं कुछ सोच सकूं। तुम एक कप स्ट्रांग चाय बनाकर ले आओ सोफी। कतई भी वक्त नहीं है। मुझे फौरन से पेशतर सोचना है कि क्या करना है और कैसे करना है–!"

❑❑❑
❑❑❑

"आ...आह...आह...ओह...!"

उभरे पेट वाली वो तीस वर्षीय युवती अचानक ही पेट पकड़कर चींखने-चिल्लाने लगी।

क्षणभर में ही वो पसीने से लथपथ हो चली थी।

"क...क्या हुआ मोनिका...?" उसका बत्तीस वर्षीय पति घबरा उठा तथा उसे बांहों में भरकर बोला, "तुम ठीक तो हो ना...?"

"न...नहीं...आह...लगता है कि लेबर पेन...आह... ओह...!"

"ले...बर पेन? लेकिन डॉक्टर ने तो डिलीवरी के लिये पन्द्रह रोज बाद का टाइम दिया था...।"

"कभी-कभार डॉक्टर का अनुमान फेल भी हो जाता है बेटा...।" सामने की सीट पर बैठी बूढ़ी महिला ने दूर खड़े उस फिदाइन को सहमी-सी नजरों से देखा, जिसकी खुली शर्ट से पेट पर बन्धा आर०डी०एक्स० वाला बम साफ दिखलाई पड़ रहा था और जिसके दोनों हाथों में रिवॉल्वरें थीं। फिर वो धीमी आवाज में बोली, "लगता ऐसा ही है कि तुम्हारी बीवी को बच्चा होने वाला है। इसे डॉक्टर और नर्सिंग होम की जरूरत है...।"

"लेकिन यहां डॉक्टर कहां से आयेगा मां जी...?" सूरज नामक वो युवक कसमसाकर बोला, "नर्सिंग होम पहुंचने का तो कोई सवाल ही नहीं बनता। आतंकियों ने ट्रेन को अपने कब्जे में कर लिया है। ट्रेन बिना रुके दौड़े ही जा रही है। हमें बसन्तनगर में उतरना था। वहां मोनिका का मायका है। मुम्बई में तो हम अकेले ही रहते हैं। सोचा था कि मोनिका को इसके पीहर में छोड़ दूंगा और वहीं पर डिलीवरी हो जायेगी। लेकिन ट्रेन रुकी ही नहीं। कहां रुकेगी...मालूम नहीं। रुकेगी भी कि नहीं...ना जाने हम लोगों के साथ क्या होने जा रहा है! क्या करूं मैं?"

"मे...मेरा दर्द तो बढ़ता ही जा रहा है सू...सूरज...आह...मर जाऊंगी मैं...मुझे बचा लो...कुछ करो...आह...।"

"आप मेरी मोनिका का ख्याल रखना आन्टी जी...मैं अभी आया...।"

अपनी बीवी को बूढ़ी महिला के हवाले करके सूरज फिदाइन के पास पहुंचा।

अधपकी दाढ़ी वाले फिदाइन ने उसे सपाट-से भावों से देखा और सर्द लहजे में बोला, "क्या है? इधर क्यों आया है तू–?"

"वो...मेरी मोनिका...मेरी बीवी को डिलीवरी होने वाली है...सी इज प्रेगनेंट...लगता है कि बच्चा होने वाला है...।"

"तो...?"

"उसे डॉक्टर की जरूरत है...फौरन ही हॉस्पिटल या नर्सिंग होम ले जाना...।"

"तू क्या चाहता है कि तेरी बीवी के वास्ते इस ट्रेन को किसी हॉस्पिटल में ले जाया जाये...?"

"न...नहीं...अगले स्टेशन पर ट्रेन रुकवा दीजिये।"

"ट्रेन नहीं रुकेगी...।" शुष्क भाव से बोला वह, "ट्रेन दिल्ली जाकर ही रुकेगी। अगर तुम्हारे हुक्मरानों ने हमारी डिमांड पूरी कर दी तो...ठीक है–वरना सभी को बमों से उड़ा दिया जायेगा...।"

"ये, ये मेरी बीवी की जान का सवाल है। वो दर्द से तड़प रही है। उसको डॉक्टर की जरूरत है...।"

"हमें कसाब की जरूरत है। वो मिल गया तो तुम लोगों को दिल्ली में छोड़ दिया जायेगा–वरना सभी मरेंगे।"

"मैं डॉक्टर हूं...।" करीब की सीट से एक अधेड़ उठकर बोला, "मैं तुम्हारी हेल्प करूंगा मिस्टर। चलो, बतलाओ कि तुम्हारी मिसेज कहां है।"

"कोई कहीं नहीं जायेगा।" फिदाइन खुरदुरे-से लहजे में बोला, "अपनी सीट पर बैठ जा डॉक्टर।"

"ये...ये क्या बोल रहे हो तुम? इन साहब की मिसेज को डॉक्टर की जरूरत है। तुम्हारा क्या जाता है–अगर मैं मुसीबत में पड़ी एक महिला की मदद करता हूं तो–?"

"मुझे बकवास सुनने की आदत नहीं है। चुपचाप अपनी सीट पर बैठ जा डॉक्टर–।"

"नहीं–मैं उस महिला की मदद जरूर...।"

'धांय...धांय।'

फिदाइन की रिवॉल्वर से निकली दो गोलियां सीने के बायें हिस्से में पेवस्त हो गईं और खून का फौव्वारा-सा छूटा।

वो चींख मारकर फर्श पर गिरा और कुछ पलों तक तड़पने पर प्राण त्याग गया।

आसपास मौजूद लोग बुरी तरह घबरा गये–जैसे खून का पानी ही हो गया।

"तू इन्सान है कि जानवर?" आपा खो बैठा सूरज और बम तथा रिवॉल्वरों को नजर अन्दाज करके फिदाइन का गिरेहबान पकड़कर बोला, "ये बेचारा मेरी बीवी की मदद ही तो करना चाहता था। क्या तुम लोगों की इन्सानियत बिल्कुल ही मर चुकी है...?"

फिदाइन ने सूरज के पेट से रिवॉल्वर की नाल सटाकर ट्रिगर दबा दिया...।

धांय...की आवाज के साथ सूरज की पीठ में से धुएं के साथ

खून की पिचकारी भी निकली। वो नीचे गिरकर बुरी तरह तड़पा...छटपटाया और फिर दम तोड़ गया।

कई मुखों से भय मिश्रित चींखें निकल गई।

एक महिला तो बेहोश ही हो गई।

"खामोशऽऽऽ!" वह फिदाइन गुर्रा-सा उठा, "कोई शोर-शराबा नहीं। सभी अपनी जगह पर चुपचाप बैठे रहें—नहीं तो गोली मार दी जायेगी...।"

उधर मोतिका नामक वो अभागी अपने पति की मौत से बेखबर बुरी तरह तड़प रही थी—मारे आतंक के कोई भी उसकी मदद करने का तैयार नहीं हुआ।

वो तड़पती रही—छटपटाती रही...और फिर दम तोड़ गई।

❑❑❑
❑❑❑

पीले रंग का हेलीकॉप्टर तेजी के साथ रेलवे ट्रेक के ऊपर उड़े चले जा रहा था। पायलट के अलावा हेलीकॉप्टर में राजन, करतार सिंह तथा श्वेता सवार थे। राजन च्यूंगम चबा रहा था, करतार सिंह पोपकोर्न खा रहा था, जबकि श्वेता एक आंख बन्द करके प्लास्टिक की गन से इधर-उधर निशाना लगा रही थी, लेकिन ट्रिगर नहीं दबा रही था।

"हेलीकॉप्टर विच निशाने दी प्रेक्टिस कर रही है कुड़िये...।" करतार सिंह हंसकर बोला, "अपने निशाने तो भरोसा नी है तैनू—?"

"वैसे तो मेरा निशाना बहुत सटीक है सरदार जी...।" गन के ऊपर लगी बाइनाकुलर से दायीं आंख सटाकर बोली श्वेता, "एन०सी०सी० यानि नेशनल कैडेट कोर में थी तो राइफल और पिस्टल चलाई थी। छर्रे वाली गन से स्टॉल पर लगे गुब्बारे तो बचपन से ही फोड़ने लगी थी। बड़े होने पर मैंने लाइसेंसी रिवॉल्वर ली थी और शूटिंग रेन्ज में जाकर निशानेबाजी की प्रेक्टिस किया करती थी। गुरुजी ने तो मुझे आंखों पर काली पट्टी बांधकर सिर्फ आवाज पर ही निशाना लगाने की भी प्रेक्टिस करवाई है—।"

"तो फिर नर्वस क्यों है कुड़िये—?"

"क्योंकि ऐसी निशानेबाजी कभी नहीं की, जैसी कि आज करने जा रही हूं मैं! ये प्लास्टिक की गन है—लेकिन दुनिया की सबसे खतरनाक गन है—क्योंकि इसमें पोटेशियम सायनाइड से बुझे पिन भरे हुये हैं। जैसे ही पिन किसी को लगेगी...वो अगली सांस तो ले ही नहीं पायेगा। पिन अन्दर और दम बाहर। लेकिन मैं इसलिये नर्वस नहीं हूं कि मुझे कुछ लोगों की जानें लेनी हैं—क्योंकि वो लोग रहम

के काबिल तो हैं ही नहीं—उनमें और जहरीले नाग में कोई फर्क है ही नहीं...।"

"तो फिर तुम नर्वस क्यों हो श्वेता—?" पूछा राजन ने।

"क्योंकि मुझे डर है कि अगर मेरे निशाने चूक गये तो...? पांच सौ के करीब लोगों की जिन्दगी का सवाल है...।"

"श्वेता, तुम जिस प्रोफेशन से जुड़ गई हो, उसमें डर या घबराहट की कोई जगह नहीं होनी चाहिये। क्योंकि अपने सभी मिशन में मौत का पंछी सिर के ऊपर मंडराता रहता है। जरूरी नहीं है कि इन्सान.अपनी जान जाने से ही डरता हो—डर के कारण दूसरे भी हो सकते हैं जैसे कि इस मिशन में। अपनी जान जाने के कोई चांसेज नहीं हैं। दूसरों की जान लेनी है...।"

"इसीलिये तो नर्वस हूं शुक्लाजी कि अपने निशाने ठीक ना हुये तो क्या होगा—?"

"अपने गुरुवर बहुत ही सोच-समझकर कोई प्लान बनाते हैं श्वेता। उन्हें पता था कि वो ट्रेन अस्सी किलोमीटर प्रति घन्टे की रफ्तार से दौड़ रही है और हमें प्रत्येक फिदाइन पर सिर्फ एक ही बार निशाना लगाने का मौका मिलेगा। और अगर कोई फिदाइन बच गया तो बहुत बड़ी गड़बड़ी हो जायेगी। इसीलिये उन्होंने इस काम के वास्ते हम तीनों को चुना है। हमें एक साथ निशाने लगाने हैं। एक का निशान चूक जायेगा, दूसरे का चूक जायेगा—लेकिन तीसरे का तो लगेगा ही। दिमाग पर नियन्त्रण रखना और अर्जुन की तरह अपने टारगेट पर ही नजर रखना—उस घड़ी तुम्हें कुछ और नहीं दिखलाई पड़ना चाहिये। ओ०के०? ठीक है ना—?"

"तैयार हो जायें आप तीनों...।" तभी पायलट बोला, "स्टेशन आने वाला है।"

❑❑❑
❑❑❑

रेलवे स्टेशन के करीब ही एक खुले मैदान में राजन ने हैलीकॉप्टर को उतरवाया।

वहां से वो करतार सिंह तथा श्वेता के साथ स्टेशन की तरफ चल दिया और फोन निकालकर कोई नम्बर मिलाया, चलते-चलते ही बात की, "हां, सिंह साहब! क्या बतलायेंगे कि कुतुब एक्सप्रेस इस वक्त कहां पर है और रतलाम स्टेशन से कितनी दूरी पर है—?"

"ट्रेन ने थोड़ी देर पहले ही रामनगर स्टेशन पार किया है शुक्ला जी। इस वक्त वो सन्तनगर के करीब है। यानि ट्रेन रतलाम से लगभग

चालीस किलोमीटर की दूरी पर होगी और आधे घण्टे में रतलाम पहुंच जायेगी।"

"थैंक्यू, सिंह साहब...।" कहने पर राजन ने फोन बन्द करके कोट की जेब में रखा तथा फिर बोला, "ट्रेन चालीस किलोमीटर की दूरी पर है करतार सिंह...श्वेता! यानि आधे घण्टे के भीतर ही यहां पहुंच जायेगी। हमें फौरन ही स्टेशन पर पहुंचकर मोर्चा सम्भाल लेना चाहिये।"

तीनों दौड़ पड़े।

रेलवे स्टेशन पर मौजूद रेलवे के बड़े अधिकारी ने अपने कई मातहतों के साथ तीनों का स्वागत किया और आग्रह किया कि कुछ जलपान ले लें।

"बिल्कुल भी वक्त नहीं है श्रीमान जी...।" राजन हाथ जोड़कर बोला, "ट्रेन बस पहुंचने ही वाली है। हम लोगों को हमारा काम करने दीजिये। हम सफलतापूर्वक अपने कार्य को पूरा कर लें—फिर जलपान भी कर लेंगे। ये बतलाइये कि ट्रेन किस ट्रेक से पास होगी?"

"लाइन नम्बर दो से...।"

"कौन-से प्लेटफार्म के किनारे से गुजरेगी—?"

"प्लेटफार्म नम्बर दो से...वो...उस पार वाला।"

तीनों सीढ़ियां चढ़कर ओवर ब्रिज के ऊपरी हिस्से में ट्रेक नम्बर टू के ऊपर पहुंच गये और उस तरफ की रेलिंग की तरफ खड़े हो गये—जिधर से कि ट्रेन आनी थी।

"हम तीनों अगर गन लेकर खड़े होते हैं तो ट्रेन की छतों पर मौजूद फिदाइन देख लेंगे। वो हथियारों से हमला भी कर सकते हैं या बौखलाकर बम को ब्लास्ट भी कर सकते हैं—।"

"तो फिर? की करें, प्राहजी—?"

"अपनी-अपनी गन को रूमाल से इस तरह ढांप लेते हैं कि दुश्मनों को गन दिखलाई ना पड़े और हमें उन पर निशाना लगाने में दिक्कत भी न हो।"

फिर तीनों ने गनों पर रूमाल डाल लिये—इस तरह से कि वो गन के ऊपर लगी दूरबीन से देखकर शिकार पर निशाना भी लगा लें और दूर से गन दिखाई भी ना पड़े।

नीचे स्टेशन पर सभी प्लेटफार्म पर काफी लोग जमा थे, जिन्हें पुलिस वाले नियन्त्रित कर रहे थे। कुछ लोग तो तमाशाई ही थे लेकिन बहुत से लोग ऐसे थे कि जिनका परिवार, परिवार का कोई मेम्बर या कोई सगा-सम्बन्धी उस ट्रेन में सवार था।

पैट्रोल की आग की मानिन्द ही ये खबर फैल चुकी थी कि ओवर ब्रिज पर केशव पण्डित के तीन शिष्य राजन शुक्ला, करतार सिंह व श्वेता उपस्थित हैं और ट्रेन पर कब्जा करने वाले आतंकियों के खिलाफ कुछ करने वाले हैं।

क्या करने वाले हैं?

क्या वो अपने मकसद में कामयाब हो सकेंगे?

बहुत-से लोगों ने राजन, करतार सिंह व श्वेता के पास जाने की चेष्टा की थी लेकिन पुलिस के जवानों ने किसी को भी पुल की सीढ़ियों तक नहीं पहुंचने दिया तो लोग उसी तरफ पहुंच गये, जिस तरफ से राजन, करतार सिंह व श्वेता दिखलाई पड़ रहे थे।

तभी स्पीकर्स के माध्यम से घोषणा की गई—"अटेंशन प्लीज! कुछ देर पश्चात् ही कुतुब एक्सप्रेस प्लेटफार्म नम्बर दो से बिना रुके पास होगी। पुलिस के जवान प्लेटफार्म नम्बर दो पर मौजूद लोगों को पीछे हटा दें। कोई भी रेलवे ट्रेक के करीब खड़ा ना होने पाये...।"

प्लेटफार्म नम्बर दो पर मौजूद पुलिस के जवान हवा में लाठी-डन्डे फटकारते हुये लोगों को पीछे हटाने लगे।

और जैसे ही दूर से आती ट्रेन का इंजिन दिखलाई पड़ा तो बहुत से दिलों की धड़कनें अनियन्त्रित हो चलीं और दिमागों में यह प्रश्न दस्तक देने लगा—

अब क्या होगा?

❑❑❑

❑❑❑

व्यवधान के लिये क्षमा करें!

हम केशव पण्डित एवं आशीर्वाद पण्डित के उपन्यासों में उच्च कोटि का कथानक व प्रकाशन देते आये हैं। हमारी मेहनत व लगन तथा आपके सहयोग व आशीर्वाद के फलस्वरूप ही आज 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का नाम उपन्यास जगत में डंका बजा रहा है। आप 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यासों को पढ़कर सराहते हैं तथा आगामी उपन्यास की बेचैनी के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

इसका कारण क्या है?

कारण बड़ा ही स्पष्ट है। जब आप उपन्यास पढ़ते हैं तो समय व पैसा खर्च करते हैं तथा बदले में अच्छे व उच्च कोटि के कथानक की आशा रखते हैं। 'केशव पण्डित' के सभी एक सौ पैंतीस उपन्यास एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के तैंतीस उपन्यास आपकी कसौटी पर सदैव ही खरा सोना साबित हुए हैं।

तभी तो उपन्यास जगत में आज 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' एवं 'धीरज पॉकेट बुक्स' तथा 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' का स्थान सर्वोच्च है।

आपको अच्छी तरह ज्ञात है कि आशीर्वाद पण्डित के मात्र तैंतीस उपन्यासों ने तहलका मचा दिया है। आशीर्वाद पण्डित का पहला उपन्यास 'दस साल का वकील' जब 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित हुआ तो उसने सफलता के अनगिनत रिकॉर्डों को तोड़ दिया।

आशीर्वाद पण्डित का दूसरा उपन्यास 'कानून का बाप' 'धीरज पॉकेट बुक्स' में प्रकाशित हुआ तो उसने बड़े-बड़े लेखकों के छक्के छुड़ा दिये। आशीर्वाद पण्डित का तीसरा उपन्यास 'बेटा हिन्दुस्तान का', चौथा उपन्यास 'छः फुट का नेवला', पांचवां 'दो पैरों वाला बम', छठा उपन्यास 'दिमाग का चैम्पियन' व सातवां उपन्यास 'अर्जुन ललकारे कृष्ण को', आठवां उपन्यास 'आधा जोकर आधा मदारी', नौवां उपन्यास '24 घण्टे का जादूगर', दसवां उपन्यास 'लोमड़ी का दूध', ग्यारहवां उपन्यास 'तू पण्डित मैं शनिचर', 'बेटे से बड़ा है देश', 'राधा गोरी मैं क्यों काला', '15 बम पाकिस्तान खत्म', 'कर लो लंका फतह', 'चक्रव्यूह में फंसा भारतपुत्र', 'जोकर भिड़ेगा चैम्पियन' से, 'सौ के बराबर अकेला', 'देख मेरे दिमाग का जादू', 'अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूँ', 'एक महाभारत और सही', मंगलसूत्र बनेगा फंदा, भून डालो गद्दारों को, बच्चा-बच्चा बनेगा शिवाजी, नहीं चाहिए ऐसी वर्दी, हिटलर मरेगा चूहे की मौत,अकेला लड़ूंगा पूरे देश से, मैं बनूंगा कलयुग का अभिमन्यु प्रकाशित हो चुके हैं। आशीर्वाद पण्डित का तैंतीसवां नया उपन्यास 'दिमाग से निकलेंगे मिसाइल' शीघ्र ही 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' में प्रकाशित होगा।

हमारी सफलता से बौखलाकर अन्य प्रकाशक लंगड़े घोड़े पर सवार होकर सफलता की मन्जिल स्पर्श करने के लिये निम्न स्तरीय तरीके अपनाने पर विवश हो गये हैं।

'केशव पण्डित' के नाम का लाभ उठाने के लिये वे छद्म नामों को जन्म देकर आपको धोखा देने के प्रयास में लीन हैं।

परन्तु 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा उन मिलते-जुलते नामों वाले लेखकों में कितना अन्तर है, ये उन लोगों की सफलता से ही स्पष्ट हो गया है। परन्तु फिर भी यदा-कदा कुछ पाठक भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वो 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' के भुलावे में दूसरे किसी भी उपन्यास को पढ़ सकते हैं तथा फिर अपना माथा पीट लेने पर विवश हो सकते हैं।

सो हमने आपकी सुविधा के लिये 'केशव पण्डित' के उपन्यासों के टाइटल-कवर के ऊपर भी 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम देना शुरू कर दिया है। कृपया आप 'केशव पण्डित' का उपन्यास लेते समय उपन्यास के कवर पर 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' का नाम अवश्य देख लें, ताकि आप माथा पीटने से बचे रहें।

आपका प्यार व आशीर्वाद ही 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' तथा 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' की सफलता की गारन्टी हैं। आप 'धीरज पॉकेट बुक्स' अथवा 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' व 'केशव पण्डित' एवं 'आशीर्वाद पण्डित' देखकर उपन्यास खरीदेंगे तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा। हम दावे के साथ आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके पैसे व समय का समुचित प्रतिफल मिलेगा।

बस इतना ध्यान रखें कि एक सौ पैंतीस बेहतरीन उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर 'केशव पण्डित' के पूर्व प्रकाशित 136 उपन्यास तथा नये उपन्यास अब केवल दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से प्रकाशित होते हैं, अन्य कहीं से नहीं।

तथा आपके चहेते 'आशीर्वाद पण्डित' के उपन्यास भी दो फर्म 'धीरज पॉकेट बुक्स' एवं 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' से ही प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।

धन्यवाद!

प्रकाशक
धीरज पॉकेट बुक्स एवं
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

❑❑❑
❑❑❑

कपड़े की बन्द हो चुकी मिल की पुरानी तथा जर्जर इमारत में लोहे की सीढ़ियां चढ़कर मुश्ताक दूसरी मन्जिल पर पहुंचा और खोजी नजरों से इधर-उधर देखते हुये आगे बढ़ने लगा।

एक हॉल से दूसरा हॉल।

एक हॉल में पहुंचने पर उसको शहजादी दिखलाई पड़ी, जो कि सिख भेष में थी तथा काले सूट के साथ लाल रंग की पगड़ी बांधे हुये थी।

"क्या रिपोर्ट है मुश्ताक...मेरा मतलब कि तैमूर...क्या केशव कसाब को जेल से छुड़ाकर दिल्ली ले जा रहा है—?"

"नहीं। ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है मैडम। मेरे कुछ आदमी जेल के आसपास ही मौजूद हैं। केशव वहां नहीं पहुंचा है। ना ही कसाब को जेल से बाहर निकाला गया है—वो जेल के भीतर ही है। मुझे तो नहीं लगता कि केशव के इरादे कसाब को छोड़ने के हैं।"

"लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता...तैमूर! क्योंकि उस ट्रेन में पांच सौ के करीब लोग सवार हैं। क्या केशव पण्डित उनकी जानों को दांव पर लगा देगा?"

"हो सकता है कि केशव ने उन लोगों को बचाने का कोई प्लान बना लिया हो। बहुत ही माइन्डेड है वो मैडम! उसके दिमाग में ऐसे-ऐसे आइडिये और प्लान आते हैं कि सामने वाला हैरत में पड़ जाये।"

"नहीं, इस बार उसके दिमाग में ऐसा कोई आइडिया, या प्लान नहीं आयेगा कि वो ट्रेन में सवार लोगों को बचाकर ले जाये। ट्रेन की रफ्तार कम होने पर...ट्रेन में किसी के सवार होने पर या ट्रेन के आसपास किसी प्लेन या हैलीकॉप्टर के मंडराने पर अपने फिदाइन बम ब्लास्ट करके ट्रेन को उड़ा देंगे। ये बात केशव पण्डित को भी मालूम है। वो ऐसा कोई रिस्क नहीं ले सकता कि मुसाफिरों की जान पर बन आये।"

"तो फिर वो कसाब को जेल से निकालकर क्यों नहीं ले गया मैडम—?"

"कसाब कोई मामूली आदमी तो है नहीं तैमूर कि उसे यूं ही छोड़ दिया जायेगा। इस देश के प्राइम मिनिस्टर और उसकी गवर्नमेन्ट को अपोजिशन पार्टी, मीडिया वालों, अदालत और पब्लिक को जवाब भी तो देना पड़ेगा। जरूरी मीटिंग चल रही होगी। कानून के एक्सपर्टस् से सलाह ली जा रही होगी। फैसला करने में वक्त लगेगा। फैसला होते ही केशव पण्डित कसाब को स्पेशल प्लेन में बैठाकर उस ट्रेन से पहले ही दिल्ली पहुंच जायेगा। इस देश की हुकूमत और केशव पण्डित के पास कसाब को छोड़ने के सिवाय दूसरा कोई चारा नहीं है। इस गेम में तो केशव पण्डित को शिकस्त का मुंह देखना ही पड़ेगा।"

मुश्ताक बोला तो कुछ नहीं, लेकिन उसके चेहरे और आंखों ने साफ-साफ चुगली खाई कि वो शहजादी की बात से कतई भी सहमत नहीं है।

शहजादी ने एक सिगरेट सुलगा ली तथा कश मारकर और नथुनों से धुआं उगलकर बोली, "मेरे साथ पाकिस्तान से कुछ साइन्टिस्ट आये थे, जिन्हें मैंने एक स्पेशल आइटम तैयार करने की

जिम्मेदारी दी थी। वो अपनी जिम्मेदारी पूरी करने में कामयाब हो गये हैं।"

"क्या चीज बनाई है उन्होंने, मैडम—?"

"उन्होंने एक बम तैयार किया है, जो कि कम्प्यूटर से ऑपरेट होता है। यूं समझो कि एक छोटे ब्रीफकेस में एक बम को लैपटॉप के साथ जोड़ दिया गया। वो बम उस लैपटॉप वाले कम्प्यूटर के हुक्म को ही मानेगा और वो कम्प्यूटर मेरे हुक्म का गुलाम है। मैंने उस कम्प्यूटर में एक मार्च दो हजार तेरह की दोपहर बारह बजे का टाइम सैट कर दिया है। यानि एक मार्च को दिन के बारह बजते ही बम ब्लास्ट हो जायेगा। मुम्बई में बहुत बड़ी तबाही होगी। हजारों लोग हलाक होंगे और कई इमारतें धराशाई हो जायेंगी—।"

"मुम्बई में...?" चौंककर बोला मुश्ताक, "यानि आपने केशव को भी मारने का इरादा बना लिया है मैडम—?"

"नहीं रे तैमूर! अपने दुश्मन को भला इतनी सस्ती मौत कैसे दे सकती हूं मैं—?"

"लेकिन जब वो बम मुम्बई में फटेगा तो...।"

"बहुत बड़ी है मुम्बई। केशव पण्डित का इलाका मुम्बई के एक किनारे पर है। जबकि उस बम को दूसरे हिस्से में प्लांट किया जायेगा। उस बम की मार केशव पण्डित के इलाके पर नहीं पड़ेगी। केशव पण्डित को तो जिन्दा रहकर भयानक तबाही का नजारा करना है तैमूर! तुम एक मार्च को मुम्बई में मत रहना। किसी दूसरे शहर में चले जाना!"

"मैं उस स्पेशल बम को देखना चाहूंगा मैडम।"

"देख लेना। देख क्या लेना...तुम्हें ही उसको किसी बड़ी और भीड़-भाड़ वाली इमारत में रखवाना है।"

"वो बम इस वक्त कहां है मैडम—?"

"अभी तो एक साइंटिस्ट के करीबी रिश्तेदार के घर पर है।"

"उस बम को सिर्फ एक दिन पहले ही किसी इमारत में रखना मुनासिब होगा मैडम। क्योंकि पहले रखा गया तो उसके पकड़े जाने का संदेह रहेगा।"

"अगर वो बम पकड़ाई में आ भी गया तो...उसे नाकाम नहीं किया जा सकेगा तैमूर! हां, तबाही रोकने के वास्ते उसे समन्दर में फेंका जा सकता है--।"

"क्या उसे डिफ्यूज नहीं किया जा सकता, मैडम?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। मैंने बतलाया ना कि वो बम एक कम्प्यूटर से जुड़ा है और वो कम्प्यूटर मेरे हुक्म का गुलाम है। उस कम्प्यूटर

में मैंने अपनी आवाज में एक पासवर्ड डाला है। उस पासवर्ड से ही बम एक्टिव हुआ है। अगर मैं अपनी आवाज में एक पासवर्ड बोलूं...तो ही वो बम ब्लास्ट होने से रुक सकता है। किसी को वो पासवर्ड मालूम हो भी जाये तो वो कुछ नहीं कर सकता क्योंकि कम्प्यूटर सिर्फ मेरी ही आवाज पहचानता है। जानते हो...वो पास वर्ड क्या है—?"

"क्या है, मैडम—?"

"अभी तबाही का वक्त नहीं आया है...ये है वो पासवर्ड—अगर मैं कम्प्यूटर को अपनी आवाज में ये पासवर्ड बोलती हूं...तो ही वो बम ब्लास्ट नहीं होगा—वर्ना दुनिया का कोई भी बम एक्सपर्ट या साइंटिस्ट उस बम को ब्लास्ट होने से नहीं रोक सकता। खैर, फिलहाल तो हमें अपनी तवज्जो उस ट्रेन और केशव पण्डित की जानिब रखनी चाहिये। जरा, अपने आदमियों से मालूम तो करो कि केशव पण्डित कसाब को लेने जेल पहुंचा कि नहीं—?"

❑❑❑
❑❑❑

ट्रेन का इंजिन दिखलाई पड़ते ही श्वेता के माथे पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बुंदकियां छलक आईं और वो गहरी सांस फेफड़ों तक पहुंचाकर बोली, "हे ईश्वर! क्या होने वाला है—?"

"बी अलर्ट...श्वेता...।" राजन बोला, "अपनी धड़कनों, सांसों और दिमाग की तरंगों पर नियंत्रण रखो। तुरन्त ही अपने इरादों को मजबूत करो और अपनी मानसिक शक्ति को दृढ़ता प्रदान करो। ट्रेन करीब आती जा रही है। इंजिन समेत सभी डिब्बों की छतों पर एक-एक फिदाइन मौजूद है—कुल मिलाकर बाईस फिदाइन। उनके जिस्म के किसी भी हिस्से पर पिन चला देना। गन की स्प्रिंग बहुत ही शक्तिशाली है। पिन कपड़ों, खाल, मांस को भेदकर हड्डी में जा घुसेगी और जान ले लेगी। तुम भी करतार सिंह...तैयार हो जाओ। हमें जल्दी-जल्दी ट्रिगर दबाकर बाईस फिदाइनों को खत्म करना ही होगा। अगर एक फिदाइन भी जिन्दा बच गया तो...काम खराब हो जायेगा। ट्रेन हमारे सामने आ चुकी है। निशाना लो...ट्रिगर दबाओ...।"

धड़धड़ाती हुई ट्रेन करीब आ गई।

राजन, करतार सिंह व श्वेता की गनों से पोटेशियम सायनाइड में भीगी पिनें निकलीं और इंजिन की छत पर बैठे फिदाइन के माथे, गले व सीने में पेवस्त हो गईं।

बिना चीखें, बिना कुछ सोचे ही उस फिदाइन ने प्राण त्याग दिये।

तीनों ट्रेन की छत पर बैठे फिदाइनों पर पिन चलाते रहे।

तीनों के ही निशाने ठीक जा रहे थे, लेकिन एक गड़बड़ हो गई।

लास्ट वाले गार्ड के डिब्बे की छत पर मौजूद अन्तिम फिदाइन ने जब चार फिदाइनों को छत से लुढ़ककर नीचे गिरते देखा तो उसे गड़बड़ी का अहसास हो गया।

उसने पुल के ऊपर उपस्थित राजन, करतार सिंह तथा श्वेता को भी देख लिया।

उसने पेट पर बन्धे बम के लाल बटन को दबाने के लिये दायें हाथ की तर्जनी उंगली को बढ़ा दिया।

राजन, करतार सिंह और श्वेता तीनों ने ही नोटिस में लिया कि अन्तिम फिदाइन बम-ब्लास्ट करने जा रहा है।

तीनों एक क्षण के लिये किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गये।

लेकिन फिर उनके मानस-पटल पर केशव पण्डित का चेहरा उभर आया—जिसने हमेशा उनसे यही कहा था कि ऐसी परिस्थिति में अपने मानसिक सन्तुलन को कायम रखने वाला ही असली खिलाड़ी होता है।

तीनों की तर्जनी ने पिस्टल के ट्रिगर दबा दिये।

एक साथ तीन पिन उस फिदाइन के चेहरे पर, माथे, नाक व निचले होंठ में पेवस्त हो गये।

वो छत पर बेजान होकर गिर पड़ा—तब उसकी तर्जनी उंगली बम के लाल बटन से सिर्फ एक इंच की दूरी पर ही थी।

शुक्र था कि उसके गिरने से भी बटन नहीं दबा और बम ब्लास्ट नहीं हुआ।

धड़धड़ाते हुये ट्रेन के सभी डिब्बे पुल के नीचे से होते हुये आगे निकल गये।

"जो बोले सो निहाल...सत श्री अकाल...!" करतार सिंह गन समेत दोनों हाथ ऊपर की तरफ उठाकर भंगड़ा करने लगा।

"बधाई हो शुक्ला जी...!" श्वेता राजन की कोहली भरकर गद्‌गद भाव से बोली, "हम अपने इम्तहान में पास हुये। सभी बाईस फिदाइन मारे गये। गुरुजी के प्लान का एक बड़ा हिस्सा सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। तुरन्त ही गुरुजी को मैसेज दे दीजिये...। वो व्याकुलता के साथ हमारे मैसेज की प्रतीक्षा कर रहे होंगे—।"

❑❑❑
❑❑❑

वो नीले रंग का हैलीकॉप्टर रेलवे ट्रेक के ऊपर बहुत तेजी के साथ उड़ान भर रहा था—जिसके भीतर पायलट के ठीक पीछे बैठा केशव चारमीनार की सिगरेट में कश लगाये जा रहा था।

"गुप्ताजी! हम कोटा कितनी देर में पहुंच जायेंगे—?"

"दस-बारह मिनट में ही पहुंच जायेंगे पण्डितजी—?"

'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा...।'

गीत के बजते ही केशव ने तुरन्त ही कोट की जेब से फोन निकाला और कान से लगाकर बोला, "हां, बोलो राजन! क्या रिपोर्ट है—?"

"आपके आशीर्वाद से हम तीनों कामयाब रहे गुरुवर...।" दूसरी तरफ से राजन उत्साह से भरा हुआ बोल रहा था, "हम तीनों सभी फिदाइनों को मारने में कामयाब रहे और उनके पेट पर बंधे बमों में से कोई भी ब्लास्ट नहीं हुआ। थोड़ी सी गड़बड़ी हुई थी, लेकिन ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो गया। लास्ट वाले फिदाइन को हमारे एक्शन की जानकारी हो गई थी और वो बम का बटन दबाने जा रहा था—लेकिन हम तीनों ने पहले ही उसका काम तमाम कर दिया...।"

"बधाई हो तुम तीनों को! तुम नहीं जानते कि तुम तीनों ने कितना बड़ा कारनामा कर दिखलाया है। ये काम इतना आसान भी नहीं था। अगर एक भी फिदाइन बच जाता तो बहुत बड़ी गड़बड़ी हो जाती। अब तुम तीनों तुरन्त ही हैलीकॉप्टर में सवार होकर वापिस मुम्बई पहुंचो। देखो कि 'उसे' होश आया कि नहीं? उसका होश में आना बहुत ही जरूरी है। उसके माध्यम से ही हमें सफलता मिलेगी। डॉक्टरों की टीम से बोलना कि उसका जल्दी से होश में आना बेहद जरूरी है—।"

"ठीक है गुरुजी—हम तीनों तुरन्त ही मुम्बई लौट रहे हैं। आप इस वक्त कहां हैं—?"

"बस, कोटा पहुंचने ही वाला हूं।"

"ईश्वर आपको सफल करे गुरुवर! असली काम तो आप करने जा रहे हैं। अपना ख्याल रखियेगा! सादर चरण स्पर्श, गुरुवर—।"

"जीते रहो प्यारे शिष्य! मैं अपना ख्याल रखूंगा।" कहने पर केशव ने फोन बन्द कर दिया।

"आप पर पूरे देश को गर्व है पण्डितजी...।" हैलीकॉप्टर को उड़ाते हुये वाला पायलट, "आप मिलिट्री या पुलिस में नहीं हैं। कोई सरकारी अफसर भी नहीं हैं। फिर भी ऐसे संकट की घड़ी में देश की खातिर जान हथेली पर रखकर निकल पड़ते हैं। जिस तरह फिदाइनों ने ट्रेन पर कब्जा किया है, उस सूरत में सरकार के सामने कसाब को छोड़ने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं बचता। लेकिन आपने कसाब को छोड़े बिना ही सभी ट्रेन में सवार यात्रियों को सही-सलामत छुड़ाने का बीड़ा उठाया है। आप धन्य हैं पण्डित जी—।"

"मैं हिन्दुस्तानी हूं गुप्ताजी। मुझ पर इस देश की पावन मिट्टी का कर्ज है। मैं तो बस अपने धर्म और कर्त्तव्य का पालन ही कर रहा हूं। देशभक्ति की भावना सभी के दिल में होनी ही चाहिये।"

"कोटा शहर दिखलाई पड़ने लगा है पण्डितजी। मेरा आधा काम तो हो गया—आधा काम आपको वापिस मुम्बई पहुंचाकर पूरा हो जायेगा। अब आपका काम शुरू होगा। मैं नहीं जानता कि आप क्या करने वाले हैं—ईश्वर से आपकी सफलता के लिये प्रार्थना करता हूं। आप जरा नीचे देखकर बतलाइये कि हैलीकॉप्टर को कहां उतारूं—?"

❑❑❑
❑❑❑

रेलवे के छोटे-बड़े अफसर केशव को यूं ही देख रहे थे कि मानो कोई अजूबा हो।

"मेरे प्लान का पहला हिस्सा मेरे असिस्टेन्ट्स राजन, करतार सिंह और श्वेता ने रतलाम रेलवे स्टेशन पर कम्पलीट कर दिया है...।" डिस्पोजल गिलास से अदरक वाली चाय की घूंट भरकर बोला केशव, "ट्रेन की छतों पर बाईस फिदाइन थे—जिन्हें मार दिया गया है। मिशन की सबसे बड़ी कामयाबी ये है कि ट्रेन के भीतर मौजूद फिदाइनों को भनक तक नहीं लगी कि उनके बाईस साथी मारे जा चुके हैं। इस मिशन में सावधानी की बहुत दरकार है—क्योंकि अगर फिदाइनों को गड़बड़ी की भनक भी लग गई तो वो बौखलाकर बम ब्लास्ट कर सकते हैं...।"

"ये तो बहुत ही गम्भीर मामला है पण्डितजी...।" रेलवे का एक अधिकारी चिंतित भाव से बोला, "ट्रेन के भीतर कई फिदाइन होंगे। उनके पास बम भी होंगे और हथियार भी होंगे। अगर एक भी फिदाइन को गड़बड़ी का अहसास हो गया तो वो खून की होली खेल सकता है—पूरी ट्रेन को उड़ा सकता है। आप इस मुश्किल काम को कैसे करेंगे—?"

मुस्कुराया झील-सी नीली आंखों वाला और फिर चाय की घूंट भरने पर बोला—"सावधानी के साथ ईश्वर का आशीर्वाद भी चाहिए। अपना काम करते वक्त मुझे इतनी सावधानी बरतनी ही होगी कि किसी फिदाइन को जरा-सी भी भनक ना लगने पाये। बाकी तो ईश्वर के हाथों में है...।"

"आपकी जान भी दांव पर लगी हुई है पण्डितजी—।"

"कोई चिन्ता नहीं। मुझे अपनी नहीं, ट्रेन में सवार सभी यात्रियों की चिन्ता है। जरा मालूम करके बतलाइये कि वो ट्रेन इस समय कहां है और यहां कितनी देर में पहुंच जायेगी—?"

❑❑❑

❑❑❑

सभी प्लेटफार्मस् को जोड़ने वाले सीढ़ियोंदार पुल के ऊपरी हिस्से पर उस ट्रेक के ऊपर मौजूद था केशव, जिस पर से कुतुब एक्सप्रेस गुजरने वाली थी।

केशव की पीठ पर एक बैग बन्धा हुआ था, जिसमें उसकी जरूरत के सारे सामान मौजूद थे।

केशव के पैरों में क्रेपसोल वाले स्पेशल जूते थे—जिनसे चलने-फिरने या कूदने पर कोई आवाज या धमक नहीं होती थी।

उसने आंखों पर भी सफेद शीशों वाला चश्मा लगाया हुआ था, ताकि आंखों में धूल ना पहुंचने पाये।

अब वो व्याकुलता के साथ ट्रेन के आगमन की प्रतीक्षा में था और सिगरेट फूंक रहा था। व्हिसल सुनाई पड़ने पर उसने नजरें उठाकर दूर से आ रही ट्रेन को देखा।

कोई हड़बड़ाहट या व्याकुलता नहीं।

सिगरेट फूंकते हुये दूसरी तरफ की रेलिंग पर पहुंचा—यानि अब ट्रेन उसकी पीठ की तरफ से आ रही थी।

ट्रेन के इंजिन के शोर के साथ घड़घड़ाहट भी महसूस हुई तो स्पष्ट था कि ट्रेन आ चुकी।

चीखता हुआ इंजिन जब केशव के नीचे से निकल गया तो वो बिना किसी हड़बड़ाहट या जल्दबाजी के रेलिंग पर चढ़ा और नीचे कूद गया।

परफेक्ट छलांग थी वो।

स्पेशल जूतों के कारण उसके पैर छत से टकराये तो नीचे कोई आवाज या धमक नहीं पहुंची थी। वो ट्रेन के अन्तिम डिब्बे की छत थी।

पीठ पर से बैग उतारने पर केशव बड़े ही इत्मीनान के साथ आलथी-पालथी मारकर बैठ गया। उसने बैग से प्लास्टिक की ऐसी गन निकाली, जिसके आगे दो नालें थीं और उनमें नन्हें-नन्हें छिद्र थे।

ट्रिगर के दबने पर दोनों नालों के छिद्रों से तरल पदार्थ की बारीक, लेकिन तेज बहाव वाली धारायें निकलीं और ट्रेन की छत पर एक साथ 'मिक्स' होकर गिरीं।

आश्चर्यजनक रूप से छत में हल्का-सा धुआं उठा और एक आरपार वाला छिद्र बन गया।

केशव ने बैग से एक पांच किलो गैस वाला सिलेन्डर निकाला, जिसके ऊपरी हिस्से में रेग्यूलेटर के साथ एक बारीक पाइप जुड़ी हुई थी।

उस पाइप को छत में बने छिद्र के भीतर डालकर केशव ने रेग्यूलेटर की नॉब घुमाई तो डिब्बे के भीतर सिलेन्डर में भरी गैस जाने लगी।

बहुत ही तेज प्रभाव वाली गैस थी वो, जिसमें कोई गन्ध भी नहीं थी और धुआं भी नहीं था—अर्थात् उस गैस को देखा भी नहीं जा सकता था और सूंघा भी नहीं जा सकता था। डिब्बे में मौजूद इकलौता फिदाइन बेहोश होकर गार्ड की लहूलुहान लाश के करीब ही गिर पड़ा।

केशव अगले डिब्बे की छत पर पहुंचा।

उसने स्पेशल गन की दोनों नालों से नाइट्रिक और हाइड्रो क्लोरिक एसिड छोड़े और दोनों छत पर गिरने तथा आपस में मिलने पर 'अम्लराज' बन गये।

दुनिया का सबसे घातक तेजाब, जिसमें दुनिया की किसी भी धातु या पत्थर को तुरन्त ही गला देने की क्षमता होती है।

छत में हुये छिद्र में सिलेन्डर से जुड़ी नलकी डालकर गैस छोड़ दी।

केशव को पूरा अन्दाजा था कि कितनी गैस पर्याप्त होगी। पर्याप्त गैस के जाने पर उसने रेग्यूलेटर बन्द कर दिया।

उस डिब्बे में सिर्फ एक ही फिदाइन था और चालीस के लगभग घबराये हुये यात्री थे।

क्या हुआ, किसी को कुछ पता नहीं चला—बस, सभी एकदम से एक साथ बेहोश हो गये—फिदाइन भी बेहोश।

किसी को भी सोचने-समझने का वक्त नहीं मिला।

इसी तरह सभी डिब्बों में गैस पहुंचाकर केशव ने सभी फिदाइनों के साथ यात्रियों को भी बेहोश कर दिया और फिर इन्जिन की छत पर पहुंच गया।

इन्जिन में मौजूद तीनों फिदाइन भी बेहोश।

चेहरे पर गैस मास्क लगाने पर केशव इन्जिन के भीतर पहुंचा, ताकि उस पर गैस का कोई प्रभाव न हो। ट्रेन को यूं ही दौड़ते रहने दिया उसने और फोन निकालकर प्रधानमंत्री का नम्बर मिलाया—

"नमस्कार, सर...केशव पण्डित! ईश्वर की कृपा से मेरा मिशन कम्पलीट हुआ!"

"रियली? सच बोल रहे हैं पण्डितजी?"

"यस सर। कुछ फिदायीन मारे गये और बाकी बेहोश हैं। हालांकि सभी यात्री भी बेहोश हैं, लेकिन वो सही-सलामत हैं। पूरी ट्रेन पर मेरा कब्जा है। मैं ट्रेन को सवाई माधोपुर स्टेशन पर ही रोकूंगा।"

"बधाई हो पण्डितजी...बहुत-बहुत बधाई हो। यूं तो आप जरूरत पड़ने पर देश की सेवा करते ही हैं—लेकिन आपका ये कारनामा तो यादगार रहेगा। आपने जैसे चमत्कार ही कर दिया हो। सैकड़ों लोगों की जान बचा ली है आपने। खतरनाक आतंकियों को भी काबू में कर लिया है। आतंकियों द्वारा ट्रेन पर कब्जा करने की खबर ने पूरे देश में हड़कम्प मचा दिया था। सारा देश ही चिन्तित था—परेशान था। ट्रेन में सवार लोगों के सगे-सम्बन्धियों की तो जान ही सूखी पड़ी थी। पूरा देश खुश होकर त्योहार मनायेगा। समझ में नहीं आता कि मैं किन शब्दों में आपका धन्यवाद अदा करूं—।"

"ऐसा मत बोलिये सर! मैंने जो कुछ भी किया—अपनों के लिये किया। और अपनों पर कोई अहसान थोड़े ही किया जाता है। ये मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे ये काम करने का अवसर मिला। ये ईश्वर की अनुकम्पा है कि मैं इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर पाया! खैर, अब आपको सवाई माधोपुर के स्टेशन पर बम स्क्वायड भेजना है। ऐसे एक्सपर्ट भिजवा दीजिये कि जो बमों को निष्क्रिय कर सकें। फिदाइनों को अपने कब्जे में लेने को पुलिसफोर्स भी चाहिये। साथ ही कई एम्बूलेंस भी चाहिये, जिनमें सभी बेहोश लोगों को हॉस्पिटल ले जाया जा सके। फिर सभी लोगों को उन स्थानों पर भेजने की व्यवस्था भी होनी है, जो जहां जाने के लिये ट्रेन में सवार हुये थे।"

"सारी व्यवस्थायें हो जायेंगी पण्डितजी! मैं अभी सभी व्यवस्थायें करा देता हूं। एक बार फिर से आपका धन्यवाद—।"



"कोई सुनेगा तो विश्वास ही नहीं करेगा कि पण्डितजी ने अपने तीन असिस्टेन्ट राजन शुक्ला, करतार सिंह और श्वेता गुप्ता के सहयोग से ही इतना बड़ा मिशन कम्पलीट कर डाला...।" टी०वी० स्क्रीन पर लोगों की भीड़ के साथ खड़ा चश्माधारी रिपोर्टर हाथ में 'आज तक' के लोगों वाला माइक लिये हुये पूरे उत्साह के साथ बोले जा रहा था, "कोई मिलिट्री, कोई पुलिस नहीं। बाईस फिदाइनों को मार दिया गया और चौबीस फिदाइनों को बेहोश करके पुलिस के हवाले कर दिया गया। बतलाया जाता है कि उन फिदाइनों को ये हुक्म था कि अगर उन्हें जरा-सी भी गड़बड़ी का आभास हो तो वो तुरन्त ही अपने पेट पर बन्धे बमों को ब्लास्ट कर डालें। ये पण्डितजी का ही कमाल है कि उन्होंने ट्रेन को अपने कब्जे में कर लिया—सभी यात्रियों को बचा लिया और फिदाइनों को कुछ भी करने का मौका नहीं मिल पाया—बल्कि उन्हें भनक तक नहीं लगने पाई। सभी बेहोश फिदाइनों को पुलिस फोर्स अपने साथ ले जा चुकी है। सभी यात्रियों को इस हॉस्पिटल में लाया गया था। ट्रीटमेन्ट के बाद सभी को होश आ गया और उन्हें उनके शहरों तक पहुंचाने की तैयारियां चल रही हैं—।"

"क्या केशव पण्डितजी भी वहां पर हैं प्रदीप—?"

"नहीं, महिमा जी! पण्डितजी अपना काम करके हैलीकॉप्टर से मुम्बई चले गये हैं—फिदाइनों की कैद से आजाद हुये लोग पण्डितजी की याद कर रहे हैं। उन्हें दुःख है कि वो पण्डितजी से मिल नहीं सके—उनका आभार व्यक्त नहीं कर सके—धन्यवाद नहीं दे सके। सभी लोग पण्डितजी के बहुत आभारी हैं...।"

"किसी से बात करोगे प्रदीप—?"

"मैडम जी...।" रिपोर्टर एक पचास वर्षीय महिला के मुंह के सामने पहुंचकर बोला, "आप भी उस ट्रेन में सवार थीं। क्या कहना है आपका—?"

आंखों में प्रसन्नता के आंसू भरे हुये वो भर्राये कण्ठ से बोली, "जिन्दा बच जाने की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी मुझे। उस फिदाइन के पेट पर बम बन्धा था और हाथों में रिवॉल्वरें थीं। वो बार-बार बम ब्लास्ट करने की धमकी दे रहा था। लग रहा था कि कभी भी मौत आ सकती है। अपने पति, बेटे, बहू और पोते को याद करके मैं रोये जा रही थी। बार-बार ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी

कि मैंने कोई पुण्य किया हो तो...मुझे मेरे परिवार के पास पहुंचा दें। फिर अचानक ही बेहोश हो गई मैं। होश आया तो हॉस्पिटल में थी। मुझे बताया गया कि केशव पण्डितजी ने सभी यात्रियों को फिदाइनों के चंगुल से सही-सलामत निकाल लिया है। बहुत से आतंकी मारे गये और बाकी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। विश्वास ही नहीं हुआ कि चमत्कार हो गया है। पण्डितजी यहां होते तो उनके पैर छू लेती। मरते दम तक उनकी आभारी रहूंगी—मेरा परिवार भी उनका आभारी...।"

छनाक...की आवाज के साथ एक ईंट टी०वी० स्क्रीन से टकराई और टूटी स्क्रीन से धुआं उठने लगा।

ईंट से टी०वी० की स्क्रीन को तोड़ देने वाली शहजादी मानो पागल ही हो उठी हो—वो कमरे में मौजूद सामान को उठाकर पटकने लगी, तोड़ने लगी और इसी के साथ विक्षिप्त भाव से चीख-चीखकर बोलने भी लगी—"केशव पण्डित! साले...कुत्ते...हरामजादे! मेरे प्लान की ऐसी की तैसी कर डाली तूने। कसाब को भी नहीं छोड़ा और सारे मुसाफिरों को भी बचा ले गया। मेरे सभी फिदाइन मार डाले—या पुलिस के हवाले कर दिये। बहुत बड़ी चोट दी है तूने। छोडूंगी नहीं तुझे। तेरे जिस्म को फाड़कर तेरा सारा खून पी जाऊंगी। तेरी बोटी-बोटी करके कच्चा ही चबा जाऊंगी। ऐसी मौत मारूंगी कि तेरे फरिश्तों की भी रूह कांप उठेगी। अब देख तू...मैं क्या करती हूं...देखना कि शहजादी क्या करती है...!"

❑❑❑

❑❑❑

ट्रांसमीटर का बटन दबाकर बोली शहजादी, "शहजादी कॉलिंग...शहजादी कॉलिंग...।"

"यस, तैमूर स्पीकिंग...मैडम।"

"कहां हो तुम इस वक्त तैमूर—?"

"मैं उस ट्रेनिंग स्कूल में हूं मैडम, जिसमें मुझे अपने मकसद के वास्ते नौजवानों को ट्रेनिंग देकर आई०एस०आई० के कमाण्डो बनाना है। कुछ जरूरी सामान लेकर आया था। चाकू...तलवारें और लाठियां हैं। जल्दी ही हथियार और कारतूस भी ले आऊंगा। मेरी तबियत खराब थी। बहुत तेज बुखार था—इसलिये आपसे कॉन्टेक्ट नहीं कर पाया मैं। केशव पण्डित के नाम की देशभर में धूम मची हुई है। अखबारों में उसी की तस्वीरें और खबर छपी हुई हैं। टी०वी० पर भी सभी न्यूज चैनल पर वो ही छाया हुआ है। महाराष्ट्र सरकार

ने उसको पन्द्रह अगस्त पर सम्मानित करने का ऐलान किया है।"

शहजादी का चेहरा इलैक्ट्रिक हीटर की मानिन्द ही दहक उठा और आवाज भी सुलग उठी, "हां, जानती हूं मैं तैमूर! जल-भुनकर दो टी०वी० तोड़ चुकी हूं मैं। ऐसा हो जायेगा...मैंने तसव्वुर भी नहीं किया था। मैं तो ये ख्याल पाले बैठी थी कि केशव पण्डित का दिमाग नहीं चल पायेगा और कसाब को छोड़ने पर मजबूर हो जायेगा। लेकिन उसने पूरी ट्रेन को बचा लिया और अपने बाईस फिदाइन हलाक कर डाले—बाकी को बेहोश करके पुलिस के हवाले कर दिया। लानत है ऐसे साले फिदाइनों पर...केशव पण्डित ने इतना सब कर डाला और उन्हें भनक तक नहीं लगी। साले...किसी काम के नहीं थे—अच्छा हुआ कि मर गये या गिरफ्तार हो गये। मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ता। दूसरे फिदाइन आ जायेंगे। लेकिन केशव पण्डित मुझसे जीत गया—ये बहुत ही गलत बात हो गई। मेरा खून फुंक रहा है। मैं केशव पण्डित को मुंहतोड़ जवाब देना चाहती हूं। उसके साथ कुछ ऐसा करना चाहती हूं कि वो साला अंगारों पर लोटने लगे।"

"आपने वो कम्प्यूटर वाला बम तो तैयार करा लिया ही है मैडम। एक मार्च की दोपहर बारह बजे का टाइम सैट कर ही दिया है आपने। मैंने एक ऐसी जगह तलाश कर ली है, जहां पर बहुत ज्यादा भीड़ रहती है। मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज का नाम तो सुना ही होगा आपने। वहां पर सुबह से शाम तक हजारों की तादाद में लोग रहते हैं। पूरी गहमा-गहमी रहती है। एक-से-एक हस्ती रहती है वहां पर। उस इमारत के ठीक नीचे से एक अण्डरग्राउन्ड गटर गुजरता है। मैं बम को उस गटर में छिपा दूंगा। वहां कोई आता-जाता नहीं—इसलिये किसी को उस बम की जानकारी नहीं हो पायेगी। वो बम फटेगा तो भारी तबाही मच जायेगी। यूं तो इस बम ब्लास्ट से पूरा मुल्क ही दहल उठेगा—लेकिन सबसे ज्यादा केशव पण्डित तिलमिलायेगा। खून फुंक जायेगा उसका—अंगारों पर लोटने लगेगा वो।"

"मैंने इसी काम के वास्ते तुम्हें याद किया है तैमूर! मैं एक मार्च तक का इन्तजार नहीं कर सकती। केशव पण्डित से इन्तकाम लेने को छटपटा रही हूं मैं। सो मैंने उस बम में आज का ही टाइम भर दिया है...दोपहर तीन बजे का।"

"तीन बजे—?"

"हां। अभी तो नौ ही बजे हैं। तुम एक बजे तक उस बम को मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज की इमारत के नीचे वाले गटर में रख देना। तुम ऐसा करो कि बसई वाले किले पर चले आओ। मैं तुम्हें वो बम दे दूंगी। कितने बजे तक पहुंच जाओगे तुम—?"

"दो घन्टे तो लगें ही जायेंगे। यहां से बसई का किला काफी दूर पड़ता है—।"

"कोई बात नहीं। तुम ग्यारह बजे तक पहुंच जाओ। मैं तुम्हें वहीं मिलूंगी। मैं हुलिया बदलकर आऊंगी। तुम मुझे नहीं पहचान पाओगे—लेकिन मैं तुम्हारे पास चली आऊंगी।"

❑❑❑
❑❑❑

ग्यारह बजे मुश्ताक बसई के किले पर पहुंच गया और खोजी नजरों से इधर-उधर देखते हुये आगे बढ़ने लगा। एक ऐसे हिस्से में पहुंचा, जहां काफी खुली जगह थी। वह एक काले बुर्के वाली को देखकर ही वहां पहुंचा था—लेकिन जब वो बुर्के वाली उसके पास नहीं आई तो वो पैन्ट की जेबों में हाथ डालकर आगे बढ़ चला।

आगे टूटी-फूटी कई दीवारें थीं। अधिकतर चार फुट से सात फुट ऊंची ही थीं।

"मैं इधर हूं तैमूर...।"

एक सात फुटी दीवार की ओट में खड़ी काले बुर्के वाली बोली—जिसके पास लाल रंग का ब्रीफकेस था।

"मैडम जी...!" मुश्ताक उसके करीब पहुंचा।

वह शहजादी ही थी। उसने चेहरे पर पड़े पर्दे को उठाकर सिर के पीछे डाल दिया तथा ब्रीफकेस को एक ऊंचे पत्थर पर रखकर खोला।

"ये ही है वो बम, तैमूर! मैंने इसमें आज का टाइम सैट कर दिया है...तीन बजे का। तुम इसे ले जाओ और मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज की बिल्डिंग के नीचे रख देना। टाइम बहुत ही कम है। इसलिये तुम्हें फौरन ही यहां से निकलना होगा। बम रखने पर फौरन ही वहां से निकल लेना—बल्कि मुम्बई से ही बाहर निकल जाना। मैं भी मुम्बई से दूर चली जाऊंगी। जब ये बम मुम्बई के सीने पर तबाही की दास्तान लिख देगा तो हम लौटेंगे। तब मैं फोन पर केशव पण्डित से बात करूंगी और उसके हालचाल पूछूंगी।"

"फोन पर क्यों...ऐसे ही मुझसे बात कर लो ना शहजादी...।"

शहजादी चिहुंककर पलटी तो आंखें फैलती चली गईं।

सामने नीले रंग के सूट वाला केशव ही खड़ा था।

"तू?"

"हां—मैं। तू तो मुझसे मिलने वाली नहीं थी। सोचा कि मैं ही तुझसे मिलने चला आऊं—।"

शहजादी ने मुश्ताक को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा और फुंफकारकर बोली, "तूने यहां आते वक्त होशियारी नहीं बरती। ये तेरा पीछा करते हुये यहां तक आ पहुंचा—। लेकिन इसे ये कैसे मालूम पड़ा कि तू ही तैमूर है—या मेरे वास्ते काम कर रहा है—?"

"मुझसे पूछ ना शहजादी—तेरे इस सवाल का मैं जवाब देता हूं ना तुझे...।" केशव उचककर एक चार फुट ऊंची दीवार पर बैठ गया और फिर बोला, "धार्मिक नेता हाजी इकबाल सिद्दीकी पहले ही मेरे हिट लिस्ट में आ गया था और मैंने राजन, करतार सिंह और श्वेता को उसे उठा लाने के लिये भेजा था। लेकिन मेन गेट के की-हॉल से तीनों को देखकर इकबाल को शक हो गया और वो अपने मकान के पीछे वाले दरवाजे से भाग निकला। संदेह होने पर राजन, करतार सिंह, श्वेता ने उसका पीछा किया। सड़क पार करते हुये इकबाल एक कार की चपेट में आ गया था। उसके सिर पर चोट लगी और वो गहरी बेहोशी में चला गया था। मैंने उसे चुपचाप एक भरोसे के डॉक्टर के नर्सिंग होम में एडमिट करवा दिया था और उसके होश में आने का इन्तजार चल रहा था। आज वो होश में आया। इतनी शराफत से तो वो जुबान खोलने वाला था नहीं। सो मैंने उसे हिप्नोटाइज किया तो वो एफ०एम० रेडियो की तरह ही बोलता चला गया। उसने ये जानकारी दी कि वो आई०एस०आई० से जुड़ा हुआ है। उसी ने मिर्जा बेग को चंगेज खां के पास भेजकर बाबर बनवाया था। उसी ने मुश्ताक को तुझसे मिलवाया और तूने मुश्ताक को तैमूर बना दिया...।"

"ओह...समझी। तो इकबाल के जरिये तुझे मुश्ताक के बारे में जानकारी मिली और तू इसका पीछा करते हुये यहां तक चला आया—।"

"नहीं—मैं मुश्ताक का पीछा करते हुये यहां तक नहीं पहुंचा—बल्कि मैं तो पहले से ही यहां पहुंच गया था और तेरा इन्तजार कर रहा था...।"

"लेकिन तुझे कैसे पता चला कि मैं यहां आने वाली हूं—?"

"मुश्ताक ने मेरी ही मौजूदगी में तुझसे ट्रांसमीटर पर बात की थी ना—।"

❑❑❑
❑❑❑

"क्या मतलब...?" चौंककर बोली शहजादी, "मुश्ताक ने तेरी मौजूदगी में मुझसे बात की थी? यानि तू मुश्ताक के ट्रेनिंग सैन्टर पर ही छिपा हुआ था—?"

"नहीं। मुश्ताक तुझसे झूठ बोला था कि ये ट्रेनिंग सेन्टर पर है। जबकि ये मेरे घर पर था–।"

"व्हाटऽऽऽ?" चिहुंकी शहजादी, फिर मुश्ताक की तरफ घूरकर बोली, "ये पण्डित क्या बोल रहा है मुश्ताक?"

"मेरे और अपने बीच बेचारे मुश्ताक को क्यों ला रही है तू शहजादी? तूने और इकबाल ने मुश्ताक को बरगलाया था। मुश्ताक भी गलतफहमी का शिकार था। मैंने इसे इकबाल के बयान वाली वीडियो फिल्म दिखलाई तो इसकी गलतफहमी दूर हुई। ये बहुत पछताया और रोया भी। जानती है कि वो गलतफहमी क्या थी–?"

"...।"

"वो गलतफहमी ये थी कि मुश्ताक की बीवी सायरा और बेटे आमिर को कत्ल करने वाले शैतान इकबाल के भेजे हुये आदमी थे। चूंकि मुश्ताक भी अपने पिता की तरह जातिवाद में नहीं पड़ता था। इसके लिये मजहब से बढ़कर देश था। जबकि इकबाल मुश्ताक को अपने जैसा बनाना चाहता था। इकबाल को मालूम पड़ गया था कि सायरा आमिर के साथ अपने मायके गई हुई थी। इकबाल ने अपने दर्जनभर पेशेवर गुन्डे भेजकर दंगा करवा दिया था। उन गुन्डों ने आमिर के ससुराल वालों को मार दिया था और सायरा व आमिर को उठाकर ले गये थे। उन्होंने बेचारी सायरा के साथ रेप किया था और उसके साथ आमिर को भी कत्ल कर दिया था। इस वारदात का शक हिन्दुओं पर जाये, इसके लिये इकबाल ने उस इलाके के एक दर्जन हिन्दू युवकों को मरवा दिया था–उनकी उस बस का एक्सीडेन्ट करवाकर, जिससे वो लोग वैष्णो देवी की यात्रा पर जा रहे थे। शातिर दिमाग इकबाल ने अपने दर्जनभर गुन्डों को भी मरवा दिया था–ताकि वो उसकी पोल ना खोल सकें। इकबाल को कानून के हवाले करके आ रहा हूं मैं। उसका फांसी पर चढ़ना तो निश्चित ही है। सारी बातें जानने पर मुश्ताक को अपनी गलती का अहसास हुआ। इसने मुझसे माफी मांगी और तेरे बारे में सब कुछ बतला दिया। इस बम के बारे में भी...जो पत्थर पर रखा हुआ है...।"

"ओह...तो ये बात है...।" शहजादी चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव समेटकर बोली, "तूने मुश्ताक की गलतफहमी दूर करके इसे अपने साथ मिला लिया है।"

"और तेरे मन्सूबों पर पानी फेर दिया है। तेरा तैमूर फिर से सच्चा हिन्दुस्तानी बन चुका है...।"

बौखला-सी गई शहजादी और बोली, "तूने पहले उस ट्रेन में सवार लोगों को बचाया। मेरे फिदाइन मार दिये और कुछ को पुलिस

के हवाले कर दिया। अब मुझसे मेरे कमाण्डर को भी छीन लिया है। लेकिन मैं इतनी आसानी से शिकस्त खाने वाली नहीं हूं। ये बम फटेगा और तबाही मचायेगा। इसे सिर्फ मैं ही ब्लास्ट होने से रोक सकती हूं–लेकिन रोकूंगी नहीं। तू कुछ भी करके मुझे मजबूर नहीं कर पायेगा। यहां तक कि मुझे हिप्नोटाइज भी नहीं कर पायेगा–क्योंकि मैं भी हिप्नोटिज्म की आर्ट जानती हूं। ये बम यहां फटेगा और यहां मौजूद लोगों की जान लेगा।"

"गलतफहमी की शिकार है तू शहजादी। तेरे इस बम को मैं अभी फेल कर देता हूं। देखना चाहेगी कि कैसे?"

केशव दीवार से उतरकर सूटकेस में कैद बम के करीब पहुंचा और उसके की-बोर्ड के बटनों से खेलने पर शहजादी की आवाज में ही बोला, "अभी तबाही का वक्त नहीं आया है–।" फिर वो शहजादी की तरफ पलटकर बोला, "कम्प्यूटर ने पासवर्ड एक्सेप्ट कर लिया है और बम को ठण्डा कर दिया है। तूने ये पासवर्ड पहले ही मुश्ताक को बतला दिया था–जिसे मैंने तेरी आवाज में बोल दिया। अब ये बम किसी खिलौने से बढ़कर नहीं है।"

शहजादी की मुट्ठियां भिंच चलीं।

चेहरा किसी फैक्ट्री के बायलर की मानिन्द ही भभक उठा और आंखों में चिंगारियां-सी भरती चली गईं।

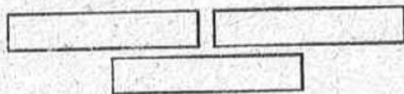
"ये देख...केशव पण्डित...।" एक ही झटके में कोट व शर्ट के बटनों को तोड़कर वो चिल्ला-चिल्लाकर बोली, "आर०डी०एक्स० बम वाली बैल्ट है ये। इस पर लगे लाल बटन को देख रहा है ना तू? इसके दबते ही ये बम ब्लास्ट हो जायेगा। मुझे अपनी जान की कतई परवाह नहीं है। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि मरते-मरते मैं अपने मुल्क के वास्ते बहुत बड़ा काम करके जाऊंगी। मेरे मुल्क का सबसे बड़ा दुश्मन तू है केशव पण्डित! जब-जब भी मेरे देश ने, आई०एस०आई० ने या दहशतगर्दों ने तेरे मुल्क के खिलाफ कुछ करने की कोशिश की तो तूने ही अड़ंगे अड़ाये। आई०एस०आई० के कई बड़े ओहदेदार खत्म कर दिये तूने। सैकड़ों दहशतगर्द मिटा डाले। कई बार तू पाकिस्तान में गया और वहां तबाही मचाकर सही-संलामत वापिस लौट आया। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच तू दीवार बनकर खड़ा हो जाता है। आज अपनी जान की कुर्बानी देकर मैं इस दीवार को धराशायी कर दूंगी। देख...मैं इस लाल बटन को दबाने जा रही हूं...देखती हूं कि तू अपनी जान कैसे बचाता है? मुस्कुरा रहा है साले...डर। मैं तेरी इन नीली-नीली आंखों में मौत का खौफ देखना चाहती हूं। तुझे खौफ से थर-थर कांपते हुये देखना चाहती

हूं। अपनी बीवी और बेटे को याद कर। तेरे मरने पर उन दोनों का क्या होगा? क्या मैं तेरे मुस्कुराने का मतलब ये निकाल लूं कि मौत के खौफ ने तेरे दिमाग को हिला दिया है?.ये देख...मेरी उंगली लाल बटन की तरफ बढ़ रही है...अभी मैं लाल बटन को दबाऊंगी। एक धमाका होगा और मेरे, मुश्ताक के साथ तेरे जिस्म के भी परखच्चे उड़ जा...।''

बस, इतना ही बोल सकी शहजादी!

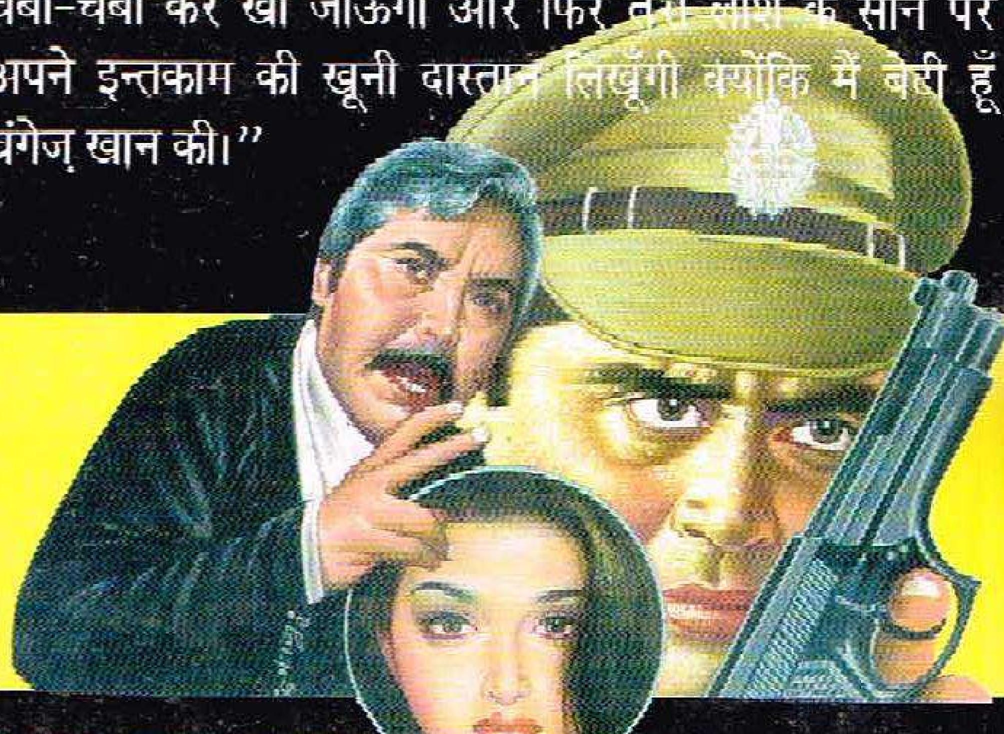
मानो वो बिजली से चलने-फिरने वाली और बोलने वाली कोई गुड़िया थी, जिसकी हरकतें बिजली के अचानक ही चले जाने पर एकाएक बन्द हो गयी थीं।

ये कमाल था उस पिन का, जो उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में जा धंसा था—पोटेशियम सायनाइड वाला वो पिन उस गन से निकला था, जो कि पीछे की तरफ श्वेता और करतार सिंह के साथ खड़े राजन के हाथों में थी।



"जिस दिन तूने मेरे वालिद को मौत के घाट उतारा था, उसी दिन तूने अपने वतन हिन्दुस्तान की तकदीर में बदकिस्मती की नुकीली कील भी ठोक दी थी–तबाही को न्यौता दे आया था तू। मेरे वालिद ने तेरे मुल्क में थोड़ी तबाही क्या माचायी थी कि तू बिलबिला उठा था, अंगारों पर लोटने लगा था, लेकिन तब क्या होगा जब मैं तबाही की आँधी बनकर सब कुछ तहस–नहस कर डालूँगी?

मैं डायन बनकर तेरे हिन्दुस्तान के चैन–ओ–अमन को चबा–चबा कर खा जाऊँगी और फिर तेरी लाश के सीने पर अपने इन्तकाम की खूनी दास्तान लिखूँगी क्योंकि मैं बेटी हूँ चंगेज़ खान की।"





₹60



धीरज पॉकेट बुक्स